ज्ञान

भारत ज्ञानकोश

ENCYCLOPÆDIA
Britannica

खंड 6

स से ह

(सांख्य से ह्वेनसांग)

एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका (इंडिया) प्राइवेट लिमि
नई दिल्ली
और
पॉप्युलर प्रकाशन
मुंबई

ISBN 81-7154-993-4 सपूर्ण सेट

आलोक वाधवा द्वारा एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका (इडिया) प्राइवेट लिमिटेड, 55–56, उद्योग विहार, फेज IV, गुडगांव, हरियाणा, 122016 के लिए और हर्षा भटकल द्वारा पॉप्युलर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 35–सी, पडित मालवीय मार्ग, तारदेव, मुबई के लिए प्रकाशित पेज मेकअप और चित्रो की स्कैनिग रेडिएट प्रिटर्स, नई दिल्ली, मुद्रण और बाइडिग गोपसन्स पेपर्स लिमिटेड, नोएडा

Master Code 3745

विषय सूची

विशेष लेख

अनुक्रमणिका

साख्य

(सस्कृत शब्द, अर्थात 'गणना' या 'अक'), भारतीय दर्शन की छह परपरागत (प्राचीन) पद्धतियो मे से एक साख्य प्रकृति और आत्मा अथवा पुरुष के कम क निरतर द्वेत का अपनाता है ये दोनो मूलत भिन्न हे, लकिन विकास के क्रम मे भ्रमपूर्वक पुरुष स्वय का प्रकृति के आयामो से अभिन्न समझने लगता है सम्यक ज्ञान पुरुष की वह क्षमता है जिसके माध्यम स वह स्वय को प्रकृति से भिन्न कर पाता है हालाकि पुराने पाठो मे इस पद्धति के कई सदर्भ हे, लेकिन साख्य को अपना शास्त्रीय स्वरूप और अभिव्यक्ति ईश्वरकृष्ण (लगभग तीसरी शताब्दी) की रचना *साख्य–कारिका* से मिली विज्ञानभिक्षु ने इस पद्धति पर 16वी सदी मे एक महत्त्वपूर्ण टीका लिखी ओर इसे वेदातिक व ईश्वरवादी स्वरूप प्रदान किया *साख्य–कारिका* की कई टीकाए है *युक्त दीपिका,* जिसके रचयिता सभवत राजा नामक विद्वान थे, सबसे अधिक जानकारी दने वाला ग्रथ है उपयोगिता की दृष्टि से वाचस्पति (नौवी शताब्दी) की *तत्त्व–कौमुदी* ओर गोडपद (सातवी सदी) के *भाष्य* का अगला स्थान है *भाष्य* पर नारायणतीर्थ न उपटीका *चद्रिका* लिखी है *साख्य–सूत्र* काफी बाद की रचना है (लगभग 14वी शताब्दी), जिस पर अनिरुद्ध (15वी शताब्दी) ने *वृत्ति* लिखी ओर विज्ञानभिक्षु (16वी सदी) ने *साख्य–प्रवचन–भाष्य* (साख्य सिद्धात पर टिप्पणी) लिखा स्वतत्र कृतियो मे *तत्वसमास* (लगभग 11वी शताब्दी) का उल्लेख किया जा सकता है

साख्य मे यह माना जाता है कि एक समान, लेकिन अलग–अलग पुरुषो की असीमित सख्या है, जिनमे से कोई भी दूसरे से श्रेष्ठ नही है ब्रह्माड को समझाने के लिए पुरुष ओर प्रकृति ही काफी है, इसलिए ईश्वर के अस्तित्व को अभिकल्पित नही किया गया है पुरुष सर्वव्यापी, सर्वचेतन, सर्वव्याप्त, गतिहीन, अपरिवर्तनीय, अभौतिक और इच्छा रहित है प्रकृति सार्वभौमिक और सूक्ष्म (अप्रत्यक्ष) पदार्थ या नैसर्गिक है और इस प्रकार मात्र दिक्काल से ही इसका निर्धारण होता है

उत्पत्ति की शृखला तब शुरू हाती है, जब पुरुष प्रकृति का अतिक्रमण करता है, ठीक उसी तरह जैसे चुबक लोहे के कणो को अपनी ओर आकर्षित करता है इस प्रकार पुरुष, जो पहले किसी उद्देश्य क बिना पूर्ण रूप से चेतन था, प्रकृति पर केंद्रित हो जाता है और इसमे से 'महत' (महत्ता, महान) या बुद्धि विकसित होती है इसके बाद वेयक्तिक स्व की चतना (अहकार) की उत्पत्ति होती है, जो पुरुष मे यह मिथ्या बाध जागृत करती है कि वह सीमित हे और उसका अस्तित्व वस्तुपरक है

इस अहकार का विभाजन मन या विचार (मनस), पाच सूक्ष्म तत्त्वो (ध्वनि, स्पर्श, दृष्टि स्वाद, गध), पाच स्थूल तत्त्वा (अतरिक्ष या आकाश, वायु, अग्नि, पृथ्वी और जल), पाच ज्ञानेद्रियो (सुनने, छूने, देखने, स्वाद और सूघने की) और पाच कर्मेद्रियो (बोलना पकडना, गति, प्रजनन, निष्क्रमण) मे हो जाता है ब्रह्माड इन विभिन्न सिद्धातो के सयाजन और क्रम परिवर्तन का परिणाम है, जिनमे पुरुष भी जुडा होता है

पदार्थ की तीन आरभिक विशेषताए, जिन्हे 'गुण' कहा जाता है, ऊपर वर्णित प्रणाली से परे है ये प्रकृति का निर्माण करते है, लेकिन मुख्यत भोतिक–मनोवेज्ञानिक कारक के रूप मे अधिक महत्त्वपूर्ण है इनमे सर्वोच्च स्थिति सत्व की है, जो प्रकाशमान, प्रबुद्ध ज्ञान और स्फूर्ति है, दूसरा रजस है, जो ऊर्जा, उमग और विस्तारशीलता है, तीसरा तमस है, जो दुर्बोधता, अज्ञान और जडता हे नेतिक प्रारूप इस प्रकार है तमस से अज्ञानी और आलसी मनुष्य, रजस से उग्र और भावातिरेकी मनुष्य, सत्व से ज्ञानी और प्रशात मनुष्य

सागली

शहर, दक्षिणी महाराष्ट्र राज्य, दक्षिण–पश्चिमी भारत सागली पुणे–बगलोर रेलमार्ग पर कोल्हापुर के पूर्व मे कृष्णा नदी के किनारे स्थित है यह शहर भूतपूर्व सागली राज्य (1761–1947) की राजधानी था इसका तिलहन और हल्दी का बाजार भारत की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मडियो मे से एक है सागली का गणपति मदिर श्रद्धालुओ के आकर्षण का केद्र है शहर के उद्योगो मे सूती वस्त्र, तेल मिले और पीतल व ताब के सामान के निर्माण से जुडे कारखाने शामिल हे सागली सुनारो का पारपरिक केद्र है यहा की चीनी मिल अग्रणी चीनी प्रसस्करण इकाई के रूप मे गिनी जाती है विद्यालया, तकनीकी सस्थानो और शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से सबद्ध कला, विज्ञान ओर प्रौद्योगिकी महाविद्यालय वाला यह शहर एक महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक केद्र है

कृष्णा नदी के तट को छोडकर सागली का विस्तार सभी दिशाओ म तेजी स हो रहा है पूर्व म सागली और मिराज क मिलने स एक विशाल शहरी सकेद्रण निर्मित होता है मिराज भी एक भूतपूर्व रियासत की राजधानी था यह वाद्य यत्रो के निर्माण के लिए विख्यात है 'मिराज मेडिकल सेटर' ने अपनी बेहतरीन स्वास्थ्य सेवा से इस क्षत्र को प्रसिद्धि दिलाई है

इसके आसपास का इलाका कृषि उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, ज्वार, गेहू ओर दलहन यहा की मुख्य फसले है हल्दी की फसल तो पूर देश के व्यापक बाजार पर नियत्रण रखती है तसगाव क्षेत्र की विशषता यहा के अगूर हैं, जिनका एक बडा बाजार हे गन्ना मुख्य सिचित फसल है, जिसने अनेक स्थानो की चीनी मिलो की उन्नति मे सहायता की हे मिराज एक रेलवे जक्शन है, जहा से निकली शाखाए पश्चिम मे कोल्हापुर म और पूर्व मे कुर्दुवर्दी मे समाप्त हो जाती है कुर्दुवर्दी की छोटी लाइन का बडी लाइन मे बदलने का कार्य निर्माणाधीन है यहा स्थित मीर साहब औलिया की दरगाह दूर–दूर तक मशहूर है जनसख्या (2001) न नि क्षेत्र 4,36,639, जिला कुल 25,81,835

सांची

ऐतिहासिक स्थल, पश्चिम–मध्य मध्य प्रदेश, मध्य भारत आसपास के क्षेत्र से 90 मीटर ऊची बलुआ पत्थर की समतल शीर्ष वाली पहाडी पर स्थित साची मे भारत के सबसे

साची मध्य प्रदेश के विशाल एक) का दक्षिणी प्रवशद्वार (ता फाटो मिल्ट आर जोन मन –

सुसरक्षित बौद्ध स्मारक स्थित है सारनाथ ओर मथुरा के महान केद्रो की तरह साची का भी तीसरी शताब्दी ई पू स ग्यारहवी शताब्दी तक एक सतत कलात्मक इतिहास रहा

साची मे तीन स्तूप है स्तूप सख्या 1 की आधारशिला अशोक ने रखी थी, जिसे बाद की शताब्दियो मे परिवर्द्धित किया गया, सख्या 2 मे उत्तरवर्त्ती शुग काल (लगभग पहली शताब्दी ई पू) की अलकृत रेलिग हे, और सख्या 3 मे पहली शताब्दी ई पू के उत्तरार्द्ध से पहली शताब्दी का एक तारण (स्वागत द्वारपथ) है अन्य आकर्षक विशेषताओ मे सम्राट अशोक (लगभग 265–238 ई पू) का स्मृति स्तभ, पाचवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध का एक आरभिक गुप्तकालीन मदिर (मदिर सख्या 17) है जिसकी छत समतल और बरामदा स्तभयुक्त है और कई शताब्दियो से भी अधिक समय मे निर्मित मठ की इमारते शामिल है स्मृति चिह्नो के कई पात्र और 400 से अधिक शिलालेख यहा मिले है

साची मध्य विभिन्न दृश्य साजन्य या कॉम

सबसे विख्यात 1818 म खोजा गया महान स्तूप (स्तूप सख्या 1) हे इसकी शुरुआत सभवत तीसरी शताब्दी ई पू के मध्य मे सम्राट अशोक ने की थी और बाद मे इसे विस्तृत किया गया यह स्तूप ठोस ओर मजबूत हे और इसके आधार मे एक अर्द्ध गोल गुबद (अड) है, जा पृथ्वी को घेरे स्वर्ग के गुबद का प्रतिनिधित्व करता है, यह एक चतुर्भुजाकार रेलिग या *हर्मिका,* यानी विश्वपर्वत से घिरा हुआ ह, जिससे एक मस्तूल (यष्टि) निकला हुआ है जो प्रतीकात्मक रूप से ब्रह्माड की धुरी है मस्तूल पर छत्र लगे हुए है, जो विभिन्न स्वर्गा (देवलोका) का प्रतिनिधित्व करत हैं

स्तूप पत्थर की विशाल रलिग द्वारा घिरा हुआ है, जिसम चार द्वार है इन पर किए गए विस्तृत अलकरण बुद्ध के जीवन, उनके पूर्वजन्म की कथाओ (जातक कथाए) और आरभिक बौद्ध मत के महत्त्वपूर्ण दृश्यो (जैसे अशोक की बोधि वृक्ष तक की यात्रा) को दर्शाते है अभिलेखो मे सहायता देने वाले दानकर्ताआ के नाम दिए गए है, एक मे विदिशा के हाथीदात के कारीगरा द्वारा दी गई भेट का विवरण ह जिससे आभास हाता हे कि हाथीदात पर काम करने की परपरा का पत्थरो पर उकेरा गया होगा यहा बुद्ध को निरतर चक्र, खाली सिहासन अथवा चरण चिह्नो क प्रतीको स प्रदर्शित किया गया है

सातिपुर

शहर, नदिया जिला, हुगली नदी के ठीक उत्तर म, पश्चिम बगाल राज्य, पूर्वोत्तर भारत ब्रिटिश ईस्ट इडिया कपनी क अधीन यह बडे उद्योगा का केंद्र था ओर 18वी–19वी

के जगल म बारहसिगा
कट राम नरसैया

शताब्दी मे यहा का हाथ से बना मलमल यूरोप मे विख्यात
बुनाई केद्र सातिपुर मे कृषि व्यापार और मिट्टी के बर्तना

1856 मे नगरपालिका बना यह शहर एक तीर्थस्थान भी है
बना है प्रत्येक वर्ष यहा भगवान श्रीकृष्ण की आराधना क
यहा पर कलकत्ता विश्वविद्यालय से सबद्ध एक महाविद्यालय
1,38,195

साभर

(*सर्वस यूनीकलर*), सर्विडी कुल (गण *आर्टिओडेक्टाइला*)
पाया जाता है यह भारत और नेपाल से पूर्व की तरफ पूर द
जाता है साभर जगल मे अकेला या छोटे समूहो मे रहता है
पूछ वाले हिरन की कधे तक की ऊचाई 12–14 मीटर
गर्दन के पास कठी होती है और यह बिना धब्बो के गहरे
साभर के तीन नोक वाले सीग होते है साभर की विभिन्न
चुकी है, इनमे बडा भारतीय साभर (*सी यू नाइजर*) और छा
इक्विनस) शामिल है

साभर सॉल्ट लेक

अल्पकालिक खारे पानी की झील, भारत की विशालतम झील, जयपुर के पश्चिम मे, पूर्वी–मध्य राजस्थान राज्य पश्चिमोत्तर भारत लगभग 230 किमी क्षेत्रफल वाली यह झील अरावली पर्वत शृखला के बीच एक धसे हुए क्षत्र को दिखाती है झील की भीतरी गाद मे जमा घुलनशील सोडियम यौगिक, हर साल आने वाली नदी की बाढ मे पानी के वाष्पन द्वारा इकट्ठा हो गया है नमक की परते, जो दूर से देखने पर बर्फ जेसी दिखती है, प्राय झील के तल पर फैली रहती है, जो आमतौर पर गर्मी के महीना मे सूखी रहती हे

पारपरिक मान्यता हे कि इस झील की रचना शिव की अर्द्धांगिनी, दुर्गा के एक रूप, शाकभरी द्वारा छठी शताब्दी मे की गई थी मुगल राजवश (1526–1858) को नमक की आपूर्ति यही से होती थी, बाद मे इस पर जयपुर और जोधपुर रियासतो का सयुक्त अधिकार रहा नमक सुखाने के पात्र ओर परिष्करणशालाए झील के पूर्वी तट पर स्थित हे

सासी

खानाबदोश आपराधिक जनजाति, जो मूलत भारत के पश्चिमोत्तर क्षत्र राजपूताना मे केद्रित रही, लेकिन 13वी शताब्दी मे मुस्लिम आक्रमणकारियो द्वारा खदेड दी गई अब यह मुख्यत राजस्थान राज्य म सकेद्रित है ओर शेष भारत मे बिखरी हुई भी है सासी लोग राजपूतो से अपनी वशोत्पत्ति का दावा करते हे लकिन लोककथा के अनुसार, इनके पूर्वज बेडिया थे, जो एक अन्य आपराधिक जाति है जीवनयापन के लिए पशुओं की चोरी तथा अन्य छोटे अपराधो पर निर्भर रहने वाले सासियो का उल्लेख अपराधी जनजाति कानूनो 1871, 1911 ओर 1924 मे किया गया हे, जिनमे उनके खानाबदोश जीवन को गैर कानूनी कहा गया भारत सरकार द्वारा प्रारभ किए गए सुधारो के कार्यान्वयन मे भी कठिनाई आती रही, क्योकि ये एक अछूत जाति के लोग है और इन्हे दी गई कोई भी भूमि या पशु इनके द्वारा बेच दी जाती हे या ये उसका विनिमय कर लेते हैं

1961 मे इनकी सख्या लगभग 59,073 थी ये लोग हिदी बोलते है और स्वय को दो वर्गो मे विभाजित करते हे *खरे* (यानी शुद्ध) और अपहरणो के परिणामस्वरूप उत्पन्न *मल्ला* (यानी अर्द्ध जातीय) कुछ लोग कृषक और श्रमिक है, यद्यपि अधिकाश लोग अभी भी घुमतू हैं ये अपनी वश परपरा पितृात्मक मानते हे और जाटो की पारिवारिक परपरा के अनुसार चलत है इनका धर्म सामान्य हिदू धर्म है, लेकिन कुछ लोग इस्लाम मे धर्मातरित हो गए हैं

सासी हीरा

भारतीय मूल का आग्नेय पत्थर, यह आडू की गुठली के आकार का है और इसका वजन 55 कैरेट है इसका एक लबा इतिहास है यह कई राजवशो से होकर गुजरा

है लगभग 1570 मे कुस्तुनतुनिया मे निकोलस हार्ले–द–सासी, जो तुर्की में फ्रासीसी राजदूत थे, द्वारा खरीदा गया यह हीरा फ्रेंच राजा हेनरी III तथा हेनरी IV के पास आया बाद मे इस इग्लैंड की रानी एलिजाबेथ I द्वारा इसे खरीदा गया और स्टुअर्ट उत्तराधिकारियो को मिला 1688 मे जेम्स II के इग्लैंड से फ्रास को पलायन के बाद यह फ्रास के लुई XIV के ताज के जवाहरातो म दिखाई दिया और इनके साथ ही 1792 मे चुरा लिया गया 1828 मे यह पुन प्रकट हुआ, जब इसे रूसी राजकुमार देमिदोव द्वारा खरीद लिया गया, जिनके परिवार मे यह 1900 तक रहा बाद मे यह लेडी नेन्सी ऐस्टर की सपत्ति बन गया

साइकिल चालन

खेल, मनोरजन का प्रकार और परिवहन का माध्यम, जो पैरो से चलाए जाने वाले एक दुपहिया यत्र, बाइसिकल मे सुधार से विकसित हुआ (ऐतिहासिक रूप से, साइकिल चालन मे, विशेषकर मनोरजन मे, तीन पहिए वाले यत्र तिपहिया साइकिले और टेडम दो अथवा अधिक चालको के लिए अलग–अलग सीटे व पैडल वाली साइकिले भी आ गए हैं) इस खेल की व्यावसायिक स्पर्द्धाए मुख्यत यूरोप मे होती है, जहा मनोरजन व परिवहन हेतु प्रयोग भी अधिकतम हैं परिवहन के माध्यम के रूप मे साइकिल का प्रयोग समतल भूमि वाले देशो मे विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हे कुछ देशो मे साइकिल मार्गो के तत्र मोटर मार्गों की टक्कर के है यह खल लगभग विश्वव्यापी है और यूरोप इग्लेड, राष्ट्रमडल देशा (कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैड), अमेरिका, जापान ओर वेस्ट इडीज मे सर्वाधिक लोकप्रिय है एक खेल के रूप मे साइकिल चालन की शुरुआत आधिकारिक रूप से पेरिस के निकट सट क्लाउड पार्क मे 31 मई 1868 को हुई थी इसे 1896 के ओलिपिक खलो मे शामिल किया गया ओर तब से यह कई वर्गो
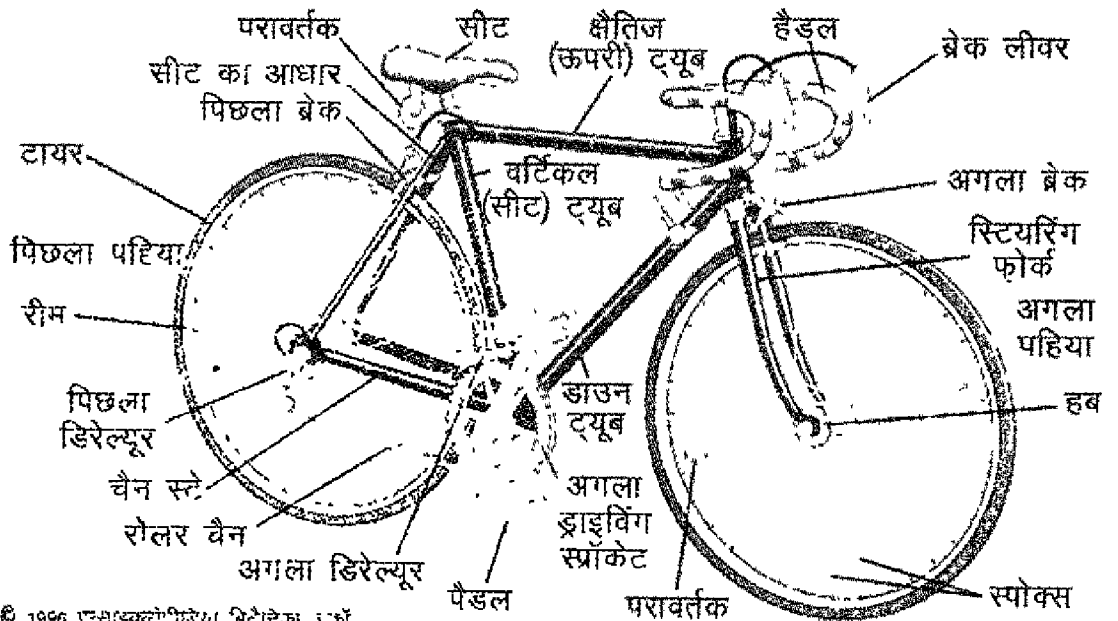
वाला एक महत्त्वपूर्ण खेल रहा है किंतु विश्व की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साइकिल चालन प्रतियोगिता टूर द फ्रास (1901 मे प्रारभ), अत्यधिक दुरूह परिस्थितिया मे तीन सप्ताह लबी दौड को माना जाता हे

भारत में साइकिल चालन

यो तो साइकिल परिवहन का एक अति महत्त्वपूर्ण माध्यम है, किंतु एक खेल के रूप मे इसमे भारत ने अब तक कोई उल्लेखनीय स्थान नही बनाया है किसी अतर्राष्ट्रीय स्पर्द्धा मे भाग लेने वाले प्रथम भारतीय जानकीदास थे, जिन्होने 1938 मे सिडनी के ब्रिटिश साम्राज्य खेलो मे भाग लिया था 1951 के एशियाई खेलो मे भारत ने रजत व कास्य पदक जीते 1982 मे, बैंकॉक की 10वी एशियाई साइकिल चालन प्रतियोगिता मे आर्मिन अरेथना ने 1,000 मीटर समय परीक्षण मे रजत पदक जीता 1983 मे उन्होने मनीला मे हुई 11वी एशियाई साइकिल चालन प्रतियोगिता मे 1,000 मीटर परीक्षण मे कास्य पदक जीता

साइकिल चालन को एक शाखा के रूप म भारतीय खेल प्राधिकरण की विशेष क्षेत्र खेल योजना मे शामिल किया गया हे इसका प्रशिक्षण पजाब के लुधियाना मे होता है घरेलू प्रतियोगिताओ मे प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली राष्ट्रीय स्पर्द्धा और राष्ट्रीय सडक स्पर्द्धा शामिल है प्रति दो वर्षो मे आयोजित होने वाले राष्ट्रीय खेलो मे साइकिल चालन भी एक मुकाबला है

आर्मिन अरेथना, अमर सिह, मिनाती महापात्र और बलराज सिह चीमा ने अतर्राष्ट्रीय स्पर्द्धाओ मे अच्छा प्रदर्शन किया है व उन्हे उनकी उपलब्धियो के लिए अर्जुन पुरस्कार प्रदान किए गए है

साइप्रस (सरू)

क्यूप्रेसी परिवार की *क्यूप्रेसस* जाति के सजावटी और इमारती सदाबहार शकुवृक्षो की लगभग 20 प्रजातियो मे से कोई भी ये एशिया, यूरोप ओर उत्तरी अमेरिका के शीतोष्ण ओर उपोष्णदेशीय क्षेत्रो मे पाए जाते है साइप्रस के नाम से प्रचलित कई रालयुक्त, खुशबूदार सदाबहार वृक्ष विशेषकर नकली साइप्रस और साइप्रस पाइन प्रजातिया, इसी परिवार की दूसरी जाति से सबध रखते है कभी–कभी साइप्रस नाम का उपयोग पीले रग की लकडी वाले और पर्णविहीन साइप्रस के लिए भी किया जाता है, पूर्वी कनाडा मे जैक पाइन को भी इसी नाम से सबोधित करते हे

साइप्रस के पेड सामान्यत 25 मीटर ऊचे और विशेषकर तरुणावस्था मे पिरामिड के आकार के होते है कुछ प्रजातियो मे प्रौढावस्था के बाद ऊपरी हिस्सा चपटा हो जाता है और उससे शाखाए निकलती है कई अन्य प्रजातिया छह मीटर से कम ऊचाई की होती हैं कभी–कभी इनकी छाल चिकनी होती है, लेकिन अधिकाश प्रजातियो मे यह पतली पट्टिकाओ मे विभक्त रहती है, जो वृक्ष से अलग हो सकती है फैली हुई और आरे के आकार की पत्तिया तरुण टहनियो पर लगी होती है, लेकिन पुरानी शाखाओ पर ये हमेशा ही छोटी, शल्कनुमा और शाखा से चिपकी हुई होती हैं ये सामान्यत

खुशबूदार होती है ओर इनकी बाहरी सतह पर ग्रथि छिद्र होते हे विपरीत जोडा म लगी हुई पत्तिया तन को ढकती हे और शाखा को चोकोर आकार देती हे एक ही वृक्ष पर, आमतौर पर विभिन्न शाखाओं के सिरो पर, छोटी–छोटी नर ओर मादा प्रजनन सरचनाए (शकु) उगती है ये शकु छोटे व सामान्यत गोलाकार होते हे ओर इन पर तीन से छह जोडे काष्ठीय या नरम मोटे शल्क होत है, जो अपने पिछले हिस्सो से शकु की धुरी से जुडे होत है इनकी बाहरी सतह पर एक छोटी सरचना होती हे प्रत्येक उर्वरक शल्क मे, विभिन्न प्रजातियो क अनुसार, छह से लेकर सो से अधिक पखदार बीज होते है निषेचन के बाद दूसरे मौसम क अत मे ये बीज पक जाते है, लेकिन शकु के टूटने तक ये कई वर्षों तक वही लगे रहते हे

इमारती वृक्ष के रूप मे साइप्रस का बहुत ही सीमित महत्त्व हे, इसकी सबसे उपयोगी लकडी भूटान, इतालवी ओर मोटरी साइप्रस (क्रमश *सी टोरूलूसा, सी सेपरवाइरेन्स* और *सी मैक्रोकाप्रा*) से प्राप्त होती है इन प्रजातियों की लकडी हल्की औसत कठोरता वाली और मिट्टी के सपर्क मे रहने पर भी बहुत टिकाऊ होती हे लेकिन यह गाठदार ओर ऐसी गध से युक्त होती है, जो कभी–कभी बुरी लगती है ये तीन वृक्ष और एरिजोना (*सी एरिजोनिका ओर सी ग्लेबा*), गोवेन (*सी गोवेनियाना*) कश्मीर (*सी केश्मेरिना*), मैक्सिकन (*सी लूसिटेनिका*), मोर्निंग (*सी फ्यूनेबिरा*) आर सार्जेट (*सी सार्जेटी*) को पत्तियो तथा युवावस्था मे सुदर दिखने के कारण सजावटी वृक्ष के रूप मे उगाया जाता है मोर्निंग और इतालवी साइप्रस को कुछ सस्कृतियो मे मृत्यु तथा अमरता का प्रतीक माना जाता है मोटेरी साइप्रस को पील साइप्रस (*कैमीसाइपेरिस नूटकेटेन्सिस*) से सकर करक हाईब्रिड या ललेड साइप्रस (*क्यूपेसोसाइपेरिस लेलेडी*) विकसित किया गया हे, जो एक सजावटी वायुरोधी वृक्ष हे

साइप्रस के पड भारी पाल का सामना नही कर सकते इनमे बहुत कम कीड लगते है, लेकिन इनमे क्राउन गॉल (शीर्ष के पित्त), स्टेम केकर (टहनी के नासूर) और जडो के सडने की बीमारी की सभावना रहती हे

सागर

शहर, मध्य मध्य प्रदेश राज्य, मध्य भारत यह एक झील (जिसे सागर कहते हे) के आसपास स्थित है इस शहर का क्षेत्रफल 33 75 वर्ग किमी हे यह निम्न पहाडियो के कगारो पर मनोरम ढग से निर्मित है, जो झील को तीन ओर से घेरे हुए ह औसत समुद्र तल से इसकी ऊचाई लगभग 610 मीटर है ये कगार सघन वनो से आच्छादित हैं और विस्तृत मैदान सोनार नदी द्वारा सिचित हे सागर एक महत्त्वपूर्ण सैन्य केंद्र होने के साथ एक महत्त्वपूर्ण सडक पर स्थित है और मध्य रलव का रेलवे स्टेशन है

हाल की पुरातत्व सबधी खोजे दर्शाती हे कि सागर ओर इसके पहाडी क्षेत्र प्रागैतिहासिक मानव के आवास थे इसे टॉलेमी द्वारा वर्णित अगारा माना जाता है एरण के समीप के पुरातात्विक स्थल से गुप्त काल के अनेक अभिलेख मिले हे इसके वर्तमान नाम को सागर झील से लिया गया है, जिसके चारो ओर यह बसा है सागर की स्थापना 1660

मे उडान सिह ने की थी और 1867 मे इसे नगरपालिका बनाया गया शहर मे कुछ मदिर व एक किला (1780) अपने मध्यकालीन व आधुनिक वास्तुशिल्प के लिए उल्लेखनीय है इन मदिरो म राधाकृष्ण, गगा, जानकीरमन और कायस्थो के अधिष्ठाता देवता चित्रगुप्त के गिने–चुने मदिरो म से एक मोजूद है

सागर मे व्यापारिक गतिविधिया तेज होने के चिह्न दिखाई देत है यहा बीडी बनाने की कुछ कपनिया और तेल व आटा मिले, आरा मिले, घी प्रसस्करण, हथकरघे पर सूती वस्त्रो की बुनाई और रेलवे व इजीनियरिंग कार्यशाला जैसे उद्योग है यह कृषि व्यापार का भी महत्त्वपूर्ण केंद्र है यहा बलुआ–पत्थर, चूना–पत्थर, लौह अयस्क और एस्बस्टॅस का उत्खनन होता है आसपास के पठारी क्षेत्र मे बडी सख्या मे पशुपालन किया जाता है

सागर शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र है यहा डॉ हरिसिह गौर विश्वविद्यालय (1946) व उससे सबद्ध महाविद्यालय, पुराने मराठा किल के भीतर स्थित पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, एक औद्योगिक विद्यालय और घुडसवारी सीखने का विद्यालय है जनसख्या (2001) न नि क्षेत्र 2,32,321, छावनी क्षेत्र 35,872, जिला कुल 20,21,783

सागर द्वीप

गगा डेल्टा का सुदूर पश्चिमी द्वीप, पश्चिम बगाल राज्य, पूर्वोत्तर भारत यह हुगली नदी के मुहाने पर स्थित है, जिसकी एक शाखा इसे मुख्यभूमि से पूर्व दिशा मे पृथक करती है यह ऐसे बिदु पर स्थित है, जहा कभी गगा बगाल की खाडी मे मिलती थी गगासागर के नाम से विख्यात इस स्थान को विशेष तौर पर पवित्र माना गया है यह एक प्रसिद्ध हिदू तीर्थ केद्र है यहा प्रतिवर्ष तीन दिवसीय स्नानोत्सव व एक बडा मेला आयोजित होता है इस द्वीप पर भयकर चक्रवात आते है व इसके दक्षिण–पश्चिम तट पर हुगली नदी मे यातायात को निर्देशित करने के लिए एक प्रकाश स्तभ है

साडी

भारतीय उपमहाद्वीप मे स्त्रियो का प्रमुख बाह्य पहनावा पाच या छह मीटर लबे कपडे के टुकडे के रूप मे तैयार साडी रेशमी, सूती या कृत्रिम कच्चे माल की बनी होती ह जो छापे, बुने डिजाइन वाली या कढाई की हुई हो सकती है कमर पर बाधी जाने वाली साडी का एक छोर एक कधे पर होकर बाई या दाई ओर लटकता छोड दिया जाता है अथवा सिर पर ओढा जाता है

दूसरी शताब्दी ई पू की मूर्तियो मे पुरुषो ओर स्त्रियो के शरीर के ऊपरी भाग को अनावृत दर्शाया गया है ये कमर के गिर्द साडी इस प्रकार लपेटे हुए है कि पैरो के बीच सामने वाले भाग मे सुदर चुन्नटे बन जाती है इसमे 12वी सदी तक कोई खास परिवर्तन नही हुआ भारत के उत्तरी और मध्य भाग को जीतने के बाद मुसलमानो ने जोर दिया कि शरीर को पूरी तरह ढका जाए हिदू महिलाए साडी को एक छोटे अग

वस्त्र (ब्लाउज) तथा लहगे (पेटीकोट) के साथ पहनती है, जिसमे साडी को खोसकर कमर से पैर तक एक लबा घेर बना लिया जाता है महाराष्ट्र मे अक्सर नौगजी साडी लाघदार बाधी जाती है

सातवाहन वश

भारतीय परिवार, जो पुराणो (प्राचीन धार्मिक तथा किवदतिया का साहित्य) पर आधारित कुछ व्याख्याओ क अनुसार, आध्र जाति (जनजाति) का था और दक्षिणापथ अर्थात दक्षिणी क्षेत्र मे साम्राज्य की स्थापना करने वाला यह पहला दक्कनी वश था अपनी सत्ता के उत्कर्ष काल मे सातवाहनो का पश्चिमी और मध्य भारत के दूरदराज के क्षेत्रो पर नियत्रण था

पौराणिक प्रमाणो के आधार पर सातवाहन वश की उत्पत्ति पहली शताब्दी ई पू के उत्तर काल मे बताई जाती है, लेकिन कुछ विद्वान इस वश को तीसरी शताब्दी ई पू का भी बताते है आरभ मे सातवाहन वश का शासन पश्चिमी दक्कन के कुछ हिस्सो तक ही सीमित था नानाघाट, नासिक, कार्ले और कन्हेरी की गुफाओ मे मिले अभिलेख आरभिक शासको सिमुक, कृष्णा और शतकर्णी I के स्मृति चिह्न है

आरभिक सातवाहन राज्य के समय से ही पश्चिमी तट के बदरगाहो, जो उस काल मे भारत–रोम व्यापार के कारण फल–फूल रहे थे, तक पहुच और पश्चिमी क्षत्रपो के राज्य से लगे होने क कारण इन दो भारतीय राज्यो मे युद्धो का सिलसिला लगभग लगातार चलता रहा इस सघर्ष के पहले चरण मे क्षत्रप नाहपण द्वारा नासिक और पश्चिमी दक्कन के अन्य इलाको पर हमले से पता चलता है इस वश के महानतम शासक गौतमीपुत्र शतकर्णी (शासनकाल, लगभग 106–130 ई) न सातवाहनो की शक्ति को पुनर्जीवित किया उन्होने काफी बडे इलाके पर विजय प्राप्त की, जो पश्चिमोत्तर मे राजस्थान से दक्षिण–पूर्व मे आध्र तक और पश्चिम म गुजरात से पूर्व मे कलिग तक फैला हुआ था 150 ई से पहल किसी समय क्षत्रपो ने इनम से अधिकाश क्षेत्र सातवाहनो से वापस छीन लिए और उन्हे दो बार पराजित किया

गौतमीपुत्र के बेटे वशिष्ठपुत्र पुलुमावि (शासनकाल, लगभग 130–159 ई) ने पश्चिम से शासन किया उनकी प्रवृत्ति पूर्व और पूर्वोत्तर मे विस्तार करन की प्रतीत होती है वशिष्ठपुत्र पुलुमावि के अभिलेख और सिक्के आध्र मे भी पाए गए है और शिवश्री शतकर्णी (शासनकाल, लगभग 159–166 ई) की जानकारी कृष्णा तथा गोदावरी जिला मे पाए गए सिक्को से मिलती है श्री यज्ञ शतकर्णी (शासनकाल, लगभग 174–203 ई) के क्षेत्र के सिक्के कृष्णा और गोदावरी जिलो, मध्य प्रदेश क नदा जिले, बरार, उत्तरी कोकण और सौराष्ट्र मे भी पाए गए है

श्री यज्ञ सातवाहन वश के इतिहास मे अतिम महत्त्वपूर्ण शासक थे उन्होने क्षत्रपो पर विजय प्राप्त की, लेकिन उनके उत्तराधिकारी, जिनक बारे मे अधिकाश जानकारी पौराणिक वशावलियो और सिक्को से मिलती है, ने उनकी तुलना मे सीमित क्षेत्र पर ही शासन किया

बाद की मुद्राओ के जारी होने के स्थानीय स्वरूप और उनके पाए जाने वाले स्थानो से सातवाहन वश के बाद के विखडन का पता चलता है आध्र क्षेत्र पहले इक्ष्वाकु वश के हाथो मे और फिर पल्लव वश के पास चला गया पश्चिमी दक्कन के विभिन्न क्षेत्रो मे नई स्थानीय शक्तियो, जैसे चुटु, अभीर और कुरू का उदय हुआ बरार क्षेत्र मे चौथी शताब्दी के आरभ मे वाकाटक वश अपराजेय राजनीतिक शक्ति के रूप मे उभरा इस काल तक सातवाहन साम्राज्य का पूर्णत. विखडन हो चुका था

चौथी–तीसरी शताब्दी ई पू मे दक्कन मे उत्तरी मौर्यो की उपलब्धियो क बावजूद सातवाहनो के शासनकाल मे ही इस क्षेत्र का वास्तविक ऐतिहासिक काल आरभ हुआ हालाकि इस बात के स्पष्ट प्रमाण नही है कि वहा कोई केद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली आ चुकी थी, लेकिन पूरे साम्राज्य मे एक व्यापक मुद्रा–प्रणाली लागू की गई थी इस काल मे भारत–रोमन व्यापार अपने चरमोत्कर्ष पर पहुच गया था इससे आई भौतिक समृद्धि की झलक बौद्ध और ब्राह्मणवादी समुदायो को दिए गए उदार सरक्षण से मिलती है, जो तत्कालीन अभिलेखो मे वर्णित है

साधना

(सस्कृत शब्द, अर्थात अभ्यास, किसी उपयुक्त लक्ष्य को प्राप्त करने का माध्यम), हिदू और बौद्ध तत्रवाद का आध्यात्मिक अनुष्ठान, जिसमे साधक ईश्वर या इष्ट दवता को स्थापित और आत्मसात करके उसका आहवान करता है यह तिब्बत के तात्रिक बौद्ध धर्म मे ध्यान का आरभिक स्वरूप है साधना शरीर को मुद्राओ मे, ध्वनि को मत्रो मे और मस्तिष्क को पवित्र आकारो व देवताओ के रूपो के सुस्पष्ट आतरिक मानस दर्शन मे रत रखती है

प्रतिमाओ या स्वरूपो के मानस दर्शन की विधि और प्रत्येक के लिए उपयुक्त मत्रो का विस्तृत निर्देश अधिकाश देवताओ की लिखित साधनाओ मे निहित है इसी प्रकार का एक सग्रह *साधनामाला* है, जिसकी रचना सभवत पाचवी से ग्यारहवी शताब्दी के बीच हुई लगभग 300 साधनाओ के इस सग्रह मे विभिन्न प्रायोगिक निष्कर्षो और एक व्यक्ति की उसके देवता क साथ एकात्मता क विकास के लिए रची गई साधनाए हे लिखित साधनाए शिल्पकारो और चित्रकारो का भी मार्गदर्शन करती है देवताओ के क्रमश गहनतर मानस दर्शन मे प्रवीणता के लिए कई वर्षो तक प्रतिदिन अनेक घटो के अभ्यास की आवश्यकता होती है इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न चेतना की स्थिति म विश्व की भ्रामक प्रकृति ओर परमात्मा के साथ व्यक्ति की एकात्मता, अनुभवात्मक वास्तविकता बन जाती है

साधु और स्वामी

भारत मे धार्मिक या पवित्र व्यक्ति साधु (निष्णात) से किसी भी धार्मिक तपस्वी या पवित्र व्यक्ति का बोध होता हे साधु वर्ग मे न सिर्फ विभिन्न मतो के वास्तविक सत है बल्कि भौतिक और मानसिक अनुशासन पर ध्यान केद्रित करने के लिए घर त्यागने

एलन कश

वाले पुरुष (कभी–कभी स्त्री भी), वनवासी, जादूगर और भविष्यवक्ता भी है, जिनमे कुछ के धार्मिक उद्देश्य सदेहास्पद है 'स्वामी' (मालिक) से सामान्यत ऐसे तपस्वी का बोध होता है, जिसने एक विशेष धार्मिक मत मे दीक्षा ली हो हाल के वर्षो मे इसका प्रयोग रामकृष्ण मिशन के भिक्षुओ के लिए विशेष रूप से होने लगा है शैव साधु को सामान्यत सन्यासी या दशनामी सन्यासी कहा जाता है, जबकि वैष्णव साधु को वैरागी (इच्छाओ से मुक्त) कहा जाता है आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए योग साधना करने वाले तपस्वी योगी कहलाते है और जैन सतो को सामान्यत मुनि कहा जाता है जबकि बुद्ध के उपदेशो का प्रसार करने वाले को भिक्खु (भिक्षु) कहा जाता है

साधु एक साथ मिलकर विभिन्न मठो मे रहते है और सामान्यत किसी मत–विशेष से सबधित होते है वे अकेले या छोटे समूहो मे देश भर मे भ्रमण करते रहते है अथवा छोटी झोपडियो या गुफाओ मे एकातवास करते है साधु सामान्यत निर्धनता और ब्रह्मचर्य का व्रत लेते है और भोजन के लिए गृहस्थो के दान पर निर्भर रहते है उनकी वेशभूषा और उनके आभूषण सप्रदायो के अनुरूप अलग–अलग होते है, लेकिन वे सामान्यत गेरुए रग (कभी–कभी श्वेत) के वस्त्र पहनते है उनका सिर मुडा हुआ होता है या फिर वे अपने बालो को जटा के रूप मे कधो तक बढने देते है अथवा इसे एक जूडे के रूप मे सिर के ऊपर बाध लेते है सामान्यत उनके पास बहुत कम सामान होता है, जिसे वे साथ मे लेकर चलते है डडा, कमडल, भिक्षापात्र, जपमाला, कभी–कभी अतिरिक्त वस्त्र और चिमटा

साधुगण सामान्यत महत्त्वपूर्ण धार्मिक अवसरो पर, जैसे चद्रग्रहण और मेले आदि मे एकत्र होते है वाराणसी (बनारस) व हरिद्वार जैसे पवित्र शहरो मे इन्हे वर्ष भर बडी सख्या मे देखा जा सकता है

सॉफ्टबॉल

यह बेसबॉल जैसा ही लोकप्रिय प्रतिस्पर्द्धी खेल है, खासतौर पर सयुक्त राज्य अमेरिका मे आमतौर पर यह माना जाता है कि सॉफ्टबॉल इनडोर बेसबॉल नामक खेल से विकसित हुआ है, जो सबसे पहले 1887 मे शिकागो मे खेला गया था सयुक्त राज्य मे इसे विभिन्न नामो, जैसे किटन बॉल, मश बॉल, डायमड बॉल, इनडोर–आउटडोर और प्लेग्राउड बॉल के नाम से जाना जाने लगा इस खेल के नियमो, खेल सामग्री के आकार–प्रकार और खेल के मैदान के आकारो मे व्यापक अतर थे

1923 मे नियमो के मानकीकरण और उन्हे प्रकाशित व प्रसारित करने के लिए एक नियम समिति गठित की गई बाद मे इस समिति को इटरनेशनल ज्वॉइट रूल्स कमेटी

ऑन सॉफ्टबॉल के रूप मे विस्तृत कर दिया गया, जिसमे सॉफ्टबॉल को बढावा देने वाले और प्रायोजित करने वाले कई सगठनो के प्रतिनिधियो को शामिल किया गया था 1933 मे गठित अमेरिका की एमेच्योर सॉफ्टबॉल एसोसिएशन राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ की पोन्नति और नियत्रण के लिए पशासक सस्था के रूप मे मान्य हुई 1952 मे गठित फेडरेशन इटरनेशनेल डि सॉफ्टबॉल (अतर्राष्ट्रीय सॉफ्टबॉल सघ) विभिन्न देशो के 40 से भी अधिक सॉफ्टबॉल सगठनो के बीच समन्वय करता हे इसका मुख्यालय ओकलाहोमा शहर, सयुक्त राज्य अमेरिका मे है यह सगठन पुरुषो ओर महिलाओ की नियमित अतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ और क्षेत्रीय व विश्व चैपियनशिप प्रतियोगिताओ के लिए समन्वय करता है

1996 मे ओलिपिक खेलो मे महिलाआ की सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता भी शामिल की गई सॉफ्टबॉल क मूलभूत नियम बेसबॉल के नियमो जैसे ही है बल्लेबाजी और क्षेत्ररक्षण के तरीके भी समान ही है, लेकिन सॉफ्टबॉल इससे काफी छोटे क्षेत्र मे खेला जाता है और एक गेम सिर्फ सात पारिया का ही होता है

सॉफ्टबॉल क नियमित खेल मैदान मे 18 28 मीटर बेसलाइन के साथ एक हीरे के आकार का क्षेत्र होता है पुरुषो के लिए गेद फेकने की दूरी लगभग 14 मीटर और महिलाओ के लिए 12 मीटर है बल्ला गोल और 86 समी से अधिक लबा नही होना चाहिए व सबसे बडे हिस्से पर गोलाई 6 4 सेमी से अधिक नही होनी चाहिए अधिकृत सॉफ्टबॉल एक चिकनी सिलाई वाली गेद है, जो परिधि म लगभग 300 मिमी होती है और इसका वजन 177 ग्राम से 198 ग्राम के बीच होता है

सॉफ्टबॉल खेल मे गेद हाथ को नीचे की ओर गति देते हुए फेकी जाती है, जबकि बेसबॉल मे हाथ को ऊपर की ओर अथवा बाजू मे घुमाते हुए फेकी जाती है दोनो खेलो मे वेस स्टीलिग की इजाजत है, लेकिन सॉफ्टबॉल मे दौडकर रन लेने वाले को बेस से तब तक सपर्क बनाए रखना होता है, जब तक गेद फेकने वाला (पिचर) गद को बल्लेबाज के लिए फेक न द

सॉफ्टबॉल का एक लोकप्रिय प्रकार स्लो–पिच कहा जाता हे और इसे नियमित खेल सामग्री के साथ भी खेला जा सकता हे

सॉफ्टबॉल (फास्ट पिच) और स्लो--पिच मे बडा फर्क यह है कि इसमे टीम मे 10 सदस्य होते है, पुरुष और महिलाओ, दोनो के लिए गेद फेकने की दूरी 14 मीटर होती है गेद मध्यम गति से ही फेकी जानी चाहिए व बल्लबाज तक पहुचने की अपनी उडान के दौरान गेद को लगभग एक मीटर का वृत्ताश बनाना चाहिए फेकी गई गेद की गति और ऊचाई का निर्णय अपायर पर छोडा गया है, जो गेद फेकने वाले को वार–बार बहुत तेज गति से गेद फेकने की स्थिति मे बाहर भी कर सकता है

स्लो–पिच मे बेस स्टीलिग की इजाजत नही है

भारत मे सॉफ्टबॉल

भारतीय उपमहाद्वीप मे सॉफ्टबॉल खेल न 1961 मे सॉफ्टबॉल एसोसिएशन ऑफ इडिया (एस ए आई) के गठन के साथ प्रवेश किया दशरथमल मेहता इसके सस्थापक सचिव थे ओर इसका मुख्यालय जोधपुर (राजस्थान) मे था एस ए आई ने भारत मे इस खेल को प्रशिक्षण शिविरो और कक्षाओ के जरिये सगठित करने और लोकप्रिय बनाने के लिए कदम उठाए

भारतीय सॉफ्टबॉल एसोसिएशन ने 1965 मे अमेरिकी महिला सॉफ्टबॉल दल की भारत यात्रा का आयोजन किया, जिसने कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) मे प्रदर्शन मैच खेले यह पहला प्रदर्शन भारतीय खिलाडियो के लिए सीखने का अच्छा अनुभव था

भारत मे पहली वरिष्ठ राष्ट्रीय प्रतियोगिता 1967–1968 मे आयोजित की गई तब से अब तक राष्ट्रीय प्रतियोगिताए नियमित रूप से आयोजित हो रही है सीनियर वर्ग की राष्ट्रीय प्रतियोगिताए 1978 मे शुरू हुई और 1987 मे राष्ट्रीय स्तर की जूनियर वर्ग की प्रतियोगिताए भी इसमे शामिल कर ली गई अब सॉफ्टबॉल का खेल स्कूल, विश्वविद्यालय के साथ–साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी शामिल कर लिया गया है एशियन सॉफ्टबॉल एसोसिएशन ने इस क्षेत्र मे खेल को लोकप्रिय बनाने के लिए कई आधिकारिक प्रशिक्षण शिविर और कार्यक्रम आयोजित किए है एशियाई चैपियनशिप मे भारतीय टीम ने 1985–1986 मे महिला वर्ग मे भाग लिया था और पुरुष दल ने 1987–1988 मे भाग लिया था भारत मे 1997 मे चेन्नई मे एशियन यूथ चैपियनशिप आयोजित की गई थी, जिसमे कई एशियाई देशो की टीमो ने हिस्सा लिया था

सामूगढ़ का युद्ध

(29 मई 1658), मुगल बादशाह शाहजहा के सितबर 1657 मे गभीर रूप से बीमार पडने के बाद उनके पुत्रो के बीच सिहासन के लिए हुआ एक निर्णायक सघर्ष इस युद्ध म एक ओर बादशाह के तीसर और चौथे पुत्र औरगजेब व मुराद बख्श तथा दूसरी ओर ज्येष्ठ पुत्र और सभावित उत्तराधिकारी दारा शिकोह थे औरगजेब को एक अल्पज्ञात व अरक्षित दुर्ग मिलने के बाद चबल नदी पर हो रहे युद्ध की दिशा बदल गई और दारा शिकोह सामूगढ की ओर मुडे, जो आगरा के पूर्व मे (शाहजहा निवास) 16 किमी दूर यमुना नदी के दक्षिण मे स्थित था दारा शिकोह की 60 हजार की सेना औरगजेब की सेना से बडी थी, लेकिन औरगजेब अधिक अनुभवी थे

यह युद्ध उत्तर भारत की भीषण गर्मी मे हुआ और इसका निर्णय महत्त्वपूर्ण क्षणो मे दारा शिकोह द्वारा अपने हाथी से नीचे उतर जाने के कारण हुआ दारा की फौज को उनके मर जाने की गलतफहमी हो गई युद्धोपरात औरगजेब ने अपने भाई मुराद ओर शाहजहा को कैद कर लिया, जबकि एक लबी अवधि तक पीछा करने और दूसरी बार हार जाने के बाद 1659 मे दारा को फासी दे दी गई

सारगपुर

नगर, कालीसिंध नदी के ठीक पूर्व मे, पश्चिमोत्तर मध्य प्रदेश राज्य, मध्य भारत सारगपुर एक प्राचीन स्थल पर स्थित है यहा पर 12वी शताब्दी की एक जेन प्रतिमा के साथ–साथ अनक हिदू व जैन भग्नावशेष है 13वी शताब्दी मे सारग सिह खिची के अधीन इस नगर का महत्त्व बढा, सारग सिह के नाम पर ही इस नगर का नामकरण हुआ, तब यह एक प्रमुख मुगल व्यापार केद्र था 1818 मे एक सधि द्वारा यह दवास रियासत को हस्तातरित हो गया एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक और कृषि व्यापार केद्र सारगपुर मे चीनी मिले और हथकरघा उद्योग है जनसख्या (2001) 32,295

सारगी

उत्तर भारतीय (हिदुस्तानी) सगीत मे लोकप्रिय तार वाद्य यह लगभग आयताकार, चौडी, बीच मे थोडी पतली, पर्दा (सारिका) विहीन और आमतौर पर लकडी के एक ही टुकडे से बनी होती है इसमे तीन लय तात, कभी–कभी चौथा धातु का तार तथा अक्सर 11 से 15 अनुनादी धातु तार भी होते हैं पहले सारगी पेशेवर नाचने वालियो का वाद्ययत्र थी, लेकिन अब शास्त्रीय नृत्य वाद्य–वृद म शामिल हो गई है

सारगी और उस बजाने की गज
साजन्य विक्टोरिया एड अल्बर्ट म्यूजियम लदन

सारगी का लोक सगीत मे व्यापक रूप स प्रयुक्त एक भिन्न स्वरूप 'सारिंदा' है, जिसे कभी–कभी भूल से सारगी कह दिया जाता है यह खोखली लकडी का गहरा, बिना पर्दो वाला और नीचे की ओर चमडे से मढा वाद्य हे ऊपरी अर्द्धाश खुला हे और इसके पार्श्व नीचे मुडे, नुकीले कटक बनाते है

सारदा देवी

पूज्य माता श्री सारदा देवी के रूप मे विख्यात, मूल नाम सारदामणि, (ज–22 दिस 1853, जयरामबती, बगाल, भारत, मृ–21 जुला 1920, कलकत्ता {वर्तमान कोलकाता}), सत रामकृष्ण परमहस की पत्नी और आध्यात्मिक सहगामिनी

बहुत कम आयु मे ही सारदामणि का विवाह रामकृष्ण स हो गया था जब वह बडी हुई, तो अपने पति के साथ रहने लगी, जो उस समय दक्षिणेश्वर, बगाल मे एक मदिर के पुजारी थे 5 जून 1872 को फलहारिणी काली पूजा की चादनी रात मे रामकृष्ण ने दिव्यमाता

सारदा देवी

क रूप मे अपनी पत्नी की पूजा की मानव जाति के ज्ञात इतिहास मे यह एक अनोखी घटना है आधुनिक युग के महान देवदूत ने अपनी आध्यात्मिक क्रियाओ के सपन्न होन पर अपनी युवा पत्नी को ब्रह्माड की माता के रूप मे मानकर उनकी पूजा–अर्चना की सारदा देवी मे आद्यशक्ति के उद्भव के साथ ही पवित्र माता का अस्तित्व सामने आया रामकृष्ण के जीवनकाल म सारदा देवी ने रामकृष्ण और उनके भक्तो, जिन्हे वह अपनी सतान मानती थी, की नि स्वार्थ सेवा मे अपना जीवन अर्पित कर दिया

1886 मे रामकृष्ण की मृत्यु के बाद सारदा देवी ने कई वर्ष तीर्थयात्रा करने तथा चितन और साधना एव अपने पुत्रो, विवेकानद के नेतृत्व मे रामकृष्ण के युवा शिष्यो का एक छोटा समूह, की देखभाल मे व्यतीत किए

धीरे–धीरे रामकृष्ण के भक्तो ने पूज्य माता के आध्यात्मिक प्रभाव को पहचाना, जिसका व्यापक प्रसार हुआ उनके चरित्र की प्रमुख विशेषता यह थी कि उनमे हर व्यक्ति माता का स्वरूप ढूढ लेता था अपने पास आने वाले हर व्यक्ति को वह जाति या धर्म के भेदभाव के बिना स्नेह देती थी स्वामी विवेकानद ने रामकृष्ण के शिष्य और अपने सहयोगियो से कहा था, 'तुम अभी तक माता के जीवन के महत्त्व को नही समझ पाए हो बिना शक्ति के विश्व मे कोई पुनर्जन्म सभव नही है आखिर ऐसा क्यो है कि हमारा देश सभी देशो मे सबसे कमजोर और सबसे पिछडा हुआ हे? क्योकि यहा देवी शक्ति का निरादर हो रहा है माता का जन्म भारत मे इसी शक्ति को पुनर्जीवित करने के लिए हुआ है शक्ति की कृपा के बिना कुछ भी प्राप्त नही किया जा सकता'

सारदा नदी

हिमालय से निकलने वाली और दक्षिण–दक्षिणपूर्व दिशा मे भारत व नेपाल सीमा की ओर 480 किमी का मार्ग तय करके घाघरा नदी म मिलने वाली नदी अपन ऊपरी मार्ग से, जहा इसकी धारा काली के रूप मे जानी जाती है, यह परमदेव मडी मे गगा के मैदान मे प्रवेश करती है और विस्तार पाती हे, इसी के ऊपर सारदा बाध (बेराज) हे, इस केंद्र के नीचे यह शारदा नदी के रूप मे जानी जाती है इसकी प्रमुख सहायक नदिया धोलीगगा, गोरीगगा और सरयू है बनवासा के नजदीक सारदा बेराज उत्तरी भारत की सबसे लबी सिचाई प्रणालियो मे से एक 'सारदा नहर' (1930 मे पूर्ण) का जलस्रोत है

सारनाथ

वाराणसी (भूतपूर्व बनारस) के उत्तर मे पुरातात्विक स्थल, उत्तर प्रदेश राज्य, परपरा के अनुसार यहा बुद्ध ने अपने अनुयायियो को पहली बार उपदेश दिया था इस स्थान पर एक स्तूप (कीर्ति स्तभ, स्मारक) और प्रसिद्ध सिह स्तभ है, जिनका निर्माण तीसरी सदी ई पू मे मौर्य सम्राट ने करवाया था, आज यह स्तभ भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है

सारस

विश्व मे सबसे लबा उडने वाला पक्षी, दक्षिण एशिया का निवासी नामित प्रजाति *ग्रस एंटिगोन एंटिगोन* अब भारत मे ही सीमित है, जबकि अन्य प्रजाति *ग्रस एंटिगान शार्पीयाइ* भारत मे असम से वियतनाम और यहा तक कि ऑस्ट्रेलिया मे भी पाई जाती हे जहा ये 1960 के दशक के दौरान प्रवास कर गई थी दूसरी प्रजाति का रग इस्पाती--स्लेटी होता है, जबकि पहली की गर्दन पर सफेद पख होते ह

भारतीय उपमहाद्वीप मे नामित प्रजाति पश्चिम मे सिध से पूर्व म असम तक तथा उत्तर मे कश्मीर से दक्षिण मे गादावरी की द्रोणी तक पाई जाती थी वर्तमान मे यह उत्तर प्रदश, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार और उत्तरी महाराष्ट्र राज्यो मे बहुतायत मे पाई जाती है कुछ जोड हरियाणा और जम्मू–कश्मीर मे भी दखे जा सकते ह भारत मे *ग्रस एंटिगोन शार्पीयाइ* असम ओर मेघालय तक ही सीमित है

सारस जलासिक्त क्षेत्र, दलदल, नदी थाले, तालाब, जलाशय, नहर रिसाव क्षेत्र और द्रोणियो मे पाया जाने वाला पक्षी है यह कृषि योग्य भूमि, बजर खेत, खराब होती जमीन (खारी और जलाक्रात) तथा परती भूमि मे भी निवास करता है बच्चो की जिम्मेदारी से मुक्त जाडो को स्वय को पानी वाले इलाको तक सीमित नही रखना पडता

विशेषकर बजर और ऊसर भूमि जैसी खुली जगहे अल्पवयस्क सारसो का मिलन स्थल होती है वे दोपहर बाद और शाम को इन स्थानो पर जमा होते है आर उस समय उनकी नाचने, गोल–गोल घूमने, पख फैलाकर दौडन, चुनौती देने, झगडने, झुकने ओर पजे के बल कूदने जैसी गतिविधिया देखी जा सकती है ऐसी खुली जगहो मे ही सारस की विख्यात जोडी बनती है

नर और मादा किसी एक के मरने तक एक--दूसरे के प्रति वफादार रहते है वे हमेशा एक–दूसरे के साथ--साथ पाए जाते हे और उनका बधन उनकी एक साथ पुकार क बारबार दौर द्वारा और भी मजबूत होता है पुकारते समय नर अपने पख फैलाता है अपनी चोच को आसमान की तरफ उठाता हे और एक लबी गूजती आवाज निकालता है जवाब मे मादा आसमान की तरफ चोच करके नर की लबी पुकार का दो बार छोटे स्वर मे जवाब देती है बिगुल जैसी यह पुकार सभी सारसो की विशषता है और इसे काफी दूर तक सुना जा सकता है

सारस अपना घोसला घनी वनस्पतियो से भरे उथले तालाबो के पास बनाते है, इनका घोसला आसपास के दलदल से लाए जलीय पौधा का ढेर होता है घोसला बनाने मे मादा अहम भूमिका निभाती है घोसला *टाइफा अगूस्टेटा* की घनी पैदावार या दलदल के उभरे टीले या जलकुभी से भरे तालाब मे भी हो सकता है पानी भरे धान के खेत घोसले बनाने की एक अन्य जगह है, हालाकि किसान ऐसे घोसलो को सहन नही करते है घोसले बनाने की समयावधि जलक्षेत्र मे पानी की उपलब्धता के अनुसार जुलाई से अगस्त और दिसबर से जनवरी तक होती है अप्रैल मे भी सारसो को घोसले बनाते देखा गया है जिस इलाके मे घोसले बनाए जाते है, उसका क्षेत्रफल 0 07 से 1 वर्ग

किमी हाला हे सामान्यत मादा सारस एक बार म दो अडे देती है, जिन्हे मादा और नर बारी--बारी से सेत है अडे से चूजे 28 से 31 दिन मे निकलते है

सारस के चूजे बहुत तेजी से बडे होत है अडे से बाहर आने के कुछ ही घटो मे घोसले मे और आसपास गतिविधि प्रारभ कर देते है जब भी उनके माता–पिता उन्हे सचेत करते हे, वे दलदल मे छिप जात है वे सात से नौ महीन के बाद अपने माता–पिता पर निर्भर नही रहते उनका पालन--पोषण दलदल म उपलब्ध प्राटीनयुक्त आहार (कीडे, मोलस्क, कभी–कभी मछली) से किया जाता है वयस्क सारस का भोजन जलासिक्त क्षेत्रो के पौधा क प्रकद, घास एव प्रतृण के बीज, कीड, मोलस्क ओर साप होते है रात को उनका परिवार दलदल के टीले पर या पेड क नीचे रहता है

1988--1989 मे दक्षिण एशिया मे सारस की कुल सख्या 12 हजार आकी गई थी आशका है कि यह सख्या घट रही है इनकी जन्मदर केवल 13 प्रतिशत है, जबकि यूरेशियाई (*ग्रस ग्रस*) और सैडहिल (*ग्रस केनेडेसिस*) सारस की जन्मदर 20 से 60 प्रतिशत है सारस के चूजे लबी घास से गुजरते वक्त वन एव यूरेशियाई बिल्ली नेवले और सियार का शिकार बन जाते है जलासिक्त क्षेत्रो मे भूमि के उपयोग के तरीके मे परिवर्तन से प्रजनन और भरण–पोषण के लिए आवास की उपलब्धता मे कमी आई है फसल उत्पादन के तरीके मे हुए बदलाव, यानी परपरागत अनाज के बदले नकदी फसल उगाने के कारण सारस के भरण–पोषण पर भी असर पडा है सारसो की मृत्यु के अन्य कारण विषैले कीटनाशक, गेर कानूनी शिकार तथा ऊपर लगे तारो से टकराना भी है किसान भी अपने खेतो मे सारस क घोसला को नष्ट कर देते है ओर यहा तक कि इस पक्षी को विष भी दे देते है

हाल के अध्ययनो से सारस की सख्या आमतोर पर राजस्थान मे स्थिर लगती है और यह उत्तर प्रदेश और गुजरात मे घट रही हे हाल ही मे जून मे पूरे भारत मे की गई सारस की गणना के अनुसार, एक दिन मे करीब 2,000 सारस गिन गए

सारस क जोडे को दापत्य प्रेम का प्रतीक माना जाता है और महाकाव्य *रामायण* से इसका सबध होने के कारण भारत मे आमतौर पर इसका शिकार या उत्पीडन नही किया जाता इसलिए यह गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे फल–फूल रहा है, लेकिन बिहार ओर पूर्वी इलाको मे यह लुप्त होने क स्थिति मे आ गया है सारस की सख्या भारत के कथित पिछड इलाको मे स्थिर रही हे जहा भूमि के उपयोग का परपरागत तरीका बरकरार है, वहा अकार्बनिक खाद और कीटनाशको पर जोर दिया जाता है ओद्योगिकीकरण, शहरीकरण और आधुनिक कृषि रा सारस के आवास को खतरा है सारसो के जोडे इधर–उधर बिखरकर प्रजनन करते है और जलासिक्त भूमि की अवस्था व भोजन की उपलब्धता के अनुसार आसपास के क्षेत्र मे चले जाते हैं, इसलिए अभयारण्य बनाकर इनकी रक्षा करना कठिन है सारस की सुरक्षा का सर्वोत्तम तरीका स्थानीय लोगो को सरक्षण पहल मे शामिल करना और

उन्हे पक्षी के आवास का साफ–सुथरा रखन तथा अतिक्रमण ओर अत्यधिक दोहन से बचाने के लिए प्रेरित करना है

साराभाई, विक्रम ए

विक्रम ए सारा
साजन्य

पूरा नाम विक्रम अबालाल साराभाई (ज –12 अग 1919, अहमदावाद, भारत, मृ –1971), प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, उद्योगपति, प्रबधन विशेषज्ञ और शिक्षाविद्, जिन्होने भारत म अतरिक्ष अनुसधान की शुरुआत की

उद्योगपतियो के परिवार मे जन्मे साराभाई की आरभिक शिक्षा उनकी माता द्वारा चलाए जा रहे एक विद्यालय मे हुई स्कूल की पढाई खत्म करने क बाद वह गुजरात कॉलेज, अहमदाबाद मे दाखिल हुए, लेकिन बाद मे वह सेट जॉन्स कॉलेज केब्रिज चले गए दूसरा विश्व युद्ध शुरू होने क कारण उन्हे मजबूरन भारत लौटना पडा, जहा बगलोर मे इडियन इस्टिट्यूट ऑफ साइस मे नोबेल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिक सी वी रमन के निर्देशन मे उन्होने कॉस्मिक किरणो पर शोध किया 1945 मे वह डॉक्टरेट की उपाधि लेने के लिए केब्रिज लौट गए ओर उन्होन *कॉस्मिक रे इन्वेस्टिगेशन्स इन ट्रॉपिकल लेटिट्यूड्स* पर शोध प्रबध लिखा उन्होने भारत लौटकर अहमदाबाद मे फिजिकल रिसर्च लेबोरेट्री की स्थापना की

साराभाई की बहुआयामी रुचिया उल्लेखनीय थी वैज्ञानिक शोध मे गहन सलग्नता के बावजूद उन्होने उद्योग तथा व्यापार और विकास के कई मुद्दो मे सक्रिय रुचि ली साराभाई ने 1947 मे अहमदाबाद टेक्सटाइल इडस्ट्रीज रिसर्च एसोसिएशन की स्थापना की और 1956 तक इसके कामकाज की देखरेख की 1950 तथा 1960 के दशक मे उन्होने बडौदा (वर्तमान वदोदरा) मे कई उद्योगो की स्थापना की उन्होने देश मे तेजी से विकसित हो रहे दवा उद्योग को प्रोत्साहित किया साराभाई केमिकल्स देश मे मूल दवाओ का निर्माण करने वाली पहली भारतीय कपनी थी भारत मे व्यावसायिक प्रबधन शिक्षा की आवश्यकता को समझते हुए उन्होने 1962 मे अहमदाबाद मे इडियन इस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेट की स्थापना की

1962 मे साराभाई ने इडियन नेशनल कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च की स्थापना की, जिसे बाद मे इडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (इसरो) का नाम दिया गया उन्होने दक्षिण भारत मे थुबा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिग स्टेशन की भी स्थापना की होमी भाभा की मृत्यु के बाद 1966 मे उन्हे भारत के आणविक ऊर्जा आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया परमाणु शोध के क्षेत्र मे भाभा के काम को आगे बढाते हुए साराभाई को देश के परमाणु बिजली सयत्रो की स्थापना का श्रेय जाता है उन्होने प्रतिरक्षा के क्षेत्र मे नाभिकीय प्रौद्योगिकी को अपने देश मे ही विकसित करने की नीव रखी

सामान्य तौर पर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के सभी पहलुओ और विशेष तौर पर 'विकास के उत्तोलक' अतरिक्ष विज्ञान के इस्तेमाल के प्रति समर्पित साराभाई ने उपग्रह सचार

के जरिये शिक्षा को दूरदराज के गावो म ले जान के कार्यक्रमो की शुरुआत की और प्राकृतिक ससाधनो के उपग्रह आधारित रिमोट सेसिंग के विकास का भी आह्वान किया

साराभाई को भारत सरकार द्वारा 1966 मे पद्मश्री और 1972 म मरणोपरात पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया

सारिंदा

भारत का लोक तार वाद्य, निम्न जातियो द्वारा बजाया जाने वाला [illegible] एशिया मूल का सारिदा विभिन्न आकारो का होता है और अक्सर थैली [illegible] से मिलता-जुलता है यह बिना पर्दादार छोटी गर्दन वाला लकडी से बना [illegible] और एक [illegible] मे आडी लगी खूटिया तथा घोडे के बाल या तात के तीन तार होते [illegible] भारत के लोकप्रिय रूपातर, सारगी मे आमतौर पर धातु का बना [illegible]

सावरा

साओरा, सोरा या सौरा भी कहलाने वाली पूर्वी भारत की [illegible] मुख्यत उडीसा, मध्य प्रदेश, आध्र पदेश तथा बिहार मे पाई जाती [illegible] कुल सख्या 3,10 000 के लगभग है, जिनमे से अधिकाश उडीसा [illegible]

अधिकाश सावरा हिदू हो चुके हे और सामान्यत [illegible] मगर पहाडियो पर रहने वाले लोगो मे मुडा बोली का [illegible] पहाडी अचल के सावरा लोग व्यवसायो के आधार पर [illegible] विभाजित हे 'जाति' नामक सावरा कृषक है, आरसी' बुनकर [illegible] टोकरी बनाने वाले और 'कुबी कुम्हार है इनकी परपरागत [illegible] का ही एक विस्तृत रूप हे, जिसमे पुरुष और स्त्रिया, [illegible]

सासाराम

शेरशाह सूरी का मकबरा सासाराम, बिहार
सोजन्य क्रिस्टिना गस्कॉजिन

नगर रोहतास जिले का प्रशासनिक [illegible] बिहार राज्य पूर्वोत्तर भारत प्रमुख [illegible] पर स्थित सासाराम कृषि व्यापार केन्द्र [illegible] मिट्टी के बर्तन का काम भी [illegible] झील के मध्य मे स्थित सम्राट शेरशाह सूरी (1540 1545) का लाल बलुई पत्थर से बना मकबरा [illegible] बेहतरीन उदाहरण ह सासाराम म [illegible] का मकबरा और उनके पुत्र का [illegible] सम्राट अशोक का तीसरी शताब्दी ई पू का एक शिलालेख [illegible] 1869 म इसको नगरपालिका के रूप मे गठित किया गया जनसख्या (2001) 1 31 042

सॉ स्केल्ड वाइपर

एकाइस केराइनेटस, वाइपेरिडी कुल का विपला साप, उत्तरी अमेरिका से श्रीलका (भूतपूर्व सीलोन) तक रेगिस्तानी और शुष्क इलाके मे पाया जाता है हालाकि वाइपरो मे शायद सबसे जहरीले इस साप द्वारा एक बार डसा जाना ही अक्सर मृत्युदायी बन जाता है इसकी लबाई 60 सेमी तक होती है

सॉ स्कल्ड वाइपर जल्दी उत्तेजित होने वाला आक्रामक प्राणी है ओर साधारणत पत्थर क नीचे या कृतक बिल म छिपा रहता है यह रेत के रग का या स्लटी होता है, पीठ पर सफेद धब्बे की एक पक्ति एव प्रत्येक तरफ एक हल्की पीली टेढी–मेढी रेखा होती है शल्क खुरदरे होते है और जब साप को छेडा जाता है, तो शल्को के एक–दूसर से रगडने के कारण फुफकार जेसी आवाज निकलती है

साहा, मेघनाद एन

(ज –6 अक्तू 1893, सेवराटाली, ढाका के निकट [वर्तमान बाग्लादेश मे], भारत मृ –16 फर 1956, नई दिल्ली) भारतीय खगोलभोतिकीविद्, जो 1920 मे ऊष्मा आयनन समीकरण के विकास के लिए प्रख्यात हे, जिसे ब्रिटिश खगोलभोतिकीविद एडवर्ड ए मिल्न द्वारा सपूर्णता प्रदान की गई और जिसका प्रयोग नक्षत्रीय परिमडल मे होने वाले सभी कामो के आधार के रूप मे होता है इस समीकरण का उपयाग नक्षत्रीय वर्णक्रम को समझने के लिए किया जाता है, जो प्रकाश के स्रोत की रासायनिक सरचना के लक्षण को दर्शाता है साहा का समीकरण वर्णक्रम के स्वरूप ओर गठन को प्रकाश स्रोत के तापमान से जोडता है, इसलिए इसका इस्तेमाल तारे के तापमान की जानकारी या अन्वेषित रासायनिक तत्त्वो की सापेक्षिक प्रचुरता की गणना के लिए किया जा सकता है

साहा 1923 मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे भौतिकी के प्रोफेसर बने और 1927 मे उन्हे रॉयल सोसाइटी का फेलो चुना गया 1938 मे साहा कलकत्ता विश्वविद्यालय गए, जहा कलकत्ता इस्टिटयूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स की स्थापना मे उनकी प्रमुख भूमिका रही तथा वह इसके मानद निदेशक बन

बाद के वर्षो मे साहा ने विज्ञान के सामाजिक सबधो पर अपना अधिकाधिक ध्यान केद्रित किया ओर 1935 मे निर्भीक पत्रिका *साइस ऐड कल्चर* की स्थापना की 1951 म उन्हे निर्दलीय उम्मीदवार के रूप मे भारतीय ससद के लिए निर्वाचित किया गया उन्होने सह लेखक के रूप मे *अ ट्रिटाइज ऑन हीट* (चौथा सस्करण, 1958) और *अ ट्रिटाइज ऑन मॉडर्न फिजिक्स* (1934) की रचना की उनका सबसे महत्त्वपूर्ण शाधपत्र *आयोनाइजेशन इन द सोलर क्रॉमोस्फियर* है, जो *एस्ट्रोफिजिकल जर्नल* (1920) मे प्रकाशित हुआ
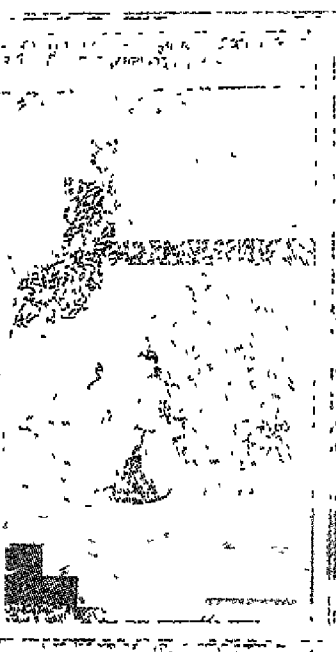
ागवी साहिबदीन द्वारा चित्रित शृखला ाघुचित्र, 1628, राष्ट्रीय सग्रहालय

माद चद्रा

साहिबदीन

(17वी शताब्दी, भारत), राजस्थानी चित्रकला की मेवाड शैली के उत्कृष्ट भारतीय कलाकार वह राजस्थानी चित्रकला के उन थोडे से कलाकारो मे से है, जिनके नाम ज्ञात है उनका नाम मेवाड की कला पर सातवी सदी के पूर्वार्द्ध तक छाया रहा मुसलमान होने के बावजूद वह हिदू विषयो म पूर्णत सिद्धहस्त थ और उन्होने हिदू धार्मिक महाकाव्यो की कई शृखलाए चित्रित की

साहिबदीन ने अमूर्त रचनाए भी चित्राकित की, जो चटकीले रगा से भरी है और धार्मिक उमग से ओतप्रोत है उनकी उपलब्ध चित्राकृतियो मे 1628 मे चित्रित *रागमाला* शृखला, जिनमे से अनेक चित्र अब भारत के राष्ट्रीय सग्रहालय मे सुरक्षित है 1648 मे बनाए गए *भागवत–पुराण* के प्रसगो के चित्र अब भडारकर ओरिएटल रिसर्च इस्टिट्यूट, पुणे मे सगृहीत है तथा 1652 मे बनाए गए *रामायण* के युद्धकाड क चित्र अब ब्रिटिश म्यूजियम, लदन मे है

सिंधिया परिवार

ग्वालियर का मराठा शासक परिवार, जिसने 18वी शताब्दी के एक कालखड मे उत्तरी भारत की राजनीति मे प्रमुख भूमिका निभाई इस वश की स्थापना रणाजी सिधिया ने की, जिन्हे 1726 मे पशवा (मराठा राज्य के प्रमुख मत्री) द्वारा मालवा जिले का प्रभारी बनाया गया 1750 मे मृत्यु होन स पहले रणोजी ने उज्जेन म अपनी राजधानी स्थापित कर ली थी बाद मे सिधिया राजधानी को ग्वालियर के पहाडी दुर्ग मे ले जाया गया

रणोजी के उत्तराधिकारियो मे महादजी सिधिया (शासनकाल, 1761–94) सभवत सबसे महान उत्तराधिकारी थे, जिन्होने पेशवा से अलग उत्तर भारतीय साम्राज्य निर्मित किया ब्रिटिश ईस्ट इडिया कपनी के साथ हुए युद्ध (1775–82) म वह पश्चिमोत्तर भारत के मान्यता प्राप्त शासक के रूप मे उभरे फ्रासीसी अधिकारियो की सहायता से उन्होने राजपूतो को हराया और मुगल बादशाह शाह आलम को अपने सरक्षण मे लिया और अतत 1793 मे पेशवा के प्रमुख सेनानायक मराठा होल्कर को हराकर पेशवा को भी नियत्रित कर लिया कितु उनके चचरे पोते दौलत राम का गभीर पराजय का सामना करना पडा 1803 मे उनका अग्रेजो से टकराव हुआ चार लडाइयो मे जनरल ग्रेरार्ड द्वारा हराए जाने पर उन्हे फ्रासीसियो से प्रशिक्षित अपनी सेना को तोडना पडा और एक सधि पर हस्ताक्षर करना पडा उन्होने दिल्ली का नियत्रण छोड दिया, लेकिन

1817 तक राजपूताना को अपने पास रखा 1818 मे सिंधिया अग्रेजो के अधीन हो गए और 1947 तक एक रजवाडे के रूप मे बने रह

सिंधी भाषा

भारतीय–आर्य भाषाओ के पश्चिमोत्तर समूह की भाषा यह भारत–पाकिस्तान उपमहाद्वीप की एक प्रमुख साहित्यिक भाषा हैं इसकी उत्पत्ति वेदो के लेखन या सभवत उससे भी पहले सिध क्षेत्र मे बोली जाने वाली एक प्राचीन भारतीय–आर्य बाली या प्राथमिक प्राकृत से हुई इस बाली का प्रभाव कुछ हद तक *ऋग्वेद* के श्लोको पर देखा जा सकता है इस परिवार की अन्य भाषाओं की तरह सिधी भी विकास क प्राचीन भारतीय–आर्य (सस्कृत) व मध्य भारतीय–आर्य (पालि, द्वितीयक प्राकृत तथा अपभ्रश) के चरणो से गुजरकर लगभग 10वी शताब्दी मे नवीन भारतीय–आर्य चरण मे प्रवेश कर गई चूकि सिध क्षेत्र अविभाजित भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर स्थित था इसलिए इसे लगातार आक्रमणो का सामना करना पडा 1,100 वर्षो से अधिक समय तक यह क्षेत्र मुस्लिम शासन मे रहा, इसलिए सिंधी भाषा मे अरबी और फारसी के शब्द अधिक है इसके बावजूद मूल शब्द–सग्रह और व्याकरण सरचना लगभग अपरिवर्तित है

भाषा के रूप से सिंधी सिध क्षेत्र मे बोली जाती है, जो 1947 मे भारत के विभाजन के बाद पाकिस्तान का हिस्सा बन गया परिणामस्वरूप, उस समय के सामाजिक–राजनीतिक सकट से मजबूर होकर 12 लाख सिधीभाषी हिदुओ को भारत मे शरण लेनी पडी भारत मे सिंधियो का कोई विशेष भाषाई राज्य नही है, लेकिन उनकी न्यायोचित माग को देखते हुए 10 अप्रैल 1967 को सिंधी को सविधान की आठवी अनुसूची मे मान्यता प्रदान की गई सिंधी आबादी समूचे भारत मे फैली हुई हैं ओर गुजरात (अहमदाबाद व वडोदरा), महाराष्ट्र (मुबई, उल्हासनगर व पुणे), राजस्थान (अजमेर, जयपुर, जोधपुर व उदयपुर), उत्तर प्रदेश (आगरा, कानपुर, लखनऊ व वाराणसी), मध्य प्रदेश (भोपाल इदोर, ग्वालियर व रायपुर) तथा दिल्ली के नगरो व शहरो मे इनकी सघनता है शैक्षिक, साहित्यिक और सास्कृतिक क्षेत्रो मे सिंधी भाषा ने भारत और पाकिस्तान म उल्लेखनीय प्रगति की है सिध मे इसका उपयोग सरकारी भाषा के रूप मे होता है पाकिस्तान की 1981 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, वहा लगभग डेढ कराड लोगो ने सिंधी का अपनी मातृभाषा स्वीकार किया है दूसरी तरफ, भारत मे 1991 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, देश क विभिन्न प्रातो मे रहने वाले सिंधीभाषी लोगो की सख्या लगभग 22 लाख है अधिकाश सिंधी व्यापारिक समुदाय के है, लगभग 20 लाख सिंधी विश्व के अन्य देशो मे बसे हुए है

इस भाषा मे स्वरात शब्दो की प्रचुरता है, विशेषकर 'उ' से समाप्त होने वाले शब्द (सिंधी भाषा मे यह विशेषता प्राकृत मूल से विरासत मे आई है), इसमे चार स्वरित अत स्फोटात्मक ध्वनिग्राम (सहसा अतर्श्वास से उत्पन्न ध्वनि ग, ज, द, ब) है सिंधी मे पाच नासिक ध्वनिग्रामो (न, न, न, न, म) की पूरी श्रृखला है कर्मवाच्य और भाववाचक

कानून की पुस्तक) और *काफिया* (एक व्याकरणशास्त्रीय काव्य), जो मौलवियो के लिए काफी महत्वपूर्ण है, उनके लिए कोई मायने नही रखती थी

शाह अब्दुल करीम (1536–1623) बेहद आध्यात्मिक व्यक्ति थे और अपने चारो ओर की पीडाग्रस्त मानव जाति म रुचि लेते थे उनके छद इगित करत है कि उन्हे तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियो की सही–सही जानकारी थी

महामती प्राणनाथ (1618–94) ने हिदू धर्म और इस्लाम के मध्यम मार्ग पर चलने का प्रयास किया और अपने समय मे एक मिश्रित धर्म की रचना मे प्रमुख भूमिका निभाई उन्होने ईश्वर और अपने बीच दास्य (मालिक–नौकर सबध) के स्थान पर सख्य भाव (मित्रता) की स्थापना की

शाह अब्दुल लतीफ (1689–1752) की कृतियो मे सामाजिक प्रतिकार को स्पष्ट अभिव्यक्ति मिली वह सिधी भक्ति आदोलन के प्रतिनिधि रचनाकार थे, गुरु नानक (1469–1539) की शिक्षाओ के जरिये इस आदोलन का सिध पर व्यापक प्रभाव पडा उन्होने मुल्लाओ और पडो की एक समान आलोचना की और जमीदारो, मुखियाओ और निर्धनो के बीच समानता का सदेश दिया उनकी भाषा के चुनाव और सामान्य जन की लोकप्रिय प्रतिश्रुतियो से पता चलता है कि उन्होने एक तरह स सामाजिक लोकतत्र की स्थापना की चेष्टा की

सचल सरमस्त (1739–1829) अपने कलाम या शायरी म स्पष्टवादिता के प्रतिपादक थे और विभिन्न धर्मो के अनुयायियो मे विभेद नही करते थ

चैनराय बचोमल सामी (1743–1850) भक्ति आदोलन के अतिम चरण मे साहित्यिक परिदृश्य पर आए उन्होने बैत (जिन्हे वे श्लोक कहते थे) लिखे, जिनमे भक्ति आदोलन द्वारा समर्थित धारणाए प्रतिबिबित थी एक ईश्वर, एक अस्तित्व, धर्म, जाति और सपत्ति के आधार पर समानता

दलपत राय (1769–1849) ने सामान्यत वही बाते कही, जो उनके वरिष्ठ समकालीन चैनराय बचोमल सामी ने अपनी कविता मे पहले कही थी और कई बार उन्होने अपने ज्ञान का भी परिचय दिया जब भी साप्रदायिक नफरत फूटी, उन्होने उसकी पुरजोर आलोचना की

1843 मे अग्रेजो द्वारा सिध के विलय के बाद गद्य काल मे आधुनिकता की प्रधानता हो गई इस काल के चार महान गद्य लेखक थे– कौरोमल चदनमल खिलनानी (1844–1916), मिर्जा कालिच बेग (1853–1929), दयाराम गिडुमल (1857–1927) और परमानद मेवाराम (1865–1938) इन लेखको ने मौलिक लेखन के अतिरिक्त सस्कृत, हिदी, फारसी तथा अग्रेजी पुस्तको का रूपातरण किया कौरोमल चदनमल ने *आर्यनारी चरित्र* का प्रकाशन किया (1905, भारतीय–आर्य महिला) तथा पचायत प्रणाली, स्वास्थ्य, कृषि और लोककथाओ पर व्यापक लेखन किया उनकी शैली सरल और भव्य थी मिर्जा कालिच बेग ने, जिन्हे कौरामल ने 'किताबो की मशीन' नाम दिया

था, 300 स अधिक पुस्तका का प्रकाशन किया जो सृजनात्मक और तर्कमूलक थी उस काल के सबसे विद्वान सिधी लेखक दयाराम गिडुमल अपने परिष्कृत और भावपूर्ण गद्य के लिए विख्यात थे, जो उनके द्वारा रचित *जपजी साहेब* (1891), *भगवद्गीता* (1893) और *योग दर्शन* (1903) म परिलक्षित होता है परमानद मेवाराम की मासिक पत्रिका *जोत* मे उनके तथा अन्य लेखका के निबध पकाशित होते थ ये निबध अपनी विषय–वस्तु मे समृद्ध और विविध होते थ और इनकी शैली स्पष्ट तथा प्रभावशाली थी इन्हे *दिल बहार* (1904) और *गुल फूल* (दो खड, 1925–36) मे सकलित किया गया है इन्होने 1910 मे एक सिधी–अग्रेजी शब्दकोश का पकाशन भी किया स्वतत्रता से पहले के आधुनिक सिधी साहित्य मे न सिर्फ सिधी की शाब्दिक अभिव्यक्तिया, बल्कि सिधी भावनाओ और काल्पनिक धरातलो पर भी गाधीजी का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है
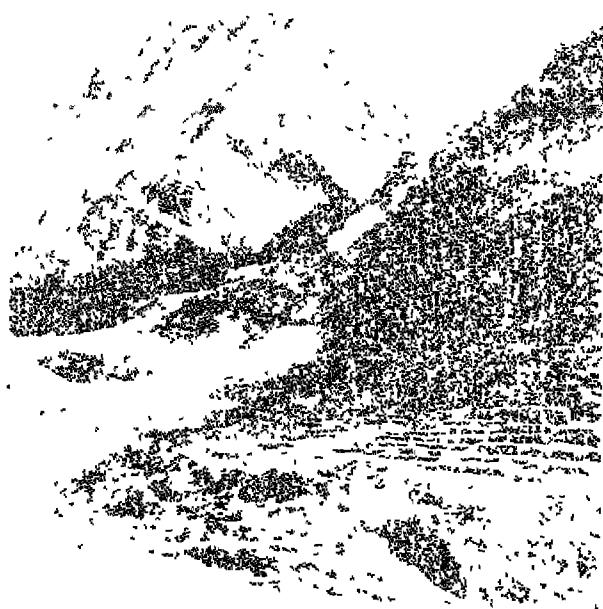
सिधु नदी

विश्व की सबसे लबी नदियो म से एक, दक्षिण एशिया की 2 900 किमी लबी पराहिमालयी नदी इसका कुल अपवाह क्षत्र 11 65 500 वर्ग किमी है, जिसमे से 4,53,250 वर्ग किमी हिमालय पर्वत व निचली पहाडिया और शेष पाकिस्तान के अर्द्ध–शुष्क मैदानो म है नदी का वार्षिक बहाव 207 अरब घन मी है, जो नील से दुगुना और दजला और फरात के योग स तिगुना है नदी का नाम सस्कृत शब्द सिधु (नदी या धारा) से व्युत्पन्न है यह ऋग्वेद (लगभग 1500–1200 ई पू) म उल्लिखित है और देश के नाम का स्रोत है

नीर के लद्दाख क्षत्र म सिधु नदी
अनिल महरोत्रा

भौतिक लक्षण

नदी का उद्गम दक्षिण पश्चिमी तिब्बत मे 5,500 मीटर की ऊचाई पर है पश्चिमोत्तर मे यह लगभग 322 किमी तक बहती है और जम्मू कश्मीर की दक्षिण–पूर्वी सीमा को लगभग 4,572 मीटर की ऊचाई पर पार करती है लद्दाख मे लेह स कुछ दूर आगे बाई ओर स इसमे इसकी पहली सहायक नदी जास्कर

मिलती है 241 किमी तक इसी दिशा मे बहते हुए इसमे सिधु प इसकी उल्लेखनीय सहायक नदी श्योक दाई ओर से मिलती हे श्योक से इसके सगम क बाद और कोहेस्तान क्षेत्र तक इसमे कराकोरम शृखला नगा पर्वत गिरिपिड ओर कोहस्तान उच्चभूमि की ढालो पर स्थित विशाल हिमनदो द्वारा जलापूर्ति की जाती हे श्योक शिगार, गिलगित और अन्य धाराए हिमनदो के जल को सिधु तक ले जाती हे चूकि इस क्षेत्र मे आज की बर्फबारी इन विशाल हिमनदो का पोषण करन के लिए काफी नही है, इसलिए यह लगभग तय है कि कराकोरम क विशाल हिमनद हिमालय क अतिम हिमयुग के उत्तरजीवी है

शिगार बाल्टिस्तान मे स्कार्दू के निकट दाई ओर से सिधु मे मिलती है नीचे जान पर बुजी मे एक अन्य सहायक नदी, गिलगित दाई ओर से इसमे मिलती है कुछ और किमी आगे नीचे की ओर एस्टर नदी बाए किनारे की सहायक नदी के रूप मे मिलती है इसके पश्चात सिधु पश्चिम की ओर बहती है, कश्मीर की सीमा पार करती है और दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम की ओर मुडकर पाकिस्तान मे प्रवश करती है वहा यह नगा पर्वत गिरिपिड (8,126 मीटर) की परिक्रमा 4,572 मीटर से 5,182 मीटर गहरे ओर 19 से 26 किमी चौडे खड्डो म करती है 1,219 से 1,524 मीटर की ऊचाइयो की प्रवण ढलानो पर पहाडो के टुकडे नदी पर खतरनाक ढग से लटके हुए है

इस अत्यत ऊचे क्षेत्र से निकलने के बाद सिधु पाकिस्तान मे स्वात व हजारा क्षेत्रो के बीच एक तेज पहाडी नदी की तरह बहती हुई तारबेला बाध के जलाशय तक पहुचती है काबुल नदी अटक के ठीक ऊपर सिधु मे मिलती है, जहा सिधु 610 मीटर की ऊचाई पर बहती है और यहा इस पर रेल व सडक पुल बना है अत मे यह कालाबाग के निकट के नमक के क्षेत्र को पार कर पजाब के मैदान मे प्रवेश करती है

सिधु की सबसे उल्लेखनीय सहायक नदिया पूर्वी पजाब के मेदान से आती है ये पाच नदिया, झेलम, चिनाब, रावी, व्यास और सतलुज भारत व पाकिस्तान के बीच बटे भूभाग को पजाब (पाच नदियो की भूमि) नाम देती है

पजाब की नदियो का पानी मिलने के बाद सिधु अधिक विशाल हो जाती है और बाढ के मौसम (जुला से सित) मे कई किमी चौडी रहती हे वहा यह लगभग 79 मीटर की ऊचाई पर बहती है इस चरण मे इसकी कम गति के फलस्वरूप इसके तल मे गाद जमा हो जाती है, जो रेतील मैदान क स्तर से ऊचा उठ गया है, वास्तव मे सिध का अधिकाश मैदान सिधु द्वारा जमा किए गए जलोढक स बना है बाढ को रोकन के लिए अवरोध बनाए गए है, कितु कभी–कभी ये टूट जाते है और काफी बडे क्षेत्र जलमग्न होने से नष्ट हो जाते है 1947 और 1958 मे ऐसी बाढे आई बडी बाढो के समय नदी कभी–कभी अपना मार्ग बदल देती है

थट्टा के निकट सिधु का डेल्टा चरण आरभ होता है और यह कई उपनदियो मे बट जाती है, जो कराची के दक्षिण–दक्षिणपूर्व मे सागर मे मिलती है. यह डेल्टा 7,770 वर्ग किमी या अधिक का क्षेत्र घेरता है और तट पर लगभग 209 किमी मे फैला है नदीमुख

क्षेत्र की असमतल सतह पर विद्यमान और परित्यक्त मार्गों का सजाल है तट से 8 से 32 किमी का अतर्क्षेत्र ज्वारो से जलमग्न रहता है

जल विज्ञान

सिधु नदी प्रणाली प्रमुख नदियों मे बर्फ का पानी है इनके बहाव मे वर्ष भर भिन्नता रहती ह, पानी का बहाव सर्दी के महीनो (दिस से फर) मे न्यूनतम होता है वसत और आरभिक ग्रीष्म (मार्च से जून) मे पानी का स्तर ऊचा होता हे, वर्षा क मौसम (जुला से सित) मे बाढ आती है, जो कभी–कभी विनाशकारी भी होती है सिधु तथा इसकी सहायक नदिया अपने जलग्रहण क्षेत्रों के ऊपरी पहाडी भाग मे अपना सारा जल प्राप्त करती है अत जहा ये निचली पहाडियो से निकलती है, वहा इनका वेग अधिकतम होता है मैदानो म सतह का थोडा सा बहाव जुडता है और यहा वाष्पीकरण और रिसाव से पानी की अधिकाश हानि होती है दूसरी ओर मॉनसून के महीनो के बाद के समय मे रिसाव द्वारा पानी की प्राप्ति होती है सिधु की मुख्यधारा म मध्य दिसबर से मध्य फरवरी तक पानी का स्तर न्यूनतम रहता है इसके पश्चात नदी का स्तर पहले धीमे और फिर मार्च के अत मे तजी से वढना शुरू होता हे बहुधा मध्य जुलाई से मध्य अगस्त के बीच जलस्तर उच्च होता है उसक बाद अक्तूबर की शुरुआत तक यह तेजी से घटता हे और फिर धीरे–धीरे कम होता है वार्षिक तौर पर सिधु नदी प्रणाली की कुल जलापूर्ति के आधे से अधिक पानी का वहन सिधु करती हे झेलम और चिनाब मिलकर लगभग एक–चौथाई और रावी, व्यास और सतलुज मिलकर इस प्रणाली के कुल जल के शष भाग की आपूर्ति करती है

यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त भौगोलिक ओर ऐतिहासिक साक्ष्य है कि सभ्यता के आरभ से कम से कम 4,000 वर्ष पूर्व मोहेजोदाडो सभ्यता के समय से दक्षिणी पजाब से सागर तक सिधु अपना मार्ग बदलती रही है रोहरी–सक्खर मे यह चूना पत्थर के कगारो के बीच परिसीमित थी, किंतु उसके पश्चात सामान्यत पश्चिम की ओर सरकते हुए वहा से हट गई, विशषकर डेल्टा क्षेत्र मे विचलन के कारण लगभग 200 वर्ष पूर्व यह कच्छ के रण म बहने लगी ऊपरी सिधु मे सिधु पिछली सात शताब्दियो मे पश्चिम की ओर 16 किमी से 32 किमी तक सरक गई है यह नदी अब कुछ हद तक डेल्टा के शीर्ष की ओर सहवान से थट्टा तक ऊची जमीन के कारण रुक गई है, किंतु भविष्य मे इसके मार्ग बदलने की सभावना को निराधार नही माना जा सकता प्रागैतिहासिक काल मे चिनाब, रावी, व्यास और सतलुज नदियो के मार्ग बदलने के भी प्रमाण हैं

जलवायु

उद्गम से मुहान तक सिधु के क्षेत्र मे वार्षिक वर्षा 125 से 500 मिमी के बीच होती है पाकिस्तान के पहाडी क्षेत्र के अलावा सिधु घाटी उपमहाद्वीप के शुष्कतम भाग मे स्थित है सर्दियो मे पश्चिमोत्तर हवाए ऊपरी सिधु घाटी मे 102 से 203 मिमी तक वर्षा कराती है, जो गेहू और जौ की अच्छी उपज के लिए आवश्यक है घाटी के पहाडी क्षेत्र म वर्षा मुख्यत

हिम के रूप मे होती है सिधु के पानी का बडा भाग कराकोरम, हिदुकुश और हिमालय पर्वतो की हिम और हिमनद के पिघलने से आता हे मॉनसूनी वर्षा (जुला से सित) शेष जल प्रदान करती है सिंधु घाटी की जलवायु सिध व निचले पजाब के अर्द्ध मरुस्थलीय क्षेत्रो मे कोहेस्तान, हुजा, गिलगित, लद्दाख और पश्चिमी तिब्बत की तीव्र उच्च पहाडी जलवायु तक विविध है वहा जनवरी का तापमान उत्तर मे हिमाक से नीचे रहता हे, जबकि सिध व पजाब मे जुलाई का तापमान अधिकतम 38^0 से तक होता है विश्व के सबसे गर्म स्थाना मे स एक जेकबाबाद, सिधु नदी के पश्चिम मे ऊपरी सिध मे स्थित है, यहा गर्मियो मे अधिकतम तापमान 49^0 से दर्ज किया जाता हे

वनस्पति व पशु

सिधु घाटी मे जलवायु और वनस्पति मे गहरा नाता है सिध के निचले सिधु क्षेत्र मे नदी से 16 से 40 किमी दूर मरुस्थलीय परिस्थितिया पाई जाती है और क्षेत्र मे अधिकतर रेत और घास पाई जाती है बाढ या नहरो द्वारा सिचाई से थोडी खती सभव होती है ऊपरी सिध और पजाब मे ईधन के लिए लकडी की कटाई से अधिकाश प्राकृतिक वनस्पति का विनाश हो गया है इसके अलावा प्राकृतिक अपवाह मे लबे समय तक मानवीय हस्तक्षेप और शिवालिक मे वनोन्मूलन से भूजल की स्थितियो ओर वनस्पति का ह्रास हुआ है ऐसा प्रतीत होता है कि प्रागैतिहासिक और इतिहास के आरभिक काल मे मध्य सिधु क्षेत्र अभी की तुलना मे अधिक वनाच्छादित था सिकदर महान के भारत के अभियानो (लगभग 325 ई पू) के वर्णनो और 16वी शताब्दी और बाद मे मुगल शिकारो के दस्तावेज बहुत से वनो का सकेत देते है आज भी सिधु के मैदान मे नदी के निकट ही बबूल के काटेदार जगल है और पोस्त, मोठ, भटकटैया और चिकवीड की झाडिया है नदी के निकट पैपा जैसी ऊची घास के विस्तार हैं और नदियो और नहरो के किनारे झाऊ वृक्षो और कुछ घनी झाडियो की कतारे पाई जाती है किंतु कही भी प्राकृतिक वन नही है सिधु के पूर्व मे पजाब मे थाल क्षेत्र के कुछ भागो मे वनीकरण के प्रयास सफल रहे है नदी के निकट के कृषि क्षेत्रो मे बहुत से पेड है और पहाड के नीचे की पट्टी का स्वरूप घास के मैदान जैसा है सिधु क्षेत्र के उत्तरी भागो मे शकुधारी वृक्ष प्रचुर सख्या मे है

सिधु नदी मछलियो के मामले में सामान्यत समृद्ध है सबसे प्रसिद्ध किस्म हिलसा हे और यह नदी मे पाई जाने वाली सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण खाद्य मछली है सिध मे थट्टा कोटरी और सुख्खर मछली पकडने के महत्त्वपूर्ण केद्र है स्वात और हजारा के बीच के क्षेत्रो मे यह नदी कर्बुरी (ट्राउट) की पैदावार के लिए प्रसिद्ध है मछलीपालन बाधो के सग्रहण क्षेत्रो मे महत्त्वपूर्ण हो गया है सिधु के मुहाने के निकट तट पर करीब 241 किमी की लबाई मे कई सकरी खाडिया और उनके बाद छिछला सागर है इस क्षेत्र मे सागरीय मछलिया प्रचुर मात्रा मे है, पॉमफ्रेट और झीगे आर्थिक रूप से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, ये नवबर से मार्च तक पकडे जाते है कराची बदरगाह के निकट प्रशीतित सग्रहण और विपणन की सुविधा वाला एक आधुनिक मत्स्याश्रय

बनाया गया है झींगों का निर्यात व्यापार विकसित हुआ है और खारे जल की मछलिया का विपणन पाकिस्तान के विभिन्न भागा मे किया जाता है

जनजीवन

सिधु क ऊपरी किनारो के आसपास के निवासी (उदाहरणार्थ, तिब्बती, लद्दाखी और बाल्टी) दक्षिण एशिया की अपेक्षा मध्य एशिया से अधिक समानताए दर्शाते है ये एशियाई समूह के है, जो तिब्बती भाषाए बोलते हे और बोद्ध धर्म के अनुयायी है (हालाकि बाल्टियो ने इस्लाम को अपना लिया है) पशु–चारण स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण है मुख्य हिमालय शृखला मे सिधु की प्रमुख सहायक नदियो की स्रोत धाराए एक अतरवर्ती क्षेत्र बनाती हे, जहा तिब्बती प्रभाव भारतीय पहाडी क्षेत्र क प्रभावो के साथ घुलमिल गया है

सिधु घाटी मे अन्य जगहो के निवासी भारोपीय वश के मुस्लिम लोग है, जो अनेक सहस्राब्दियो तक भारतीय उपमहाद्वीप मे पश्चिम की ओर से प्रवेश करने वाला के आक्रमण को प्रतिबिबित करते है पश्चिमी कश्मीर के ऊबड–खाबड पहाडो पर दर्दीय बोलने वाले समूहो (काफिर, कोहेस्तानी, शिना और कश्मीरी गूजर) का वास है, जिनकी भाषाए क्षेत्र की अधिकाश भाषाओ की ही तरह भारोपीय मूल की है हुजा नदी घाटी म बहुत समय से रहने वाले बुरुशो एक भाषा बोलते है (बुरुशास्की), जिसका इस क्षेत्र की अन्य भाषाओ से कोई ज्ञात सबध नही है ये समूह पशुपालन के साथ ही सिचाई पर आधारित खेती भी करते है

अफगानिस्तान की जातियो स निकट से जुडे पश्तोभाषी पठान पश्चिमोत्तर पाकिस्तान मे पाए जाते है पठान जातियो मे यूसुफजई विशालतम हे व अन्य है अफरीदी, मुहमद, खट्टक और वजीर पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर सीमात प्रात मे हमेशा आजाद रहने की इच्छा रखने वाले दुर्दांत पठान अपने परपरागत जातीय ढाचे और राजनीतिक व्यवस्था को ज्यो का त्यो रखे हुए है

सिधु नदी के पश्चिम मे क्वेटा से मकरान तट तक फैली भूमि बलूची जनजातियो का क्षेत्र है प्राचीन फारसी से व्युत्पन्न एक भाषा बोलने वाले बलूची घुमतू लोग है, जो ऊट, मवेशी, भेड और बकरिया पालते हे, हालाकि कुछ ने स्थायी कृषि को अपना लिया है कलात के आसपास की खानाबदोश ब्राहुई जातिया भूमध्य क्षेत्र के एक प्रवासी समूह के अवशेष प्रतीत होती है, जिनका स्थान सिधु घाटी मे आए अपेक्षाकृत नए प्रवासियो ने ले लिया है ब्राहुई दक्षिण भारत की भाषाओ से सबधित एक द्रविड आधारित भाषा है

सिधु जल से सिचित उत्तरी मैदानो मे कृषक समूहो का वास हे, जो पजाबी और सबधित बोलिया बोलत है ये सिधु घाटी की जनसख्या का अधिकाश भाग है भाषा, प्रजाति और जातीय सगठन वहा समूहो को अलग–अलग करके देखने मे प्रमुख भूमिका नही निभाते पजाबियो मे प्रमुख विभेदकारी तत्त्व जाति है, हालाकि यह हिदू प्रथाओ

के धार्मिक और कर्मकाडीय लक्षणो से मुक्त है मुसलमान जाट और राजपूत प्रमुख पजाबी समुदाय है

निचली सिधु घाटी म कृषको का निवास है, जो सिधी और उससे सबधित बोलिया बोलते है क्षत्र के कई सास्कृतिक चिह्न अत्यधिक प्राचीन प्रतीत होते हैं सिधियो को अपने क्षेत्रीय वैशिष्ट्य पर गर्व है कराची, यद्यपि सिध मे है, लेकिन उर्दूभाषी बहुलता वाला शहर है, जहा पजाबी और मुहाजिर (1947 मे उपमहाद्वीप क विभाजन के बाद पाकिस्तान मे भारत से आए प्रवासी) बसे हुए हे

सिधु सभ्यता

सिधु घाटी सभ्यता या हडप्पा सभ्यता भी कहलाती है, भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीनतम ज्ञात शहरी सस्कृति, जिसकी पहली पहचान 1921 मे पजाब के हडप्पा नामक स्थान पर और फिर 1922 मे सिध मे सिधु नदी के पास मोहेजोदाडो मे की गई थी अब ये दोनो स्थान पाकिस्तान मे है बाद मे सभ्यता के प्रमाण कराची से 480 किमी पश्चिम मे अरब सागर तट के निकट सुतकागेडोर दोर और पूर्वोत्तर मे 1600 किमी दूर शिवालिक पहाडियो की तराई मे स्थित रोपड तक मिले है बाद म हुई खोज से दक्षिण की ओर पश्चिमी तट पर खभात की खाडी तक, कराची के दक्षिण–पूर्व मे 800 किमी और पूर्व की ओर दिल्ली के उत्तर मे 50 किमी, यमुना नदी के बेसिन तक इस सभ्यता का अस्तित्व स्थापित हुआ है इसलिए यह तीन आरभिक सभ्यताओ मे निर्णायक तौर पर सबसे विस्तृत है अन्य दो सभ्यताए हे– मेसोपाटामिया और मिस्र, जो इसस कुछ पहले आरभ हुई थी

जानकारी के अनुसार, इस सभ्यता मे पाच विशाल नगर . हडप्पा, मोहेंजोदाडो, कच्छ मे धोलावीरा, पाकिस्तान मे अब सूख चुकी हकरा नदी की निम्नभूमि के पास गनवेरीवल, और सतलुज–जमुना विभाजन क्षेत्र मे द्रष्डवती नदी के पास राखी गढी शामिल थे इनमे से हडप्पा व मोहेजोदाडो, दोनो की परिधि 5–5 किमी से ऊपर थी अन्य तीन नगर इनसे काफी छोटे थे और उनकी परिधि 1 5 किमी और 2 5 किमी के बीच थी इनके अलावा 100 से भी अधिक नगर व गाव थ, जो अपेक्षाकृत छोटे आकार के थे ऐसा लगता है कि यह एक विशाल साम्राज्य था, जिसका राजनीतिक केद्र मोहेजोदाडो था इस सभ्यता मे साक्षरता थी और इसकी लिपि की, जिसमे लगभग 350 मूल वर्ण थे पहचान आशिक तौर पर फिलहाल द्रविड

सिधु घाटी की एक मुहर
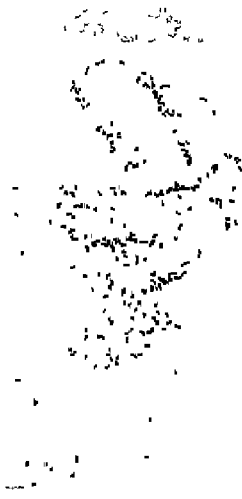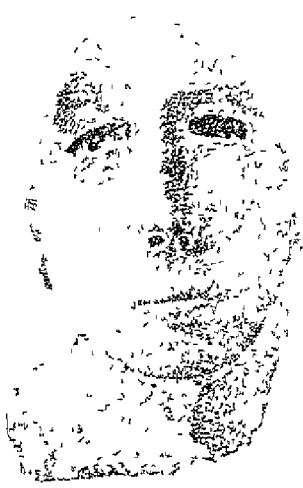
हजोदाडो स प्राप्त पुरुष और स्त्री आकृतियो क रखाचित्र
जन्य गिगोरी एल पॉसहल

मानी गइ है इस सभ्यता की तिथिया लगभग 2600–1800 ई पू की प्रतीत होती है

यद्यपि हडप्पा के स्थलो और उसकी पूर्ववर्ती आरभिक सिधु सभ्यता क स्थलो की सास्कृतिक परपराओ मे निश्चित समानताए है, फिर भी इन बस्तियो के इतिहास क बदलाव इन्ह अतीत रूप से जुडे रहने का सकेत नही देते सिधु सभ्यता राज्य सस्थाओ के उदय की साक्षी थी, जिसमे अतीत मे मौजूद सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सगठनो मे बदलाव आया ही हागा इस सभ्यता मे आजीविका का मुख्य साधन कृषि और पशुपालन था तथा मछली एव पशुओ का शिकार इसमे पूरक भूमिका निभाते थे गहू और छह क्यारियो वाली जौ की खेती की जाती थी, गोल मटर, सरसो, तिल और खजूर की कुछ गुठलिया एव कपास के कुछ पुरातन अवशेष भी मिले है पालतू पशुओ मे कूबडधारी मवेशी, भेड और बकरिया शामिल थी

मेसोपोटामिया के साथ दूरस्थ व्यापार हडप्पा की अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण अग था मेसोपोटामिया को भेजी जाने वाली वस्तुओ मे ताबा, इमारती लकडी, सोना, हाथीदात, सेलखडी, लाजवर्द (नीलमणि), मोती और नक्काशीदार गोमेद थे इनमे कई वस्तुए दूरदराज के इलाको से प्राप्त की जाती थी उत्तरी राजस्थान, ओमान और शायद बलूचिस्तान से ताबा, दक्षिण भारत व अफगानिस्तान से सोना तथा अफगानिस्तान से ही नीलमणि लाए जाते थे

सिधु घाटी सभ्यता के सबसे सुपरिचित कला नमूने बहुधा सेलखडी से बनी अनेक छोटी मुहरे (सील) है विशिष्ट प्रकार तथा अद्भुत गुणवत्ता वाली इन मुहरो पर कई तरह के पशु अकित है, जिनमे वास्तविक– जैसे हाथी, बाघ, गैडा और हिरन तथा काल्पनिक, अक्सर मिश्रित भी, दोनो तरह के पशु शामिल है कभी–कभी मानव आकृतियो को भी शामिल किया जाता था सिधु पाषाणशिल्प के कुछ उदाहरण मिले है, जो सामान्यत छोटे आकार के है और मानव मूर्तिया है पशुओ और मानवो की मिट्टी से बनी छोटी–छोटी मूर्तिया भी यहा बडी मात्रा मे प्राप्त हुई है

अत कैसे हुआ, निश्चित नही है, लेकिन इसके लिए प्राकृतिक आपदाओ राज्य व्यवस्था के 'सरचनात्मक दबावो' को जिम्मेदार ठहराया जा ोदाडो के उत्तरकालीन स्तरो से यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है की दृष्टि से मकान घटिया होते गए, बल्कि लगता है कि उनमे गए जो शायद सामाजिक उथल–पुथल का परिचायक है राजनीतिक अन्य सूचक भी है खडित सरचनाए और बहुमूल्य वस्तुओ के भडार सुरक्षा को दर्शाते है मोहेंजोदाडो मे तोडी गई पाषाण प्रतिमाए और आतरिक सघर्ष और आक्रमणो का पता चलता है प्रतीत होता है कि चानक लगा, लेकिन नगर आर्थिक और सामाजिक पतन के कगार पर ुका था

ाद हडप्पा की कई उत्तरवर्ती ताम्र–पाषाण सस्कृतिया आई, जो किसी क तारतम्यता प्रदर्शित नही करती ये ताम्र–पाषाण सस्कृतिया ग्रामीण र छोटे पैमाने पर थी मिट्टी के बर्तनो के आकार और उन पर रोगन ल्पता को सिधु घाटी सभ्यता या हडप्पा परपरा का जीवित रहना नही ए

लिओ), *फैलिडी* कुल का बडा और शक्तिशाली विडाल, बाघ के बाद ल है कहानियो मे 'जगल का राजा' कहलाने वाला यह जानवर ी सबसे अधिक जाना–पहचाना जगली पशु रहा है अब यह मुख्यत के दक्षिणी क्षेत्र मे पाया जाता है एशियाई नस्ल के कुछ सौ सिह राज्य के गिर राष्ट्रीय उद्यान मे कडे सरक्षण मे रह रहे है सिह के ो मे घास के खुले मैदान है

एन्वायर्नमेंट एजुकेशन अहमदाबाद

मी मुद्रा मे सिह
डॉ वेकट राम नरसया

सिह लबे शरीर, छोटे पैर, बडे सिर व मजबूत मासपेशियो वाला विडाल है इसम न
व मादा के आकार–प्रकार मे भिन्नता पाई जाती है एक पूर्ण नगरक नर लगभग 1
मीटर से 21 मीटर लबा होता है, जिसमे इसकी 1 मीटर लबी पूछ शामिल नही
कधे तक इसकी ऊचाई लगभग 12 मीटर और वजन 170 किग्रा से 230 किग्रा
बीच होता है मादा, यानी सिहनी छोटे कद की होती है, जिसकी लबाई 15 मीट
कधे तक ऊचाई 09 मीटर से 1 मीटर तक और वजन 120 से 180 किग्रा होता ह
सिह की खाल का रग हल्का पीला, नारगी–भूरा या चादी जैसे रगतो से लेकर गा
भूरे रग का होता है और इसकी पूछ के सिरे पर खाल की तुलना मे गहरे रग के बाल
का गुच्छा होता है सिहनी अधिकतर भूरी–पीली या रेतीले रग की होती है नर क
विशेषता उसके अयाल होते है, जो अलग–अलग सिहो मे भिन्न–भिन्न प्रकार के होत
है कुछ मे अयाल बिल्कुल नही होते, कुछ मे चेहरे पर झालर की तरह होते है औ
कुछ मे ये लबे और लहराते हुए होते है जो सिर के पीछे से शुरू होते हुए गर्दन
कधे को ढकते हुए गले और छाती से झालर बनाते हुए पेट से जुडे होते है कुछ मे
अयाल और झालर अत्यत गहरे रंग, लगभग काले रग के होते है, जो सिह को राजसी
अदाज प्रदान करते है

* राम नरसया

ो मे एकमात्र ऐसा जानवर है, जो समूह या झुड मे रहता है एक समूह
कई पीढियो की एक--दूसरे से सबधित सिहनिया होती है, जिनके साथ
या दो वयस्क नर होते है, जो अपने गृहक्षेत्र की सीमा की रक्षा करते
े साथ सहवास करते है नर सिह परिवार मे बाहर से आते है, जो
थ बाहरी नरो से बचाने की अपनी क्षमता के अनुसार, उस परिवार मे
कई साल तक रहते हे एक परिवार मे कम से कम 4 से लेकर
सदस्य तक हो सकते हे, लेकिन औसतन इसमे 15 सदस्य होते है
की अपनी निर्धारित क्षेत्र--सीमा होती हे, जहा शिकार बहुतायत मे
ा क्षेत्र--सीमा 20 वर्ग किमी तक सीमित हो सकती है, लेकिन शिकार
ेत्रो मे यह 400 वर्ग किमी तक होती है नर शावको को तीन वर्ष का
स निष्कासित कर दिया जाता है और यह तब तक (पाच वर्ष की आयु
ग की तरह घूमता रहता है, जब तक वह अन्य किसी झुड पर कब्जा
ा न हासिल कर ले लेकिन कई वयस्क नर जीवनपर्यत खानाबदोश
ादा शावक यौन परिपक्वता हासिल करने पर परिवार मे ही रहती हे,
अन्य परिवारो मे जाने के लिए बाध्य कर दिया जाता है एक परिवार
मे भिन्न--भिन्न समूहो मे घूमते है, लकिन शिकार का पीछा करने या
लिए ये इकट्ठा हो सकते है

सिह अपनी गर्जना और गध के निशान से अपने क्षेत्र की घोषणा करता है सिह की विख्यात गर्जना आमतोर पर रात के शिकार से पहले शाम को तथा फिर प्रभात होने पर उठन से पहले होती है नर सिह झाडियो, पेडो और मैदान पर पेशाब द्वारा तीखी गध छोडकर भी अपनी उपस्थिति की घोषणा करता है झाडियो से शरीर रगडने और मलत्याग द्वारा भी गध छोडी जाती है

सिह छोटे बारहसिगा और बबून से लेकर भैस और दरियाई घोडे जैसे बडे जतुओ तक, कई तरह के जानवरो का शिकार करता है, लेकिन वह मध्यम से बडे आकार के खुरवाले जानवरो, जैसे विल्डरबीस्ट, जेब्रा, इपाला और अन्य मृगो का शिकार करना पसद करता है सिह किसी भी प्रकार के प्राप्य मास को खा लेता है, चाहे वह सडा हो या ताजा, जिसे वह बल प्रयोग कर या डराकर लकडबग्घे से हासिल कर लेता है झुड के लिए अधिकाश शिकार सिहनी करती है शिकार करते समय सिह हवा की दिशा का ध्यान नही रखता, जो इसके शिकार तक इसकी गध पहुचा देती है सिह थोडा सा भागकर थक जाता है, इसीलिए शिकार मे इसे अधिकतर असफलता मिलती है इसीलिए सिहनी या सिह, हर उपलब्ध आवरण का इस्तेमाल करते हुए धैर्यपूर्वक शिकार का पीछा करते है और फिर अचानक छोटी, किंतु तेज दौड से शिकार पर झपट पडते है शिकार पर कूदने के बाद सिहनी उसकी गर्दन पर झपटकर उसका दम घुटने तक दात गडाए रहती है इतने मे परिवार के अन्य सदस्य शिकार खाने के लिए घेरा बना लेते है शिकार के मास के लिए होने वाली झडपो मे नर को सर्वाधिक और शावको को कम या कुछ भी नही मिलता सिहनिया कई बार समूह मे शिकार करती है समूह के सदस्य विपरीत दिशाओ से शिकार पशुओ के झुड को घेरकर भगदड मे शिकार का प्रयास करते है

सिह और सिहनी पेट भर शिकार का मास खा लेते है और फिर उसके बाद इसके समीप ही कई दिनो तक आराम करते है एक बार मे 34 किग्रा से अधिक मास खाने के बाद एक वयस्क नर दुबारा शिकार की खोज मे जाने से पहले एक सप्ताह तक विश्राम कर सकता है यदि क्षेत्र मे शिकार बहुतायत मे है, तो नर और मादा, दोनो एक दिन मे दो या तीन घटे ही शिकार की खोज मे निकलते है जबकि करीब 20 घटे विश्राम करने, सोने और बैठने मे गुजार देते है

यद्यपि नर और मादा, दोनो बहुगामी होते है और वर्ष भर प्रजनन कर सकते है लेकिन मादा आमतौर पर परिवार के एक या दो नरो से ही मैथुन करती है कैद मे सिह अधिकतर हर वर्ष प्रजनन करते है लेकिन जगल मे ये दो वर्षो मे एक से अधिक बार प्रजनन नही करते गर्भावधि लगभग 108 दिनो की होती है और एक बार मे एक से छह शावक जन्म ले सकते है, हालाकि औसतन दो से चार शावक ही जन्म लेते है नवजात शिशु असहाय और बद आखो वाला होता है और इसकी मोटी त्वचा पर गहरे निशान होते है, जो उम्र के साथ–साथ मिट जाते है तीन महीने की उम्र से शावक अपनी मा का अनुसरण करने योग्य हो जाता है और छह से सात महीने का होने पर मा का दूध पीना छोड देता है 11 महीने का होने तक वह शिकार मे भाग लेने लगता

है लेकिन सभवत दो साल का होने तक वह अपने बूते जीवनयापन नही कर सकता है उसमे यौन परिपक्वता तीन से चार वर्ष के बीच आती है शावको मे मृत्युदर अधिक होती है और वयस्क आठ से दस वर्ष से अधिक नही जीते, जिसका मुख्य कारण है इसानो और अन्य सिहो द्वारा इन पर हमला तथा इनके शिकार द्वारा प्रतिरक्षा मे चुभाए गए सीग और पैरो की मार, लेकिन बदी अवस्था मे सिह 25 वर्ष या उसस भी अधिक जीवित रह सकता है

अभिनूतन युग, (प्लाइस्टोसीन 16 लाख से 10 हजार वर्ष पूर्व) के दौरान सिहो का भौगोलिक विस्तार व्यापक था सपूर्ण उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका, बाल्कन के अधिकाश भागो, अनातोलिया और मध्य–पूर्व से लेकर भारत तक इनका आवास था लगभग 10 हजार वर्ष पूर्व व उत्तरी अमेरिका से विलुप्त हो गए, लगभग 2 हजार वर्ष पूर्व बाल्कन स और ईसाइयो के धर्मयुद्ध के दौरान वे फिलिस्तीन से भी विलुप्त हो गए 20वी सदी के अत मे इनकी सख्या घटकर 10 हजार ही रह गई राष्ट्रीय उद्यानो के बाहर स्थित इनके पर्यावास के क्षेत्र कृषि मे काम आने लगे तजानिया के सेरेगेती और अन्य राष्ट्रीय उद्यानो मे पर्यटको के आकर्षण का केंद्र होने के कारण इनका सरक्षण सुरक्षित प्रतीत होता है

कैद मे सिह का अन्य विडालो के साथ प्रजनन करवाया जाता है सिह और मादा बाघ के वर्णसकर को लाइगर कहते है, जबकि बाघ और मादा सिह से टाइगॉन ओर तेदुए और मादा सिह से लिओपोन पेदा होते है अमेरिकी, मैक्सिकी या पहाडी सिह *फेलिसी* जाति के, नई दुनिया के सदस्य है

एशियाई सिह

एशियाई सिह अफ्रीकी सिह से काफी मिलता–जुलता है सिहो के बारे मे प्रचलित आम धारणा से कि ये जगल मे रहने वाले, हिरनभक्षी बडे विडाल है, एशियाई सिह भिन्न है कुछ आकृतिमूलक और सरचनात्मक भिन्नताओ के कारण अफ्रीकी सिह और एशियाई सिह को अलग किया जा सकता है प्रमुख पहचान उदरपट्टी है, जो लबाई मे आगे की ओर बढी पेट की त्वचा है यह सभी एशियाई सिहो और मुख्यत नर मे अधिक दृष्टिगोचर होती है बहुत कम अफ्रीकी सिहो मे यह विशेषता मिलती है एशियाई सिहो मे अफ्रीकी सिहो की तरह सुदर अयाल नही होते, खासकर सिर के ऊपर एशियाई नर सिह के कान साफ–साफ दिखाई देते है अफ्रीकी सिहो की तुलना मे औसतन एशियाई सिह छोटे होते है वयस्क नर का वजन 160 से 190 किग्रा के बीच जबकि मादा का वजन 100 से 120 किग्रा होता है वयस्क नर के पेट की तरफ त्वचा का रग हल्के पीले से सफेद सा होता है और ऊपर तथा किनारे की ओर यह हल्के से गहरे भूरे या पीले रग का होता है नर का अयाल काले से सुनहरे पीले रग का हो सकता है शिशुओ के पूरे शरीर पर जन्म से ही काले से गाढे भूरे रग के निशान होत है धीरे–धीरे ये हल्के पड जाते है और तीन वर्ष की आयु तक पूर्णतया समाप्त हो जाते है

एशियाई सिहो के विलुप्त होने का भीषण खतरा है प्रकृति और प्राकृतिक ससाधनो के सरक्षण के लिए अतर्राष्ट्रीय सघ (आई यू सी एन) ने इन्हे सकटापन्न प्रजाति घोषित किया है भारत मे वन्य जीवन सरक्षण के राष्ट्रीय कानून 'वन्य जीवन सुरक्षा अधिनियम–1972' ने इन्हे अनुसूची I (न्यायिक सुरक्षा का उच्चतम स्तर) म रखा है और खतरे मे पडी प्रजातियो के अतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन (सी आई टी ई एस) मे इन्हे परिशिष्ट–I मे दर्शाया गया है

एशियाई सिह को विलुप्त हाने वाली प्रजाति घोषित करने का मुख्य कारण है इसका बहुत कम इलाको मे पाया जाना एतिहासिक दृष्टि से एशिया म सिह मध्य–पूर्व, जैसे सीरिया, इजराइल, ईरान, इराक से आकर उत्तरी और मध्य भारत के अधिकाश इलाको, यहा तक कि पूर्व मे बिहार राज्य तक फैल गए पिछली दो शताब्दियों मे एशियाई सिह की सख्या अचानक कम होती गई है अरब प्रायद्वीप मे इसके अस्तित्व की कोई जानकारी नही है घास के मैदानो और झाडीदार वन क्षेत्रो का कृषि क्षेत्र बनाने और इनका शिकार होने के कारण इनकी सख्या मे यह कमी आई है आज यह प्रजाति गुजरात राज्य के जूनागढ के नवाब द्वारा किए गए प्रयासो के कारण ही बची हुई है 20वी शताब्दी के शुरू मे उन्होने पश्चिमी भारत के गुजरात राज्य मे सौराष्ट्र प्रायद्वीप के गिर जंगलो मे अपनी शिकारगाह के रूप म सुरक्षित 1,412 वर्ग किमी के इलाके को, सिहो के लिए राजकीय अभयारण्य घोषित कर दिया था 19वी सदी के अत और 20वी सदी के प्रारभ मे इन सिहो की सख्या 12 से 20 के करीब रह गई थी, जो अब गिर राष्ट्रीय उद्यान और वन्य जीव अभयारण्य के नाम से प्रसिद्ध इस इलाके मे बढकर लगभग 300 हो गई है वर्तमान समय मे एशिया मे सिह स्वतन्त्र रूप से इसी अभयारण्य मे है कुछ सिह, गिरनार पहाडियो या तटीय क्षेत्रो के जगली इलाको मे रहने लगे है, जो कही–कही तो गिर अभयारण्य की सीमा से 40 किमी से अधिक दूर है ये सिह ऐसे इलाको मे है, जहा खेत और मनुष्यो की बस्तिया जगल के पास है, इसलिए इन्हे भोजन के लिए पालतू मवेशियो, जैसे ऊटो और गायो पर निर्भर रहना पडता है

1800 से लेकर 1970 के दशक तक एशियाई सिहो के लिए मुख्य खतरा शिकारियो तथा बडे पैमाने पर उनके पर्यावास को पहुचाई गई क्षति से था अब सिहो को सबसे बडा खतरा गिर के जगलो के पास बढते हुए औद्योगिकीकरण और वनक्षेत्र मे स्थित मदिरो के विस्तार के कारण उनके पर्यावास की कमी से है गिर के जगलो से गुजरने वाली सडको पर बढता यातायात भी इनके लिए एक अडचन है गिर म सिहो के छोटे और अलग–थलग पडे समूह के आनुवशिक और सख्यागत प्रभाव बराबर खतरा बने हुए हे, जो किसी भी महामारी के आने पर गिर से सिहो का नामोनिशान तक मिटा सकते है यदि उनके आवास पर बीमारी या इसानी प्रभाव ने कोई समस्या पैदा की, तो सपूर्ण एशिया के जगलो मे एकमात्र यही पाए जाने वाले सिहो का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा

एशियाई सिंहो को नमी वाले पर्णपाती वनो से लेकर गर्म मरुस्थलो समेत चरागाहो शुष्क पर्णपाती वनो तथा कांटेदार एव नदीय जगलो के विस्तृत पर्यावासो मे रहना पडता है गिर जगल एक शुष्क पर्णपाती वन ह, जिसमे बीच–बीच के कुछक हिस्से घास के, कुछ नदीय और कुछ कटीले पेडयुक्त है ये जगल हल्के स ऊचे–नीचे पहाडी क्षेत्र मे स्थित है सिहनी और शावको के लिए जलीय जगलो का पर्यावास अत्यत आवश्यक है, क्योकि लबे सूखे मौसम मे ये क्षेत्र शिकार और विश्राम, दोनो के लिए उपयुक्त है

गिर के सिहो का सुस्पष्ट पारिस्थितिकी गुण यह है कि यह जगल मे रहने वाली प्रजाति है (सिह अपेक्षाकृत अधिक खुले पर्यावास के लिए जाने जाते है), जो हिरनो का शिकार करती है (ऐसा करने वाली यही एकमात्र सिह प्रजाति है) गिर मे सिह सदेव मानव बस्तियो के करीब रहे है ओर मवेशियो का शिकार करते रहे है सामान्यत ये चीतल (*एक्सिस एक्सिस*) का शिकार करते है, जबकि साबर (*सर्वस यूनिकलर*) इनका सर्वाधिक पसदीदा शिकार है अभी भी मवेशी इनके भोजन का महत्त्वपूर्ण अग हे सिह की परभक्षण पारिस्थितिकी मे नाटकीय बदलाव मुख्य रूप से खुर वाले जगली जानवरो, विशेषकर गिर म चीतल की सख्या मे हुई नाटकीय बढोतरी के कारण आया हे 1970 के दशक के आरभ मे खुर वाले सभी जगली जानवरो की कुल सख्या 6,000 से कुछ ही अधिक थी, वहीं गिर मे 1993 मे इनकी अनुमानित सख्या 40 हजार से ऊपर थी

गिर के सिह को अफ्रीकी सिह से अलग करने वाला प्रमुख व्यावहारिक लक्षण यह है कि गिर और इसके आसपास सिहो और इसानो के बीच हर क्षण लगभग सघर्षहीन तालमेल बना हुआ है गिर परिसर के भीतर 2,000 से अधिक लोग रहते है और कई हजार लोग पर्यटन, तीर्थयात्रा या आकाष्ठीय वनोत्पादो के सग्रहण के लिए यहा आते है तब भी उन पर सिह के हमले की घटना मात्र अपवादस्वरूप ही होती है

गिर के सिहो का सामाजिक ढाचा भी अफ्रीकी सिहो की तरह ही है, झुड के केंद्र म आपसी सबधो से जुडी सिहनिया और उनके शावक होते है और सबधी सिहो का समूह (सामान्यत यही देखा गया है) झुड से सबद्ध होता है ये नर पाच वर्ष तक एक क्षेत्र पर अधिकार बनाए रख सकते हैं दोनो स्थानो के सामाजिक सगठनो मे एक प्रमुख अतर है कि गिर मे वयस्क नर और मादा के आपसी सबध कच्चे ही होते है सहवास के समय और साबर या पालतू भैस जैसे बडे शिकारो को खाने के अलावा गिर मे नर और मादा सिह शायद ही कभी साथ दिखते है अफ्रीकी खुले चरागाहो की तुलना मे गिर के जगलो का धना आवरण सभवत नर के शिकार मे अधिक मदद देता हे यहा मादा के बजाय नर को मवेशियो का शिकार करते हुए ज्यादा देखा गया है प्राय मध्यम आकार के चीतल (वयस्क का वजन 50 किग्रा) के शिकार द्वारा मादा से अलग अपना भोजन उपलब्ध कर लेना अच्छी नीति है, क्योंकि इस तरह झुड के अन्य सदस्यो का भी पोषण हो पाता है

सिहो को वर्ष भर प्रजनन करते देखा गया है सबसे अधिक शावक, शरद ऋतु के अत से ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत (फर से अप्रै) तक जन्म लेते है एक बार मे एक से पाच शावक जन्म लेते है सिहनी तीन वर्ष की उम्र मे प्रजनन के लिए तैयार हो जाती है नर को सफल प्रजनन योग्य बनन से पहल किसी क्षेत्र पर अधिकार हासिल करना पडता है प्राय नर पाच वर्ष का होने के बाद ही प्रजनन योग्य बनते है

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जगल मे एशियाई सिहो का अस्तित्व बचाए रखने के लिए केवल गिर मे इनकी सख्या की रक्षा और प्रबधन करना ही पर्याप्त नही है, हालाकि यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है विलुप्त होती प्रजातियो की छोटी और विलग आबादी को कइ किस्म के सकटो का सामना करना पडता है यह सकट तब और भी बढ जाता है, जब इनकी आबादी एक क्षेत्र विशेष मे ही सिमटकर रह गई हो वास्तव मे, इन सिहो मे से कुछेक को गिर से विस्थापित कर एसे ही एक ओर खुले अभयारण्य मे रखना एकमात्र पहल होगी, जो सही मायने मे इनके सरक्षण की सभावना बढाएगी ऐसी एक पहल 1995 मे की गई थी मध्य भारत मे कुनो वन्य जीव अभयारण्य और इसके आसपास के जगल सिहो के लिए ऐसी शरणस्थली बनान के लिए चुन गए और मध्य प्रदश का वन विभाग तथा भारत सरकार इस स्थान को तैयार करने के लिए प्रयासरत है सबसे पहले अभयारण्य के लिए चुने स्थान के केंद्रीय क्षेत्र म स्थित आदिवासी गावो का वहा से हटाकर उन्हे जगलो से बाहर की ओर बसाया जाएगा इसके बाद सिहो को यहा लाने से पहले अभयारण्य वाले इलाके मे शिकार–योग्य जानवरो की सख्या बढाने के प्रयास किए जाएगे यह एक प्रमुख राष्ट्रीय सरक्षण पहल है ऐसे प्रयासो क सफल होने मे कुछ समय अवश्य लगेगा लेकिन यदि इन्हे सावधानी से क्रियान्वित किया गया तो भारत मे सिहो के सरक्षण के स्तर को और बल मिलेगा

सिह, गुरदयाल

(ज –10 जन 1933, जेतो, पजाब) आम आदमी की बात कहन वाले पजाबी भाषा के विख्यात कथाकार कई पसिद्ध लखको की तरह उपन्यासकार के रूप मे गुरदयाल सिह की उपलब्धि को भी उनके आरभिक जीवन के अनुभवो के सदर्भ मे देखा जा सकता है 12–13 वर्ष की आयु मे, जब वह कुछ सोचने-समझने लायक हो रहे थे, पारिवारिक परिस्थितियो के कारण उन्हे स्कूल छोडना पडा, ताकि बढई के धधे मे वह अपने पिता की मदद कर सके गुरदयाल का जीवन केवल शारीरिक मेहनत तक सिमट गया, जिसमे कोई बौद्धिक या आध्यात्मिक तत्त्व नही था

सिह
भारतीय ज्ञानपीठ

स्कूल छोड देने के बाद भी उन्होने अपने स्कूल के प्रधानाध्यापक से सपर्क बनाए रखा, जिन्होने गुरदयाल की प्रतिभा को पहचाना और अपना अध्ययन निजी तौर पर जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया गुरदयाल ने स्कूल छोडने के लगभग 10 वर्ष बाद स्वतत्र छात्र के रूप मे मैट्रिक की परीक्षा

उत्तीर्ण की उनके हितैषी प्रधानाध्यापक ने एक सरकारी प्राइमरी स्कूल मे अध्यापक की नौकरी दिलाने मे भी उनकी मदद की

1966 मे उनका पहला उपन्यास *मढी दा दीवा* प्रकाशित हुआ, जिसमे एक दलित और एक विवाहित जाट महिला के मौन प्रेम की नाटकीय प्रस्तुति थी यह दुखात प्रेम कहानी इतनी सहजता और सरलता से अभिव्यक्त की गई कि पाठक कथाशिल्प पर उनकी अद्भुत पकड और अपने पात्रों व सामाजिक परिवेश की उनकी गहरी समझ से प्रभावित हुए बिना नही रह सके इसमे दलित वर्ग की गरीबी और उनके भावात्मक असतोष का वर्णन अत्यत सहजता से किया गया इसी कारण पूरे लेखकीय जीवन मे उन्हे मित्रहीन के मित्र की तरह जाना जाता रहा हे कथाकार के रूप मे उनका शिल्प इतना समर्थ है कि अपनी महत्त्वपूर्ण कृति *परसा* मे उन्होने अपने नायक के जीवन के अप्रत्याशित उतार–चढावो का विस्तृत और सफलतापूर्वक निरूपण किया है इस उपन्यास के नायक के तीन बेटे है पहला खेल प्रशिक्षक है, जो इग्लैड मे जाकर बस जाता है, दूसरा पुलिस अधिकारी है, जिसकी जीवन शैली अपने पिता के जीवन से बिल्कुल अलग हे, तीसरा बेटा नक्सली हो जाता है और एक पुलिस मुठभेड मे मारा जाता है *परसा* आधुनिक भारतीय कथा साहित्य के एक अविस्मरणीय चरित्र की तरह अपनी छाप छोडता है

अपने आसपास के यथार्थ को प्रामाणिकता और विलक्षण कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करना गुरदयाल सिह की विशिष्टता है और यही उनके सभी उपन्यासो को अदभुत रूप से पठनीय बनाती है

प्रमुख कृतिया उपन्यास– *मढी दा दीवा* (1964), *अणहोए* (1966), *रेत दी इक्क मुट्ठी* (1967), *कुवेला* (1968), *अध चानणी रात* (1972), कहानी– *सग्गी फुल्ल* (1962), *चान्न दा बूटा* (1964), *रुखे मिस्से बदे* (1984), *बेगाना पिड* (1985), *करीर दी ढीगरी* (1991), नाटक– *फरीदा राती वड्डीया* (1982), *विदायगी दे पिच्छी* (1982), *निक्की मोटी गल* (1982), गद्य– *लेखक दा अनुभव ते सिरजन परकिरिया*

गुरदयाल सिह को साहित्य अकादमी पुरस्कार (1975), पजाब साहित्य अकादमी पुरस्कार (1989), सोवियत लैड नेहरू पुरस्कार (1986), शिरोमणि साहित्यकार पुरस्कार (1992), पद्मश्री (1998) और ज्ञानपीठ पुरस्कार (1999) से सम्मानित किया गया

सिह, चौधरी चरण

(ज–23 दिस 1902, नूरपुर, उत्तर प्रदश, भारत, मृ–29 मई 1987, नई दिल्ली) भारतीय राजनेता, जो थोडे समय तक प्रधानमत्री रहे (1979–80)

चरण सिह एक वकील बने और 1929 मे भारतीय राष्ट्रीय आदोलन मे शामिल हो गए भारत की स्वतत्रता के लिए सघर्ष करते हुए वह कई बार जेल भी गए 1937 से वह सयुक्त प्रात (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की विधानसभा के लिए निर्वाचित हुए और 1967–68

द हिंदू

तथा 1970 मे राज्य के मुख्यमत्री बने 1977 मे उन्होने किसान व कृषि आधारित अपने भारतीय क्रातिकारी दल का मोरारजी देसाई की जनता पार्टी के साथ गठबधन किया और देसाई की गठबधन सरकार मे गृह मत्री (1977–78) और उप–प्रधानमत्री (1979) रहे दलीय सघर्ष के कारण जनता गठबधन 1979 मे छिन्न–भिन्न हो गया और उसी वर्ष जुलाई मे चरण सिह अपनी पूर्व राजनीतिक प्रतिद्वद्वी इदिरा गाधी, जिन्होने आपातकाल (1975–77) के दौरान उन्हे जेल भिजवाया था, के समर्थन से प्रधानमत्री बन गए प्रधानमत्री बनने के एक महीने के भीतर चरण सिह सरकार से इदिरा गाधी, ने समर्थन वापस ले लिया और चरण सिह ने जनवरी 1980 मे चुनाव होने तक कामचलाऊ सरकार चलाई चुनाव मे जीतकर इदिरा गाधी फिर से सत्तासीन हो गई चरण सिह फिर कभी किसी उच्च पद पर नही आए

सिंह, जैल

जरनैल सिह भी कहा जाता हे, (ज –5 मई 1916, सधवा, पजाब, भारत, मृ –25 दिस 1994, चडीगढ), राजनीतिज्ञ, भारत क सातवे राष्ट्रपति (1982–87) और इस औपचारिक पद पर निर्वाचित होने वाले पहले सिक्ख, पजाब (कृषि सपन्न राज्य, जहा की अधिकाश आबादी सिक्ख हे) की स्वतत्रता की माग करन वाले उग्रवादी सिक्खो को सिक्खो के सबसे पवित्र धार्मिक स्थल, अमृतसर के स्वर्ण मदिर से बाहर निकालने के लिए भारतीय सना की कार्यवाही (1984) के वह एक बबस दर्शक बने रहे

मात्र 15 वर्ष की आयु मे जैल सिह ब्रिटिश हुकूमत का विरोध करने वाले सिक्ख सगठन, अकाली दल, की राजनीति मे सक्रिय हो गए श्री सिह ने सिक्खो की पवित्र पुस्तको का पारपरिक अध्ययन किया और इन पुस्तको मे महारत हासिल करने पर उन्हे ज्ञानी की उपाधि प्राप्त हुई 1938 मे उन्होने अपने गृह जिला फरीदकोट मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस से सबद्ध एक राजनीतिक सगठन, प्रजा मडल, की स्थापना की इस बगावती काम के लिए पाच वर्ष की सजा का प्रावधान था कारावास के दौरान ही उन्होने जैल सिह नाम रखा 1947 मे भारत के स्वतत्र होने के बाद सिह सासद मे (1956–62) और पजाब के मुख्यमत्री (1972–77) पद पर रहे जब 1977 मे प्रधानमत्री इदिरा गाधी चुनाव हारकर सत्ता से बाहर हो गई, तब भी सिह उनका समर्थन करते रहे 1980 मे सत्ता मे लौटने के बाद इदिरा गाधी ने उनकी वफादारी क फलस्वरूप उन्हे गृह मत्री का पद दिया वह इस पद पर 1982 तक रह, जिसके बाद उन्हे काग्रेस (इ) की ओर से राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार नामाकित किया गया कई लोगो का मानना है कि श्री सिह को राष्ट्रपति पद देना गाधी द्वारा पजाब के आतकवादियो को सतुष्ट करने की कोशिश थी जून 1984 मे स्वर्ण मदिर मे भारतीय सेना की कार्यवाही के चार माह बाद 31 अक्तूबर 1984 को श्रीमती गाधी के सिक्ख अगरक्षको ने उनकी हत्या कर दी जैल सिह ने श्रीमती गाधी के पुत्र राजीव को प्रधानमत्री बनाया, लेकिन

जल्द ही दोनो मे अनबन हो गई सिह ने निजी डाक की सरकारी सेसरशिप की अनुमति देने वाले 1987 के एक विधेयक पर हस्ताक्षर करने से इनकार करके सरकार से अपने सबध और भी बिगाड लिए दिसबर 1994 मे एक कार दुर्घटना मे गभीर रूप से घायल हाने के कारण उनकी मृत्यु हो गई

सिह, मिल्खा

(ज –20 नव 1935, पाकिस्तान), विख्यात धावक और किसी ओलिपिक एथलीट मुकाबले मे फाइनल तक पहुचने वाले पहले भारतीय पुरुष

मिल्खा सिह
साजन्य द हिंदू

देश के विभाजन क दौरान अनाथ हुए मिल्खा सिह 1947 मे पाकिस्तान से भारत आए जीविकोपार्जन के लिए वह एक ढाब मे काम करने लगे और बाद मे भारतीय सेना मे शामिल हो गए 1956 मेलबोर्न ओलिपिक के प्रारभिक चरणो मे जीत हासिल करके उन्होने 1956 मे भारतीय खेल जगत पर अपनी छाप छोडी

1957 से 1961 तक 100 मीटर, 200 मीटर और 400 मीटर की दौडो मे सफलता प्राप्त करके वह राष्ट्रीय एथलीट परिदृश्य पर छाए रहे 1958 के टोकियो एशियाई खेलो मे उन्होने 200 मीटर (21 6 सेकड) और 400 मीटर (47 सेकड) की दौड मे जीत हासिल की इसी वर्ष बाद मे उन्होने राष्ट्रमडल खेलो मे स्वर्ण पदक प्राप्त किया, लेकिन 1960 मे हुए ओलिपिक खेलो मे 400 मीटर की फाइनल दौड मे वह कास्य पदक जीतने से (0 1 सेकेड स) बाल–बाल चूक गए और चौथे स्थान पर रह उडन (फ्लाइग) सिक्ख कहलाने वाले मिल्खा सिह आज तक ओलिपिक रिकॉर्ड तोडने वाले अकेले भारतीय है साथ ही 45 6 सेकेड का उनका समय एक राष्ट्रीय रिकॉर्ड है, जिसे 38 वर्षो तक कोई नही तोड पाया सिह ने 1962 मे जकार्ता म हुए एशियाई खेलो मे स्वर्ण पदक (400 मीटर) जीता और तीन अन्य धावको दलजीत सिह, जगदीश सिह और माखन सिह के साथ मिलकर एक और स्वर्ण पदक (4X400 मीटर रिले) हासिल किया

1969 मे सिह को पद्मश्री और हेल्म्स पुरस्कार से सम्मानित किया गया सेवानिवृत्त होने के बाद उन्हे पजाब मे खेल विभाग का निदेशक नियुक्त किया गया शौकिया गॉल्फ खेलने वाले अपने पुत्र चिरजीव को उन्होने इस खेल क लिए प्रेरित किया भारत के बेहतरीन गॉल्फ खिलाडियो मे से एक चिरजीव ने एशिया तथा यूरोप, दोनो जगह अपनी छाप छोडी हे

सिह, वी पी

पूरा नाम विश्वनाथ प्रताप सिह, (ज –25 जून 1931, इलाहाबाद, भारत), राजनीतिज्ञ और सरकारी अधिकारी, जो 1989–90 के दौरान भारत के प्रधानमत्री रहे

विश्वनाथ प्रताप सिह
सौजन्य द हिंदू

सिह की शिक्षा इलाहाबाद और पूना (वर्तमान पुणे) विश्वविद्यालयो मे हुई और 1969 मे काग्रेस पार्टी के सदस्य के रूप म वह अपने गृह राज्य उत्तर प्रदेश मे विधानसभा के सदस्य बने 1971 मे वह लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए और 1974 मे प्रधानमत्री इदिरा गाधी न उन्हे वाणिज्य उपमत्री नियुक्त किया 1976–77 मे वह वाणिज्य मत्री रहे और जब 1980 मे इदिरा गाधी सत्ता मे लौटी, तो वह उत्तर प्रदेश के मुख्यमत्री पद पर नियुक्त हुए, जिस पर वह 1982 तक रहे 1983 मे उन्होने फिर से वाणिज्य मत्री का पदभार ग्रहण किया

1984 मे इदिरा गाधी की मृत्यु के बाद उनके पुत्र तथा प्रधानमत्री के रूप मे उनके उत्तराधिकारी राजीव गाधी ने वी पी सिह को वित्त मत्री नियुक्त किया इस पद पर काम करत हुए सिह ने व्यापार पर सरकारी नियत्रण कम करने और कर–चोरी के लिए सजा का प्रावधान किया, जिसके लिए उन्हे चारो ओर से प्रशसा मिली जनवरी 1987 मे रक्षा मत्री के पद पर स्थानातरित किए जाने के बाद हथियारो की खरीद मे घोटाले की उनकी जाच को रोके जाने पर उन्होने उसी वर्ष राजीव गाधी मत्रिमडल से इस्तीफा दे दिया

इसके तुरत बाद वी पी सिह ने सरकार और काग्रेस (इ) पार्टी से इस्तीफा दे दिया जल्द ही उन्होने मध्यमार्गी विपक्षी पार्टियो का एक राष्ट्रीय गठबधन तैयार किया, जिसे राष्ट्रीय मोर्चा का नाम दिया गया दिसबर 1989 मे हुए आम चुनाव म इस मार्चे ने भाग लिया इस चुनाव के बाद राष्ट्रीय मार्चे के नेता के रूप मे दो अन्य प्रमुख विपक्षी दलो के सहयोग से सिह गठबधन सरकार बनाने मे कामयाब रहे उन्हे 2 दिसबर 1989 को भारत के प्रधानमत्री पद की शपथ दिलाई गई मार्च 1990 मे राज्य विधानसभा चुनावो के बाद सिह की सत्तारूढ गठबधन सरकार का भारतीय ससद के दोनो सदनो पर नियत्रण हो गया, लेकिन धार्मिक और जातिगत मुद्दो पर गठबधन मे फूट पड गई और ससद मे अविश्वास मत पारित होन के बाद 7 नवबर 1990 को सिह न इस्तीफा दे दिया अगस्त 1990 मे मडल आयोग की सिफारिशो को लागू करने और पिछडी जातियो तथा दलित समुदायो के लिए केंद्र सरकार की नौकरियो मे 27 प्रतिशत सीटो के आरक्षण के निर्णय के बाद यह घटनाक्रम हुआ बिहार के पूर्व मुख्यमत्री बी पी मडल (1917–82) द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट मे भारत मे वर्ग–जाति स्तरीकरण को पुनर्परिभाषित किया गया था इस रिपोर्ट की अनुशसाओ को लागू करने के लिए सिह को उत्तर भारत की ऊची जातियो क हिदुओ की आलोचना का शिकार होना पडा उनकी अपनी पार्टी के अनेक सदस्यो ने उनका साथ छोड दिया, जिनमे सबसे पहला नाम चद्रशेखर का है, जो जनता दल के विक्षुब्धो के एक समूह का नतृत्व करते हुए वी पी सिह के गठबधन से अलग हो गए

सिह सभा

19वी सदी के अत तथा 20वी सदी की शुरुआत मे उत्तरी भारत के धार्मिक समूह सिक्खो का शैक्षिक एव साहित्यिक आदोलन यह ईसाइयो एव आर्य समाजियो (हिदू सुधारवादी) की धर्म प्रचारक गतिविधियो तथा सिक्खो को वापस हिदू बनाने के विरोध मे शुरू हुआ इसका मुख्य उद्देश्य सिक्ख गुरुओ की शिक्षा का फिर से प्रसार पजाबी भाषा मे धार्मिक साहित्य का प्रकाशन तथा निरक्षरता के खिलाफ अभियान था सिह सभा सक्रिय रूप से उस समय पजाब पर शासन कर रहे अग्रेजो के प्रति वफादार रही, जिसके बदले मे उसे प्रशासको का सरक्षण मिला अग्रेजो के सहयोग से पजाब के विभिन्न हिस्सो मे सिक्ख विद्यालय और महाविद्यालय स्थापित किए गए

सिकदर महान

(ज –356 ई पू, पेला, मकदूनिया, मृ –13 जून 323 ई पू, बेबीलोन), मकदूनिया या मेसीडोनिया के राजा (336–323 ई पू), 'अलेक्जेडर III' या 'मेसीडोनिया का अलेक्जेडर भी कहलाते है सिकदर ने फारसी साम्राज्य को उखाड फेका और मकदूनिया की सेना भारत तक ले गए तथा क्षत्रीय राज्यो के यूनानी ससार की नीव डाली 13 वर्ष से 16 वर्ष की उम्र तक उन्होने अरस्तू से शिक्षा पाई, जिन्होने दर्शन, औषधिशास्त्र तथा वैज्ञानिक अनुसधान मे सिकदर की रुचि जागृत की किंतु बाद मे सिकदर अपने गुरु के इस सकीर्ण दृष्टिकोण से असहमत हो गए कि गैर ग्रीक लोगो को दास समझा जाए 336 ई पू मे अपने पिता और शासक राजा फिलिप II की हत्या के बाद सिकदर को सेना द्वारा मान्यता दी गई तथा वह निर्विरोध अपने पिता के उत्तराधिकारी बने उन्होने तुरत लिनसेस्टिस के राजकुमारो को मृत्युदड दिया, जो राजा फिलिप की हत्या से सबधित माने गए थे और उस वर्ग के सभी लोगो को मौत के घाट उतार दिया, जो उनके विरोधी थे और उनके सभावित प्रतिद्वद्वी हो सकते थे इसके बाद उन्होने दक्षिण की ओर कूच किया, कमजोर थेसिली पर कब्जा किया कॉरिथ मे हुए ग्रीक सम्मेलन मे उन्हे एशिया पर अगले आक्रमण के लिए (जिसकी योजना का निर्माण और सूत्रपात राजा फिलिप द्वारा किया जा चुका था) महासेनाधिपति नियुक्त किया गया

भारत पर आक्रमण

327 ई पू मे सिकदर 35 हजार सैनिको की पुनर्सज्जित सेना तथा पुनर्सगठित नायक दल के साथ बेक्ट्रिया से निकले सभवत बामियान तथा गोरबद घाटी से होते हुए उन्होने हिदुकुश पार किया, जहा उन्होने अपनी सेना को दो भागो मे विभाजित किया आधी सेना दो घुडसवार सेनापतियो, हिफेस्टीयन तथा परडिकस, के नेतृत्व मे खेबर दर्रे से होकर भेजी गई, शेष सेना स्वय सिकदर के नेतृत्व मे पहाडियो मे से होती हुई उत्तर की ओर रवाना हुई स्वात और गाधार से बढते हुए उन्होने एओरनस (वर्तमान पीरसर, पाकिस्तान) के लगभग अजेय शिखर को जीत लिया, जो सिधु नदी से कुछ

किलोमीटर की दूरी पर बुनेर नदी के उत्तर मे है यह घेराबदी–कला की एक प्रभावशाल सफलता थी 326 ई पू के वसत मे उन्होन अत्तोक के पास सिधु नदी को पार कर तक्षशिला मे प्रवेश किया तक्षशिला के शासक तक्षको ने उन्ह अपन प्रतिद्वद्वी पोरस - विरुद्ध लडने के लिए सेना तथा हाथी दिए पोरस झेलम (हाइडास्पीज) और चिना (एसेस्नीज) नदी के मध्यवर्ती भूभाग के शासक थे सिकदर ने जून मे झेलम के बा किनारे पर अपनी आखिरी वडी लडाई लडी वहा उन्होने दो नगरो की नीव रखी- अलेक्जेड्रिया निकीआ और बूसीफला तथा पोरस उनके सहयोगी वन गए

हाइफेसिस (सभवत आधुनिक व्यास) नदी के आगे सिकदर भारत के बारे मे कितन जानते थे, यह कहना अनिश्चित है, परन्तु वह आगे बढते जाने को उत्सुक थे झेलम नदी तक बढने के बाद जब उनकी फौज ने बगावत कर दी और उष्णकटिबधीय बारिश मे और आगे बढने से इनकार कर दिया वे सब शारीरिक और मानसिक रूप से थक गए थे और सिकदर के चार प्रमुख सिपहसालारा म से एक कोएनस, विद्रोहियो के प्रवक्ता बन गए अपनी सेना की जिद को समझकर सिकदर वापस लौटने को राजी हो गए

सिकदर ने व्यास नदी पर 12 ओलिपियाई देवताओं के लिए 12 वेदिया बनवाई और झेलम नदी पर 800 से 1,000 जहाजो का एक बेडा तैयार किया पोरस को छोडकर वह नदी क दक्षिण की ओर बढे और सिधु नदी तक पहुचे उनकी आधी फोज जहाजो पर और आधी तीन कतारो मे दोनो किनारो पर चल रही थी जहाजी बेडे का नेतृत्व नीऑरकस कर रहे थे और स्वय सिकदर के कप्तान ओनसीक्रिटस थे बाद मे इन दोनो ने इस अभियान के वृत्तात लिखे इस कूच के दौरान कई लडाइया हुई और निर्दयता से भारी कत्लआम किए गए रावी (हाइड्रिओटिज) नदी के तट पर बसे एक नगर मल्ली पर हमले के समय सिकदर को एक गभीर घाव लग गया, जिसने उन्हे कमजोर बना दिया सिधु नदी के डेल्टा पर बसे पटाला नगर पहुचने पर उन्होने एक बदरगाह और नौकाघाट बनवाए और सिधु नदी के दोना किनारो की खोजबीन की तब सभवत सिधु कच्छ के रण मे बहती थी उन्होने अपनी फौज के एक भाग को भूमि मार्ग से वापस ले जाने की योजना बनाई तथा शेष भाग को 100 से 150 जहाजो म नीऑरकस की अगुआई मे फारस की खाडी मे मार्ग खोजते हुए जाना था स्थानीय विरोध क कारण नीऑरकस सितबर 325 ई पू मे ही रवाना होने को तैयार हो सके और उन्ह तीन सप्ताह पूर्वोत्तर मानसून के आगमन के समय देर अक्तूबर तक रुकना पडा सिकदर भी सितबर मे रवाना हुए और समुद्री किनारे पर चलते हुए गेड्रोसिया (वर्तमान बलूचिस्तान) मे से गुजरे पहाडी भूभाग होने के कारण उन्ह देश के भीतरी भाग मे घुसना पडा, किंतु इस प्रक्रिया मे वह सेना क लिए भोजन की व्यवस्था न कर सके एक उच्च अधिकारी क्रेटेरस को पहले ही साजो–सामान, हाथियो, बीमार तथा घायल लोगो के साथ आगे भेजा जा चुका था उनके साथ सेना की तीन टुकडिया भी थी क्रेटेरस की यात्रा का मार्ग मुल्ला दर्रा मे से होते हुए क्वेटा और काधार होकर हेलमद घाटी तक पहुचने का था यहा से उसे ड्रैगियाना होते हुए कार्मेनिया मे मिनाब

(भूतपूर्व अमानिस) नदी के किनारे मुख्य सेना से मिलना था गेद्रोसिया से होकर सिकदर की यात्रा सकट भरी रही जलविहीन रेगिस्तान तथा भोजन और ईधन की कमी से बहुत दु ख झेलना पडा और कई लोग विशेषत स्त्रिया व बच्चे, एक घाटी म बसेरे के समय आई आकस्मिक मॉनसूनी बाढ मे बह गए अत मे वह मिनाब नदी पर नीऑरकस और उनके बेडे से मिला नीऑरकस वाले बेडे ने भी मार्ग मे भारी कष्ट सहे थे

सिक्किम

भारतीय राज्य भारत के पूर्वोत्तर भाग मे स्थित यह प्रदेश देश का दूसरा सबसे छोटा राज्य है और यह पूर्वी हिमालय क 7,096 वर्ग किमी क्षेत्र मे फैला है सिक्किम पश्चिम मे स्वतत्र पर्वतीय साम्राज्य नेपाल, पूर्व मे भूटान, उत्तर और पूर्वोत्तर मे चीन के स्वायत्त क्षेत्र तिब्बत और दक्षिण मे पश्चिम बगाल से घिरा है गगटोक इसकी राजधानी है सिक्किम पहले एक सप्रभु राज्य था, 1950 मे भारत द्वारा सरक्षित राज्य रहा और 1975 मे राज्य बना अपने आकार की अपेक्षा अपनी स्थिति के कारण सिक्किम का राजनीतिक व सामरिक महत्त्व है

इस राज्य के चार जिले है उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी व पश्चिमी उत्तरी जिला राज्य के 60 फीसदी इलाके को घेरता है पूर्वी जिला राज्य की 44 फीसदी आबादी के साथ सबसे बडी आबादी वाला जिला है राज्यसभा और लोकसभा मे एक–एक सदस्य इस राज्य का प्रतिनिधित्व करते है यहा 32 सीटो के साथ एक अलग विधानसभा है

भौतिक एवं मानव भूगोल

भूमि

भू–आकृति सिक्किम एक बेसिन है, जो तीन तरफ से प्रपाती पर्वतीय दीवारो से घिरा है इसके कुछ क्षेत्र निम्नभूमि वाले है और इनकी भू–आकृति मे काफी विभिन्नताए है तिस्ता नदी घाटी मे 80 किमी के दायरे मे भूमि 229 मीटर की ऊचाई से कचनजगा तक 8,598 मीटर उठ जाती है कचनजगा

गगटोक शहर का दृश्य, सिक्किम
सोजन्य पृथ्वीश नाग

भारत की सबसे ऊची चोटी और दुनिया का तीसरा सबसे ऊचा पर्वत है सिगालीली पर्वत शृखला पश्चिम मे सिक्किम को नेपाल से अलग करती है, जबकि दोंगक्या पर्वत शृखला पूर्व मे चीन के साथ सीमा का निर्माण करती है इस पर्वत शृखला मे कई दर्रे हैं, जिनसे तिब्बत म छुबी घाटी और ल्हासा के पीछे तक जाया जा सकता है य दर्रे इस इलाके को राजनीतिक और सामरिक महत्त्व देते है

सिक्किम का दो–तिहाई हिस्सा लगातार बर्फ से ढके पर्वतो वाला है, जिसमे कचनजगा की पहाडिया छाई हुई हे पारपरिक रूप से सिक्किमवासी पर्वतो को भगवान और भगवान क निवास के रूप मे देखते हे पौराणिक घृणित हिममानव या येती सिक्किम मे नी–ग्यूद कहलाता है इसके बारे म धारणा है कि यह पहाडी किनारो पर घूमता है दूसरी बडी चोटिया, जिनमे टेंट, काब्रू और पोहुनरी शामिल है, सभी लगभग 7,010 मीटर ऊची है

अपवाह और जलवायु

सिक्किम बेसिन तिस्ता और उसकी सहायक नदियो, जैसे रगित, रोगनी चू, तालुग व लाचुग से अपवाहित है इन नदियो ने पहाडो को काटकर गहरी घाटियो का निर्माण किया हे तिब्बत सीमा क निकट एक हिमनदी से निकली तिस्ता तेजी स नीचे उतरती है और रागपो मे लगभग 4,785 मीटर नीचे बहकर गगा के मैदान मे पहुचने से पहले यह दार्जिलिग पर्वतश्रेणी (2,134–2,438 मीटर) मे एक दर्रा बनाती हैं

दक्षिण मे लगभग उष्णकटिबधीय जलवायु से लेकर उत्तर मे पर्वतीय जलवायु तक सिक्किम की जलवायु मे भिन्नता है ऊचाई व खुलेपन पर निर्भर सालाना वर्षा 1,270 से 5,080 मिमी तक होती है ज्यादातर बारिश दक्षिण–पश्चिमी मॉनसून (मई से अक्तू) क दौरान होती हे भारी वर्षा और बर्फ गिरने से यहा अक्सर भूस्खलन और हिमस्खलन जैसी विनाशकारी घटनाए होती है

वनस्पति एव प्राणी जीवन

सिक्किम के एक–तिहाई भाग म वन है इसके निचले उपोष्णकटिबधीय वनो (1,524 मीटर) मे साल, केवडा, खजूर, बास, फर्न और ऑर्किड के वृक्ष आमतौर पर पाए जाते है समशीतोष्णकटिबधीय वनो मे, जो 1,524 से 3,962 मीटर तक की ऊचाई मे पाए जाते है, बाज, जयपत्र, द्विफल, अखरोट, मैग्नोलिया, भिदूर, भोजपत्र, फर, तालीश प्रजाति, धतूरा और स्प्रूस के पेड पहले से ही बहुतायत मे है ज्यादा ऊचाई की ढलानो पर वनो की जगह पर्वतीय टुड्रा वनस्पतिया है यहा पर पोधो की 4,000 से ज्यादा प्रजातिया– मैग्नोलिया, तालीश प्रजाति, हपुषा, पोस्ता दाना, किरात और प्राइमुला पाई जाती है

सिक्किम का प्राणी जीवन समृद्ध और विविधतापूर्ण है यहा काला व भूरा भालू, पाडा हिरनो की कई प्रजातिया, जगली बकरिया, भेड, गोरल और तिब्बती मृग, बाघ, चीता

आंर छोटी बिल्लिया भी पाई जाती है, जबकि पक्षियो म तीतर, चकोर, बटेर, बाज बार्बेट, हिमालयी कोयल, तिब्बती काला कौआ और मिनिवेट शामिल हे

जनजीवन

लेप्चा लोगो को सिक्किम का मूल निवासी माना जाता है तिब्बतिया के आकमण क बाद 14वी शताब्दी से भूटिया इस राज्य मे आए नेपाली प्रवासिया को ब्रिटिश प्रशासका ने बढावा दिया वास्तव मे, 1891 से 1931 के बीच नेपालियों की सख्या म पाच गुनी बढातरी हुई सिक्किम की तीन–चौथाई आबादी नपाली मूल की हे, जो नेपाली (गोरखाली) भाषा बोलत हे और ज्यादातर हिदू है भूटिया, लेप्चा और लिबू प्रभावी बाली अल्पसख्यक है ये तिब्बती–बर्मी बोली बोलते है और महायान बौद्ध ओर पूर्व बुद्ध बॉन मत को मानते है 1985 से भारत की मुख्यभूमि के प्रवासियो न यहा की हिदू आबादी मे वृद्धि की है यहा कुछ ईसाई और मुसलमान भी हे

एक दशक मे यहा की आबादी मे 32 98 प्रतिशत की बढोतरी हुई है यहा की लगभग 53 प्रतिशत आबादी पुरुषो की है और जनसख्या घनत्व केवल 76 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है जबकि घनी आबादी वाले पूर्वी जिले का घनत्व 187 व्यक्ति पति वर्ग किमी हे यहा की आबादी मुख्यत ग्रामीण है, जो विखरे हुए छोट–छोटे गावो मे रहती हे 30 हजार से कुछ कम आबादी वाला गगटोक, सिक्किम का सबसे बडा नगर है आबादी के घटते क्रम मे सिगताम, रागपो, जोरथाग, नया बाजार, मगन, ग्यालशिग और नामची नगर है

अर्थव्यवस्था

राज्य मे खनिजो मे ताबा, सीसा, जस्ता, कोयला, ग्रेफाइट और चूना–पत्थर पाए जाते हे हालाकि इन सभी का व्यापारिक दोहन नही होता है यहा के वन ससाधन और पनबिजली क्षमता अधिक उल्लेखनीय है फिर भी सिक्किम मुख्यत कृषि प्रधान राज्य हे इसका कुल बुआई क्षेत्र 63,254 हेक्टेयर है और एक बडा इलाका खेती के लिए सुलभ नही है घाटी के किनारे लगे सीढीदार खेतो मे मक्का, चावल, मेथी, गेहू और जौ की उपज होती है यहा पर सेम, अदरक, आलू और अन्य सब्जिया, फल और चाय भी उगाए जाते है सिक्किम दुनिया के प्रमुख इलायची उत्पादक क्षेत्रो मे से एक है

पशुधन म मवेशी, सूअर, भेड, बकरिया आर मुर्गे–मुर्गिया शामिल हे गाय ओर भैस मुख्यत उपोष्णकटिबधीय आर्द्रता वाली पट्टी मे सीमित है, जबकि याक और भेड उत्तर मे ऊची ढलानो पर चराए जाते है 1995–96 मे यहा मत्स्य उत्पादन 150 टन था

1970 के दशक की शुरुआत तक सिक्किम मे सिर्फ कुटीर उद्योग थे, जिनमे हाथ से बुने कपडे, कालीन और कबल बनाए जाते थे साथ ही पारपरिक हस्तशिल्प, जैसे कसीदाकारी, बूटेदार पेटिग और लकडी पर नक्काशी का काम होता है अब यहा कई लघु उद्योग है, जैसे आटा मिले, चमडे के कारखाने, घडी बनाने की इकाई, शराब की

फैक्ट्री, फल सरक्षण सयत्र और एक चाय प्रसस्करण फैक्ट्री यहा स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता 8 हजार मेगावाट है यद्यपि बडे पैमाने पर यहा सडके नही है, लेकिन यात्रा की प्राथमिक पद्धति मौजूद है, कई जगहो पर रज्जु मार्ग (रोप वे) की भी सुविधा है राजधानी गगटोक नजदीकी बागडोगरा हवाई अड्डे से 121 किमी और सिलीगुडी रेलवे स्टेशन स 113 किमी की दूरी पर है ये दोनो पश्चिम बगाल मे है सिलीगुडी को जाने वाली सडक को इस हिमालयी राज्य की जीवन रेखा समझा जाता है, जा जमीन खिसकने के कारण अक्सर बाधित रहती है राज्य की बसें राज्य के विभिन्न इलाको और पडोसी पश्चिम बगाल को आपस मे जोडती है इसके अलावा राज्य मे टेलीफोन एक्सचेज, अस्पताल, दो स्नातक महाविद्यालय ओर एक विधि महाविद्यालय है और बागडोगरा हवाई अड्डे से हेलिकॉप्टर सेवा की भी सुविधा है

सिक्किम विदेशी व घरेलू पर्यटको के लिए एक नया ठिकाना बन गया है यह ठडा व शात इलाका है यहा कई विकल्प मौजूद है यद्यपि विदेशी पर्यटको का आगमन स्थिर है, पर घरेलू पर्यटको की सख्या बढ रही है इस राज्य मे आन क लिए विदेशियो को अनुमति पत्र (परमिट) लेना पडता है पर्यटको के रुचि वाले स्थलो म गगटोक से 24 किमी दूर 1,550 मीटर की ऊचाई पर स्थित रुमटेक मठ, पूर्वी जिले मे गगटोक से 36 किमी दूर 3,774 मीटर की ऊचाई पर स्थित छगु झील, गगटोक से 112 किमी दूर स्थित गीजिग, गगटोक से 120 किमी दूर 2,085 मीटर की ऊचाई पर स्थित पेमायात्से मठ, गगटोक से 26 किमी दूर पेलिग मठ, खेचोपरी झील, गगटाक से 35 किमी की दूरी पर फोडोग मठ, गगटोक से 135 किमी दूर 3,700 मीटर की ऊचाई पर स्थित युमथाग गर्म झरना और कचनजगा राष्ट्रीय उद्यान शामिल है दार्जिलिग और गगटोक मे यात्रा कराने वाले एजेट मौजूद है, जो राज्य के कई हिस्सो की यात्रा कराते हे प्रकृति प्रेमियों के लिए उत्तरी सिक्किम जिले मे खास आकर्षण है 3,658 मीटर की ऊचाई पर गगटोक से युमथाग का 140 किमी लबा रास्ता रोमाचक नजारो, गर्म पानी के झरनो और चीड के वृक्षो की दृश्यावली से भरा है तिस्ता और रगित नदियो म नाव खेना (राफ्टिग) लोकप्रिय है यहा आने वाले पर्यटक याकगाडी की सवारी, साइकिल द्वारा पहाडो पर चढाई और हैग–ग्लाइडिग जैसे खेलो का आनद लेते है सिक्किम मे प्लास्टिक के थैलो पर पाबदी हे, क्योकि ये पानी का प्राकृतिक बहाव रोकते है, जिसके कारण हाल ही मे राजधानी मे बाढ आ गई थी और कई घर तबाह हो गए थे

प्रशासन एव सामाजिक विशेषताएं

सिक्किम मे राज्य का प्रमुख राज्यपाल है, जिसे भारत का राष्ट्रपति नियुक्त करता है राज्यपाल की सहायता मुख्यमत्री और मत्रिपरिषद करती है विधानसभा मे नेपाली और अल्पसख्यक लेप्चा व भूटिया आबादी मे सीटे बराबर अनुपात से आबटित है एक लेप्चा–भूटिया सीट लामा (बौद्ध धार्मिक नेता) द्वारा नामाकित सदस्य के लिए और नेपाली समूह की एक सीट अनुसूचित जाति के प्रतिनिधि के लिए आरक्षित है

राज्य मे चार जिले है-- उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी और पश्चिमी इनके मुख्यालय क्रमश मगन, गगटोक, नामची और ग्यालशिग मे है प्रत्येक जिले के अतर्गत स्थानीय प्रमुख जिला प्रशासक और लोगो के बीच मध्यस्थ के रूप मे काम करता है गावो का प्रशासन पचायतो के जिम्मे है, जो कल्याणकारी योजनाओ को लागू करती है

राज्य मे प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा नि शुल्क हे गगटोक मे सिलीगुडी (पश्चिम बगाल) के उत्तरी बगाल विश्वविद्यालय से सबद्ध एक स्नातक महाविद्यालय भी है, जिसे राज्य सरकार से आर्थिक सहायता मिलती है यहा की साक्षरता दर 69 68 प्रतिशत है

तिब्बतियो के प्रभाव के बावजूद सिक्किम के सास्कृतिक जीवन मे यहा की अनेक जनजातियो और उनके बौद्ध काल के पहले के रीति–रिवाजो का वर्चस्व है साल का सबसे महत्त्वपूर्ण त्योहार दो दिनो तक चलने वाला फागल्हापसोल पर्व है, जा अगस्त या सितबर मे मनाया जाता है इस पर्व मे मुखौटा लगाए नर्तक अधिष्ठात्री देवी कचनजगा के सम्मान मे नृत्य करते है नामग्याल इस्टिट्यूट ऑफ तिब्बतोलॉजी दुनिया मे तिब्बती पुस्तको का सबसे बडा सग्रहालय है यहा के अनेक मठ कलात्मक धरोहर के सग्रह स्थल है, जिनमे भित्ति चित्रकारी, ताखा (जरी पर बने हुए धार्मिक चित्र) और कासे की प्रतिमाए शामिल है

इतिहास

17वी शताब्दी से पहले के सिक्किम के इतिहास के बारे मे बहुत कम जानकारी है राज्य का नाम लिबू शब्द *सू हिम* से लिया गया है, जिसका अर्थ हे 'नया घर' लप्चा इस इलाके के आरभिक निवासी थे, जिन्होने स्पष्टत नाओग, चाग, मो और दूसरी जनजातियो को अपने मे मिला लिया 14वी शताब्दी मे भूटिया लोगो ने तिब्बत के रास्ते इस इलाके मे प्रवेश किया 1642 में जब सिक्किम साम्राज्य स्थापित हुआ, तव फुतसोग नामग्याल पहले *चोग्याल* (लौकिक व आध्यात्मिक राजा) बने वह इसी समुदाय के थे नामग्याल साम्राज्य ने सिक्किम मे 1975 तक शासन किया 18वी शताब्दी के मध्य मे सिक्किम ने भूटान और नेपाल, दोना के साथ कई क्षेत्रीय लडाइया लडी इसके बाद नेपाल ने पश्चिमी सिक्किम के हिस्सो और घाटी मे स्थित तराई पर कब्जा कर लिया यही वह समय था, जब नेपालिया का बडी सख्या मे आगमन शुरू हुआ 1816 मे आग्ल–नेपाली युद्ध (1814–16) के दौरान ब्रिटेन की सहायता करने के बदले मे ब्रिटेन ने इन इलाको को पुन सिक्किम को वापस दिलाया, लेकिन 1817 से सिक्किम ब्रिटेन का वास्तविक सरक्षित राज्य बन गया

ब्रिटिश ईस्ट इडिया कपनी ने 1835 मे सिक्किम से दार्जिलिग ले लिया कपनी और सिक्किम के बीच घटी घटनाओ के कारण 1849 मे घाटी मे स्थित इलाको का विलय कर लिया गया इसके बाद सिक्किम की सैनिक हार हुई, जिसका परिणाम 1861 की आग्ल–सिक्किम सधि के रूप मे निकला इस सधि से सिक्किम ब्रिटिश प्रभुत्व (हालाकि सप्रभुता के मुद्दे को अपरिभाषित छोड दिया गया) के अधीन एक शाही राज्य

मे तब्दील हो गया और ब्रिटेन के लोगो को मुक्त व्यापार और सिक्किम से होकर तिब्बत तक सडक बनाने का अधिकार मिल गया अग्रेजो और तिब्बती लोगो के बीच 1890 मे हुए एक समझौते के मुताबिक, सिक्किम और तिब्बत के बीच सीमा का निर्धारण हुआ तिब्बत ने ब्रिटिश भारत और सिक्किम साम्राज्य के बीच सबध को स्वीकार कर लिया बाद मे सिक्किम के घरेलू व विदेशी मामलो के प्रशासन मे चोग्याल की सहायता के लिए एक ब्रिटिश रेजिडेट की नियुक्ति की गई दरअसल, वही अधिकारी राज्य का वास्तविक शासक बन गया

भारत की आजादी के तीन साल बाद 1950 मे भारत और सिक्किम के बीच सधि पर दस्तखत हुए, जिससे सिक्किम भारत का सरक्षित राज्य बन गया सिक्किम के विदेशी सबध, रक्षा और सचार की जिम्मेदारी भारत ने ले ली

1947 के बाद सिक्किम मे पहली बार राजनीतिक दलो का गठन शुरू हुआ इन दलो का लक्ष्य था सामतवाद की समाप्ति लोकप्रिय चुनी हुई सरकार का गठन और सिक्किम का भारत के साथ विलय इन सभी मागो का चोग्याल व उनके समर्थको ने विरोध किया 1950 की भारत–सिक्किम सधि मे सरकार मे जनता की भागीदारी बढाने की बात शामिल थी 1952 और 1974 के बीच यहा वयस्क मताधिकार पर आधारित पाच आम चुनाव हुए इनमे से आखिरी चुनाव मे दो प्रतिद्वद्वी पार्टियो ने मिलकर सिक्किम काग्रेस का गठन किया और जबरदस्त जीत हासिल की पार्टी ने राजनीतिक स्वतत्रता और अधिकारो की माग को लेकर व्यापक अभियान चलाया, जिसे चोग्याल ने दबाने की कोशिश की जब हालात काबू से बाहर हो गए, तो चोग्याल ने भारत सरकार से प्रशासन सभालने को कहा भारत ने 1974 मे सिक्किम के लिए सविधान तैयार किया, जिसे सिक्किम की नेशनल असेबली ने स्वीकार कर लिया 1975 के विशेष जनमत सग्रह मे 97 प्रतिशत से अधिक मतदाताओ ने भारत के साथ सिक्किम के विलय के पक्ष मे मत दिया 15 मई 1975 को सिक्किम भारत का 22वा राज्य बन गया जनसख्या (2001) राज्य कुल 5 40,493, शहरी 60,005, ग्रामीण 4 80,488

सिक्ख धर्म

एक भारतीय समूह का धर्म, हिंदू एव इस्लामी तत्त्वो को मिलाकर बना, गुरु नानक द्वारा 15वी सदी ई के अत मे पजाब मे स्थापित इसके सदस्य सिक्ख के रूप मे जाने जाते है अधिकतर सिक्ख पजाब राज्य मे रहते है अन्य सिक्ख ज्यादातर हरियाणा एव दिल्ली राज्यो तथा भारत के अन्य हिस्सो मे बिखरे है कुछ सिक्ख मलेशिया, सिगापुर पूर्वी अफ्रीका, इग्लैड, अमेरिका और कनाडा मे भी बस गए है सिक्ख शब्द पालि शब्द सिक्ख या सस्कृत शब्द शिष्य से बना है, जिसका अर्थ अनुयायी है सिक्ख अपने 10 गुरुओ (धार्मिक शिक्षको) के अनुयायी है, जिनकी परपरा गुरु नानक (1469–39) से शुरू होकर गुरु गोबिद सिह (1666–08) पर समाप्त होती है
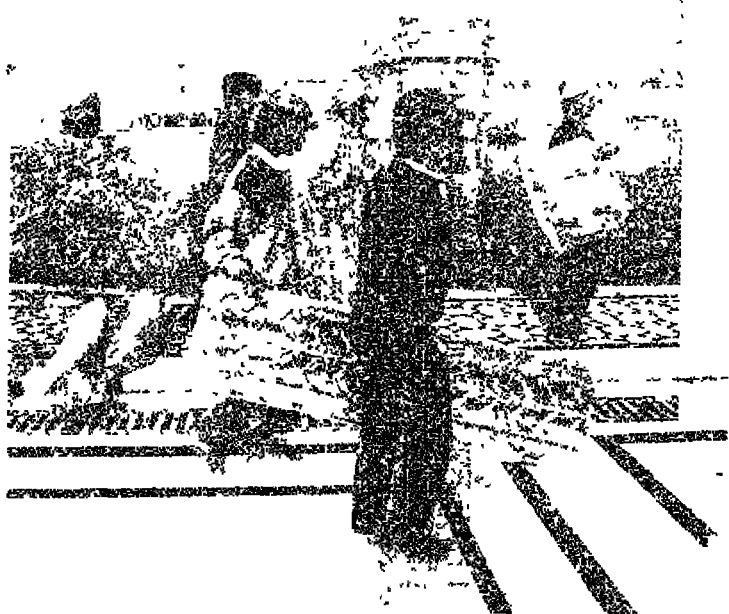
रम्मत कार्य अमृतसर, पजाब

उद्भव

भक्ति आदोलन का ऐतिहासिक विकास है, जो दक्षिण भारत
मे रामानुज (अनुश्रुति के अनुसार, 1017–37) द्वारा प्रवर्तित
के साथ लबे टकराव के बाद 14वी और 15वी सदी मे यह
मे फैल गया भक्तो का मानना था कि भगवान, हालाकि कई
तथा समझ से परे हे, कितु वही एक और एकमात्र सत्य है,
वान तक पहुचने का सर्वोत्तम तरीका उनके नाम का जप,
गाना (पजाबी कीर्तन) तथा गुरु के मार्गदर्शन मे ध्यान लगाना
एव समाज उच्च व निम्न श्रेणियो मे बटा था भक्ति आदोलन
ब्राह्मणो के प्रभुत्व तथा जाति प्रथा का विरोध किया

कवि एव धार्मिक सश्लेषक कबीर (1440–18), हिदू भक्ति और
क कई भारतीय मुसलमान अनुयायी बने, के बीच की एक कडी
न तथा गुरु के मार्गदर्शन मे ध्यान लगाने पर विश्वास करते
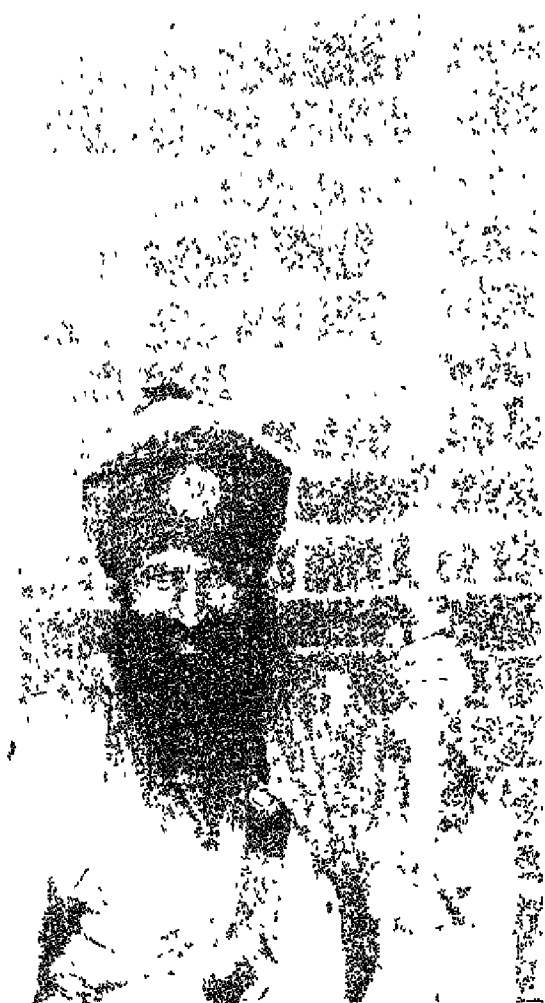
भूषा मे एक सिक्ख

थे उन्होने अपने आसरो मे गैर मुसलमानो का स्वागत किया सिक्ख धर्म ने भक्तो एव सूफियो, दोनो से प्रेरणा ली

10 गुरु . नानक और उनकी परपरा

नानक का जन्म 1469 मे लाहोर (अब पाकिस्तान मे) से 65 किमी दूर राय भोई दी तलवडी (वर्तमान ननकाना साहिब) गाव मे हुआ था उनके पिता राजस्व सग्राहक थे, जो क्षत्रियो (योद्धा) की उपजाति बेदी (वेदो की जानकार) के थे नानक को पारपरिक हिदू ज्ञान तथा प्रारभिक इस्लामी सिद्धातो की शिक्षा मिली अपने जीवन के प्रारभ से ही उन्होने धार्मिक लोगो से सपर्क रखना शुरू कर दिया था कुछ समय उन्होने सुल्तानपुर मे एक अफगान सरदार के यहा लेखाकार के रूप मे काम किया वहा एक मुसलमान परिवार के नौकर मरदाना, जो रबाब वादक भी थे, उनके साथ शामिल हो गए नानक ने भजन लिखना शुरू कर दिया मरदाना उन्हे सगीत मे ढालते थे तथा दोनो सामुदायिक भजन गायन आयोजित करते थे उन्होने एक जलपान गृह खोला, जहा मुसलमान तथा विभिन्न जाति के हिदू एक साथ खा सकते थे सुल्तानपुर मे नानक को भगवान क पहली बार दर्शन हुए, जिसमे उन्हे मानवता को उपदेश देने का आदेश दिया गया वह नदी मे नहाते हुए गायब हो गए तीसरे दिन प्रकट होने पर उन्होने घोषणा की, 'न कोई हिदू है, न मुसलमान'

सिक्ख अनुश्रुति के अनुसार नानक ने चार लबी यात्राए भी की- पूर्व मे असम तक दक्षिण मे तमिल क्षेत्र होते हुए सीलोन तक, उत्तर मे लद्दाख एव तिब्बत तक तथा पश्चिम मे मक्का, मदीना एव बगदाद तक उन्होने अपने अतिम दिन करतारपुर (अब पाकिस्तान मे) बिताए, जहा उन्होने पहला सिक्ख मदिर (गुरुद्वारा) स्थापित किया उन्होन अपन एक शिष्य अगद को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया

अगद (गुरु, 1539–52) के बाद अन्य शिष्य अमरदास (गुरु, 1552–74) ने गद्दी सभाली जिन्होने अपने दामाद रामदास सोढी (गुरु, 1574–81) को उत्तराधिकारी मनोनीत किया इसके बाद गुरु का पद सोढी परिवार मे ही रहा रामदास के उत्तराधिकारी उनके

सबसे छोटे पुत्र अर्जुन मल (गुरु, 1581–1606) बन, जिन्होने लाहौर मे यातना के कारण 30 मई 1606 को अपनी मृत्यु से पहले अपने पुत्र हरगोबिद (गुरु, 1644–61) को मनोनीत किया हरगोबिद के पोते सातवे गुरु हर राय ने अपने कार्यकाल के बाद अपने युवा पुत्र हरिकिशन (गुरु, 1661–64) को गद्दी दी, जिनकी आठ साल की उम्र मे चेचक से मृत्यु हो गई उनके उत्तराधिकारी तेग बहादुर (गुरु 1664–75) छठे गुरु हरगोबिद क बेटे थे दिल्ली मे 11 नवबर, 1675 को मृत्युदड से पहले उन्होने अपने पुत्र गोबिद राय (गुरु, 1665–1708) को अपना उत्तराधिकारी बनाया

खालसा की स्थापना

मुगलो द्वारा दो गुरुओ को दिए मृत्युदड तथा यातनाओ ने सिक्खो को हथियार उठाने पर मजबूर कर दिया इसे धार्मिक स्वीकृति दी गई, जब हिदू नववर्ष दिवस (13 अप्रै 1699) को गोबिद राय ने नए पथ मे पाच सिक्खो को दीक्षा दी, जिन्हे उन्होने खालसा यानी 'शुद्ध' (फारसी शब्द 'खालिस' से बना) कहा तथा स्वय को और उन्हे साझा उपनाम सिह (शेर) दिया सभी सिक्ख महिलाओ को कौर (सिहनी) उपनाम मिला गोबिद सिह का सैन्यजीवन बहुत सफल नही रहा उन्हे अपने चार पुत्रो सहित अधिकाश अनुयायियो को खोना पडा उन्हे पजाब से बाहर खदेडा दिया गया तथा 7 अक्तूबर 1708 को नादेड (अब महाराष्ट्र मे) मे उनकी हत्या कर दी गई अपनी मृत्यु से पहले उन्होने गुरुओ की परपरा समाप्त करने की घोषणा की सिक्खो का सैन्य नेतृत्व बदा सिह बहादुर को सौपा गया आठ साल तक बदा ने मुगलो का सामना किया तथा पूर्वी पजाब के बडे हिस्से मे विध्वस मचाया, 1716 की गर्मियो मे उन्हे 700 साथियो के साथ पकडकर दिल्ली मे मौत के घाट उतार दिया गया

कुछ सालो तक खालसा पहाडो मे छुपे रहे लेकिन 1738–39 मे फारस के नादिरशाह के हमले से मुगल शक्ति कमजोर पड जाने पर वे एक बार फिर मैदानो मे उतर आए उन्होने अपने को मिस्लो (फारसी मिसाल से, अर्थात 'उदाहरण' एव 'बराबर') मे सगठित किया तथा नगरो एव देहातो से सरक्षण शुल्क वसूलने लगे 1747 और 1766 के बीच अहमद शाह दुर्रानी के नेतृत्व मे हुए कई आक्रमणो से मुगल प्रशासन पूरी तरह छिन्न–भिन्न हो गया. 1761 मे पानीपत की लडाई मे अफगानो ने उत्तर मे उभरती मराठा शक्ति को नष्ट कर दिया इस प्रकार पैदा हुई सत्ता–शून्यता ने सिक्खो को पजाब मे अपने आप को स्थापित करने का अवसर दिया

रणजीत सिंह का सिक्ख साम्राज्य

फारसी एव अफगानी आक्रमणो के बीच के अराजकता वाले वर्षो मे सिक्ख मिस्लो ने मोटे तौर पर निर्धारित क्षेत्रो मे अपनी गतिविधिया चलाई दो प्रमुख क्षेत्र उभरे सतलुज–वार, सतलुज एव यमुना नदियो के बीच का इलाका और सतलुज–पार सतलुज एवं सिधु नदी के बीच का हिस्सा 1761 मे सिक्खो ने मुगल सूबेदार से राजधानी लाहौर छीन ली रणजीत सिह (1780–1839) की मिस्ल शुकरचाकिया
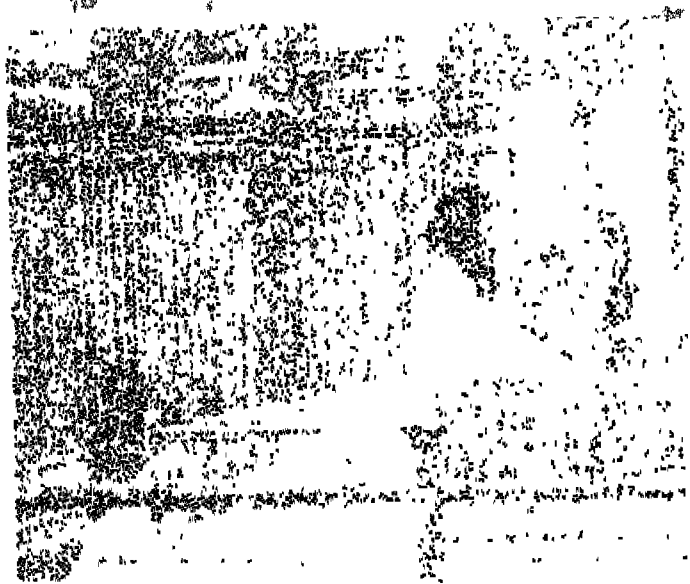
सीसगज गुरुद्वारे के भीतर का दृश्य

लाहौर के उत्तर मे गुजरावाला मे स्थित थी रणजीत ने
कब्जा कर लिया तथा दो साल बाद अपने को पजाब का
अग्रेजो ने, जो दिल्ली से आगे बढ गए थे, सतलुज–पार
मे ले लिया तथा रणजीत सिह को सतलुज नदी को अ
सीमा मानने के लिए बाध्य कर दिया सतलुज–पार के क्षेत्र
करने के बाद रणजीत सिह ने 1818 मे मुल्तान पर तथा
किया अगली सर्दियो मे उन्होने अपने साम्राज्य का वि
सिधु नदी के पार पठानो के क्षेत्र तक कर दिया

इसके बाद रणजीत सिह ने अपने सैनिको के प्रशिक्षण के
की नियुक्ति कर अपनी सेना का आधुनिकीकरण शुरू किय
अफगानो को परास्त किया और सिक्ख साम्राज्य को खैबर

सिक्खो एवं अंग्रेज़ों की बीच संबध

सतलुज–पार के राज्यो को अपने सरक्षण मे लेने के बा
सिधु नदी तक फैलाने की योजना बनाने लगे रणजीत सिह
अफगानिस्तान के मामलो मे हस्तक्षेप करते थे तथा उन्होने उ

आग्ल–सिक्ख अभियान मे शामिल होने के लिए राजी किया था रणजीत सिह की मृत्यु के बाद सिक्ख राज्य का तेजी से पतन हुआ रणजीत क सबसे बडे बेटे एव उत्तराधिकारी खडक सिह को उनके अपने बेटे नौनिहाल सिह ने अपदस्थ कर दिया और अफीम के अत्यधिक सेवन से उनकी मृत्यु हो गई उसी दिन एक प्रवेशद्वार के टूट कर गिरने से नौनिहाल सिह घातक रूप से घायल हो गए खडक सिह की विधवा, चाद कौर ने कुछ महीने राज्य सभाला इसके बाद रणजीत सिह के दूसरे पुत्र शेर सिह ने उन्हे अपदस्थ किया तथा बाद मे मार डाला 15 सितबर 1843 को चाद कौर के रिश्तेदारो ने शेर सिह, उनके पुत्र प्रताप सिह और मुख्यमत्री ध्यान सिह डोगरा की हत्या कर दी, बदले मे उनकी हत्या ध्यान सिह के बेटे हीरा सिह डोगरा ने कर दी रणजीत सिह के सबसे छोटे बेटे दलीप सिह को महाराजा घोषित किया गया, उनकी मा जिन्दा कौर को सरक्षक तथा हीरा सिह डोगरा को प्रधानमत्री नियुक्त किया गया लेकिन सत्ता खालसा सेना की पचायत (निर्वाचित समिति) के हाथो मे चली गई, जिसने डोगरा को लाहौर से भागने को बाध्य किया तथा रास्ते मे उनकी हत्या कर दी

पारपरिक वेशभूषा मे एक निहग सिक्ख
सोजन्य अनिल मेहरोत्रा

अग्रेज अपनी सेना को सिक्ख सीमा की ओर बढाने लगे तथा सतलुज नदी को पार करने की तैयारी करने लगे 11 दिसबर 1845 को अग्रेज प्रधान सेनापति तथा गवर्नर–जनरल के नेतृत्व वाली सेना को आगे बढने से रोकने के लिए खालसा सेना ने नदी पार करना शुरू कर दिया मुडकी (18 दिस), फिरोजशाह (फिराजपुर, 21–22 दिस), अलीवाल (28 जन 1846) तथा सोबराव (10 फर) मे कई घमासान लडाइयो मे जिन्हे अक्सर प्रथम सिक्ख युद्ध कहा जाता है, खालसा की पराजय हुई अग्रेजो ने सतलुज और व्यास नदियो के बीच वाले हिस्से को अपने राज्य मे मिला लिया, सिक्खो को अपने सैनिक घटाने को बाध्य किया, और युद्ध क्षतिपूर्ति की भारी रकम के भुगतान

मे विफल रहने पर उन्हे जम्मू–कश्मीर पर अपना दावा छोडने पर बाध्य किया, जि
बाद मे गुलाब सिह डोगरा को बेच दिया गया दलीप सिह के वयस्क होने तक सिख
राज्य के प्रशासन की देखरेख के लिए एक ब्रिटिश रेजिडेट (प्रतिनिधि) को लाहौर
नियुक्त किया गया रेजिडेट द्वारा किए प्रशासनिक उपायो से लोगो मे आक्रोश पै
हुआ राजमाता जिन्दा कौर को षड्यत्र का आरोप लगाकर निर्वासित करने से 18
की सर्दियो मे स्थिति पूरी तरह बिगड गई और आम सिक्ख विद्रोह शुरू हो गया, जि
द्वितीय सिक्ख युद्ध भी कहा जाता है चिलियावाला (13 जन 1849) मे एक अनिर्णि
लेकिन खूनी युद्ध हुआ गुजरात (21 फर 1849) की लडाई मे खालसा पूरी तर
परास्त हो गए और उन्होने हथियार डाल दिए सिक्ख साम्राज्य का कपनी राज्य
विलय हो गया तथा महाराज दलीप सिह को पजाब से निर्वासित कर दिया गया

कई वर्षो की अराजकता के बाद पजाब का प्रशासन कारगर एव अच्छे ढग से चला
परिणामस्वरूप, जब 1857 मे भारतीय गदर हुआ, यह प्रात अग्रेजो का वफादार रह
तथा सिक्खो ने विद्रोह दबाने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई इस वफादारी एव मदद के
लिए उन्हे भूखड दिए गए ब्रिटिश सेना मे सिक्खो का अनुपात बढा दिया गया एक
अधिनियम पारित किया गया, जिसमे सिक्ख सैनिको द्वारा खालसा परपरा के पालन
का प्रावधान था व्यापक नहर प्रणाली के जरिये मरुभूमि उद्धार के साथ पजाब मे
अभूतपूर्व समृद्धि आई सिक्खो को वहा बसाने मे प्राथमिकता दी गई प्रथम विश्व युद्ध
मे सिक्ख वफादारी स्पष्ट रूप से सामने आई, जिसमे सिक्ख ब्रिटिश भारतीय सेना के
पाचवें हिस्से से भी ज्यादा थे

युद्ध के बाद की मदी से व्यापक अशाति फैली, जो 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के
जलियावाला बाग मे करीब 400 लोगो की हत्या से अपने चरम पर पहुची सिक्ख अब
तक पुश्तैनी पुरोहितो के नियत्रण मे रहे गुरुद्वारो के स्वामित्व को लेकर भी
अधिकारियो से लडे सिक्ख जनता अग्रेजो से विमुख होकर महात्मा गांधी के
स्वाधीनता आदोलन मे शामिल हो गई धीरे–धीरे लोकतात्रिक सुधार लागू होने से
ब्रिटिश शासन के तहत सिक्खो के पहले के विशेषाधिकार और भी कम हो गए अग्रेजो
के पक्ष मे उनकी भागीदारी द्वितीय विश्व युद्ध मे उतनी उत्साहजनक नही थी, जितनी
1914–18 के दौरान रही थी

1947 मे इस उपमहाद्वीप के भारत एव पाकिस्तान मे विभाजन के समय सिक्ख
जनसख्या सीमा रेखा के दोनो ओर बराबर बटी हुई थी चूकि विभाजन से पहले
हिसक सिक्ख–मुसलमान दगे हुए थे, करीब 25,00,000 सिक्खो को पाकिस्तान छोडने
पर मजबूर होना पडा

1947 के बाद सिक्ख धर्म

स्वतत्र भारत की सरकार ने सिक्खो सहित सभी धार्मिक अल्पसख्यको का अग्रेजो
द्वारा दिए गए विशेषाधिकार समाप्त कर दिए इस कारण सेना तथा प्रशासनिक सेवाओ
मे सिक्खो का अनुपात घट गया सिक्ख किसान वर्ग पर भी विभाजन का बुरा असर

पडा, जिन्हे पाकिस्तान मे उपजाऊ कृषि भूमि छोडकर पूर्वी पजाब के मुसलमानो से कही छोटे भूखड बदलने पडे थे उनकी सपत्ति के ह्रास के कारण उनकी शिकायते बढने लगी और भारत मे सिक्ख बहुमत वाले एक पजाबीभाषी राज्य के गठन के लिए आदोलन शुरू हुआ यह माग 1965 मे भारत–पाकिस्तान युद्ध के बाद मान ली गई

1970 के दशक के दौरान अधिक गेहू उत्पादन से सिक्ख किसान अभूतपूर्व रूप से समृद्ध हो गए भौतिक सुधार के साथ ही जरनैल सिह भिडरावाले के नेतृत्व मे सिक्ख कट्टरवाद भी पनपने लगा सिक्खो और हिदुओ के बीच तनाव बढने लगा, क्योकि प्रमुख सिक्ख राजनीतिक दल शिरोमणि अकाली दल ने सिक्खो के लिए ज्यादा राजनीतिक एव आर्थिक अधिकार मागना शुरू कर दिया था 1980 के दशक के शुरू तक अकाली दल की मागे काफी उग्र हो गई तथा साप्रदायिक हिसा मे बढोतरी हुई जवाब मे भारत सरकार ने हजारो सिक्खो को गिरफ्तार कर जेल मे डाल दिया भिडरावाले के निर्देश पर सशस्त्र गुटो ने पूरे पजाब मे आतक फैला दिया 1984 मे मामला उस समय और बिगड गया, जब भिडरावाले तथा उनक समर्थको ने हरिमदिर (स्वर्ण मदिर) के परिसर मे मोर्चा सभाला जून मे भारतीय सेना ने वहा धावा बोला, जिसमे सैकडो सिक्ख (भिडरावाले सहित) मारे गए तथा मदिर के भवन को भारी क्षति हुई अक्तूबर मे भारतीय प्रधानमत्री इदिरा गाधी की उनके दो सिक्ख अगरक्षको ने हत्या कर दी, जिससे सिक्खो के विरुद्ध व्यापक हिदू हिसा भडक गई इन दो घटनाओ से सिक्ख समुदाय मे गहरा आक्रोश पैदा हुआ और अलग सिक्ख राष्ट्र की स्थापना की माग का आदोलन अधिक तीव्र हो उठा काफी हलचल के बाद अब स्थिति सामान्य है

सिक्ख साहित्य

धर्मवैधानिक एव धर्मवैधानिकेतर साहित्य

सिक्ख धर्म से सबद्ध साहित्य की रचनाए गुरु नानक पर प्रारभिक स्रोत सामग्री *जनम–साखिया* (जीवन कथाए) है, जो उनकी मृत्यु के 50 से 80 साल बाद लिखी गई अधिकतर सिक्ख विद्वान इन्हे अस्वीकार करते है तथा *आदिग्रथ* मे शामिल गुरु की रचनाओ और भाई गुरदास (मृ– 1629) द्वारा रचित *वारो* (वीरगाथाओ) पर भरोसा करते है न तो नानक के भजन और न ही गुरदास के *वार* नानक के जीवन की घटनाओ की सटीक जानकारी देते है अन्य ऐतिहासिक रचनाओ का काल 18वीं और 19वी शताब्दी है

1604 मे पाचवे गुरु अर्जुन देव द्वारा सकलित *आदिग्रथ* (प्रथम पुस्तक) एकमात्र धर्मवैधानिक रचना है *आदिग्रथ* के कम से कम तीन पाठ (रूपांतर) है, जिनमें बहुत कम भिन्नताए है गुरु गोबिद सिह द्वारा 1704 मे सशोधित पाठातर सिक्खो द्वारा प्रामाणिक रूपांतर के रूप मे स्वीकृत किया था *आदिग्रथ* मे पहले पाच गुरुओ, नानक (974), अगद (62), अमरदास (907), रामदास (679) एव अर्जुन (2,218) द्वारा रचित

लगभग 6,000 भजन है गुरु गोबिद ने इसमे अपने पिता गुरु तेग बहादुर द्वारा लिखित 115 भजन शामिल किए इन रचनाओ के अलावा *आदिग्रथ* मे भक्ति सतो एव मुस्लिम सूफियो (मुख्यत रविदास, कबीर एव फरीद खा) तथा गुरुओ के दरबार से सबद्ध कुछ चारणो क भजन भी है

दसमग्रथ (10वी पुस्तक) उन रचनाओ का सग्रह है, जिनका श्रेय गोबिद सिह को दिया जाता है विद्वान इस ग्रथ की सामग्री की प्रामाणिकता पर सहमत नही है तथा इसे *आदिग्रथ* जितना पवित्र नही माना जाता खालसा की परपराए *रहतनामा* (आचार सहिता) मे गोबिद सिह के समकालीनो द्वारा सकलित है

हालाकि गुरुओ ने चमत्कारिक शक्तियो का दावा नही किया, लेकिन ऐसे चमत्कारो का वर्णन करने वाली *साखियो* (कथाओ) की सख्या बढने लगी और उनके साथ ही गुरुद्वारो की भी जो चमत्कार स्थलो पर स्थापित किए गए यह भी विश्वास किया जाने लगा कि एक गुरु की आत्मा अपन उत्तराधिकारी मे स्थानातरित हो जाती है 'जैसे एक दीया दूसरे को जलाता है' इस धारणा की इस तथ्य से भी पुष्टि हुई कि गुरुओ ने अपनी रचनाओ मे वही काव्य उपनाम 'नानक' रखा

एक रचना जिसके बारे म काफी कम जानकारी है, लेकिन जिसने सिक्खो के बीच महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, भविष्यवाणियो का सकलन *सऊ साखी* (सौ कथाए) है जिसका श्रेय गोबिद सिह को दिया जाता है, कई ऐसे रूपातरो के प्रकाशन की जानकारी है, जिनम शासन के परिवर्तन तथा एक उद्धारक के अवतरण की भविष्यवाणी की गई है, जो सिक्ख धर्म को पूरे विश्व मे फैलाएगा

सिक्ख सिद्धात, प्रथाएं एव सस्थान

सिद्धात

ससार और मनुष्य के स्वरूप मे बारे मे दृष्टिकोण और ब्रह्माड की उत्पत्ति के बारे मे अवधरणाए मुख्य रूप से हिदू धर्मग्रथो से ली गई हे जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म तथा कर्म, जिसके द्वारा मनुष्य के पूर्वजन्म के कर्मो पर उसके इस जन्म का स्वरूप निर्भर करता है, 'ससार' के इस चक्रीय हिदू सिद्धात को सिक्ख स्वीकार करते है इसलिए मानव सवेदनशीलता के अलावा अन्य जीवा के बराबर है मानव जन्म 'ससार' से बचन और मोक्ष प्राप्त करने का एक अवसर हे

खालसा की अवधारणा . खालसा की अवधारणा सेनिक–सता की एक 'चुनिदा' जाति है, जा कठोर आचार सहिता (शराब, तबाकू और मादक द्रव्यो से परहेज तथा प्रार्थना मे समर्पित जीवन) तथा धर्मयुद्ध के प्रति वचनबद्ध है 'पाच नदियो की भूमि' पजाब मे अक पाच का हमेशा रहस्यात्मक महत्त्व रहा हे गोबिद सिह ने लिखा है 'जहा पाच हे वहा मै हू' पहले खालसा पज प्यारे, यानी पाच प्रियजन थे सभी युवा सिक्खो का आदर्श लक्ष्य पाहुल (दीक्षा) पाना और इस प्रकार खालसा बनना होता हे माना जाता है कि सहजधारी दीक्षा के लिए अपने आप को धीरे–धीरे तैयार करता रहता है

पाच 'क' की धारणा खालसा के पाच चिह्न, सभी क से शुरू, का आधार कोई धर्मग्रथ नही है, लेकिन गोबिद सिह के समकालीनो द्वारा लिखित *रहतनामा* मे इनका उल्लख है सबसे महत्त्वपूर्ण 'क' केश है, जिसे खालसा को कभी नही काटना चाहिए, जो खालसा अपने बाल काटता है, वह पतित है बिना कटे बालो को पवित्र मानना खालसा के सस्थापक गुरु गोबिद सिह से पुराना है, क्योकि पहले कई गुरुओ ने अपने बाल और दाढी बढाने की परपरा (कुछ हिदू सन्यासी सप्रदायो मे आम) का अनुसरण किया अन्य चार 'क' है, कघा, सनिको द्वारा पहना जाने वाला कच्छा, कृपाण ओर आम तौर पर दाहिने हाथ पर पहना जाने वाला लोहे का कडा कडे क बारे मे सामान्यत मान्य स्पष्टीकरण है कि यह अनिष्ट से बचाने वाला गुरु का तावीज है, हिदू राखी का रूपातर, जिसे बहने अपने भाइयो की कलाई पर उन्हे अनिष्ट स बचाने के लिए बाधती है

एकेश्वरवाद सिक्ख धर्म मे ईश्वर के एकत्व पर जार दिया गया है नानक ने रहस्यात्मक अक्षर, 'ऊ' की हिदू वेदाती अवधारणा को भगवान के प्रतीक के रूप मे प्रयुक्त किया इसमे उन्होने एकत्व एव सृजनात्मकता के गुणो को जाडा और इस प्रकार *इक* (एक) *ओकार* (रचयिता) प्रतीक का निर्माण किया उनकी प्रात प्रार्थना, जपजी की शुरुआती पक्तिया सिक्ख धर्म का मूल मत्र मानी जाती है, जिनमे ईश्वर की व्याख्या एक, सत्य, रचयिता, अमर एव सर्वव्यापक के रूप मे की गई है ईश्वर निरकार (आकारहीन) एव मनुष्य की समझ से परे भी है सिक्ख धर्मग्रथो मे भगवान के लिए कई नाम हिदू और इस्लामी, दोनो प्रयुक्त किए गए है नानक के प्रिय नाम थे, सत–करतार (सच्चा सृजनहार) एव सत–नाम (सच्चा नाम) बाद मे वाहे गुरु (गुरु का अभिवादन) को जोडा गया, जो भगवान का सिक्ख पर्यायवाची बन गया है

आध्यात्मिक सत्ता की अवधारणा आध्यात्मिक सत्ता का एकमात्र कोश *आदिग्रथ* है विवाद की स्थिति मे छठ गुरु हरगोबिद द्वारा अमृतसर मे निर्मित भवन, हरमदिर (स्वर्ण मदिर) के सामने बने अकाल तख्त मे सभा बुलाई जाती है अकाल तख्त मे पारित प्रस्तावो को आध्यात्मिक स्वीकृति मिल जाती हे सिक्ख धर्म एव राजनीति हमेशा से एक–दूसरे स करीब से जुडे रहे तथा सिक्ख राज मे आस्था एक धार्मिक सिद्धात है प्रत्येक अनुष्ठान के बाद 'राज करेगा खालसा' का उद्घोष किया जाता है

मूर्तिपूजा एव कर्मकांड पर दृष्टिकोण सिक्ख धर्म चित्रों मे भगवान के चित्रण तथा मूर्तिपूजा को वर्जित करता है फिर भी *आदिग्रथ* स्वय आनुष्ठानिक श्रद्धा की वस्तु बन गया ह तथा उसी हेसियत से *ग्रथ साहिब* (मानवीकृत ग्रथ) के रूप मे जाना जाता है *ग्रथ साहिब* को सुबह 'जगाया' जाता हे तथा छत्र के नीचे सजाकर रखा जाता है श्रद्धालु इसके सामने माथा टेकते है और चढावा चढाते है शाम को इसे 'रात्रि विश्राम' के लिए रख दिया जाता है त्योहारो के दिन इसे सडको पर शोभायात्रा मे निकाला जाता है अधिकतर अनुष्ठान *आदिग्रथ* पर केद्रित है पूरे ग्रथ को शुरू से अंत तक कई लोगो द्वारा बारी–बारी से लगातार पढना (*अखड पाठ*) लोकप्रिय हो गया है, जो दो दिन और दो रातो तक चलता है

आस्था के सामाजिक परिणाम सिक्ख धर्म का मुख्य परिणाम हिदू सामाजि व्यवस्था से धीरे–धीरे अलग होना तथा सिक्ख पृथकतावाद का विकास रहा है एकमा *आदिग्रथ* की पूजा म हिदुओ मे प्रचलित अन्य वस्तुओ (यानी सूर्य, नदियो एव पेडो की पूजा के लिए कोई स्थान नही है और साथ ही गगा की तीर्थयात्रा एव आनुष्ठानिव पवित्रीकरण की प्रथा भी बद कर दी गई है चूकि प्रत्येक सिक्ख धर्मग्रथ पढ सकत है, इसलिए सिक्खो मे हिदू धर्म की तरह ब्राह्मण जेसी पुरोहित जाति नही है 'गुरु क लगर' मे सहभोज के सिक्ख धर्म के आग्रह से उनके बीच जाति की परपरागत हिद प्रथा नष्ट हो गई हे और अपक्षाकृत कम कठोर सामाजिक ढाचा तैयार हुआ है सिक्खो को जातीय भिन्नताओ के आधार पर तीन व्यापक वर्गो मे रखा जाता है, जाट (कृषि समुदाय), गैर जाट (पूर्ववर्ती ब्राह्मण, क्षत्रिय ओर वैश्य, परपरागत हिदू सामाजिक व्यवस्था के तीन उच्च समूह) तथा मजहबी (अस्पृश्य) जाति अनुक्रम के अनुसार बीच मे आने वाले जाट प्रभावशाली है, मजहबी निम्न जाति (जातिप्रथा से बाहर अस्पृश्य) से धर्मातरित है और अब भी उनके साथ भेदभाव होता है, लेकिन समाज के अस्पृश्यो की तुलना मे उनकी स्थिति काफी बहतर है यह त्रिस्तरीय व्यवस्था परिवर्तन के दोर मे है, शिक्षित शहरी वर्गों मे यह टूट रही है, लेकिन गावो मे भेदभाव बना हुआ है

प्रथाए एव सस्थान

गुरु एवं शिष्य : मोक्ष प्राप्त करने के लिए गुरु का मार्गदर्शन अनिवार्य है गुरु या सद्‌गुरु को भगवान से कुछ नीचा दर्जा दिया जाता है उसका कार्य सत्य की खोज का मार्ग बताना, यथार्थ के स्वरूप की व्याख्या करना तथा शिष्य को दिव्य शब्द का उपहार देना (नाम–दान) है हालाकि गुरु परपरा गाबिद सिह के साथ ही समाप्त हो गई और सिक्खो ने *आदिग्रथ* को अपना 'जीवित' गुरु मान लिया फिर भी स्वय को किसी सत से सबद्ध करने तथा उसे गुरु का दर्जा देने की प्रथा कायम हे और व्यापक रूप से प्रचलित ह

नाम का जाप · सिक्ख धर्म को अक्सर *नाम–मार्ग* के रूप मे भी जाना जाता है, क्योकि यह भगवान का नाम एव गुरुवाणी (गुरु के देवी भजन) के लगातार जप पर जोर देता है नाम जप आत्मा से पाप को धो देता है तथा बुराई के स्रोत, हौमै (मै हू), अहम पर विजय प्राप्त करता है इस प्रकार वश मे किया गया अहम ऐसा हथियार बन जाता है जिससे वासना, क्रोध, लालच, मोह एव घमड पर विजय पाई जाती है नाम भटकते मन को स्थिर करता है तथा दिव्य दृष्टि प्रदान करता है, *दसम दुआर* (सस्कृत मे दशम द्वार, शरीर मे केवल नो प्राकृतिक छिद्र है) खोलता है जिससे दिव्य प्रकाश प्रवेश करता है, और इस प्रकार मनुष्य परमानद की स्थिति प्राप्त करता है

जीवन के अनुष्ठान एव अन्य समारोह : जन्म के लिए कोई विशेष अनुष्ठान नही है लेकिन कुछ सिक्खो मे बच्चे के जन्म पर नानक के *जपजी* के पहले पाच पद बोले जाते हे कुछ दिन बाद बच्चे को गुरुद्वारा ले जाया जाता है *आदिग्रथ* खोला जाता है और बाए पृष्ठ के प्रथम शब्द के प्रथम अक्षर से शुरू होने वाला नाम रखा जाता है

जब बच्चा गुरुमुखी लिपि सीख जाता है, तो उससे *आदिग्रंथ* पढ़ाया जाता है पाहुल (दीक्षा), सामान्यतया वयःसंधि पर किया जाने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान है दीक्षित बालक अमृत प्राप्त करता (छकता) है और उसे खालसा भाईचारे (पंथ) में शामिल कर लिया जाता है सिक्ख विवाह समारोह (आनंद कारज) के दौरान दूल्हा–दुल्हन को विवाह मंत्रों के साथ *आदिग्रंथ* के चार फेरे लगाने होते हैं मृत्यु पर अंतिम संस्कार के लिए शव को तैयार करने तक लगातार भजन गाए जाते हैं चिता को अग्नि देने से पहले अंतिम *अरदास* (प्रार्थना) की जाती है मृतक की राख को सामान्यतया नदी, अधिकतर गंगा जैसी पवित्र नदियों में प्रवाहित कर दिया जाता है

पवित्र समय एवं स्थान - सुबह की पहली घड़ियों को अमृतबेला प्रार्थना एवं ध्यान के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है हालांकि ऐसा कोई विशेष निर्देश नहीं है, लेकिन ऐतिहासिक गुरुद्वारे वास्तव में तीर्थस्थल बन गए हैं इनमें सबसे प्रमुख अमृतसर में सिक्खों का सबसे पवित्र गुरुद्वारा हरमंदिर है इसके बाद नानक का जन्मस्थान ननकाना (पाकिस्तान में) का स्थान है पांच अकाल तख्त भी हैं, जिन्हें महत्त्व दिया जाता है, ये अमृतसर, आनंदपुर, पटियाला, पटना एवं नांदेड़ में हैं अंतिम चार स्थान गोबिंद सिंह से संबद्ध हैं इन सबसे सारे खालसा के लिए अधिघोषणा की जा सकती है

प्रथम सिक्ख पूजा स्थल का निर्माण गुरु नानक ने करतारपुर में किया था और यह हिंदू मंदिरों जैसा था, जिसे धर्मशाला (धर्म का स्थान) कहा जाता था बाद में सिक्ख मंदिर को गुरुद्वारा, अर्थात गुरु तक पहुंचने का दरवाजा कहा जाने लगा गुरुओं से संबद्ध 200 से अधिक ऐतिहासिक गुरुद्वारे हैं, जिनका नियंत्रण सिक्ख गुरुद्वारा अधिनियम, 1925 के तहत गठित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (एस.जी.पी.सी.) के हाथ में है

ऐतिहासिक गुरुद्वारों के अलावा प्रत्येक सिक्ख बहुल स्थान पर उनका अपना एक गुरुद्वारा होता है समृद्ध घरों में इस काम के लिए अलग कमरा होता है केवल *आदिग्रंथ* की पूजा की जाती है सिक्ख उत्तर भारत के सभी हिंदू त्योहार मनाते हैं इसके अतिरिक्त वे प्रथम एवं अंतिम गुरु के जन्मदिन तथा पांचवें (अर्जुन) और नौवें गुरु (तेग बहादुर) का शहीद दिवस मनाते हैं सबसे बड़ा मेला वैशाख की पहली तिथि (मध्य–अप्रैल) को लगता है, यह दिन खालसा का स्थापना दिवस भी है खालसा संगत, संगत (समागम) को सामान्यतया सद्–संगत (पवित्र मनुष्यों का समागम) कहा जाता है और इस प्रकार इसे पवित्र माना जाता है प्रत्येक गुरुद्वारे में संगत अपनी प्रशासकीय समिति चुनती है तथा सभी निर्णय मत द्वारा लिए जाते हैं नियमानुसार महिलाएं चर्चा में भाग नहीं लेती हैं अमृतसर में एस.जी.पी.सी. सिक्ख धर्म की आम प्रबंधक समिति है

सांप्रदायिक मतभेद - सिक्ख धर्म की मुख्यधारा से सर्वप्रथम असहमत होने वाले लोग *उदासी* कहलाए, जो गुरु नानक के बड़े पुत्र श्रीचंद के अनुयायी थे इस सम्प्रदाय का

झुकाव सन्यास की तरफ था तथा बाद मे उसने गुरुद्वारो के लिए महत नियुक्त वि 1925 मे एस जी पी सी ने उनसे यह अधिकार छीन लिया राम राय, जिनके पिता राय (सातवे गुरु) ने उनके बदले छोटे बेटे हरिकिशन (आठवा गुरु) को उत्तराधिक बनाया, के अनुयायी अलग हो कर राम रैया बन गए उनका मुख्यालय देहरादू उत्तराचल म है

खालसा, जा यह नही मानते कि गुरु परपरा गोविद सिह के साथ ही समाप्त हो ग जीवित गुरु की परपरा कायम रखे हुए है इनमे से बदाई खालसा (बदा बहादुर अनुयायी) अब विलुप्त हो गए है लेकिन नामधारी एवं निरकारी जीवित गुरुओं व पूजा करते हे

सिक्ख कल्याण एव शिक्षा संस्थान - एस जी पी सी सिक्खो का प्रमुख कल्याण सगठ है द सिक्ख एजुकेशनल कॉन्फ्रेसज, जो 1908 से वार्षिक बैठक कर रही है, मुख्य शिक्षा सगटन है तथा उन्हे बडी सख्या मे विद्यालयो की स्थापना का श्रेय जाता है 1965 मे दो सामाजिक धार्मिक सगठना, गुरु गोबिद सिह प्रतिष्ठान एव गुरु नानक प्रतिष्ठान ने सिक्ख धर्म के अध्ययन के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयो मे पीठ तथा सिक्ख इतिहास और धर्म पर सामग्री प्रकाशित करने के लिए धन उपलब्ध कराया है

सिक्ख युद्ध

(1845–46, 1848–49), सिक्खो और अग्रेजो के बीच हुए दो युद्ध अभियान अग्रेज विजयी रहे, फलस्वरूप पश्चिमोत्तर भारत के पजाब का ब्रिटिश राज्य मे विलय हो गया

प्रथम सिक्ख युद्ध आपसी सदेह और सिक्ख सेना के उपद्रव के कारण शुरू हुआ 1801 से 1839 तक सत्तारूढ रहे महाराजा रणजीत सिह ने पजाब के सिक्ख राज्य को अजेय शक्ति के रूप मे स्थापित कर दिया था लेकिन उनकी मृत्यु के छह वर्षो के भीतर ही महल मे होने वाले विद्रोहो तथा हत्याओ के कारण सरकार कमजोर पड गई 1843 मे रणजीत सिह के सबसे छोटे बेटे गद्दी पर बेट, जा अभी बालक ही थे ओर उनकी मा जिन्दा ने सरक्षक रानी की भूमिका निभाई, लेकिन वास्तविक शक्ति सेना के हाथ मे थी, जो स्वय पचो या सैनिक समितियो से सचालित थी प्रथम अग्रेज अफगान युद्ध (1839–42) के दौरान अपने क्षेत्र स ब्रिटिश सैनिको का गुजरने की अनुमति न देने के कारण अग्रजा के साथ उनके सबध पहले से ही तनावपूर्ण थे ब्रिटिश हमले को रोकने के बहाने ब्रिटिश भारत चढाई के लिए दृढसकल्प सिक्खो ने सितबर 1845 मे सतलुज नदी के पार धावा बोला मुडकी, फिरोजशाह (फिरोजपुर) आलीवाल और सोबराव के चार रक्तरजित सघर्षपूर्ण युद्धो मे उनकी पराजय हुई अग्रजो ने सतलुज नदी के पूर्व मे और इसके तथा व्यास नदी क बीच के सिक्ख इलाके पर अधिकार कर लिया, कश्मीर और जम्मू अलग–थलग हो गए तथा सिक्ख सेना 20,000 पैदल सैनिको ओर 12,000 घुडसवारो तक सीमित रह गई लाहोर म ब्रिटिश टुकडियो के साथ एक ब्रिटिश रेजिडेंट नियुक्त कर दिया गया

दूसरा सिक्ख युद्ध अप्रैल 1848 मे मुल्तान के सूबेदार मूलराज के विद्रोह से शुरू हुआ और 14 सितबर को विद्रोहियो के साथ सिक्ख सेना के शामिल हो जाने से यह राष्ट्रीय विद्रोह बन गया अकुशल नेतृत्व मे रामनगर (22 नव) और चिलियावाला (13 जन 1849) के अनिर्णीत युद्ध मे प्रचडता और कुशल नेतृत्व की भूमिका रही, इसक बाद आखिरकार गुजरात (21 फर , वर्तमान पाकिस्तान मे) मे अग्रेज जीत गए सिक्ख सेना ने 12 मार्च को आत्मसमर्पण कर दिया और पजाब का ब्रिटिश राज्य मे विलय हो गया

सितार

वीणा परिवार का उत्तर भारतीय तार वाद्य, तानपुरे एव तबले के साथ एकल वाद्य के रूप मे तथा वाद्य वृद मे, जैसे उत्तर भारतीय कथक नृत्य मे, बजाया जाता है यह हिंदुस्तानी सगीत का प्रमुख वाद्य है सितार मध्यकालीन मुस्लिम प्रभाव म मध्य–पूर्वी लबी गर्दन वाले 'तबूर' तथा सकरी जटिल भारतीय वीणा जैसे तार वाद्यो से विकसित हुआ तबूर की तरह ही इसकी आकृति गहरी, नाशपाती जैसी है, धातु के तार वादक से दूर फलक पर कसे होते है, तथा अग्र एव पार्श्व दोनो मे सुरबद्ध करने वाली खूटिया होती है सितार की गर्दन तबूर की गर्दन से चौडी होती है तथा इसके पर्दो को खिसका सकते है

सितार मे सामान्यत पाच लय तार तथा पाच या छह मद्र तार होते है, जिनका इस्तमाल लय के स्वरघात के लिए भी किया जाता है, उभरे पर्दो के नीचे खोखली जगह मे 9 से 13 अनुनादी तार होते है 'सा' के पास वाले 'म' से ऊपर की ओर सुर ऊची सप्तक श्रेणी मे बढते है उभर पर्दे प्रदर्शन मे अलंकरण के लिए तारो को एक तरफ खीचने मे मदद देते है गर्दन के मेखबक्स छोर के नीचे अक्सर वीणा जैसा एक तूबा होता है तीन तारो वाले सितार को असल मे त्रितत्री वीणा कहते है सितार को दाहिनी तर्जनी पर पहनी तार की मिजराब से बजाया जाता है

सिद्ध

जैन धर्म मे वह, जिसने पराकाष्ठा प्राप्त कर ली हो सिद्ध स्वय को सम्यक धर्म (आस्था) सम्यक ज्ञान एव सम्यक आचरण द्वारा पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त कर लेता है तथा ब्रह्माड के शीर्ष पर सिद्ध–शिला मे सतत परमानद की स्थिति मे रहता है सिद्ध तथा अन्य सन्यासी जैनो के पाच प्रमुख मुनियो वाले *पंच परमेष्ठिन* सस्थापित करते है उनकी आकृतिया *सिद्ध–चक्र* कहे जाने वाली चांदी या पीतल के थाल मे अकित की जाती है, जिसे महान पवित्रता एव दैवी शक्ति का श्रेय दिया जाता है द्विवर्षीय समारोह 'ओली' मे आकृतियो को नहलाया एव अभिषिक्त किया जाता है तथा चावल मिष्ठान्न और फल चढाए जाते है

दिगंबर सप्रदाय मे *सिद्ध–चक्र* को *नवपाद* (नो मर्यादाए या नौ सद्गुण) कहा जाता और इसमे *पच परमेष्ठिन* के अलावा *जिन* (उद्धारक) की मूर्ति, मदिर ग्रथ एव *धर्म–च* शामिल होते हैं

सिद्ध चिकित्सा पद्धति

यह तमिल चिकित्सा प्रणाली या तमिल औषधि के नाम से भी जानी जाती है दक्षिण भारत की यह पारपरिक चिकित्सा पद्धति गैर विषैले खनिजो और धातुओं पर आधारित है ऐसी मान्यता है कि सिधु घाटी की सभ्यता क दौरान सिद्ध पद्धति का मूल रूप से विकास हुआ इस सिद्धात के अनुसार, द्रविड लोग सिधु घाटी के मूल निवासी थ और घूमते हुए दक्षिण मे आ बसे ओर उनक साथ सिद्ध चिकित्सा भी उसी दौरान दक्षिण मे आई इस आव्रजन काल मे असाधारण रोग निवारण क्षमता वाले अनक पौधे और जडी–बूटिया मूल सूची मे जुड गए.

प्राचीन तमिल लेखो मे उल्लख है कि सिद्ध अर्थात 'निपुण वैद्य तमिल सस्कृति का हिस्सा थे प्राचीन तमिल व्याकरण ग्रथ *तोलकाप्पियम* मे भी इसका उल्लेख आया हे सगम काल के लेखन मे अधिक विस्तार से इसका वर्णन मिलता है, जिसमे *तमिल वेदम्* और प्रसिद्ध कवि तिरुवल्लुवर की रचना *तिरुक्कुरल* हे

सिद्ध चिकित्सा का दर्शन

सिद्ध पद्धति के चिकित्सक को सिद्ध कहा जाता था जिनके अध्ययनो का उद्देश्य मनुष्य को दीर्घायु और सुरक्षित बनाना था इस हेतु उनका विश्वास थ। कि मनुष्य को प्रकृति के नियमानुसार जीवन निर्वाह करना चाहिए उन्होने स्वय भी सादा जीवन जीया और जाति, नस्ल, धर्म, रगभेद या राष्ट्रीयता के सकीर्ण भेदभाव से दूर रहे उन्होने केवल चिकित्सा प्रणाली मे ही योगदान नही किया, बल्कि प्रमुख कीमियागिरी ओर यौगिक जीवन पद्धति के विकास मे भी अवदान दिया *रसवाद नुल सिद्धरमायम* एक तमिल कालजयी रचना है, जिसमे उल्लेख है कि अनेक सिद्ध नवनाथ सिद्ध के नाम से विख्यात थे इन नवनाथ सिद्धो ने मानवता की सेवा के दीर्घ जीवन जीया कहा जाता है कि आम मनुष्य की तुलना मे वे कही अधिक दीर्घायु हुए साथ ही ऐसा विश्वास हे कि ये सिद्ध अपनी चिकित्सा पद्धति के प्रचार–प्रसार ओर अपने चिकित्सकीय ज्ञान को समृद्ध करने के लिए दूसरे देशो मे भी भ्रमण करते थे

सिद्ध शब्द की व्युत्पत्ति सिद्धि से हुई है, जिसका अर्थ 'उद्देश्य की प्राप्ति' अथवा 'स्वर्गिक परमानद की पूर्णता' है सिद्धि से तात्पर्य है अष्टसिद्धि, अर्थात आठ महान अलौकिक शक्तियो की प्राप्ति जो इन आठ अलौकिक शक्तियो को हासिल कर लेता था, वह सच्चा सिद्ध कहलाता था

कुछ सिद्धिया जन्मजात होती हे (पूर्व जन्म के कर्मो के कारण), जो रासायनिक तरीको, शब्दो की शक्ति अथवा ध्यान से अर्जित की जाती है उदाहरण के लिए, वैदिक दर्शन

के साख्य मत के जनक कपिल ऋषि को जन्मजात सिद्ध कहा जाता है स्थूल से सूक्ष्म की ओर तत्त्वो का ध्यान सिद्धो को तत्त्वो पर नियत्रण म पारगत बना देता है

पच महाभूत का सिद्धांत

सिद्ध पद्धति के अनुसार, प्रकृति मे मौजूद पचतत्त्व समस्त चराचर जगत के आधार है ये पाच तत्त्व पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश है यह विश्वास किया जाता है कि जो ब्रह्माड मे है वही तत्त्व पिड (जीव) मे है मानव शरीर मे पृथ्वी तत्त्व अस्थि, मास, स्नायु, त्वचा तथा बालो मे मोजूद हे, जल तत्त्व पित्त, रक्त, वीर्य, ग्रथिया के स्राव और स्वेद मे है, अग्नि तत्त्व भूख, प्यास, नीद, सौदर्य आर आलस्य मे हे, वायु तत्त्व सकुचन, विस्तार और गति मे तथा आकाश तत्त्व उदर, हृदय, गले और मस्तिष्क मे है

त्रिदोष विकृति विज्ञान

सिद्ध पद्धति मे वायु, अग्नि और जल, इन तीनो तत्त्वो पर अधिक जोर दिया गया है, क्योकि यह तीना मानव सरचना के आधारभूत घटक है ये तीन तत्त्व त्रिदोष (तमिल मे *मुप्पिनी,* सस्कृत मे *त्रिदोष*) के नाम से जाने जाते हे इनका असतुलन शरीर मे विभिन्न विकृतियो का कारण बनता है

त्रिदोष विकृति विज्ञान के सिद्धात के अनुसार, सभी रोगो का कारण वात, पित्त और कफ है शरीर मे इनकी मात्रा व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थिति को नियत्रित करती है वात, पित्त और कफ क्रमश वायु, अग्नि और जल तत्त्व का प्रतिनिधित्व करते है ये तत्त्व पिड (मानव शरीर) को ब्रह्माड से जोडते है इस प्रकार बाहरी वायु का शरीर के भीतर की वायु, अर्थात वात से बाहरी ऊष्मा का शरीर के भीतर स्थित पित्त से तथा बाहरी जल का शरीर के अदर स्थित कफ से तादात्म्य रहता है मानव बाह्य ससार से जुडा हुआ है और बाह्य ससार मे किसी भी तरह का परिवर्तन उसकी शरीर रचना को प्रभावित करता हे त्रिदाष विकृति विज्ञान इस बाहरी व भीतरी परिवर्तन के सिद्धात पर ही कार्य करता है

सिद्धशास्त्र के अनुसार सामान्य परिस्थितियो मे वात श्रोणिप्रदेश व गुदा मे, पित्त उदर और आतो मे तथा कफ श्वास, गले और सिर मे स्थित रहता है

वात शरीर के मध्य और अनुकपी तत्रिकाओ को सचालित करता है पित्त शरीर के ताप चयापचय, पाचन क्रिया, रक्तरजकता, मल उत्सर्जन तथा स्राव को सचालित करता है और कफ शरीर के ताप का नियमन तथा विभिन्न परिरक्षण ग्रथियो का सचालन करता है इस प्रकार सिद्ध चिकित्सा विज्ञान इस बात पर आधारित है कि त्रिदोष मानव रोगो का अभिन्न अग है

वात मानव शरीर मे जीवन शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है और यह शरीर के हर अग मे विद्यमान रहता है सिद्धशास्त्र मानता है कि यह स्व–उत्पन्न है और दैवी ऊर्जा के समान है वात की गति अनुप्रस्थ होती है और इसे ध्वनि तथा स्पर्श द्वारा पहचाना

जाता है इसकी गति अत्यत तीव्र होती है समूची शरीर प्रणाली मे यह तेज प्रवाह की भाति पहुच जाता है वात का असतुलन सभी बीमारियों का मूल कारण हो सकता है

पित्त अग्नि की सारी विशेषताओ, जैसे ज्वलन, क्वथन, ताप और इसके समान अन्य अनुभूतियो का प्रतिनिधित्व करता है पित्त का मुख्य कार्य चयापचय–चक्र को जीवद्रव मे बदलना होता है जैसे पुरुषो मे शुक्राणु तथा स्त्रियो मे डिब यह प्रक्रिया कोशिकाओ के विभाजन से मेल खाती है दूसरे शब्दो मे हम कह सकते है कि पित्त उस अग्नि का नाम है, जो पित्त द्रव मे मौजूद होती हे और अपशिष्ट पदार्थ को मूत्र तथा विष्ठा के रूप मे शरीर से बाहर फेकती हे यह नेत्रो को ज्योति, त्वचा को सौदर्य तथा मन को प्रसन्नता प्रदान करता है

कफ शरीर को आर्द्रता, स्थिरता तथा भार प्रदान करता है यह शरीर को सुदृढ बनाता है और पैरा को स्थायित्व व सतुलन प्रदान करता है यह पाचन म सहायक होता है जिह्वा को स्वाद प्रदान करता हे तथा विभिन्न ज्ञानद्रिया के कार्य मे सहायता करता है

शरीर मे इन त्रिदोषो की मौजूदगी तथा अनुपात का पता नाडी की गति स चलता है, जो रोग–निदान के लिए आवश्यक हे

प्राणायाम - प्राण का अर्थ है श्वास और श्वास का अर्थ जीवन है सभी शारीरिक प्रणालियो मे श्वास प्रणाली सबसे महत्त्वपूर्ण हे ऐसा माना जाता है कि श्वास लेने का सही तरीका शरीर को जीवनशक्ति प्रदान करता है और रोगो से मुक्त करता है इसलिए सिद्ध श्वास विज्ञान पर अधिक ध्यान देते हैं श्वास नियत्रण की पद्धति व्यक्ति को ऊर्जा तथा आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान करती है श्वास पर नियत्रण योग की भाषा मे प्राणायाम कहलाता है

वर्म विज्ञान

शरीर के विभिन्न बिदुओ पर चोट तथा इनके आविर्भाव तथा उपचार की विधि वर्म कहलाती हे वर्म बिदु अस्थि, मासपेशी, नस, स्नायु तथा रक्तवाहिनियो के प्रतिच्छेदन केद्र है जब बाहरी शक्ति का इन पर बुरा प्रभाव पडता हे, तो यह बीमारी का कारण बनता है स्वाभाविक स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए अपनाई जाने वाली पद्धति को *इलक्कु मुराई* कहते है मानव शरीर मे कुल मिलाकर 108 वर्म बिदु होते है

खनिज उपचार

सिद्धशास्त्र के अनुसार, केवल पारे से तैयार औषधिया ही शरीर को क्षरण से रोकने की क्षमता प्रदान कर सकती है और शरीर बीमारियो से लडने योग्य हो पाता है पारा और गधक को सिद्धशास्त्र मे सर्वोच्च आरोग्यकर माना जाता है

जड़ी–बूटी उपचार

सिद्धो ने वनस्पतियों पर व्यापक अनुसंधान किए थे विभिन्न जडी–बूटियो से मानव–कल्याण मे उपयोगी औषधिया विकसित की गई जडी–बूटिया रोगोपचार मे कैसे उपयोगी है, उनकी विशेषताओ, लक्षणो और विपरीत लक्षणो का उन्होने विस्तार से वर्णन किया कुछ वनस्पतियो के विषैले स्वरूप और उनके विष को दूर करने के उपाय भी उन्होने बताए उन्होंने पौधो का उनके औषधीय गुणो के आधार पर वर्गीकरण भी किया किसी रोग विशेष को दूर करने के लिए उन्होने विशिष्ट पौधो के निश्चित गुणो की ओर ध्यान केंद्रित किया

आयुर्वेद जडी–बूटी से रोगोपचार को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है, तो सिद्ध पद्धति वनस्पति और खनिज पदार्थो के सयुक्त उपयोग को प्राथमिकता देती है साधारण रोगो मे सिद्ध वैद्य जडी–बूटियो की औषधि लेने की सलाह देते है, लेकिन जब यह प्रभावी साबित नही होती, तो वनस्पति, खनिज तथा जीव उत्पाद के विवेकपूर्ण उपयोग की सलाह दी जाती है पुराने तथा जटिल रोगो के उपचार मे सिद्ध उपचार बहुत प्रभावी साबित हुआ है यह असाध्य रोगो, जैसे गठिया, स्व–प्रतिरोधी अवस्थाए, मज्जा सबधी रोग तथा केद्रीय स्नायु तत्र से सबधित रोगो, जैसे पक्षाघात, एकाग पक्षाघात अधराग पक्षाघात और चतुराग पक्षाघात मे सिद्ध चिकित्सा प्रभावी साबित हुई है हेपेटाइटिस तथा हर्पीज जैसे विषाणुजन्य रोगो के उपचार मे भी ये औषधिया कारगर सिद्ध हुई है

सिद्धो ने वनस्पति, खनिज तथा जीव उत्पाद के औषधशास्त्र मे व्यापक योगदान दिया है

सिद्ध औषधियो के अध्ययन का प्रमुख स्रोत टी वी साबासिवम पिल्लई द्वारा सपादित और सयोजित तमिल व अग्रेजी चिकित्सा शब्दकोश है

सिन्हा, सत्येद्र प्रसन्नो

(ज –जून 1864, रायपुर, भारत, मृ –6 मार्च 1928, बरहमपुर), भारतीय वकील और राजनेता, जिनका कानूनी कार्यकाल बेहद सफल रहा, भारतीय राष्ट्रवादियो के बीच उन्हे बहुत सम्मान प्राप्त था और ब्रिटिश सरकार मे भी ऊचे पदो पर सिन्हा की नियुक्ति हुई सिन्हा की शिक्षा–दीक्षा कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) के प्रेजिडेसी कॉलेज मे हुई थी और उन्हे लदन के लिकन्स इन के बार से आमत्रण प्राप्त हुआ था वह बगाल के महाधिवक्ता नियुक्त (1907) होने वाले और गवर्नर–जनरल की कार्यकारिणी परिषद मे नियुक्त होने वाले पहले भारतीय थे परिषद मे 1909–10 के दौरान उन्होने विधि–सदस्य के रूप मे अपनी सेवाए अर्पित की उन्हे 1914 मे नाइट की उपाधि प्रदान की गई, 1915 मे उन्होने बबई (वर्तमान मुबई) मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस पार्टी के सत्र की अध्यक्षता की और इसके बाद ब्रिटेन के इपीरियल युद्ध मत्रिमडल मे भी शामिल हुए 1919 मे वह भारत के अवर सचिव के रूप मे लॉयड जॉर्ज मत्रिमडल मे आए उन्हे रायपुर

के बैरन सिन्हा के रूप मे यश प्राप्ति हुई उन्होने भारतीय सविधान मे सशोधन के लि मॉन्टेग्यू–चेम्सफोर्ड प्रस्तावो के आधार पर बने भारत सरकार अधिनियम, 1919 क हाउस ऑफ लॉर्ड्स मे पारित करवाया 1920 मे उन्हे बिहार और उडीसा प्रात क गवर्नर नियुक्त किया गया ब्रिटिश शासन मे इस पद पर आसीन होने वाल वह पहल भारतीय थे खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हे अगले वर्ष इस्तीफा देना पडा 1926 म उन्हे प्रिवी कोसिल की न्यायिक समिति का सदस्य नियुक्त किया गया
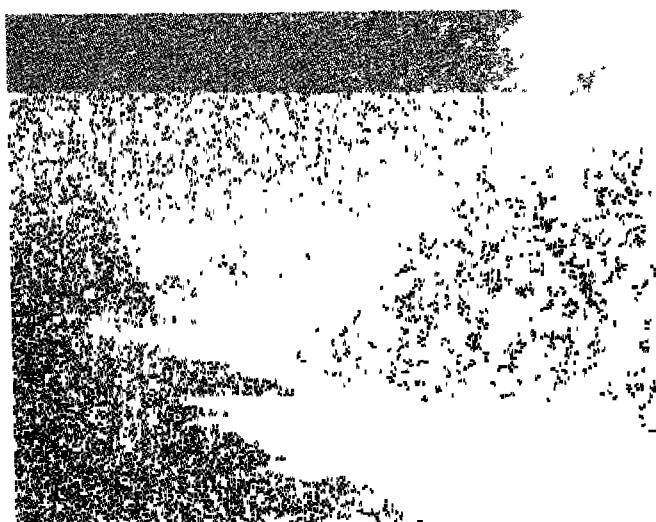
ग्लेशियर का दृश्य
अनिल मेहरोत्रा

सियाचिन ग्लेशियर

दुनिया की सबसे बडी हिमनदिया मे एक, भारत–पाकिस्तान सीमा के निकट कश्मीर की कराकोरम पर्वत श्रृखला मे स्थित, उत्तर–पश्चिमोत्तर से दक्षिण–दक्षिणपूर्व तक 70 किमी तक विस्तृत है इसमे कई तेजी से बहती छोटी सतही नदिया और कम से कम 12 औसत दर्जे की अवसादी नदिया है यह 80 किमी लबी नुब्रा नदी का स्रोत है नुब्रा नदी श्योक की सहायक नदी है जो सिधु नदी से निकलती है

सियार

श्वान वश *कैनिस* की भेडिया जैसी विभिन्न मासाहारी प्रजातियो मे से एक, *कैनिडी* कुल लकडबग्घे के समान, डरपोक जानवर के रूप मे प्रसिद्ध सामान्यत इसकी तीन प्रजातियो की पहचान की गई है सुनहरा या एशियाई सियार (*सी ओरियस*), जो पूर्वी यूरोप और पूर्वोत्तर अफ्रीका से दक्षिण–पूर्वी एशिया तक पाया जाता है, काली पीठ वाला (*सी मेसोमेलस*), और बगलो मे धारी वाला (*सी एडजस्टस*) सियार, जो दक्षिणी तथा पूर्वी अफ्रीका मे पाए जाते है सियार लगभग 85 से 95 सेमी की लबाई तक बढते है, जिसमे उनकी 30–35 सेमी लबी पूछ शामिल है इनका वजन लगभग 7–11 किग्रा होता है सुनहरा सियार पीतवर्णी होता है, काली पीठ वाले सियार का रग धूसर लाल और पीठ काली होती है, बगलो मे धारी वाले सियार का रग स्लेटी होता है और इसकी पूछ की छोर सफेद होती है तथा दोनो तरफ अस्पष्ट धारी होती है सियार खुले इलाको मे निवास करते है ये निशाचर प्राणी दिन के समय सामान्यत घनी झाडियो में छिपे रहते है और सूर्य के डूबने के बाद शिकार के लिए निकलते है ये अकेले, जोडो मे या झुडो मे रहते है और जो भी छोटा जानवर, वनस्पति या सडा–गला मास इन्हे मिलता है, ये उसी पर गुजारा कर लेते है ये सिहो और अन्य बडे विडालो का पीछा करते है तथा उनके द्वारा शिकार के भोजन के बाद बचे हुए

सियार
सौजन्य सेंटर फॉर एन्वायनमट एजुकेशन, अहमदाबाद

मास को खाते है जब ये झुडो मे शिकार करते है, तो हिरन, बारहसिगा या भेड जैसे बडे जतु को भी मार गिराते है

अपने वश के अन्य सदस्यो की तरह सियार शाम के समय आवाजे निकालते है, लकडबग्घे के मुकाबल इनकी चीख मनुष्यो को कम परेशान करती है इनकी पूछ के आधार के पास स्थित एक ग्रथि स निकलने वाले स्राव के कारण इनसे एक दुर्गंध आती है यह जमीन मे बने हुए बिलो या खोहो मे बच्चे दते हे और एक बार मे इनक दो से सात शावक जन्म लेते हैं, गर्भावधि 57 से 70 दिनो की होती है भेडियो और काइयोट (उत्तर अमेरिकी भेडिया) के समान सियार भी पालतू कुत्तो के साथ अतर–प्रजनन करते है *हाइनेनिडी* कुल के भू–वृक का कभी–कभी मेड या धूसर सियार कहा जाता है दक्षिण अमेरिकी लोमडी को भी कभी–कभी सियार की सज्ञा दी जाती है

सिरसा

शहर और जिला, सुदूर पश्चिमोत्तर हरियाणा राज्य, पश्चिमोत्तर भारत, थार मरुस्थल (भारत) के किनारे प्राचीन काल मे सरसुती के रूप म ज्ञात सिरसा नगर व किले के बारे मे कहा जाता है कि राजा सारस (लगभग 250 ई) ने इन्हे बनवाया था यह 14वी शताब्दी मे पश्चिमोत्तर भारत के अत्यत महत्त्वपूर्ण नगरो मे से एक था 1783 मे पडे अकाल के बाद यह पूर्णत उजड गया था और इसकी पुनर्स्थापना 1838 मे हुई व 1867 म यह नगरपालिका बना रेलमार्ग से रिवाडी (दक्षिणी हरियाणा) और भटिडा (पजाब) से जुडा सिरसा, हरियाणा, दक्षिण–पश्चिमी पजाब और पडोसी राजस्थान के प्रमुख शहरो को जोडने वाली सडको का मिलन बिदु भी है जिले के लगभग 90 प्रतिशत हिस्से में खेती होती है, जिसमे ज्यादातर हिस्से नहरो द्वारा सिचित है कपास और गेहू का वर्चस्व है अन्य फसलो मे तिलहन, चना और चावल शामिल है उद्योगो मे यहा पर कपास धुनाई, बिजली चालित करघा से बुनाई और कागज निर्माण शामिल हे इसके लगभग सभी गाव सडक मार्ग से जुडे है जनसख्या (2001) न पा क्षेत्र 1 60,129, जिला कुल 11,11,012

सिराजुद्दौला

(ज –लगभग 1729, मृ –2/3 जुला 1757), मूल नाम मिर्जा मुहम्मद, बगाल (भारत) के नवाब या शासक, जो नाममात्र के लिए मुगल बादशाह के अधीन थे उनके शासनकाल मे ही भारत के आतरिक मामलो मे ग्रेट ब्रिटेन का प्रवेश हुआ कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) पर नवाब के हमले के फलस्वरूप 'ब्लैक होल' घटना हुई, जिसमे कारावास की कालकोठरी मे कई अग्रेज बदियो की दम घुटन से मृत्यु हो गई थी

1756 में अपने रिश्ते के दादा अली वर्दी खां की मृत्यु के बाद सिराजुद्दौला बंगाल के नवाब बने परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा उत्तराधिकार के लिए संघर्ष के साथ-साथ उन्हें ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा कलकत्ता की किलेबंदी से भी जूझना पड़ा इस कंपनी, जो उनके प्रमुख प्रतिद्वंद्वी राजबल्लभ का समर्थन करती थी, ने उनकी आज्ञा लिए बिना किया था यद्यपि सिराजुद्दौला उत्तराधिकार के अन्य दावेदारों से निपटने में सफल रहे, लेकिन कलकत्ता का ब्रिटिश गवर्नर नगर की किलेबंदी उठाने के उनके अनुरोधों को अनदेखा करता रहा

यह विश्वास होने के बाद कि अंग्रेज उनकी बात नहीं मानेंगे, सिराजुद्दौला ने शहर पर चढ़ाई कर दी और रास्ते में कासिम बाजार स्थित अंग्रेजों की चौकी पर कब्जा कर लिया 16 जून 1756 को सिराजुद्दौला के वहां पहुंचने के कुछ ही समय बाद गवर्नर और उसके अधिकांश कर्मचारी फ़ोर्ट विलियम छोड़कर बंदरगाह में खड़े अंग्रेजी जहाजों की सुरक्षा में चले गए थोड़े विरोध के बाद 20 जून को किले के लोगों ने आत्मसमर्पण कर दिया और उसी रात 'ब्लैक होल' की घटना घटी

2 जनवरी 1757 को कलकत्ता पर रॉबर्ट क्लाइव और एडमिरल चार्ल्स वॉटसन ने फिर से कब्जा कर लिया नवाब का तख्ता पलटने के लिए अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफ़र के साथ षड्यंत्र करके अपनी स्थिति मजबूत कर ली हिंदू महाजनों और अपनी सेना द्वारा साथ छोड़ दिए जाने के कारण पलासी में सिराजुद्दौला विश्वासघात के शिकार हुए, जहां 23 जून 1757 को क्लाइव ने अपने 3,000 सैनिकों के साथ उनकी 50,000 सिपाहियों की सेना को पराजित कर दिया वह मुर्शिदाबाद की ओर भागे, लेकिन उन्हें पकड़कर मार डाला गया

सिरोही

नगर, दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान राज्य, पश्चिमोत्तर भारत यह पहाड़ियां व चट्टानी शृंखलाओं के टूटकर गिरने से बने भूभाग पर स्थित है, जो सारवान पहाड़ियों की पश्चिमी ढलानों पर टिका है और कहा जाता है इसी पर इसका नाम पड़ा यह क्षेत्र पश्चिमी बनास और लूनी व सुकरी नदियों की सहायक नदियों द्वारा अपवाहित होता है 15वीं शताब्दी में स्थापित सिरोही भूतपूर्व सिरोही रियासत की राजधानी था जिसका 1949 में बंबई (वर्तमान मुंबई) राज्य में विलय हो गया और 1950 में राजस्थान राज्य का हिस्सा बना मक्का, दलहन, गेहूं और तिलहन इस क्षेत्र की प्रमुख फसलें हैं यहां चूना-पत्थर, ग्रेनाइट और संगमरमर का खनन किया जाता है यह नगर एक कृषि बाजार और हस्तशिल्प-धातुकर्म का केंद्र है, जो चाकू, कटार व तलवार के निर्माण के लिए विख्यात है यहां एक अस्पताल और राजस्थान विश्वविद्यालय से संबद्ध एक सरकारी महाविद्यालय है जनसंख्या (2001) नगर 35,531, जिला कुल 8,50,756

सिलचर

नगर, बाग्लादेश सीमा के निकट सुरमा नदी पर स्थित, दक्षिणी असम राज्य, पूर्वोत्तर भारत कछारी शासको के अधीन सिलचर एक गाव था ब्रिटिश प्रशासन के दौरान 1832 मे इस नगर को कछार का मुख्यालय बनाया गया इस नगर का नाम दो शब्दो शिल (चट्टान) और चर (मैदान) से बना है 19वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे यहा एक मिशनरी स्कूल और पोलो मैदान बनाया गया यहा पर बहुत पहले, सभवत 1842 मे, एक पुराना मदिर नरसिह अखाडा बनाया गया था ब्रिटिश काल मे भी कई दूसरे अखाडे या मदिर बनाए गए

यह चाय, चावल और दूसरे कृषि उत्पादो का व्यापार एव प्रसस्करण केद्र है यहा पर सीमित उद्योग है और मुख्यत कागज और चाय के डिब्बे बनाए जाते है एक हवाई अड्डे वाला सिलचर मिजोरम के आईजोल और मेघालय की राजधानी शिलाग से सडक व रेलमार्गो से जुडा है जनसख्या (2001) 1,42,393

सिलवासा

नगर, केद्रशासित प्रदेश दादरा व नगर हवेली की राजधानी, पश्चिमी भारत दमन से 21 किमी दक्षिण--पूर्व मे गगा नदी पर स्थित और अरब सागर से 25 किमी भीतरी भाग (अतर्स्थलीय) मे है यह कृषि उत्पादो (चावल, दाल, फल) और लघु स्तर के कुटीर उद्योग, जिनमे इंजीनियरिंग और प्लास्टिक की वस्तुओ का उद्योग शामिल है, का मुख्य आर्थिक केद्र है जनसख्या (2001) 21,890

सिलीगुडी

शहर, उत्तरी पश्चिम बगाल राज्य, पूर्वोत्तर भारत यह कोलकाता (भूतपूर्व कलकत्ता) से 584 किमी दूर है, यहा पूर्वोत्तर और पूर्वोत्तर सीमात रेलवे और उत्तरी बगाल राज्य परिवहन निगम कार्यरत है दो नदिया बालासन और महानदा यहा से होकर बहती है कलीमपोग और सिक्किम से आने वाली सडको का यह अतिम केद्र है दार्जिलिग और जलपाईगुडी से यह सडक और रेलमार्ग द्वारा जुडा है सिलीगुडी दार्जिलिंग और सिक्किम के बीच व्यापार का प्रमुख केद्र है यह निकट स्थित उत्तरी बगाल के सबसे महत्त्वपूर्ण हवाई अड्डे वागडोगरा से जुडा है, आरा और पटसन मिले यहा के महत्त्वपूर्ण उद्योग है इसके आसपास चाय की खेती भी होती है 1931 मे इसे नगरपालिका के रूप मे गठित किया गया, लेकिन अब इसे नगर निगम का दर्जा दे दिया गया है यहा राजा राममनोहरपुर मे उत्तरी बगाल विश्वविद्यालय है इस विश्वविद्यालय से कई महाविद्यालय सबद्ध हैं 1947 मे बाग्लादेश के गठन के बाद यह शहर भीडभाड वाला शरणार्थी केद्र बन गया अतर्राष्ट्रीय सीमाओ से निकटता के कारण इसका सामरिक महत्त्व बढा है जनसख्या (2001) न नि क्षेत्र 4,70,273

सिलेरू नदी

जिसे मचकुड नदी भी कहा जाता है, आध्र प्रदेश राज्य दक्षिण--पूर्व भारत यह नदी पूर्वोत्तर आध्र प्रदेश के पूर्वी घाट से मचकुड नाम से निकलती है मचकुड जलाशय को छोडते हुए, यह (सिलेरू नाम से) पर्वत शृखला के समानातर 600 से 900 मीटर की ऊचाई पर पूर्वोत्तर से दक्षिण--पश्चिम दिशा मे बहती हुई, राजमडी स 100 किमी उत्तर–पूर्वोत्तर मे मध्य प्रदेश राज्य के कोटा के सामने, साबरी नदी मे मिल जाती है यह नदी 305 किमी लबी है जलापुट के निकट इस नदी पर एक छोटी पनबिजली परियोजना और बाध है

सिल्क रूट

रेशम मार्ग, चीन और पश्चिम के देशो को जोडने वाला प्राचीन व्यापारिक मार्ग जिससे दो महान सभ्यताओ रोम और चीन के बीच वस्तुओ और विचारो का आदान–प्रदान होता था रेशम पश्चिम पहुचा, जबकि ऊन, सोना और चादी पूर्व की ओर गए इसी रास्ते से (भारत होकर) नेस्टोरियस ईसाई धर्म और बौद्ध धर्म चीन पहुचा सियान से निकलने वाली 6,400 किमी लबी सडक वास्तव मे व्यापारियो के काफिले (कारवा) का मार्ग थी चीन की विशाल दीवार के साथ--साथ पश्चिमोत्तर म तकलामकान रेगिस्तान को पार करन के बाद पामीर की पहाडियो पर चढते हुए यह कारवा अफगानिस्तान को पार कर लेवट पहुचता था वहा से व्यापार सामग्री को जहाजो पर लादकर भूमध्य सागर के पार भेजा जाता था कुछ ही लोग पूरे मार्ग की यात्रा करते थे और सामान की देखरेख कारवा की शक्ल म बीच मे धीरे–धीरे चलते लोग करते थे

एशिया मे रोमन क्षेत्र के धीरे–धीरे पतन होने के बाद और लेवट मे अरब शक्ति के उदय के बाद सिल्क मार्ग असुरक्षित होता चला गया और इससे होकर यात्राए भी बद हो गई 13वी शताब्दी मे यह मार्ग मगोलो के अतर्गत फिर से सक्रिय हुआ उस समय चीन जाने के लिए मार्को पोला ने इसी मार्ग का प्रयोग किया था

यह मार्ग अब आशिक रूप से पक्के राजमार्ग के रूप मे है जो पाकिस्तान और चीन के सिक्याग उईघुर स्वायत्त क्षेत्र को जोडता है पुराने मार्ग ने सयुक्त राष्ट्र सघ को एशिया से गुजरने वाले राजमार्ग की योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है

सिवान

नगर, पश्चिमोत्तर बिहार राज्य, पूर्वोत्तर भारत यह छपरा नगर के 64 किमी पश्चिमोत्तर मे दाहा नदी के पूर्वी तट पर स्थित है इस नगर का नाम शवयान (सस्कृत शब्द अर्थात अर्थी) से लिया गया है, किवदतियो के अनुसार भगवान बुद्ध की अर्थी को जब अतिम सस्कार के लिए कुशीनारा ले जाया जा रहा था, तब कुछ समय के लिए उसे सिवान की धरती पर भी रखा गया था यह पूर्वोत्तर रेलमार्ग का एक जक्शन है और आसपास के इलाको से कच्ची सडको से जुडा है यह एक व्यावसायिक व उत्पादन

कद्र है, जहा मिट्टी के बर्तन, पीतल के बर्तन और फूल (स्थानीय रूप से तैयार की गई मिश्रधातु) के सामान का उत्पादन होता है यहा पर एक चीनी मिल और शराब का कारखाना भी है सिवान मध्य गगा के मैदानी भाग मे स्थित है इस क्षेत्र की अथव्यवस्था मुख्यत कृषि पर आधारित है चावल, गेहू, मक्का, दलहन, गन्ना, कपास और तिलहन यहा की मुख्य फसले है जनसख्या (2001) नगर 2,31,972, जिला कुल 27 08,840

सिस–सतलुज प्रांत

भारतीय रजवाडे, मुख्यत सिक्ख रजवाडे, जो 19वी शताब्दी के आरभिक काल मे महत्त्वपूर्ण बन गए, जब उनके भाग्य का फैसला अग्रेजो और सिक्ख राजा रणजीत सिह के बीच झूल रहा था अग्रेज उन्हे 'सिस' (लैटिन शब्द, अर्थात इस तरफ) कहते थे क्योकि वे सतलुज नदी के दक्षिणी या ब्रिटिश हिस्से मे स्थित थ मुगलो की सत्ता के पतन और 1761 मे अफगान सरदार अहमद शाह दुर्रानी के पीछे हट जाने के बाद पजाब मे 'सकट के काल' मे इनका विकास हुआ

रणजीत सिह के राज्य मे विलय की आशका को देखते हुए उन रजवाडो ने अग्रेजो से हाथ मिलाया, जिन्होने रणजीत सिह के साथ अमृतसर की सधि (1809) करके उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया भारत के स्वतत्र (1947) होने तक तक वे अस्तित्व मे रहे जिसके बाद उन्हे भारत के पजाब और हरियाणा राज्य मे शामिल कर लिया गया 1846 के बाद नौ राज्य, जो बाद मे छट कर छह हो गए थे, पूर्ण शक्तिवादी थे इनमे पटियाला प्रमुख था और विलय के समय उसका क्षेत्रफल 14,017 वर्ग किमी और आबादी 20 लाख थी

सीकर

शहर, सीकर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय, राजस्थान राज्य, पश्चिमोत्तर भारत प्रमुख रेल व सडक मार्ग से जुडा हुआ यह शहर कृषि व्यापार मे सलग्न है यहा के हस्तशिल्प मे वस्त्रोद्योग, मिट्टी क बर्तन, मीनाकारी और लाख का सामान शामिल है सीकर मे दो महाविद्यालय है, जो राजस्थान विश्वविद्यालय से सबद्ध है 7,732 वर्ग किमी मे फैला सीकर जिला अरावली पर्वत श्रृखला के पश्चिम के मैदानी इलाके का हिस्सा है यह पहले जयपुर रियासत के शेखावटी इलाके के रूप मे जाना जाता था खेती यहा का मुख्य पेशा है, बाजरा, दाले, जौ और कपास मुख्य फसले है जिले मे सीमेट और कपास ओटाई के कारखाने है यहा बेरीलियम, अभ्रक, सगमरमर और फ्लोराइट का खनन होता है जनसख्या (2001) न पा क्षेत्र 1,84,904, जिला कुल 22 87,229

सीटो (दक्षिण–पूर्व एशिया सधि सगठन)

8 सितंबर 1954 को मनीला मे दक्षिण–पूर्व एशिया की सामूहिक सुरक्षा के लिए सगठन की सधि पर हस्ताक्षर हुए थे, जो 1955 से 1977 तक प्रभावी रही इस सग म ऑस्ट्रेलिया, फ्रास, न्यूजीलैड, पाकिस्तान, फिलीपीस, थाइलैड, ब्रिटेन और अमेरि शामिल थे यह सधि 19 फरवरी 1955 से प्रभावी हुई 1968 मे पाकिस्तान इससे अ हो गया और 1975 मे फ्रास ने वित्तीय सहायता देनी बद कर दी 20 फरवरी 1976 इसकी अतिम बैठक हुई और अतत 30 जून 1977 को औपचारिक रूप से इस अस्तित्व समाप्त हो गया

सीटो का गठन दक्षिण–पूर्व एशिया को साम्यवादी विस्तार से बचाने क लिए कि गया था, विशेषकर कोरिया तथा हिद–चीन म सैन्य आक्रमण और मलेशिया फिलीपीस मे सगठित सैन्य बलो की मदद से सत्ता पलट दी गई वियतनाम, कबोडि और लाओस (हिद–चीन के उत्तराधिकारी राज्य) को सीटो की सदस्यता के योग्य न समझा गया, क्योकि 1954 में वियतनाम को लेकर जिनेवा समझौता हुआ था इन दे को एक समझौते के अतर्गत सैन्य सुरक्षा प्रदान की गई थी दक्षिण तथा दक्षिण–पू एशिया के अन्य देशो ने निर्गुट रहने की विदेश नीति अपनाई

सीटो सधि केवल रक्षात्मक उपाय तक सीमित रही और इसमे तोडफोड की किस कार्यवाही मे आत्मरक्षा और आपसी सहायता का प्रावधान था आर्थिक व सामाजि प्रगति की दिशा मे इसके तहत कोई सहयोग नही हुआ सीटो की कोई स्थायी सेन नही थी, यह सहयोग सदस्य राष्ट्रो के बीच चलित आक्रमण शक्ति और सयुक्त सैन्य अभ्यास तक सीमित था

सीता की अग्नि परीक्षा

सीता

(सस्कृत शब्द, अर्थात हल–रेखा), जानकी भी कहा जाता है, हिदू पौराणिक कथा म राम की पत्नी तथा पतिव्रत एव आत्मसमर्पण की मूर्ति दानवराज रावण द्वारा उनका अपहरण तथा बाद मे उन्हे छुडाना महान हिदू काव्य *रामायण* की मुख्य घटनाए है

सीता का लालन–पालन राजा जनक ने किया, वह उनकी अपनी बेटी नही थी, बल्कि जब जनक हल चला रहे थे, तब वह धरती से निकली राम ने शिव के धनुष पर प्रत्यचा चढाकर वधू के रूप मे सीता को जीता और सीता ने अपने पति के वनवास के समय उनका साथ दिया हालाकि रावण उनका अपहरण करके उन्हे लका ले गए, लेकिन सीता अपने लबे कारावास मे राम पर अपना ध्यान केद्रित रखकर पतिव्रता बनी रही लौटने पर उन्होने अग्नि परीक्षा देकर अपनी पवित्रता सिद्ध की लेकिन राम ने जनमत के आगे झुककर उन्हे वन भेज दिया वहा उन्होने दो पुत्रो, लव और कुश, को जन्म दिया जब वे बडे हो गए और राम ने उन्हे

अपने पुत्र के रूप मे स्वीकार किया, तब सीता ने अपनी धरती मा को पुकारा और उसमे समा गई

सीता की पूजा विष्णु की पत्नी लक्ष्मी के रूप मे भी होती है *रामायण* के भारतीय लघुचित्रो मे अक्सर उनका चित्रण होता है तथा उनकी कास्य मूर्तिया दक्षिण भारतीय कला की सर्वोत्तम उपलब्धियो मे से है इनमे सीता, राम, उनके भाई लक्ष्मण तथा भक्त वानर हनुमान की मूर्तिया एक साथ बनाई जाती है मूर्तिकला से सबधित शास्त्र कलाकारो को निर्देश देता है कि वह सीता को अत्यत प्रसन्न मुद्रा मे अपने पति को निहारते दिखाए

सीतापुर

शहर, उत्तर–मध्य उत्तर प्रदेश राज्य, उत्तर–मध्य भारत यह लखनऊ के उत्तर–पश्चिमोत्तर के सरया नदी के तट पर स्थित है सीतापुर ब्रिटिश भारत मे एक सैनिक केंद्र था और यहा पर एक सैनिक छावनी भी है अनेक सडक व रेलमार्गो का जक्शन यह शहर अनाज व अन्य फसलो का बाजार है यहा पर चीनी व प्लाईवुड के उद्योगो के साथ नेत्र रोगो के इलाज के लिए एक अस्पताल भी है सीतापुर गोमती व घाघरा नदियो क बीच के समतल मैदान पर स्थित है आसपास की ज्यादातर भूमि पर या तो खेती होती है या फिर वनाच्छादित है चावल, गेहू और जौ उगाए जाते है जनसख्या (2001) न प क्षेत्र 1,51,827

सीतामढी

नगर, सुदूर उत्तरी बिहार राज्य, पूर्वोत्तर भारत यह मध्य गगा के उर्वर मैदान मे लखनदेई नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है पूर्वोत्तर रेलवे मार्ग पर स्थित सीतामढी एक स्टेशन है और सडक मार्ग से नेपाल सीमा स जुडा है यह चावल, लकडी तिलहन और चमडे का वाणिज्यिक केद्र है यहा वसत ऋतु मे भगवान राम के जन्मदिवस पर एक विशाल रामनवमी मेला लगता है, जिसमे मिट्टी व पीतल के बर्तनो, मसालो और सूती वस्त्रो का काफी व्यापार होता है सीतामढी मे लगने वाला मवेशी मेला बिहार का सबसे बडा पशु मेला है यह नगर हिदू पुराणो मे पवित्र माना जाता है, क्योकि भगवान राम की पत्नी सीता (जानकी) अपने पिता महाराज जनक को यही पर मिली थीं यहा पर माता जानकी को समर्पित एक तालाब व मदिर के साथ–साथ हनुमान, शिव व गणेश के मदिर भी हैं

आसपास के इलाके का मुख्य पेशा कृषि है और यहा गेहू, चावल, बाजरा, दलहन मक्का, गन्ना व तिलहन उगाया जाता है स्थानीय उद्योगो मे सूती वस्त्र, शोधित चमडा, चावल, हाइड्रोजनीकृत वनस्पति तेल, लकडी की नक्काशी और धातु के बर्तनो का उत्पादन है जनसंख्या (2001) नगर 56,769, जिला कुल 26,69,887

सीमा आयोग

भारत की आजादी और विभाजन के पूर्व गवर्नर–जनरल लॉर्ड माउटबेटन द्वारा जुलाई 1947 मे गठित आयोग आयोग का कार्य मुस्लिम और गैर मुस्लिम जनसख्या के आधार पर भारत और पाकिस्तान के बीच पजाब और बगाल मे विभाजन रेखा खीचना था आयोग मे आठ निर्णायक सदस्य थे, चार भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस से और चार मुस्लिम लीग से चूकि वे किसी सहमति पर नही पहुच पाए और 15 अगस्त की अतिम तिथि पास आ रही थी, अत अतिम निर्णय आयोग के अध्यक्ष सर साइरिल रेडक्लिफ द्वारा लिए गए दुर्भाग्य से 17 अगस्त को रेडक्लिफ अवॉर्ड की घोषणा के पहले और बाद मे साप्रदायिक दगे और बलात विस्थापन हुआ

सीलोन आयरनवुड

(प्रजाति *मेसुआ फेरिआ* या *नाग केसर*), यह चाय के कुल (*थिएलीज*) के *गार्सिनिया* परिवार (*क्लूसियासिए*) का उष्णकटिबधीय वृक्ष है इसके आकार, पत्तो और सुगधित फूलो के कारण उष्ण जलवायु क्षेत्रो मे इसकी खेती होती है सीलोन आयरनवुड धीमी गति से बढता है और इसकी अधिकतम ऊचाई 18 मीटर तक हो सकती है इसकी चमकदार हरी सुदर पत्तिया कापलावस्था मे लाल रग की होती है पीले केद्र वाले सफेद खुशबूदार फूल 7–8 सेमी चौडे और चार पखुडियो वाले होते है

सीहोर

नगर पश्चिमी मध्य प्रदेश राज्य, मध्य भारत पहले ब्रिटिश छावनी रह चुका यह नगर ब्रिटिश भोपाल एजेसी का मुख्यालय था 20वी शताब्दी के शुरुआती दशको मे यह भोपाल राज्य को सौप दिया गया इस नगर मे एक छोटा सा किला है, जिसके समीप ही हिदू मदिर पर निर्मित एक मस्जिद है, सीहोर सिवान और लोतिया नदियो के सगम के समीप स्थित है और इसके आसपास का मैदान बेतवा, पार्वती और नर्मदा नदियो से सिचित है इस नगर मे प्रत्येक वर्ष अनेक बडे मेलो का आयोजन होता है, जिनमे मदेशी मेला, किसान मेला और डोल ग्यारा शामिल है

एक बडे सडक व रेल जक्शन से युक्त सीहोर (16 42 वर्ग किमी) कृषि उत्पादो का प्रमुख थोक व खुदरा व्यापार केद्र है चीनी मिले, कागज निर्माण, कपास धुनाई और हथकरघा से जुडे कारखाने यहा के मुख्य उद्योग है बीडी, चर्म शोधन, चमडे के जूते, लकडी के खिलौने, लोहे की छोटी–छोटी निर्माण सामग्रिया (हार्डवेयर), फर्नीचर और उपस्कर यहा के लघु एव कुटीर उद्योगो मे बनाए जाते है सीहोर अपनी मलमल के लिए विख्यात है

यहा भोपाल विश्वविद्यालय से सबद्ध अनेक सरकारी व निजी महाविद्यालय के साथ–साथ प्रशिक्षण महाविद्यालय व पुस्तकालय भी है जनसख्या (2001) नगर 90,930, जिला कुल 10,78,769
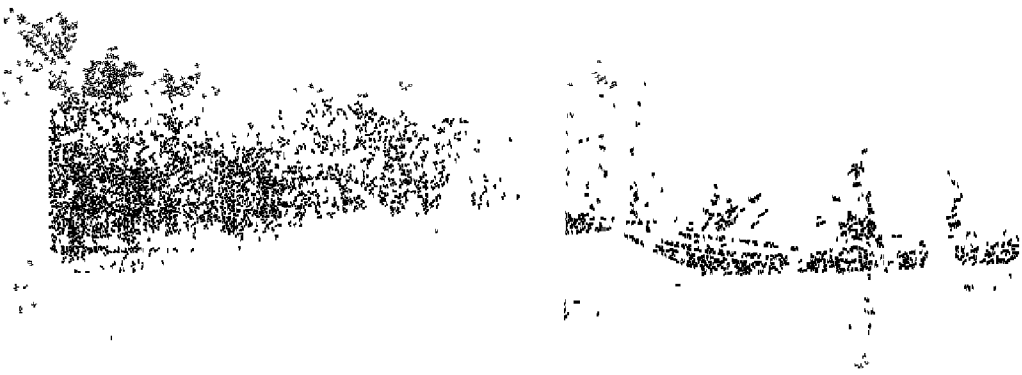
ग्वन पश्चिम बगाल मे अर्द्ध जलमग्न मैग्रोव (बाए) और मछुआरे (दाए)
न्य पश्चिम बगाल पर्यटन विभाग

रबन

ाल की खाडी मे हुगली नदी के मुहाने (भारत) से मेघना नदी के मुहाने (बाग्लादेश) 260 किमी तक विस्तृत एक व्यापक जगली एव लवणीय दलदली क्षेत्र, जो गगा टा का निचला हिस्सा बनाता है यह 100–130 किमी मे फैला अतर्स्थलीय क्षेत्र है ना क एक सजाल, लहरो वाली नदियो और अनेक नहरो द्वारा कटी हुई खाडियो साथ इस भूक्षेत्र मे घने जगलो से ढके दलदली द्वीप समूह है

रबन नाम सभवत 'सुदरी का वन' से लिया गया है, जिसका सबध ईधन के लिए मवान लकडी उपलब्ध कराने वाले एक विशाल मैग्रोव वृक्ष से है समुद्र तट के साथ मैग्रोव वाले दलदलो मे परिवर्तित होते है, दक्षिणी क्षेत्र विभिन्न जगली जानवरो घडियालो से भरा हुआ है और वस्तुत निर्जन है यह बगाल के शेर का आखिरी क्षित क्षेत्र और बाघ सरक्षण परियोजना का स्थल है कृषि योग्य उत्तरी क्षेत्र मे ल गन्ना, लकडी और सुपारी की खेती होती है

ा

बी शब्द, अर्थात प्रथागत व्यवहार), मुस्लिम समुदाय के पारपरिक सामाजिक और नूनी रिवाजो और व्यवहार का सग्रह है पूर्व–इस्लामी अरब मे सुन्ना से आशय दिवासी पूर्वजो द्वारा स्थापित परपराओ से था, जिन्हे मानक रूप मे स्वीकार किया था और जिनका पूरे समुदाय द्वारा पालन किया गया था शुरू मे मुस्लिम इस बात तत्काल सहमत नही थे कि उनका सुन्ना क्या हो कुछ लोग मदीना का अनुसरण ते थे, तो कुछ मुहम्मद के साथियो के आचरण का, जबकि इराक, सीरिया और ज (अरब) मे आठवी सदी मे प्रचलित क्षेत्रीय मतो ने सुन्ना की तुलना एक आदर्श स्था से करने का प्रयास किया, जो अशत उनके अपने क्षेत्रो मे पारपरिक थी और न उन मिसालो पर आधारित थी, जो उन्होने खुद विकसित की थी इन विविध ो को, जिन्होने विविध सामुदायिक व्यवहारो को जन्म दिया, अतिम रूप से आठवी

सदी के उत्तरार्द्ध मे कानून के विद्वान अश्–शफीई (767–820) ने समेकित किया उन्होने पैगबर मुहम्मद के सुन्ना को, जो प्रत्यक्षदर्शियो की बातो, क्रियाकलापो और अनुमोदनो मे सुरक्षित थे और *हदीस* के नाम से जाने जाते थे, मानक और कानूनी रूप दिया यह *कुरान* के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण सहिता है

जब मुस्लिम विद्वानो ने विभिन्न सैद्धातिक, कानूनी और राजनीतिक मतो के समर्थको द्वारा *हदीस* के सपूर्ण पुनर्निर्माण को देखते हुए *इल्म अल–हदीस,* व्यक्तिगत प्रथाओ की प्रामाणिकता को परखने की कसौटी का विकास किया, तब सुन्ना की आधिकारिक ताकत और भी प्रभावी हुई सुन्ना का इसके बाद *तफसीर,* कुरानी व्याख्याओ में पाठ के अर्थ को पूर्ण करने के लिए और इस्लामी विधिशास्त्र *फिक्ह* मे उन न्यायिक निर्णयो के आधार के रूप मे इस्तेमाल किया गया, जिनकी चर्चा *कुरान* मे नही की गई है

सुन्नी

अरबी, इस्लाम की दो प्रमुख शाखाओ मे से एक यह शाखा इस्लाम को मानने वाले बहुसख्यको से बनी है सुन्नी मुसलमान अपने सप्रदाय को मुख्यधारा और इस्लाम की पारपरिक शाखा मानते है, जो अल्पसख्यक सप्रदाय शिया से अलग है

सुन्नी पहले चार खलीफाओ को मुहम्मद साहब के जायज उत्तराधिकारी मानते हैं, जबकि शिया मानते है कि मुस्लिम नेतृत्व पर केवल मुहम्मद साहब के दामाद अली और उनके वशजो का अधिकार है शियाओ के विपरीत सुन्नियो ने लबे समय से मुहम्मद साहब द्वारा स्थापित एक मजहबी राज्य की कल्पना की है, जो लौकिक राज्य क्षत्र होगा और इसलिए माना है कि इस्लामी नेतृत्व खुदाई व्यवस्था या प्रेरणा से तय न होकर मुस्लिम विश्व की मौजूदा राजनीतिक वास्तविकताओ से तय होगा इस वजह से ऐतिहासिक रूप से सुन्नियो ने धर्म और व्यवस्था बनाए रखने पर मक्का के अग्रणी परिवारो का नेतृत्व स्वीकार किया और सामान्य, यहा तक कि विदेशी खलीफाओ को भी स्वीकार किया सुन्नियों ने माना कि खलीफा को मुहम्मद साहब के कुल, कुरैश, का सदस्य होना चाहिए, किंतु चुनाव की एक ऐसी लचीली व्यवस्था बनाई कि उनका मूल जो भी हो वास्तविक खलीफा को निष्ठा मिल सके, सुन्नी और शिया सप्रदायो मे आध्यात्मिक और राजनीतिक सत्ता को लेकर उभरे मतातर 13वी सदी मे खिलाफत के समाप्त होने के बाद तक भी दृढ रहे सुन्नी रूढिवादिता बहुसख्यक समुदाय के विचारो और प्रथाओ पर बल दिए जाने से स्पष्ट होती है, जो परिधीय समूहो के विचारो से भिन्न है सुन्नियो द्वारा विकसित आम राय की सस्था ने उन्हे ऐतिहासिक विकास से उपज विभिन्न रिवाजो और व्यवहारो को स्वीकार करने की सुविधा दी, जिनका मूल *कुरान* मे नही था

सुन्नी *हदीस* की छह 'अधिकृत' किताबो को मानते है, जिनमे मुहम्मद साहब की मौखिक परपराए सगृहीत है सुन्नी मुस्लिम कानूनी विचारधाराओ मे से एक को शास्त्रसम्मत मानते है 20वी सदी मे सुन्नी केवल ईरान, इराक और शायद यमन को

छोडकर सभी देशो मे बहुसख्यक थे 20वी सदी के अत मे उनकी सख्या 90 करोड थी और यह इस्लाम को मानने वाले समस्त लोगो का 90 प्रतिशत था

सुबर्णरेखा नदी

नदी, पूर्वोत्तर भारत, दक्षिण बिहार (झारखड) मे उदगम सुबर्णरेखा (सोने की धारा) ताबे की खान वाले क्षेत्र से होकर पूर्व की ओर बहते हुए हुडरूबाग जलप्रपात पर छोटा नागपुर पठार को छोडती हुई पूर्व दिशा मे अपना प्रवाह जारी रखती है समूचे पश्चिम बगाल स होकर 470 किमी मार्ग तय करन क बाद यह बगाल की खाडी मे मिलती ह काची और करकरी इसकी प्रमुख सहायक नदिया है इसका बेसिन ताबा और जस्ता जैसी क्षारीय धातुओ के भडारो के कारण महत्त्वपूर्ण है

सुब्बुलक्ष्मी, एम एस.

पूरा नाम मदुरई शनमुखवदीव सुब्बुलक्ष्मी, (ज –16 सित 1916, मदुरै, तमिलनाडु, भारत), अनुश्रुत गायिका, जिन्होने कर्नाटक सगीत जगत पर अपनी छाप छोडी, जो पहले तक पुरुष प्रधान क्षेत्र था

एक विलक्षण वीणावादक मदुराई शनमुखवदीव की बेटी सुब्बुलक्ष्मी सगीत से अनुप्राणित माहौल मे पली–बढी बचपन म वह अपने घर के पास स्थित प्रसिद्ध मीनाक्षी मदिर मे बजने वाले नादस्वरम और अपनी मा द्वारा बजाई जाने वाली वीणा के स्वरो के साथ गुनगुनाती थी चोथी कक्षा मे स्कूल की पढाई छोडकर सुब्बुलक्ष्मी ने स्वय को सगीत–साधना के प्रति समर्पित कर दिया अपनी माता के अलावा उन्हे कर्नाटक सगीत की एक महान हस्ती सम्मनगुडी श्रीनिवास अय्यर से भी शिक्षा प्राप्त हुई 1926 मे उन्होने अपना पहला ऐल्बम रिकॉर्ड किया और एकल प्रस्तुति देने लगी, जिनमे वह श्रोताओ को अपनी सुरीली आवाज से सम्मोहित कर लेती थी

एम एस सुब्बल
सौजन्य द

1938 मे महिला मुक्ति के विषय पर आधारित *सेवासदनम्* से उन्होने फिल्मी दुनिया मे कदम रखा 1940 मे सुब्बुलक्ष्मी ने त्यागराजन सदाशिवम से विवाह किया, जो फिल्म निर्माण से जुडे पूर्व स्वतत्रता सेनानी थे सदाशिवम ने उनके पथ–प्रदर्शक की भूमिका निभाई और उनके सगीत जीवन को रूप दिया *शकुतलै* (1940), *सावित्री* (1941) और हिदी तथा तमिल, दोनो भाषाओ म बनी *मीरा* (1945) जैसी फिल्मो मे गायिका अभिनेत्री के रूप मे प्रदर्शन से सुब्बुलक्ष्मी को बहुत ख्याति मिली सदाशिवम द्वारा निर्देशित फिल्म *मीरा* की सफलता ने सुब्बुलक्ष्मी को देश भर मे एक सुपरिचित नाम बना दिया

सुब्बुलक्ष्मी ने कर्नाटक सगीत की तीन महान हस्तियो– त्यागराजा, मुत्थुस्वामी दीक्षितर, और श्यामा शास्त्री –की धुनो को अपना स्वर प्रदान किया है विभिन्न भाषाओ मे गाए अपने भक्ति गीतो– भजन और श्लोक –के लिए विख्यात सुब्बुलक्ष्मी ने *वैष्णव जन तो*

भजन गाकर महात्मा गांधी को अश्रुविह्वल कर दिया था उनकी कुछ सर्वाधिक लोकप्रिय रिकॉर्डिंग है-- भगवान वेंकटेश्वर की श्लोक स्तुति *श्री वेंकटेश सुप्रभातम्, श्री विष्णु सहस्त्रनाम, मीरा भजन और हनुमान चालीसा* उन्हे पद्म भूषण (1954), मैगसेसे पुरस्कार (1974), पद्म विभूषण (1975) और 1998 मे भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया

सुरजी--अर्जनगांव की संधि

(30 दिस 1803), मराठा सरदार दौलत राव सिंधिया और अंग्रेजो के बीच हुआ समझौता, दूसरे मराठा युद्ध (1803--05) के पहले चरण मे लॉर्ड लेक द्वारा ऊपरी भारत पर आक्रमण का परिणाम

लेक ने अलीगढ पर कब्जा कर लिया और दिल्ली तथा लसवाडी मे (सित--नव 1803) सिंधिया की फ्रांसीसी प्रशिक्षण प्राप्त सेना को पराजित किया इस समझौते से मुगल बादशाह शाह आलम II को ब्रिटिश सुरक्षा प्राप्त हुई, यमुना--गंगा दोआब, आगरा और गोहद तथा गुजरात मे सिंधिया का क्षेत्र ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कपनी को सौप दिया गया और राजस्थान पर सिंधिया का नियत्रण ढीला पड गया साथ ही सिंधिया के दरबार मे एक ब्रिटिश रेजिडेंट नियुक्त हुआ और उसे प्रतिरक्षा समझौते पर हस्ताक्षर भी करने पडे नवबर 1805 मे तत्कालीन कार्यवाहक गवर्नर--जनरल सर जॉर्ज बारलो ने 'पीछे हटने की लदन नीति' के अनुसार इस समझौते मे कुछ संशोधन किए सिंधिया को ग्वालियर और गोहद के क्षेत्र वापस मिल गए, प्रतिरक्षा संधि रद्द कर दी गई और राजस्थान पर से ईस्ट इंडिया कपनी का नियत्रण हटा लिया गया तीसरे मराठा युद्ध की पूर्वसंध्या पर दबाव के तहत 5 नवबर 1817 को इस संधि मे फिर से संशोधन किए गए सिंधिया ने पिंडारी दस्युओ के खिलाफ अंग्रेजो की मदद करने का वचन दिया और राजस्थान पर से अपने अधिकारो का समर्पण कर दिया इसके कुछ समय बाद 19 राजपूत राज्यो के साथ अंग्रेजो के सुरक्षा समझौते संपन्न हुए

सुरमा नदी

बरक भी कहलाती है, नदी, पूर्वोत्तर भारत और पूर्वी बांग्लादेश मे, लंबाई 900 किमी इसका उद्गम स्थल भारत के पूर्वोत्तर मणिपुर राज्य की मणिपुर पहाडियो मे है, जहा यह बरक कहलाती है यह पश्चिम की ओर बहती हुई दक्षिण--पश्चिम मे मिजोरम मे प्रवेश करती है, जहा से यह भिन्न दिशा मे मुडती हुई उत्तर मे असम मे प्रवेश करती है और पश्चिम मे सिलचर शहर से आगे जाती है यहा से नदी सुरमा (उत्तर) और कुसियारा (दक्षिण) शाखाओ मे बट जाती है, जो बाद मे फिर से सुरमा मे मिल जाती हैं जबकि सुरमा चाय के बागानो से समृद्ध सिलहट की घाटियो मे बहती है पूर्व--मध्य बांग्लादेश के भैरव बाजार मे सुरमा ब्रह्मपुत्र के एक पुराने सोते से मिलकर मेघना नदी का रूप लेती है, जो दक्षिण मे ढाका (भूतपूर्व डाक्का) के पार गंगा मे मिल जाती है बरसात मे इस नदी मे सिलहट तक स्टीमर चलते है

सुरी

सिउरी भी कहलाता है, नगर, बीरभूम जिले का प्रशासनिक मुख्यालय, मध्य–पश्चिम बगाल राज्य, पूर्वोत्तर भारत मयूराक्षी नदी के ठीक दक्षिण मे स्थित यह नगर प्रमुख सडक मार्ग पर स्थित है और कृषि व्यापार के लिए महत्त्वपूर्ण है इसके प्रमुख उद्योगो मे चावल मिल, सूत और रेशम बुनाई और फर्नीचर निर्माण शामिल है मोर नदी सिचाई परियोजना के लिए बनाया गया बाध यहा से 32 किमी पश्चिमोत्तर मे है सुरी 1876 म नगरपालिका गठित हुई थी, यहा एक महाविद्यालय हे, जो वर्द्धमान विश्वविद्यालय स सबद्ध है जनसख्या (2001) 61,818

सुरेद्रनगर

वाधवा भी कहलाता है, शहर, सुरेद्रनगर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय, मध्य गुजरात राज्य, पश्चिम–मध्य भारत यह शहर वाधवा शहरी समुदाय का एक भाग है यह भूतपूर्व वाधवा रियासत की राजधानी था यह अब मुख्यत व्यापार और कृषि प्रसस्करण का केद्र है यहा वस्त्रोद्योग के अलावा साबुन और शीशे का निर्माण भी होता हे यह शहर रेल और सडक मार्ग से जुडा है जनसख्या (2001) शहर 1,56,417

सुरेद्रनगर जिला

गुजरात राज्य, पश्चिमी भारत, सुरेद्रनगर जिले मे औसत वार्षिक वर्षा की दर 487 मिमी हे बाजरा और कपास यहा की मुख्य पैदावार है कृषि आधारित और लघु उद्योग यहा विकसित हुए है सितबर मे यहा तरणेतर उत्सव होता हैं, जिसमे भारी भीड जमा होती है जनसख्या (2001) जिला कुल 15,15,147

सुल्तानपुर

भूतपूर्व कुसापुरा, नगर, सुल्तानपुर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय, उत्तर प्रदेश राज्य, उत्तर–मध्य भारत, लखनऊ के दक्षिण–पूर्व मे गोमती नदी के तट पर स्थित सुल्तानपुर प्राचीन काल से अस्तित्व मे है यह मुस्लिम सुल्तानो क शासन मे आने से पहले कई बार विनाश और पुनर्निर्माण के चक्र से गुजरा मुस्लिम नगर 1857 मे नेस्तनाबूद हो गया और आज की बस्ती अग्रेजो की सैनिक चौकी (छावनी) के रूप मे उभरी यह मुख्यत कृषि व्यापार केद्र है सुल्तानपुर जिले का क्षेत्रफल 4,424 वर्ग किमी है, जिसम गोमती नदी के दोनो तरफ जलोढ मैदान का विस्तार शामिल है यहा गेहू, चावल और जो उगाया जाता है जनसख्या (2001) न प क्षेत्र 1,00,085, जिला कुल 31,90,926

सुहरावर्दिया

रहस्यवादिया (सूफियो) का मुस्लिम सिलसिला, जो अपने आध्यात्मिक अनुशासन की कठोरता के लिए जाना जाता है, बगदाद मे अबू नजीब अस्–सुहरावर्दी द्वारा स्थापित

किया गया था और इसे उनके भतीजे उमर अस्–सुहरावर्दी ने आगे बढाया सिलसिले की रस्मे प्रार्थनाओ (जिक्र) स जुडे खुदा के सात नामो के हजारो जपो पर आधारित है, जो सात 'सूक्ष्म आत्माओ' (लताइफ सबा) और सात रोशनियो स सबद्ध है

कुब्रा सिलसिला अफगानिस्तान और भारतीय उपमहाद्वीप मे केद्रित हो गया, जबकि अन्य शाखाए पश्चिम की ओर बढी ईरान मे 'उमर अल खल्वती' द्वारा स्थापित सुहरावर्दी खल्वतिया भी कठोरतापूर्वक अनुशासित था यह बाद मे तुर्की और मिस्र मे कई शाखाओ मे फैला अरदाबिल, ईरान म सफीउद्दीन द्वारा सगठित सफविया ने ईरानी सफवी वश (1502–1736) और कई तुर्की शाखाओ को जन्म दिया, जो 16वी सदी की शुरुआत मे ऑटोमन शासको के विरुद्ध सक्रिय थे अल्जीरियाई रहमानिया 18वी सदी के दूसरे भाग मे खल्वतिया से विकसित हुआ, जब इसके सस्थापक 'अब्द अर–रहमान अल–गुश्तुली' खल्वती श्रद्धा का केद्र बन गए

सूत क्रॉस

अग्रेजी मे थ्रेड–क्रॉस, आमतौर पर दो छडो को क्रॉस के आकार मे बाधकर बनाई गई वस्तु, जिसमे उनके सिरो पर मकडी के जाले की तरह रगीन धागे बाधे जाते है, जिसका उपयोग तिब्बती जादुई अनुष्ठानो म दुष्ट आत्माओ को पकडने के लिए किया जाता है ऐसे ही सूत क्रॉस तिब्बत से लगे क्षेत्रो तथा दक्षिण अफ्रीका, पेरू, ऑस्ट्रेलिया एव स्वीडन मे भी पाए गए है

तिब्बत मे सूत क्रॉस साधारण हीरे के आकार से लेकर चक्र या बक्से के आकार के जटिल सयोजन वाले, तीन मीटर तक ऊचे होते है यह ऊन, पख और कागज के टुकडो से सजे होते है इनकी उत्पत्ति सभवत बोद्ध–पूर्व या बॉन काल मे हुई, लेकिन बौद्ध पुरोहितो ने एक रक्षात्मक उपकरण या अदृश्य दुष्ट आत्माओ को पकडने एव नष्ट करने के जाल के रूप मे उनका प्रयोग किया नववर्ष उत्सव के दौरान शुद्धिकरण समारोहो मे या बीमारी या दुर्भाग्य से ग्रस्त व्यक्ति के लिए प्रयुक्त क्रॉस को तोड कर जला दिया जाता हे

सूत्र

(सस्कृत शब्द, अर्थात धागा), पालि सूत्त, हिदू धर्म मे एक सक्षिप्त सूक्तिपूर्ण रचना बौद्ध या जैन धर्मो मे उपदेश के रूप मे अधिक विस्तृत रचना प्रारभिक भारतीय विद्वानो ने सामान्यत लिखित रचनाओ पर काम नही किया और बाद मे अक्सर उनके इस्तेमाल मे अरुचि दिखाई, इसलिए ऐसी अत्यत सक्षिप्त रचना की आवश्यकता हुई जिसे याद किया जा सके प्रारभिक सूत्र आनुष्ठानिक प्रक्रियाओ के सहिताकरण थे लेकिन उनका प्रयोग फैला पाणिनि का *व्याकरण सूत्र* (पाचवी–छठी ई पू) कई अर्थो

लेए आदर्श बना सभी भारतीय दार्शनिक पद्धतिया (साख्य के कारिकाए या सैद्धातिक श्लोक थे) के अपने सूत्र थे, जिनमे स न ईस्वी सन मे, लेकिन सभवत इससे पहले दूसरी या तीसरी कए गए हिदू साहित्य से भिन्न, बौद्ध एव जैन सूत्र सैद्धातिक ही इनमे किसी सिद्धात के बिदु विशेष पर उपदेश क रूप मे ती है थेरवाद सूत्रा का सबसे महत्त्वपूर्ण सकलन पालि ष्ट मे पाया जाता है, जिसम गौतम बुद्ध के उपदेश सकलित य म सूत्र सज्ञा व्याख्यात्मक रचना के लिए प्रयुक्त होती है धार्मिक साहित्य मे भी मिलता हे

ा पथ और उपासना पद्धति, जिसमे ईश्वर के प्रत्यक्ष, व्यक्तिगत स्लिम अलौकिक प्रेम और ज्ञान का सत्य जानने का प्रयास हस्यवादी मार्ग शामिल है, जो मानव और ईश्वर की प्रकृति श्व मे अलौकिक प्रेम और प्रज्ञा की उपस्थिति को अनुभव करने ा हेतु बनाए गए है
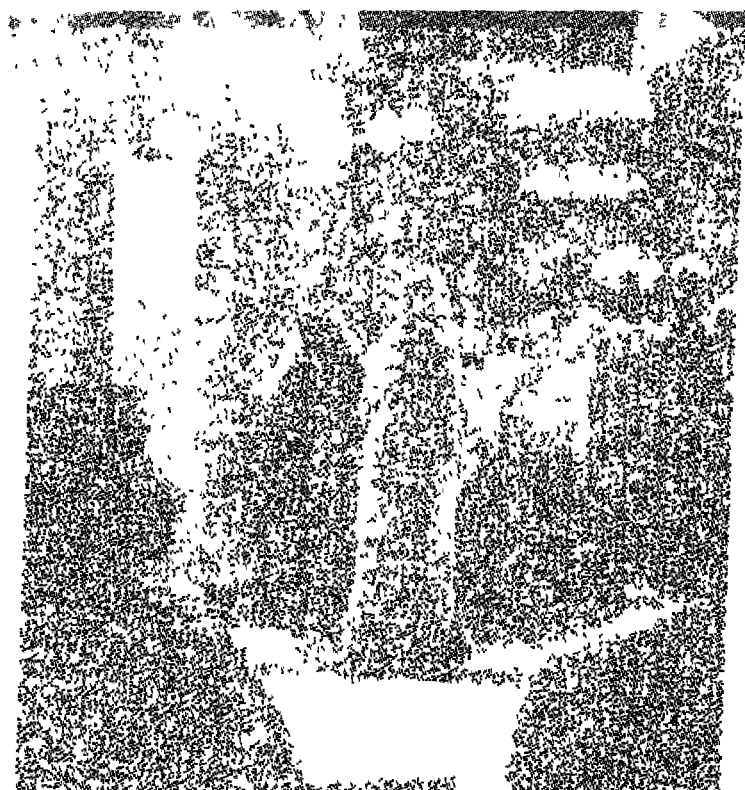
मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह मे दर्शनार्थी, अजमेर, राजस्थान
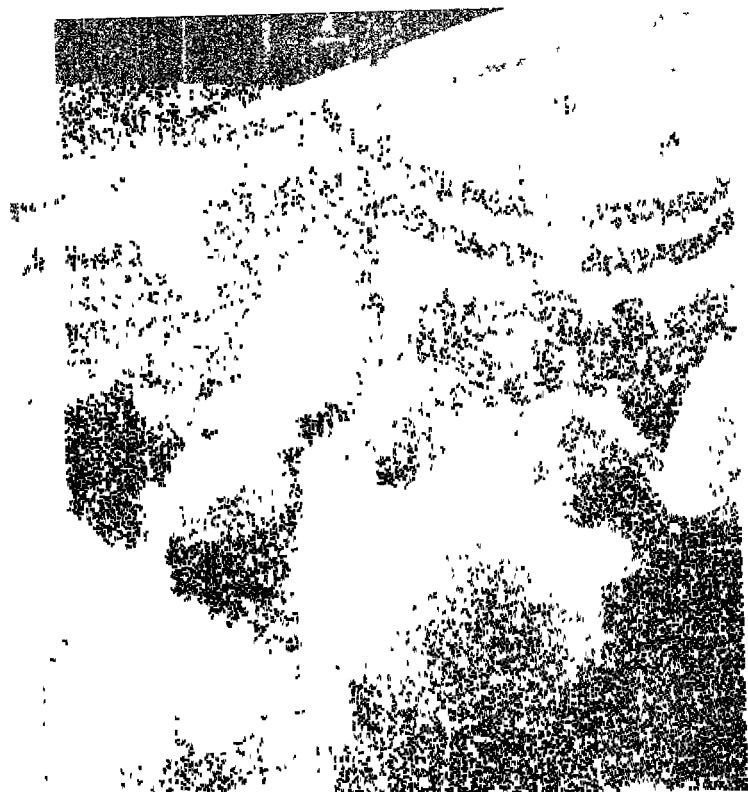
न औलिया की दरगाह के समीप चिश्तिया सूफियो का समारोह
यूसुफ सईद

इस्लामी अध्यात्मवाद को अरबी मे *तसव्वुफ* (शाब्दिक अर्थ उ
है लेकिन 19वी सदी के आरभ से ही पश्चिमी भाषाओ मे र
सूफीवाद एक अमूर्त शब्द है, जो अध्यात्मवादी के लिए अरब
जबकि यह शब्द *सूफ* (ऊन) से बना है सभवत यह आरभि
पहने जाने वाले ऊनी वस्त्र की ओर सकेत करता है सूफियो
(अरबी शब्द *फकीर* का बहुवचन) और फारसी मे *दरवेश* भी

हालाकि पहले यह माना जाता था कि इस्लामी रहस्यवाद की
यहा तक कि भारत के गैर इस्लामी स्रोतो मे है, लेकिन अब
यह आदोलन आरभिक इस्लामी सन्यास–सिद्धात से उपजा
समुदाय की बढती दुनियादारी की प्रति शक्ति के रूप मे विकर्
ही रहस्यवादी धर्म ज्ञान और उपासना पद्धति के अनुरूप वि
गया और उन्हे इस्लाम के अनुसार ढाला गया

आम लोगो को शिक्षित कर तथा मुस्लिमो के आध्यात्मिक
सूफीवाद ने मुस्लिम समाज के निर्माण मे महत्त्वपूर्ण भूमिका
रूखे वितडावाद के खिलाफ होते हुए भी ये अध्यात्मवादी दैवी
सावधानीपूर्वक पालन करते थे सूफी विश्व भर मे धर्मोपदेश

जिम्मेदार रहे है, ये गतिविधिया आज भी जारी है सूफियो ने इस्लाम क सस्थापक पेगबर मुहम्मद की छवि का विस्तार किया है और इस प्रकार काफी हद तक मुस्लिम धार्मिकता को प्रभावित किया है सूफी शब्दावली के बगैर फारसी और उससे सबधित अन्य साहित्य, जैसे तुर्की, उर्दू, सिधी, पश्तो और पजाबी अपना विशेष आकर्षण खो दगे इन भाषाओ के साहित्य की कविताओ के जरिये मुस्लिमो के बीच आध्यात्मिक विचार बडे पैमाने पर फैले कुछ देशो मे सूफी नेता राजनीतिक रूप से भी सक्रिय रहे

इतिहास

इस्लामी आध्यात्मिकता के विकास के कई चरण थे, जिनमे शामिल थे, (1) आरभिक सन्यास–सिद्धात का आभास, (2) अलौकिक प्रेम की एक शास्त्रीय आध्यात्मिकता का विकास, तथा (3) अध्यात्मवादियो से सबधित बिरादरियो का उदय और फैलाव लेकिन इन सामान्य चरणो के बावजूद इस्लामी अध्यात्मवाद का इतिहास मोटे तौर पर व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभवो का इतिहास है

धर्मपरायण वर्गो मे सूफीवाद का पहला चरण आरभिक उमय्या काल (661–750 ई) की सासारिकता की प्रतिक्रिया–स्वरूप आया *कुरान* के कयामत सबधी शब्दो पर लगातार चितन करने के कारण ये पीर–फकीर 'हमेशा रोने वाले' तथा विश्व को 'दु खो का झोपडा' मानने वालो के रूप मे प्रसिद्ध हुए *कुरान* के निर्देशो और परपराओ के सावधानीपूर्वक पालन, ईश्वरनिष्ठा के कई कार्यो और विशेष तौर पर रात को प्रार्थना करने की अभिरुचि क चलते इनकी अपनी खास पहचान थी

शास्त्रीय अध्यात्मवाद

प्रमरूपी तत्त्व के प्रवेश का श्रेय, जिसने सन्यास को गूढ तत्त्ववाद मे बदल दिया, बसरा की राबिया अल–अदाविया (मृ –801) नामक महिला को जाता है उन्होने स्वर्ग की आशा तथा नरक के भय से रहित ईश्वर प्रेम के सूफी आदर्श की स्थापना की राबिया के बाद के दशको मे कुछ हद तक ईसाई सतो के साथ विचारो के आदान–प्रदान के जरिये इस्लामी विश्व मे आध्यात्मिक चलन बढने लगा शुरुआती पीढियो मे अनेक अध्यात्मवादियों ने अपने प्रयास *तवक्कुल*, अर्थात ईश्वर मे असीम आस्था पर कद्रित रख जो सूफीवाद की एक केंद्रीय अवधारणा बन गई एक इराकी आध्यात्मिक मत अपने दृढ सयम तथा मनोवैज्ञानिक अतर्दृष्टि के लिए प्रसिद्ध हुआ इस इराकी मत की शुरुआत अल–मुहासिबी (मृ –857) ने की थी, जो मानते थे कि सन्यास का एकमात्र महत्त्व है, ईश्वर के साथ साहचर्य की तैयारी मे आत्मा का शुद्धिकरण उनके शास्त्रीय सयम तथा ज्ञान सबधी उपदेशो को बगदाद के जुनैद (मृ –910) ने पूर्णता प्रदान की, बाद के सभी मतो और विधानो की कडियो का अतीत इन्ही से जुडता है एक मिस्री सूफी सप्रदाय मे नूबीया धू–अन्–नन (मृ –859) ने एक तकनीकी शब्द *मारफत* (आतरिक ज्ञान), जो पाडित्य के विपरीत था, का सृजन कर प्रतिष्ठा पाई, अपनी प्रार्थना मे उन्होने ईश्वर की स्तुति मे समूची प्रकृति समाहित कर ली यह विचार *कुरान* पर

श्ती की दरगाह के बाहर का दृश्य अजमेर, राजस्थान
स्वप्ना दत्ता

आधारित था तथा बाद मे फारसी एव तुर्की काव्य मे इसका विस्तृत वर्णन किया गया ईरानी मत मे सामान्यत अबू यजीद अल बिस्तामी (मृ–874) को खुद का मिटाने के महत्त्वपूर्ण सिद्धात, *फना* का प्रतिनिधि माना जाता है, उनकी कहावतो का अनोखा प्रतीकवाद बाद के आध्यात्मिक कवियो की शब्दावली क एक भाग का पूर्वगामी है इसी समय खासकर इराकी सूफियो के बीच अलौकिक प्रेम की अवधारणा महत्वपूर्ण हो गई इसके प्रमुख प्रतिनिधि है नूरी जिन्होने अपने बधुओ तथा 'प्रेमी' सनम की खातिर जान दे दी

मानव प्रकृति और पैगबर के सार तत्त्व के बारे मे आध्यात्मिक अतर्दृष्टि पर आधारित ब्रह्मविद्या विषयक आरभिक अनुमान सहल अत्तुस्तारी (मृ–लगभग 896) जैसे सूफियो द्वारा लगाए गए बाद मे अल–हाकिम अत्–तिरमिजी (मृ–898) ने यूनानी सस्कृति के विचार अपनाए सहल अल–हुसैन बिन मसूर अल–हल्लाज के गुरु थे, जो अपने वाक्याश *अनल–हक*, 'मै सृजनात्मक सत्य हू' (जो अक्सर 'मै ईश्वर हू' के रूप मे अर्थान्वित होता है) के लिए प्रसिद्ध हैं बाद मे इस वाक्याश की व्याख्या सर्वेश्वरवादी ढग से हुई, लेकिन वास्तव मे यह उनके *हुवा हुवा* (वह वह) सिद्धात का ही सार रूप है, यानी ईश्वर स्वय को सार रूप मे पसद करते थे और उन्होंने आदम का सृजन 'अपनी ही छवि मे' किया हल्लाज को उनके उपदेशों की वजह से 922 मे बगदाद मे मृत्युदड दिया गया, वह बाद के अध्यात्मवादियो और कवियो के लिए धर्मशास्त्रियो द्वारा मार डाले गए बेमिसाल 'शहीद–ए–मुहब्बत' है उनकी गिनी–चुनी कविताए सौंदर्यपूर्ण है, उनका गद्य, जिसमे एक स्पष्टवादी मुहम्मदी अध्यात्मवाद है अर्थात पैगबर मुहम्मद पर केद्रित गूढ तत्त्ववाद है, जो उतना ही सुदर है, जितना जटिल है इन आरभिक शताब्दियो मे सूफी विचारधारा छोटे–छोटे सकुलो मे प्रसारित होती थी ऐसे सकुलो के कुछ सूफी अध्यात्मवादी नेता या मार्गदर्शक शेख शिल्पकार भी थे 10वी सदी मे रूढिवादियो के बढते शक को शात करने के लिए सूफीवाद के

मतो के बारे मे पुस्तिकाए लिखना जरूरी समझा गया, 10वी सदी के आखिर मे अबू तालिब मक्की, सर्राज और कालाबाजी द्वारा अरबी मे तथा 11वी सदी मे कुशेरी व फारसी मे हुज्वीरी द्वारा लिखित सक्षिप्त रचनाए दर्शाती है कि कैसे इन लेखको ने सूफीवाद का बचाव करने तथा उसके शास्त्रसम्मत चरित्र को साबित करने की कोशिश की यहा उल्लेखनीय है कि य अध्यात्मवादी उस युग के इस्लामी कानून एव धर्मशास्त्र की सभी विचारधाराओ से ताल्लुक रखते थे

शास्त्रीय सूफीवाद की शृखला मे अतिम महान हस्ती अबू हामिद अल–गजाली (मृ–1111), जिन्होने अनेक अन्य रचनाओ के अलावा *अहया–ये–ऊलूमुद्दीन* (धर्म–विज्ञान का पुनरुत्थान) लिखा इसने ईश्वर को दुनिया के समान बताने की बढती धर्म शास्त्रीय प्रवृत्तियो के विपरीत नरमपथी अध्यात्मवाद स्थापित किया और इस प्रकार लाखो मुस्लिमो के विचारो को प्रभावित किया उनके छोटे भाई अहमद अल–गजाली ने आध्यात्मिक प्रेम पर सबसे जटिल निबधो मे से एक लिखा (*सवानेह*, 'घटनाए' {अर्थात, बिरले विचार}), जिसके बाद यह विषय फारसी काव्य का मुख्य विषय बन गया

सिलसिलों का उदय

कुछ समय पश्चात आध्यात्मिक सिलसिले (बिरादरिया, जो किसी नेता–सस्थापक के उपदेशो पर निर्भर रहती है) आकार लेने लगे 13वी शताब्दी, यद्यपि राजनीतिक रूप से इस्लाम के पूर्वी क्षेत्रो पर मगोलो के हमला व अब्बासी की खिलाफत के अत की छाया से प्रभावित रही, फिर भी यह सूफीवाद का स्वर्णिम काल था, स्पेन मे जन्मे इब्न अल अरबी ने एक सपूर्ण अध्यात्मवादी प्रणाली (ईश्वर तथा विश्व के रिश्ते से सबधित) की रचना की, जो आगे चलकर 'जीवन की अखडता' के सिद्धात का आधार बनी इस सिद्धात के अनुसार सपूर्ण जीव जगत एक है, जो अतर्निहित दैवीय सत्य का प्रकटीकरण है उनके समकालीन मिस्र के इब्न अल–फरीद ने अरबी की उत्कृष्टतम रहस्यवादी कविताए लिखी दो अन्य महत्त्वपूर्ण रहस्यवादी, जिनकी मृत्यु लगभग 1220 ई मे हुई, रहस्यवादी विषयो पर सबसे प्रचुर कार्य करने वाले फारसी शायर फरीदुद्दीन अत्तार व एक मध्य एशियाई पडित, नजमुद्दीन कुबरा थे, जिन्होने उन वृहद मनोवैज्ञानिक अनुभवो के वाद–विवाद को प्रस्तुत किया, जिनका रहस्यवादी सिद्ध को सामना करना पडता है

फारसी भाषा के महान रहस्यवादी शायर, जलालुद्दीन अलरूमी (1207–73) ने रहस्यवादी प्रम से प्रेरित होकर गीतात्मक शायरी लिखी, जिसे उन्होने अपने रहस्यवादी प्रिय तबरेज के शम्सुद्दीन को मिलन के प्रतीक के तौर पर समर्पित किया लगभग 26,000 दोहो मे लिखी रूमी की उपदेशात्मक शायरी *मसनवी* फारसी पढने वाले रहस्यवादियो के लिए *कुरान* के पश्चात सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रथ है यह रहस्यवादी विचारधारा का विश्वकोश है, जिसमे हर कोई अपने धार्मिक विचार पा सकता है रूमी ने उन नाचने वाले दरवेशो के सगठन को प्रेरित किया, जो उत्कृष्ट सगीत के साथ एक वृहद नृत्यात्मक धर्म विधि के द्वारा परमानद प्राप्ति का प्रयास करते थे उनके कनिष्ठ

समकालीन युनूस एमरे ने तुर्की रहस्यवादी काव्य का प्रारंभ किया, जिसे उन्होंने मोहक अदा के साथ दरवेशों के बेकतशिया (बेकतसी) सम्प्रदाय प्रचारित किया, जो आधुनिक तुर्की में अब भी लोकप्रिय है मिस्र में कई अन्य रहस्यवादी प्रवृत्तियों के अलावा अश-शाजिलीया (मृ.–1258) ने शाजिलिया सम्प्रदाय की स्थापना की इसके प्रमुख लेखकीय प्रतिनिधि, एलेक्जेंड्रिया के इब्न अता अल्लाह ने मर्यादित सूत्र (हिक्म) लिखे

इसी समय, सूफीवाद के मूल आदर्श समूचे इस्लामी विश्व में व्याप्त हो गए, और इसकी सीमाओं पर उदाहरणार्थ, भारत में सूफियों ने इस्लामी समाज को गढने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई कालांतर में भारत में कुछ सूफी दैवीय एकात्म के उस विचार पर अत्यधिक बल दिए जाने के कारण हिंदू रहस्यवाद के निकट आए, जो लगभग एकत्ववाद बन गया एक धार्मिक–दार्शनिक परिप्रेक्ष्य के अनुसार, मूलभूत सत्य केवल एक है तथा ईश्वर व विश्व (और मानव) के बीच अंतर समाप्त होता प्रतीत होता है मुगल शहंशाह अकबर (मृ.–1605) के विभिन्न विश्वासों व प्रथाओं को सम्मिलित करने के समन्वयात्मक प्रयास तथा शहजादा दारा शिकोह (विधर्म के लिए मृत्युदंड दिया गया, 1659) के विचार रूढिवादियों के लिए आपत्तिजनक थे विशिष्ट रूप से विरोधी आंदोलन की अगुआई भी एक रहस्यवादी सम्प्रदाय, 14वीं शताब्दी में स्थापित एक मध्य एशियाई बिरादरी, नक्शबंदिया ने की वहदत अल–वुजूद (जीव की एकता) की विचारधारा के विपरीत नक्शबंदिया ने वहदत अश–शुहूद (दृष्टि की एकता), वस्तुनिष्ठ अनुभव के स्थान पर अनुयायी के मन ही में होने वाले एकत्व के विषयगत अनुभव, की वकालत की अहमद सरहिंदी (मृ.–1624) भारत में इस आंदोलन के प्रमुख नेता थे उनके पवित्रता के दावे आश्चर्यजनक रूप से साहसिक थे वह स्वयं को ब्रह्मांड का दैवीय रूप से प्रतिष्ठित अधिपति मानते थे मानव व ईश्वर (जिन्हें 'सेवक' व 'स्वामी' कहा गया) के मध्य एकत्व की संभावना को स्वीकारने से उनके इनकार व उनके मर्यादित कानून के मुताबिक व्यवहार के कारण उन्हें व उनके अनुयायियों को मुगल दरबार में व तुर्की जैसे सुदूर स्थान तक कई शिष्य मिले 18वीं शताब्दी में दिल्ली के शाह वली अल्लाह रहस्यवाद की दोनों विरोधी विचारधाराओं के बीच समझौते के प्रयास से जुडे, वह राजनीतिक रूप से भी सक्रिय थे तथा उन्होंने *कुरान* को मुगल भारत की आधिकारिक भाषा, फारसी में अनूदित किया 18वीं शताब्दी के अन्य भारतीय रहस्यवादियों, जैसे मीर दर्द ने नई विकसित हो रही उर्दू शायरी की रूपरेखा तैयार करने में निर्णायक भूमिका अदा की

इस्लामी विश्व के अरबी भागों में, 1500 के पश्चात केवल कुछ ही रोचक रहस्यवादी लेखक पाए गए इनमें मिस्र में अश–शारानी (मृ.–1565) व सीरिया में लेखक अब्द अल–गनी अन–नबुलुसी (मृ.–1731) शामिल हैं 17वीं व 18वीं शताब्दियों में तुर्की में कुछ उत्कृष्ट रहस्यवादी कवि हुए रहस्यवादी सम्प्रदायों का प्रभाव कम नहीं हुआ बल्कि नए सम्प्रदायों का उदय हुआ और अधिकांश साहित्य अब भी रहस्यवादी विचारों व अभिव्यक्ति का पुट लिए था इस्लामी राष्ट्रों में राजनीतिक व सामाजिक सुधारकों ने अक्सर सूफीवाद पर आपत्ति जताई, क्योंकि उन्होंने इसे सामान्यतः पिछडा हुआ व

समाज के स्वतंत्र विकास के लिए बाधक माना है अत तुर्की मे ये सिलसिले व दरवेशो के आवास कमाल आतातुर्क द्वारा 1925 मे बद करवा दिए गए फिर भी उनका राजनीतिक प्रभाव आज भी सुस्पष्ट है भारतीय दार्शनिक मुहम्मद इकबाल जैसे आधुनिक इस्लामी विचारको ने पारपरिक अद्वैतवाद पर आक्रमण किया तथा हल्लाज और उनके समकालीनो द्वारा अभिव्यक्त मानको या दैवीय प्रेम की ओर पुन लौटे शहरो म स्थित मुस्लिम रहस्यवादियो की गतिविधिया ज्यादातर आध्यात्मिक (रूहानी) शिक्षा तक सीमित है

सूफी साहित्य

यद्यपि एक पैगबरीय कथन (हदीस) दावा करता है कि 'वह जो ईश्वर को जानता है, शात हो जाता है' सूफियो ने सुविस्तृत साहित्य रचा वे अपनी लेखन गतिविधियो को एक अन्य *हदीस* से 'वह जो ईश्वर को जानता है, अधिक बोलता है' उद्धृत करने मे सफल रहे सूफीवाद के सिद्धातो को समझाने वाली पहली व्यवस्थित पुस्तके 10वी शताब्दी की है, किंतु इससे पूर्व मुहासिबी ने आध्यात्मिक शिक्षा के बारे मे लिखा था, हल्लाज ने सारपूर्ण भाषा मे गहन विचार रचे व कई सूफियो ने अकथनीय रहस्यो के अपने अनुभवो को समझाने के लिए कविताओ का प्रयोग किया अथवा अपने शिष्यो को हिदायत देने के लिए कूट–सदेश जैसे पत्रो का प्रयोग किया सराज व उनके अनुयायियो द्वारा लिखे गए सूफीवाद के विवरण साथ ही सुलामी, अबू नूआयम अल–इस्फहानी व अन्य द्वारा रचित *तबकात* (जीवनी सबधी कार्य) के साथ ही कुछ विशिष्ट पडितो की जीवनिया, प्रारभिक सूफीवाद के बारे मे जानकारी का स्रोत है

कुरान की प्रारभिक आध्यात्मिक व्याख्या केवल आशिक रूप से मौजूद है और अक्सर परवर्ती स्रोतो मे खडित उद्धरणो के रूप म सरक्षित है आध्यात्मिक सिलसिलो के बनने के साथ ही विभिन्न परिस्थितिया मे सूफी आचरण के बारे मे पुस्तके आवश्यक हो गई, यद्यपि यह मुद्दा सुहरावर्दिया के रूप मे सप्रदाय के सस्थापक व बहुधा अनुवादित *अवारिफ अल–मारुफ* (ज्ञान के लोकप्रिय प्रकार) के लेखक के चाचा अबू नजीब अस–सुहरावर्दी (मृ–1168) के *अदब अल मुरीदीन* (विशेषज्ञ का शिष्टाचार) जैसे उत्कृष्ट कार्यो मे पहले ही सम्मिलित किया जा चुका था इब्न अल–अरबी की *अल–फुतुहात अल–मक्किया* (मक्का मे हुए रहस्योदघाटन) *वहदत अल–वुजूद* (ईश्वर व रचना एक सत्य के दो पहलुओ की तरह) की पुस्तक है, पैगबरो के विशिष्ट चरित्र पर उनका लघुतर कार्य– *फुसुस अल–हिक्म* (बुद्धिमानी की तीक्ष्ण धार) ज्यादा लोकप्रिय हुआ

बाद के अध्यात्मवादियो ने इन कालजयी स्रोतो की अनेक व्याख्याए की और कभी–कभी उन्हे अपनी मातृभाषा मे अनूदित भी किया एक लेखन पद्धति, जो विशेषकर भारत मे 13वी शताब्दी से ही प्रचलित रही, वह है रहस्यवादी नेता के कथनो का सकलन *मल्फुजात,* जिसका मनोवैज्ञानिक रूप रोचक है तथा मुस्लिम समुदाय की राजनीतिक व सामाजिक स्थिति की झलकिया प्रस्तुत करता है शेखो के पत्रो के सकलन भी

जानकारी से भरा है सूफी साहित्य में संत जीवनियों की प्रचुरता है इसमें पैगबर से लेकर लेखक के समय तक के सभी प्रसिद्ध संतो का जीवन–चरित्र अथवा किसी विशिष्ट नगर अथवा प्रांत में रहने वाले किसी खास सिलसिले के संत की जीवनी होती है स्रोतों की आलोचनात्मक छानबीन किए जाने की स्थिति में इस साहित्य से सूफी विचारधारा व प्रथाओं के विकास के बारे में काफी जानकारी उपलब्ध हो सकती है

इस्लामी साहित्य में सूफीवाद का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान शायरी है, जो मुग्ध करने वाले, लघु अरबी प्रेम काव्यों (जो कभी–कभी एक आध्यात्मिक सगीत–गोष्ठी *समा* के लिए गाए जाते थे) से आरभ हुई, जो आत्मा के अपने प्रिय से मिलन की उत्कंठा को व्यक्त करती है अधिकाश फारसी काव्यो मे वर्णित प्रेम सबध एक आदमी व एक सुदर नौजवान के बीच का है, बहुत कम प्रसगो, जैसे इब्न अल–अरबी और इब्न अल–फ़रीद के लेखन में किसी स्त्री के सौंदर्य को शाश्वत सौंदर्य का प्रतीक बनाया गया है, लोकप्रिय भारतीय मुस्लिम रहस्यवादी गीतो मे आत्मा प्रेममय पत्नी है व ईश्वर वह पति है, जिसकी उसे लालसा है पाठक को रूपको व नीतिकथाओ के माध्यम से मिलन व प्रेम की समस्याओ से परिचित कराने के लिए लबी रहस्यवादी–उपदेशात्मक कविताए (*मसनवी*) लिखी गई सनाई (मृ –1131?) की *हदीकत अल–हकीका वा शरीयत अत–तरीका* (सच्चाई का बाग और व्यावहारिक कानून) के बाद अत्तार की *मतेकोतैर* (पक्षियो का वार्तालाप) और रुमी की *मसनवी–ए–मानवी* (आध्यात्मिक दोहे) आई ये तीन रचनाए वे स्रोत है, जिन्होने सदियो से शायरो को रहस्यवादी विचार व छवियां उपलब्ध कराए है सूफी शायरी की विशेषता ईश्वर की प्रशसा मे पुनरावृत्तियो की शृखला के रूप मे अभिव्यक्त भजन हैं

रहस्यवादियो ने राष्ट्रीय व क्षेत्रीय साहित्यो की रचना मे भी व्यापक योगदान दिया क्योकि उन्हे जनसाधारण तक अपना सदेश उनकी अपनी भाषाओ मे पहुचाना था तुर्की साथ ही पजाबी व सिधी मे और दक्षिण एशिया के उर्दू बोलने वाले भागों मे वास्तविक रूप से पहले पहल धार्मिक शायरी सूफियो द्वारा लिखी गई थी उन्होने शास्त्रीय इस्लामी प्रतीकों को परपरागत प्रचलित किवदतियों के साथ जोडा व फारसी के बजाय लोकप्रिय छदो का प्रयोग किया दैवीय प्रेम व रहस्यवादी मिलन की अभिव्यक्ति सासारिक प्रेम व मिलन के रूपको से करने वाली सूफी शायरी बहुधा सामान्य लौकिक प्रेम काव्यो जैसी ही होती थी, अरहस्यवादी शायरी ने सूफी शब्दावली का प्रयोग कर अनेकार्थता का निर्माण किया, जो फारसी, तुर्की व उर्दू साहित्यो के सर्वाधिक आकर्षक व लाक्षणिक गुणो मे से एक मानी जाती है इस प्रकार सूफी विचार उन सभी के हृदय मे व्याप्त हो गए, जिन्होने शायरी को ध्यान से सुना एक उदाहरण हैं, 10वीं शताब्दी के शहीद रहस्यवादी अल–हुसैन इब्न मसूर अल–हल्लाज, जो आधुनिक गतिशील उर्दू शायरी मे भी उतने ही लोकप्रिय है जितने कि 'ईश्वर के मद मे उन्मत्त' सूफियो मे, उन्हे व्यक्ति के आदर्शो के लिए दु.ख भोगने के प्रतीक के रूप में बदल दिया गया है

सूफी विचारधारा व प्रथाएं

महत्त्वपूर्ण पहलू

रहस्यवादियो ने अपनी शब्दावली मुख्यत *कुरान* से ली, जो मुसलमानो के लिए सपूर्ण मेधा का स्रोत है तथा जिसकी व्याख्या उत्तरोत्तर बढती अतर्दृष्टि से की जानी चाहिए, *कुरान* मे रहस्यवादियों को अतिम कयामत का भय दिखाई दिया, किंतु उन्होने यह कथन भी पाया कि अल्लाह 'उन्ह प्रेम करता हे तथा वे उसे प्रम करते हैं', जो प्रेममय रहस्यवाद का आधार बना धार्मिक कानून का सख्ती से पालन तथा पैगबर का अनुसरण अध्यात्मवादियो के लिए मूल आधार थे सख्त आत्मनिरीक्षण तथा मानसिक सघर्ष क द्वारा वे अपने मूल वजूद का स्वार्थ के न्यूनतम चिह्नो से मुक्त कर, मतव्य तथा कार्य की सपूर्ण शुद्धता, *इखलास* प्राप्त करते थे *तवक्कुल* (ईश्वर म विश्वास) का पालन कभी–कभी इस हद तक किया जाता था कि कल के बार मे कोई भी विचार धर्म विरुद्ध माना जाता था 'कम सोना, कम बोलना, कम खाना' आधारभूत माने गए उपवास आध्यात्मिक जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तेयारियो मे से एक बन गया

प्रत्यक मुसलमान की तरह सूफी सतो का मुख्य ध्येय *तौहीद* था, यानी 'ईश्वर के सिवाय कोई और देवता नही है' यह सत्य प्रत्येक व्यक्ति के वुजूद मे महसूस किया जाना चाहिए, और इसलिए इसकी अभिव्यक्तिया अलग–अलग है आरभिक सूफीवाद ने जब तक इच्छाए एकात्म न हो जाए ईश्वर तक पहुचने के लिए प्रेम व स्वैच्छिक दु खभोग की राह को स्वीकारा जुनैद न 'ईश्वर को पहचानने' की बात कही 'क्योकि वह रचना के पूर्व से विद्यमान है', ईश्वर को ही एकमात्र अभिनेता माना गया है, 'उसे ही 'मै' कहने का अधिकार है' कालातर मे *तौहीद* का अर्थ वह ज्ञान, जिसम खुदा के अलावा कुछ भी अस्तित्वमान नही है या खुदा और खुदाई को एक ही सत्य के दो पहलुओ के रूप मे देखने की सामर्थ्य हो गया यह ज्ञान और सामर्थ्य एक–दूसरे के पूरक है (*वहदत अल–वुजूद*)

रहस्यवादियो ने इस बात को माना कि बाहरी विज्ञानो के ज्ञान के अलावा अतर्ज्ञात ज्ञान उस प्रदीपन को प्राप्त करने हेतु आवश्यक है, जिस तक तर्क की पहुच नही है *जौक* अनुभव का प्रत्यक्ष रसास्वादन उनके लिए आवश्यक था किंतु ऐसे रहस्यवादियो को खुदा द्वारा विशेष अनुग्रह कर प्रदत्त प्रेरणाए व साक्षात्कार कभी भी *कुरान* व परपरा के विपरीत नही होना चाहिए तथा वे केवल सबधित व्यक्ति के लिए जायज है यहा तक कि खुलेआम कानून के विरुद्ध कार्य कर जान–बूझकर सार्वजनिक तिरस्कार के भागी बनने वाले मलामती भी निजी जीवन में दैवीय आदेशो का सख्ती से पालन करते थे अपनी शायरी मे परपरागत औपचारिक धर्म के प्रति अपनी अरुचि, यहा तक कि उसके लिए अवमानना का प्रदर्शन करने वाले रहस्यवादी यह कभी नही भूले कि इस्लाम दैवी प्रज्ञा का सर्वोच्च प्रदर्शन है

दवी प्रज्ञा की अभिव्यक्ति का विचार पैगबर मुहम्मद के व्यक्तित्व से भी जुडा था यद्यपि प्रारभिक सूफीवाद ने ईश्वर व आत्मा के बीच रिश्ते पर ध्यान केद्रित किया था,

लेकिन 900 ई के पश्चात एक शक्तिशाली मुहम्मदी रहस्यवाद का विकास हुआ प्रारंभिक वर्षों म पेगबर को कथित ईश्वरीय सबोधन 'यदि तुम नही होते, तो मै विश्व की रचना नहीं करता', सूफियो मे प्रचलित था मुहम्मद कथित रूप से तब भी 'पैगबर थे, जब आदमी पानी और मिट्टी के बीच ही था' मुहम्मद को प्रकाश से उत्पन्न प्रकाश भी कहा गया है, उनके प्रकाश से सभी पैगबरो की रचना हुई, जो इस प्रकाश के विभिन्न पहलुओ के सघटक है अपनी सपूर्णता मे यह प्रकाश ऐतिहासिक मुहम्मद स विकीर्णित होता था और उनके वशजो व सतो मे यह कुछ अशो मे मौजूद था, क्योकि पेगबरियत के साथ ही पवित्रता भी मुहम्मद का एक पहलू है एक अस्पष्ट परपरा ईश्वर के ही मुख से यह प्रमाणित कराती है कि 'मै 'म' रहित अहमद (मुहम्मद) हू (यानी, अहद या एक)'

एक रहस्यवादी को वली भी कहा जा सकता है शाब्दिक रूप से वली (सत) का अर्थ निकट सबधी या मित्र' होता है औलिया (वली का बहुवचन) 'ईश्वर के मित्र है, जिन्हे कोई भय नही होता न ही व कभी दुखी होते है' बाद मे वली शब्द उन मुस्लिम रहस्यवादियो के लिए प्रयोग होने लगा, जो किसी निश्चित स्थान तक ईश्वर के निकट पहुच चुके थे या जो उच्चतम आध्यात्मिक स्तरो तक पहुच चुके थे उनका अपना एक 'व्यक्तित्व' होता हे (यानी, ऐतिहासिक प्रक्रिया मे अतिम व सर्वाधिक परिष्कृत व्यक्तित्व इस व्यक्ति पर आकर विकास क्रम पूर्ण हो जाता है, जैसे मुहम्मद का व्यक्तित्व), जैसा कि पैगबर का था महिला सतो की उपस्थिति समूचे इस्लामी विश्व मे है

सतो का अप्रत्यक्ष पदानुक्रम कई सूफी सतो द्वारा अपनाई गई पदवियो, *कुत्ब* (धुरी ध्रुव) अथवा *गौस* (सहायता), 40 *अब्दल* (स्थानापन्न, क्योकि जब इनमे से किसी की मृत्यु होती ह, तो ईश्वर द्वारा सामान्य सतो मे से दूसरा चुना जाता है), सात *अवताद* (आस्था की 'टेक' या 'सहारा'), तीन *नुकाबा* (नेता, वह, जो लोगो का अपने मालिक से परिचय करवाता है) से बना है सतो की आराधना इस्लाम के विरुद्ध है, जो ईश्वर व मानव के बीच मनुष्यो के द्वारा किसी मध्यस्थ की भूमिका को नही स्वीकारता, किंतु जीवित व उससे अधिक मृत सतो का सप्रदाय, उनके मजारो पर मन्नत मागने के लिए यात्राए, जनसामान्य की भावनाओ की प्रतिक्रिया थी और इस प्रकार कई पूर्व–इस्लामी प्रथाए इस्लाम म रहस्यवाद की आड मे शामिल हो गई उन्नत रहस्यवादी को अक्सर *करामात* (करिश्मा अथवा 'ईश्वरीय कृपा') कहे जाने वाले कुछ चमत्कार करने की क्षमता प्रदत्त होती थी, न कि *मुआजिजात* (वह, जिसकी नकल मनुष्य नही कर सकते) जैसे पेगबरो के चमत्कार इनमे शामिल है, हृदय प्रज्ञा (हृदय का ज्ञान) से भोजन हवा प्रकट करना, दो स्थानो पर एक ही समय मे मौजूद होना तथा शिष्यो के लिए सहायता, चाहे वे निकट हो अथवा कही दूर सक्षेप मे सत वह है, 'जिसकी प्रार्थनाए सुनी जाती है' व जिसके पास *तसर्रुफ*, यानी वह शक्ति है, जिससे वह इस दुनिया मे ऐसी सभावनाए उपस्थित कर सकता है, जो फिलहाल आध्यात्मिक विश्व मे विद्यमान है कई महान सत चमत्कार दिखाने को एक खतरनाक फदा मानते है, जो सूफी को उसके वास्तविक उद्देश्य से भटका सकता है

मार्ग

मार्ग (तरीका) पश्चाताप से आरभ होता है एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक (शेख, पीर) जिज्ञासु को एक शिष्य (मुरीद) के रूप मे स्वीकार करता हे, उसे सख्त तप सबधी प्रथाओ क पालन का आदेश देता है तथा ध्यान के लिए कुछ निश्चित सूत्र सुझाता है कहा जाता है कि शिष्य को गुरु के हाथो मे वैसे ही होना चाहिए 'जैसे एक प्रक्षालक क हाथो मे शव' गुरु उसे अक्सर एक काले कुत्ते के रूप मे निरूपित निम्न आत्मा के विरुद्ध जिहाद (वास्तविक धर्मयुद्ध) की शिक्षा देता है, जिसे मारा नही जाना चाहिए, बल्कि पालतू बनाकर ईश्वर की इच्छानुसार प्रयोग किया जाना चाहिए रहस्यवादी कई आध्यात्मिक चरणो (मुकाम) पश्चाताप, सयम, त्याग व गरीबी से गुजरता है मुहम्मद के कथानुसार, 'गरीबी मेरी शान है', गरीबी को कभी–कभी परम सपन्न अल्लाह के अलावा किसी वस्तु मे रुचि न होने की तरह व्याख्यायित किया जाता था, किंतु गरीबी का वास्तविक अर्थ कायम रहा, जिस कारण रहस्यवादी को बहुधा गरीब, फकीर या दरवेश के रूप मे दर्शाया जाता हे धैर्य व कृतज्ञता मार्ग के ऊचे मुकाम है व सहमति प्रत्येक कष्ट की प्रेमपूर्ण स्वीकृति है

प्रदीपन के मार्ग मे रहस्यवादी ऐसी बदलती आध्यात्मिक आस्थाओ (हाल) जैसे *कब्द* और *बस्त,* दबाव और प्रसन्नचित आध्यात्मिक विस्तारण, भय, आशा व लालसा तथा घनिष्ठता का अनुभव करेगा, जो ईश्वर द्वारा प्रदान किए जाते हे और रहस्यवादी क तत्कालीन मुकाम के अनुसार बदलती तीव्रता के साथ लबी अथवा छोटी समयावधि तक रहते है मार्ग की परिणति *मारिफा* ('अतर्ज्ञान', 'प्रज्ञा') अथवा *मुहब्बत* (प्रेम) मे होती है यह 9वी शताब्दी से ही सूफीवाद का मूल विषय रहा है, जो प्रमी व प्रेमिका क मिलन को दर्शाता है और इसीलिए रूढिवादियो द्वारा जोरदार तरीके से अस्वीकार किया गया, जिनके लिए 'ईश्वर का प्रेम' केवल आज्ञाकारिता थी अतिम मकसद *फना* (समाहित होना) है, मुख्यत स्वय के गुणो का को मिटाने का त्याग करने की नीतिशास्त्रीय सकल्पना, जो पैगबरीय कथन 'ईश्वर के गुणो को ग्रहण करो' के अनुरूप है, किंतु धीरे–धीरे व्यक्तित्व के सपूर्ण त्याग की ओर अग्रसर होती है कुछ रहस्यवादियो ने शिक्षा दी कि इस नकारात्मक मिलन द्वारा, जिसमे स्व को सपूर्ण रूप मे भुला दिया जाता है *बका* (समयावधि, ईश्वरमय जीवन) की प्राप्ति होती है परमानद का अनुभव, जिसे नशा भी कहा जाता है, के पश्चात 'द्वितीयक सयम' का क्रम हे, यानी सपूर्ण रूप से परिवर्तित रहस्यवादी की इस दुनिया मे वापसी, जहा वह ईश्वर के जीवित साक्षी का कार्य करता है अथवा 'ईश्वर मे यात्रा' को जारी रखता हे शरीयत पर आधारित तरीका (मार्ग) को पूरा कर अध्यात्मवादी *हकीकत* (वास्तविकता) तक पहुच जाता है तत्पश्चात शिष्य को *फना फि अश्शैख* (गुरु मे समाहित होना) से होकर *फना फि–अररसूल* (पैगबर मे समाहित होना) तक निर्देशित किया जाता है, जिसके पश्चात, अतत *फना फि अल्लाह* (खुदा मे समाहित होना) होता है

मार्ग की राह पर प्रयुक्त साधनो मे से एक है *जिक्र* (अल्लाह को याद करना), जिसे *कुरान* के आदेश 'और अल्लाह को अक्सर याद करो' (सूरा 62 10) से लिया गया है

इस्म ईश्वर के एक अथवा सभी सर्वाधिक सुदर नामो का बार–बार उच्चारण, 'अल्लाह' नाम का या किसी निश्चित धार्मिक सूत्र 'अल्लाह के सिवाय कोई और ईश्वर नही ह और मुहम्मद उनके पैगबर है' का उच्चारण होता है 99 अथवा 33 मनको वाली माला 8वी शताब्दी से ही हजारो उच्चारणो को गिनने के लिए प्रयोग की जाती थी इसान का पूरा वुजूद अतत ईश्वर को स्मरण करने का समर्पित हो जाना चाहिए

9वी शताब्दी के मध्य मे कुछ रहस्यवादियो ने सगीत व शायरी की महफिले (*समा*) परमानद की अनुभूति क लिए बगदाद मे शुरु की ओर तब से *समा* की वैधता पर कई पुस्तके लिखी जा चुकी हैं ह्रास के काल मे नशे का, लेकिन सयमी रहस्यवादियो द्वारा कॉफी का (सर्वप्रथम 1300 के पश्चात शाजिलिया द्वारा) का प्रयोग किया गया

इस मार्ग के पथिको (*सलिक*) के अलावा ऐसे सूफी भी पाए जाते है, जिनका कोई गुरु नही हे, कितु वे केवल दैवीय कृपा के कारण आकर्षित होते है, उवैस अल–करानी के नाम पर वे उवैसी कहलाने लगे उवैस पैगबर के समकालीन यमनी थे, जिन्होने पैगबर का कभी नही देखा था, किंतु वह उनमे दृढ विश्वास रखते थे ऐसे व्यक्ति भी है, जो मानसिक रूप स कुछ हद तक विक्षिप्त माने जाते है व जिन्हे *मजजूब* (आकर्षित) कहा जाता हे

सूफीवाद मे प्रतीकवाद

अध्यात्मवादी के समक्ष दैवीय सत्य समय–समय पर रगो और ध्वनियो मे दृश्यो, ध्वनियो और स्वप्नो के माध्यम से उद्घाटित होते थे, किंतु इन अतार्किक व अकथनीय अनुभवो को दूसरो तक पहुचाने के लिए रहस्यवादियो को सासारिक अनुभवो की शब्दावली, जैसे प्रेम व मदोन्मत्तता का सहारा लेना पडता था, जो अक्सर रूढिवादी दृष्टिकोण से आपत्तिजनक होता था मय, जाम और साकी के प्रतीक, जो सर्वप्रथम अब याजिद अल–बिस्ती के द्वारा 9वी शताब्दी मे प्रयोग किए गए थे, सभी जगह लोकप्रिय हो गए, चाहे वह अरब तामी अल–फरीद के छद हो, फारसी 'इराकी' हो, अथवा तुर्क युनूस एमरे और उनके अनुयायी हो आत्मा के ईश्वर से मिलन की भाषा को मानवीय लालसा व प्रेम की छवियो के माध्यम से अभिव्यक्त करना पडता था कथित हदीस 'मैंन अपन साई को तिरछी टोपी वाले नौजवान के रूप मे देखा' से प्रेरित होकर दैवी सौदर्य की अभिव्यक्ति सुदर लडको के प्रति प्रेम का प्रदर्शन फारसी शायरी मे आम था मिलन का वर्णन सागर मे बूद के मिलने आग मे लोहे की अवस्था, भेदन करते प्रकाश के दृश्य या शमा म परवाने के जलने (सर्वप्रथम हल्लाज द्वारा प्रयुक्त) के रूप मे किया जाता था

सासारिक तथ्यो को दैवीय मुखाकृति की आभा को आच्छादित करते केशो के रूप मे देखा जाता था एकता व अनेकता के रहस्य को दर्पणो की छवियो या शुद्ध प्रकाश को रगीन बनाने वाले समपार्श्व (प्रिज्म) के माध्यम से दर्शाया गया, जो ईश्वर के विभिन्न पहलुओ को दर्शाता है, प्रकृति के प्रत्येक पहलू को ईश्वर से सबधित कर देखा जाता

था रूहानी परिंदे का प्रतीक, जिसमे मानव की आत्मा को एक सर्वज्ञात उडते हुए पक्षी के समान बताया गया है, जो अत्तार के *मतेकोत्तैर* (पक्षियों का वार्तालाप) का केंद्र था। रहस्यवादी शायरो का कोयल व गुलाब का प्रतीक (लाल गुलाब, ईश्वर का आदर्श सौदर्य, कोयल, आत्मा, सर्वप्रथम बकली (मृ –1206) द्वारा प्रयुक्त) भी रुहानी परिंदे के प्रतीक से उत्पन्न है आध्यात्मिक शिक्षा के लिए चिकित्सा विज्ञान (अस्वस्थ आत्मा को स्वस्थ करना) की कीमियागिरी (निकृष्ट तत्व को स्वर्ण मे बदलने की कला) से लिखे गए प्रतीको का प्रयोग भी होता था कई व्याख्याए, जो मूल रूप से ईश्वर को प्रेम का ध्येय बताती थी, परवर्ती काल मे पैगबर के लिए भी प्रयोग मे लाई गई, जिन्हे 'भौतिक विश्व के अधकार और यथार्थ के सूर्य के बीच का सवेरा' कहा गया

कुरान का उल्लेख अक्सर होता था खासकर उन आयतो का, जो दैवीय सर्वव्याप्ति (दुनिया मे ईश्वर की उपस्थिति), जैसे 'जिधर भी तुम मुडो, वहा अल्लाह का एक चेहरा है' (*सूरा* 2 109) या कि ईश्वर 'तुम्हारी कठ–नलिका से भी निकट' है (*सूरा* 50 8) *सूरा* 7 172, जो आदम के अजन्मे बच्चो को ईश्वर का सबोधन है ('क्या मै तुम्हारा मालिक नही हू', *अलस्तू बिराब्बिकुम*), ईश्वर व मानव के मध्य चिरतन प्रेम सबध को इगित करता है मुहम्मद के पूर्व पैगबरो मे मूसा की दृष्टि अपूर्ण मानी जाती है, क्योकि वह रहस्यवादी ईश्वर का वास्तविक दर्शन चाहते है, जलती हुई झाडी के माध्यम से उसकी अभिव्यक्ति नही अब्राहम, जिनके लिए अग्नि गुलाब के बाग मे परिवर्तित हो गई, अपनी वेदना मे रहस्यवादी के सदृश है, अपने सपूर्ण सौदर्य सहित यूसुफ वह रहस्यमय प्रिय है, जिनकी तलाश रहस्यवादी करता है रहस्यवादियो द्वारा प्रयुक्त सदिग्ध स्रोत वाली परपराए अनेक है, जैसे 'जन्नत ओर धरती, मुझ नही धारे है, किंतु मेरे वफादार सेवको के हृदय मुझे धारते है', तथा मानव और ईश्वर के मध्य एक सबध की सभावना भी पारपरिक विचार 'उसने (ईश्वर ने) आदम को अपनी छवि में रचा' से स्पष्ट होती है

ब्रह्मविज्ञानी सूफीवाद

सूफीवाद, जो प्रारभ मे आध्यात्मिक शिक्षा एव आत्मज्ञान का एक व्यावहारिक तरीका था नवप्लेटोवाद, यूनानवादी विश्व, नॉस्टिकवाद (एक प्राचीन रहस्यमय धार्मिक–दार्शनिक आदोलन, जो पदार्थ को असत् व आत्मा को सत् मानता था) और ईरान तथा भूमध्य सागर के पूर्व से इराक तक के प्राचीन कृषीय इलाका वाले विभिन्न देशो की परपराओ को अपनाकर धीरे–धीरे एक ब्रह्मविज्ञानी तत्र मे परिवर्तित हो गया इस परिवर्तन मे सहयोग किया, फारस के अस–सुहरावर्दी ने जो *अल–मकतूल* (जिसकी हत्या हुई हो) कहलाए 1191 मे उन्हे अलेप्पो मे मृत्युदड दिया गया *इशारक* (प्रदीपन) क दर्शन का श्रेय उन्हे जाता है और उन्हाने फारसी व मिस्री (साध्विक) परपराओ को सयुक्त करने का दावा किया अरबी मे उनकी उपदेशात्मक और धर्म सेद्धातिक रचनाए एक जटिल देवदूत शास्त्र (देवदूतो का सिद्धात) सिखाती थी, उनके कुछ लघुतर शोध प्रबध आत्मा की ब्रह्माड के पार यात्रा का वर्णन करते है, 'पूर्व' विशुद्ध प्रकाश व

महादूत की भूमि है, 'पश्चिम' अधकार व पदार्थ की, और मानव 'पश्चिमी वनवास मे रहता है

सुहरावर्दी की मृत्यु के समय ब्रह्मविज्ञानी सूफीवाद के महानतम प्रतिनिधि अपनी उम्र के तीसरे दशक म थे इब्न अल अरबी, मुर्सिया, स्पेन मे जन्मे, जहा काल्पनिक प्रवृत्तिया इब्न मसर्रा (मृ –231) के दर्शन के समय से दृष्टिगोचर हो रही थीं इब्न अल–अरबी को रहस्यवाद की शिक्षा दो स्पनी महिला सतो ने दी थी मक्का की परपरागत तीर्थयात्रा करते हुए उनकी भेट एक युवा, कुशल फारसी महिला से हुई, जो उनके लिए दैवीय बुद्धिमत्ता की प्रतिनिधि थी इस अनुभव के परिणामस्वरूप *तरजुमान अल–इश्काक* (ललक का व्याख्याकार) के मनोरम छदों की रचना हुई, जिन्हे लेखक न बाद मे अध्यात्मवादी तरीके से समझाया इब्न अल–अरबी ने कम से कम 150 ग्रथो की रचना की उनकी महानतम कलाकृति *अल–फुतुहात अल–मक्कीया* (मक्का के रहस्योदघाटन) 560 अध्यायो मे है, जिसमे वह जीवन की एकात्मता के अपने सिद्धात को प्रतिपादित करते हैं

ब्रह्मविज्ञानी सूफीवाद का सार यह है *हदीस कुदसी* या पवित्र परपरा के अनुसार मे एक छुपा खजाना था और पहचाना जाना चाहता था परम तत्त्व या ईश्वर व्यक्त होने को लालायित थे और उन्होने स्वर्गीय आदर्शो के आधार पर भावपूर्ण विश्व की रचना की, यह दर्शन 'दुनिया अल्लाह की भौतिक अभिव्यक्ति' है ब्रह्माड हर क्षण नष्ट व रचित होता रहता है प्रत्येक दैवीय नाम एक नाम मे प्रतिध्वनित होता है विश्व ओर ईश्वर को बर्फ और पानी की तरह बताया गया है या दो आइनो की तरह, जो एक सहानुभूतिपूर्ण सयोजन मे स्वय को एक–दूसरे मे देखते है पैगबर मुहम्मद सपूर्ण पुरुष है, दैवीय नामो के सपूर्ण ईश–दर्शन, रचना के आद्य रूप है मुहम्मद वह 'शब्द' है जिसका प्रत्यक विशिष्ट आयाम एक पेगबर मे है और वह मानव की सभावनाओ की आध्यात्मिक समझ के लिए मानक भी है गूढ तत्त्ववादी को *कुरान* के पैगबरो के *फुसूस अल–हिकम* ('बुद्धिमत्ता के फलक') मे वर्णित चरणो से गुजरना पडता है, जब तक वह *हकीका मुहम्मदिया* ('मुहम्मदीय वास्तविकता' मे परम तत्त्व का प्रथम व्यक्तिमूलन) के साथ एकाकार नही हो जाता मानव के पास केवल उस आस्था के अनुरूप दृष्टि हो सकती है, जिसे वह स्वीकारता है ओर इब्न अल अरबी की बहुधा उद्धृत सहिष्णु सी लगती सूक्ति, 'मै प्रेम के धर्म का पालन करता हू वह जहा भी मुझे ले जाए' का अर्थ एस एच नस्र बताते है 'ईश्वर का स्वरूप उनके लिए अब किसी विशेष आस्था के अनुसार नही है, बल्कि अन्य सभी को छोडकर केवल स्वय का शाश्वत स्वरूप है जिससे उनका साक्षात्कार होता है' सपूर्ण मानव के सिद्धातो का विस्तारण जिली (मृ –लगभग 1424) ने अपने सार–सग्रह *अल–इंसान नअल–कामिल* (सपूर्ण पुरुष) मे किया है जिससे यह सपूर्ण मुस्लिम विश्व मे प्रचलित हो गए

रुढिवादी मुसलमानो व 'सयमित' विचारधारा के अध्यात्मवादियो ने इस्लाम से असगत कहकर इब्न अल अरबी के ब्रह्मविज्ञान पर प्रहार किया, क्योकि 'एक सपूर्ण एकेश्वरवादी पथ चारित्रिक मानको की नैतिक वैधता को गभीरता से नही ले सकता' तथापि

महानतम मालिक' के विरोधी भी उनकी शब्दावली के कुछ अशो क प्रयाग स बच नही पाए असख्य अध्यात्मवादियो और शायरो ने उनके विचारो का प्रचार–प्रसार किया, यद्यपि वे उन्हे केवल आशिक रूप से समझते थे और इसक फलस्वरूप प्रारभिक सूफीवाद के लेखन को भ्रमवश विद्यमान एकेश्वरवाद के रूप मे देखा गया परवर्ती फारसी मे *हमा ओस्त* (सब कुछ वही है) की सर्वेश्वरवादी भावना व्याप्त रही

मिस्र मे इब्न अल–अरबी के समकालीन कवि इब्न अल–फरीद का आमतौर पर उनके साथ उल्लेख किया जाता है बहरहाल, इब्न अल फरीद एक सुव्यवस्थित विचारक नही है बल्कि एक पूर्णकालिक कवि है, जिन्होने अपनी *तैयत अल–कुबरा* (सफर की कविता) मे शास्त्रीय अरबी कविता की कल्पनाशीलता का प्रयोग, अत्यत कलापूर्ण छदो मे प्रेमी की दशा बताने के लिए किया, सूफी के तरीको की झलको का इस्तेमाल करते हुए जैसा उनके पहले और बाद के कई कवियो ने किया उदाहरण के लिए, एक छाया नाटय जीवो के क्रियाकलापो को दिखाती है, जो दैवी स्वामी पर निर्भर है उनका एकीकरण का अनुभव व्यक्तिगत है और अध्यात्मवादी व्यवस्था की अभिव्यक्ति नही है

सगठन

रहस्यवादी जीवन को पहले एक गुरु और कुछ शिष्यों तक सीमित रखा गया था मठीय व्यवस्था की नीव फारसी अबू सईद इब्न अबी उल खैर (मृ –1049) ने रखी, पर भाईचारे के वास्तविक सिलसिले 12वी सदी से अस्तित्व मे आए अब्द अल कादिर अल जीलानी (मृ –1166) ने पहला और अब तक का सबसे महत्त्वपूर्ण सिलसिला शुरू किया, उसके बाद सुहरावर्दिया आया और 13वी सदी से पूर्व (उदाहरण के लिए, ख्वारिज्म मे कुब्राविया) और पश्चिम मे (शालिया) बडे सिलसिले शुरू हुए इस तरह, सूफीवाद कुछ लोगो का मत न रहकर आम लोगो को प्रभावित करने लगा एक कठोर अनुष्ठान स्थापित हुआ जब किसी व्यक्ति को ऐसा कोई गुरु मिल जाता है, जिसके प्रति उसमे पहले से कुछ लगाव हो, तब एक दाखिले की रस्म होती थी, वह गुरु के हाथो मे निष्ठा (*बैअत*) की शपथ लेता था, 9वी सदी के सप्रदाय, इस्लाम और सघो मे प्रवेश की रस्मो मे समानता से एक सभावित मेलजोल के सकेत मिलते है शिष्य (*मुरीद*) को एक कठिन प्रशिक्षण लेना होता था, उसे अक्सर समुदाय म सबसे निचले दर्जे का काम करना होता था, साथियो को खाना खिलाना होता था, भिक्षा मागने जाना होता था (पुराने मठो मे से कई भिक्षावृत्ति पर निर्भर रहते थे) ज्यादातर सिलसिलो मे प्रवेश करने वालो के लिए 40 दिनो का दुष्कर स्थितियो वाला एकातवास आवश्यक था

खिरका, मूलत धज्जियो और पैबदो का बना गुरु का चोगा पहनाया जाना वह निर्णायक कार्य था, जिसके द्वारा शिष्य सिलसिले रहस्यवादी उत्तराधिकार व हस्तातरण की शृखला का एक अग बन जाता था, जो जुनैद से होते हुए स्वय मुहम्मद तक जाता है और हर सिलसिले मे अलग होता है कुछ रहस्यवादी नेता अपने द्वारा सीधे *अल–खिज्र* एक रहस्यमय अमर सत से *खिरका* पाने का दावा करते थे

प्रारंभिक काल में केवल एक गुरु के प्रति निष्ठा की शपथ ली जाती थी, जिसका शिष्य पर संपूर्ण अधिकार रहता था और वह उसके सभी क्रियाकलापों, विचारों, दृष्टि व स्वप्नों पर नियंत्रण रखता था, किंतु बाद में कई सूफियों को दो अथवा अधिक शेखों से खिरका मिला इसी कारण *शेख अत–तरबिया,* जो शिष्य को सिलसिले के कर्मकांडों, रूपों व साहित्य से परिचित कराता है व *शेख अस–सुहबह,* जो उस पर लगातार निगाह रखता है व जिसके साथ शिष्य रहता है, में फर्क होता है बिरादरी के केवल कुछ ही सदस्य केंद्र (दरगाह, खानकाह, टेके) में *शेख* के नजदीक रहते थे, किंतु उनके लिए भी ब्रह्मचर्य अनिवार्य नहीं था दीक्षितों में अधिकांश अपने रोजमर्रा की जिंदगी की ओर वापस लौट जाते थे और सिर्फ कुछ खास रहस्यवादी कर्मकांडों में शामिल होते थे

सर्वाधिक अनुभवी शिष्य को शेख के खलीफा (उत्तराधिकारी) के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता था व अक्सर सिलसिले की गतिविधियों को विस्तार देने के लिए दूसरे देशों में भेजा जाता था विभिन्न सिलसिलों में दरगाहों की व्यवस्था अलग–अलग होती थी, कुछ पूरी तरह दान पर निर्भर होते थे, जिससे उनके सदस्य अत्यधिक गरीबी में रहते थे, अन्य अमीर थे तथा उनके शेख किसी सामंती राजा से अलग नहीं थे शासकों से संबंध अलग–अलग होते थे कुछ धर्मगुरु राजनीतिक सत्ता के प्रतिनिधियों से संबंध रखने से इनकार करते थे, बाकी इनसे मित्रतापूर्ण संबंधों को बुरा नहीं मानते थे

अनुशासन व कर्मकांड

प्रत्येक बिरादरी में कर्मकांडों की कुछ विलक्षणता होती है अधिकांश निर्देशों की शुरुआत निचले स्तर की आत्माओं से परे उठने से करते हैं, अन्य, जैसे परवर्ती नक्शबंदिया, निरंतर जिक्र (याद करना) व गुरु (सुहबा) के साथ वार्तालाप से हृदय की शुद्धि पर बल देते हैं सिलसिलों में *जिक्र* के प्रकार अलग–अलग होते हैं इनमें से कई अल्लाह शब्द का अथवा आस्था की स्वीकारोक्ति का उसकी तुकबंदी वाली शब्दावली के साथ प्रयोग करते हैं, जो कभी–कभी शरीर के संचालन अथवा सांस को पूरी तरह रोकने तक सांस पर नियंत्रण रखने के साथ–साथ होता है मावलावी या घूमने वाले दरवेश अपने नृत्ययुक्त कर्मकांड के लिए प्रसिद्ध हैं, जो पूर्ववर्ती समा प्रथाओं का व्यवस्थित परिवर्तित रूप है, जो संगीत व शायरी तक सीमित थी रिफा, जिन्हें चिल्लाने वाले दरवेश भी कहा जाता है, अपने उच्च स्वर जिक्र के समय आनंदातिरेक में स्वयं को चोट पहुंचाने की प्रथा के लिए जाने जाते हैं (ऐसी प्रथाएं, जो महज मदारी के खेलों में परिवर्तित हो जाएं अधिकांश सिलसिलों द्वारा मान्य नहीं हैं) कुछ सिलसिले *जिक्र खफी,* सूत्रों का शांतिपूर्वक बारबार पाठ व ध्यान तथा शरीर के विशेष तयशुदा बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करना भी सिखाते हैं, अतः नक्शबंदी भावनात्मक प्रथाओं की आज्ञा नहीं देते और आनंद के स्थान पर ध्यान को अधिक पसंद करते हैं, जो शायद मध्य एशिया के बौद्ध प्रभाव के कारण है अन्य सिलसिलों में शिष्यों को

विशेष प्रार्थनाए दी जाती है, जेसे शाजिलिया सिलसिले मे रक्षा हेतु हिजब अल–बहल । (समुद्र का रक्षा कवच, जो पहले समुद्री यात्रिया के लिए था व बाद मे इसे विस्तृत कर इसमे सभी यात्रियो को शामिल कर लिया गया) अधिकाश अपने शिष्यो के लिए अतिरिक्त प्रार्थनाओ व प्रत्येक आनुष्ठानिक प्रार्थना के पश्चात ध्यान का निर्देश भी देते ह

इस्लामी समुदाय में कार्य व भूमिका

सिलसिले समुदाय के आध्यात्म की ओर आकर्षित लोगो को जोडने के श्रष्ठ माध्यम बन गए उन्होने बाल की खाल निकालने वाले दैवीय पक्षधरो क विरोधी प्रभाव का कार्य किया और आम लोगो को उत्साही जश्नो (उर्स, निकाह), रहस्यवादी सिलसिलो के सस्थापको की मृत्यु की वर्षगाठ अथवा ऐसे ही अन्य उत्सवो के रूप मे भावनात्मक मच दिया, जिसमे वे सगीत व आनद मे रत रहते थे सिलसिले सभी सामाजिक स्तरो के अनुकूल थे, अत इनमे से कुछ इस्लाम विरुद्ध कई लोक साहित्यिक परपराओ को अपनाने के दोषी भी थे, जेसे सतो की उपासना उनकी जीवन शैली इस्लाम के आदर्शो से बहुधा इतनी भिन्न होती थी कि ईरान व भारत मे *बशर* (कानून से बधा हुआ) व *बिशर* (*कुरान* के आदेशो को न मानने वाला) सिलसिलो मे अतर किया जाता है कुछ सिलसिले, जैसे मिस्र मे अहमदिया (अहमद अल–बदवी, मृ–1286, के नाम पर) ग्रामीण जनता के लिए अधिक उपयुक्त थे, तथापि अहमदिया पथ ने कुछ मामलूक शासको को भी आकर्षित किया कुछ विलक्षण समन्वयवादी पथ के साथ ही तुर्की बेक्ताशिया (हासी बेक्तास, आरभिक 14वी शताब्दी), शिया विचारधारा के आदर्शो की प्रधानता दर्शाते थे (शिया– पेगबर मुहम्मद के दामाद अली के अनुयायी, जिनके वशज इस्लाम के धार्मिक नेतृत्व के वास्तविक उत्तराधिकारी होने का दावा करते थे) अली का असर अन्य सिलसिलो पर भी था 14वी तथा 15वी शताब्दी मे सूफीवाद व शिया पथ के सबधो और सूफीवाद पर शिया विचारो के सामान्य प्रभाव का आकलन अभी शेष है, अन्य सिलसिले, जैसे शाजिलिया की एक शाखा का अब भी मिस्री अधिकारियो पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव है, विशिष्ट रूप से मध्यमवर्गीय है यह सिलसिला एकातवास नही, अपितु पेशे का कठोरता से पालन व कर्तव्य का पालन चाहता है अन्य सिलसिले शासक वर्गो स जुडे हुए थे, जैसे कुछ समय तक मुगल भारत मे चिश्तिया व मावलाविया, जिनके प्रमुख ऑटोमन सुल्तान को तलवार भेट करके उनका अभिषेक करते थे मावलावियो ने शास्त्रीय तुर्की शायरी, सगीत व ललित कलाआ का विकास भी किया और चिश्तिया ने शास्त्रीय भारतीय मुस्लिम सगीत के विकास मे काफी योगदान दिया

सिलसिलो का मुख्य योगदान उनकी धर्म प्रचारक गतिविधि है 13वी शताब्दी के आरभ से भारत मे बसे विभिन्न सिलसिलो के सदस्यो ने हजारो हिदुओ को अपने ईश्वर तथा स्वय अपने भ्रातृसघ के प्रति प्रेम के उदाहरण व सभी मनुष्यो के बराबर होने के उपदेश देकर आकृष्ट किया धर्म प्रचारक गतिविधि को अक्सर राजनीतिक गतिविधि के साथ

जोड दिया जाता था, जैसे 17वी–18वी शताब्दी के मध्य एशिया मे नक्शबदिया शक्तिशाली राजनीतिक प्रभाव रखत थे उत्तरी अफ्रीका मे 1781 मे स्थापित तिजानिया व 19वी शताब्दी के प्रारभ से सक्रिय सनूसिया ने इस्लाम का प्रसार किया वे राजनीति मे सक्रिय थे सनूसिया ने इटली के विरुद्ध युद्ध लडा था तथा लीबिया के पूर्व बादशाह सिलसिले के पमुख थे तिजानिया न इस्लाम की सीमाओ को सेनेगल व नाइजीरिया की ओर बढाया व उनके प्रतिनिधियो ने पश्चिम अफ्रीका मे विशाल राज्यो की स्थापना की उनका तथा कादिरिया का प्रभाव अब भी इन इलाको मे एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक कारक है

सूफी सिलसिलों का भौगोलिक विस्तार

इस्लामी विश्व मे रहस्यवादी बिरादरिया के सदस्यो की सख्या का अदाजा लगाना असभव होगा तुर्की जैसे देश मे भी, जहा बिरादरियो को 1925 से प्रतिबधित कर दिया गया है, कई लोग अब भी रहस्यवादी परपराओ को मानते है और स्वय को बिरादरियों की आध्यात्मिक शृखलाओ की कडिया मानते है तथा अपने आदर्शों को आधुनिक समाज ने क्रियान्वित करने का प्रयास करते है सर्वाधिक विस्तार वाला समूह, निस्सदेह, कादिरिया है, जिसके अनुयायी पश्चिमी अफ्रीका से लेकर भारत तक पाए जाते है बगदाद स्थित अब्द अल–कादिर अल–जिलानी का मकबरा अब भी तीर्थयात्रा का स्थान है सनूसिया का आवास क्षेत्र मगरिब, एटलस मेस्सिफ व मोरक्को के तटवर्ती मैदानो से ट्यूनीशिया तक सीमित है, जबकि तिजानिया की तुर्की मे कुछ प्रशाखाए हे मिस्र की अहमदिया व दासूकिया जैसी ग्रामीण बिरादरिया (इब्राहीम अद दासूकी, मृ–1277, के नाम पर) अपने देशो से उसी तरह बधी है, जैसे पूर्व ऑटोमन साम्राज्य की सीमाओं से मावालवी व बेक्ताशिया बेक्ताशिया ने साम्राज्य मे राजनीतिक महत्त्व, तत्कालीन सेना जॉनिसारियो से अपने रिश्तो की वजह से पाया था 1929 से अल्बानिया मे एक शक्तिशाली व आधिकारिक रूप से स्वीकृत बेक्ताशिया समूह है, जिसे द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात स्वतत्र अस्तित्व भी प्रदान कर दिया गया था शत्तारिया (अब्द अश–शत्तर, मृ–1415 के नाम से लिया गया) भारत से जावा तक फैला है, जबकि चिश्तिया (ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, मृ–1236 अजमेर से व्युत्पन्न) व सुहरावर्दिया मुख्यत भारत–पाकिस्तान उपमहाद्वीप मे ही रहते है कुबराविया अली हम–धानी (मृ–1385), एक बहुमुखी लेखक के माध्यम से कश्मीर पहुचा, कितु बाद मे इस बिरादरी न अपना प्रभाव खो दिया

लोकप्रिय प्रकारो की विस्तृत विविधता को मोरक्को के हद्दावा घुमतुओ, 'जो कर्म करके ईश्वर का दिन खराब नही करते' और व्यावसायिक जीवन व ध्यानपूर्वक अतर्निरीक्षण की ओर एक सतुलित रवैया रखने वाले शाजिलिया के बीच तुलना कर देखा जा सकता है शाजिलिया से गभीर दरकाविया का उदय हुआ, जिसन अलाविया को जन्म दिया, जिसके गुरु ने कई यूरोपीय लोगो को भी आकर्षित किया है विखडन व उपबिरादरियो की रचना एक सामान्य प्रक्रिया है, कितु अधिकाश उपसमूह केवल

स्थानीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण होते है मिस्र का उच्च सूफी मठ 60 पजीकृत बिरादरी को मानता है

महत्त्व

सूफीवाद ने मुस्लिम समाज के बडे हिस्सो को आकार दने मे मदद की है कट्टरपथी सूफियो द्वारा सतो की पूजा करना, मकबरो पर जाना, सगीतमय प्रस्तुतिया, चमत्कार दिखाना, मदारियो जैसे खेल दिखाने तक उतर आना और पूर्व–इस्लामी व गैर इस्लामी प्रथाओ को अपनाना जैसे तौर–तरीको से असहमत है और सुधारवादी नैतिक जीवन तथा मानवीय गतिविधियो पर इस्लाम की एकलवादी व्याख्या पर आपत्ति करते है गुरु को महत्त्व दिए जाने को नकारात्मक परिणाम देने वाला माना गया है, अपने शिष्यो और प्रशसको के लगभग अनन्य नेता के रूप मे शेख खतरनाक सत्ता और राजनीतिक प्रभाव हासिल कर सकते थे, क्योकि पिछडे क्षेत्रो मे अशिक्षित ग्रामीण 'पीरो' पर पूरी तरह निर्भर रहा करते थे फिर भी अन्य गुरुओ ने सामाजिक असमानता के विरुद्ध आवाज उठाई है और अपनी जिदगी की कीमत पर भी सामाजिक व राजनीतिक हालात को बदलने तथा लोगो को आध्यात्मिक रूप से फिर से जागृत करने की कोशिश की है सूफियो की कल्याणकारी गतिविधियो ने उनके भक्तो का दायरा बढाया है आध्यात्मिक शिक्षा तथा विश्वास करने वालो मे ईश्वर मे विश्वास जगाने मे, दया मे, ईश्वर के प्रेम मे विश्वास मे, और पैगबर की उपासना मे सूफीवाद के महत्त्व को कम नही आका जा सकता जिक्र अशिक्षित व्यक्तियो तक को दिलासा और शाति देने की शक्ति रखते है

रहस्यवाद फारसी साहित्य और इससे प्रभावित अन्य साहित्यो मे फैल गया ऐसी कविताए लाखो लोगो के लिए हमेशा से ही खुशी का स्रोत रही है, यद्यपि कुछ आधुनिकतावादियो ने मुस्लिम चिंतन पर इसके 'मदहोश करने वाले' प्रभाव की आलोचना की है

औद्योगिकीकरण और आधुनिक जीवन के कारण कई देशो मे निरतर सूफी बिरादरियो के प्रभाव म कमी आई है आध्यात्मिक विरासत उन व्यक्तियो द्वारा सुरक्षित रखी गई है जो कभी–कभी यह दिखाने की कोशिश करते है कि रहस्यवादी अनुभव आधुनिक विज्ञान के समानुरूप है आजकल पश्चिम मे सूफीवाद को लोकप्रिय बनाया जा रहा है, लेकिन सच्चे भक्त ही जानते है कि इसके लिए कठोर अनुशासन चाहिए और यह कि इसके लक्ष्य हासिल किए जा सकते है

सूब्ह

तस्बीह भी कहलाता है मुस्लिम प्रार्थना की माला, जिसमे पिरोए गए दाने (100, 25 या 33) ईश्वर के नामो का प्रतिनिधित्व करते है एक–एक कर इन दानो (जो लकडी, हड्डी या बहुमूल्य रत्नो से बनाए जाते है) को छूते हुए मुस्लिम अनेक वाक्याशो का उच्चारण करते है, जिनमे सर्वाधिक प्रचलित है 'अल्लाह का गुणगान' चूकि प्रार्थना तो दिल मे

भी की जा सकती है, अत कोई व्यक्ति किसी से बातचीत करते हुए भी महज अपनी उगलियो से माला के दाने फिराते–फिराते ईश्वर की स्तुति को कई गुना बढा सकता है

हालाकि सूब्ह का बड़े पेमाने पर प्रयोग होता है और अधिकाश मुसलमान इसे धर्मनिष्ठा का प्रतीक मानते हे, फिर भी कुछ लोग इसके प्रयोग का आडबर और अनावश्यक मानत है उदाहरण के लिए, 18वी सदी मे स्थापित मुस्लिम सप्रदाय वहाबिया *सूब्ह* को एक नुकसानदेह युक्ति (बिद्आ) मानता था, जिसका प्रयोग सच्चे उपासकों के लिए वर्जित था

सूरजमुखी

एस्टीरेसी, साधारण सूरजमुखी, 1 से 4 5 मीटर लबे, रोमयुक्त तने वाला एक वार्षिक पौधा 7 6 से 30 सेमी लबी, आरीदार किनारी वाली खुरदरी, चौडी पत्तिया, फूलो का शीर्ष जगली जातियो मे 7 6 से 15 सेमी और खेती की जाने वाली किस्मो म अक्सर 0 3 मीटर या अधिक इसके चक्राकार फूल भूरे, पीले या बैगनी रग और रश्मि पुष्प पीले रग के होते हे अडाकार रोमयुक्त पत्तिया सर्पिलाकार ढग से लगी होती है सूरजमुखी का पौधा आर्थिक और सजावटी दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है पत्तियो का चारे के रूप मे इस्तेमाल किया जाता है, फूलो स पीला रजक वनता है और बीजो मे खाद्य तेल होता है बीजो के सपीडन से पीला, मीठा तेल निकाला जाता है, जिसे जैतून या बादाम के तल जैसा खाद्य तेल माना जाता है सूरजमुखी की खली का इस्तेमाल पालतू पशु और मुर्गियो क चारे के रूप मे किया जाता है इसके तेल का साबुन और पेट मे तथा स्नेहक (लुब्रिकेट) के रूप मे भी उपयोग किया जाता है

हिलीएथस की लगभग 60 प्रजातिया मे से कुछ की ही खेती की जाती है, जिनमे से कुछ का उत्पादन उनक शानदार आकार के लिए किया जाता है वे लबे, सख्त और बारहमासी पौधे होते है, जिनमे से कई साधारण रूप से अच्छी मिट्टी वाले बगीचो मे उगाए जा सकते है येरुशलम हाथीचक (*एच ट्यूबरोसस*) अपने भूमिगत खाने योग्य कद के लिए उगाया जाता है

सूरत

शहर, सूरत जिले का प्रशासनिक मुख्यालय, दक्षिण–पूर्वी गुजरात राज्य, पश्चिमी भारत यह खभात की खाडी पर ताप्ती नदी के मुहाने पर स्थित है कहा जाता है कि 1516 मे एक हिदू ब्राह्मण गोपी ने इसे बसाया था 12वी से 15वी शताब्दी तक यह शहर मुस्लिम शासको, पुर्तगालियो, मुगलो और मराठो के आक्रमणो का शिकार हुआ 1514 मे पुर्तगाली यात्री दुआरते बारबोसा ने सूरत का वर्णन एक महत्त्वपूर्ण बदरगाह के रूप मे किया था पुर्तगालियो द्वारा (1512 एव 1530) सूरत को जला दिए जाने के बाद यह एक बडा विक्रय केद्र बना, जहा से कपडे और सोने का निर्यात होता था

वस्त्रोद्योग और जहाज निर्माण यहा के प्रमुख उद्योग थे अग्रेजो ने 1612 म पहली बार अपनी व्यापारिक चौकी यही पर स्थापित की थी

18वी शताब्दी मे धीरे–धीरे सूरत का पतन होने लगा था उस समय अग्रेज और डच, दोनो ने सूरत पर नियत्रण का दावा किया, लेकिन 1800 मे अग्रेजो का इस पर अधिकार हो गया 19वी शताब्दी के मध्य मे सूरत एक गतिहीन नगर था, जिसकी आबादी 80,000 थी, लेकिन भारतीय रेलवे की शुरुआत के साथ सूरत फिर स समृद्ध होने लगा यहा के सूती, रेशमी, किमख्वाब (जरीदार कपडा) के वस्त्र तथा सोने व चादी की वस्तुए प्रसिद्ध है यहा अन्य उद्योग तथा कई शैक्षणिक सस्थान है, यह मुख्य सडको और पश्चिमी रेलवे स जुडा हुआ है

आसपास के इलाके मे खेती होती है कपास, बाजरा, दलहन और चावल यहा की मुख्य पैदावार है वस्त्राद्योग सूरत शहर मे ही केद्रित है यह सडक, रेल और हवाई मार्गो से जुडा हुआ हे जनसख्या (2001) न नि क्षेत्र 24,33,787

सूरत जिला

गुजरात राज्य, पश्चिमी भारत जिले मे औसत वार्षिक वर्षा दर 1,071 मिमी है, जनसख्या का घनत्व 414 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, जिले मे कपास, बाजरा, दलहन और चावल का उत्पादन होता है 1990 मे गन्ना, अगूर ओर केले जैसी नकदी फसलो की खेती की शुरुआत की गई सूरत के हीरे पर पॉलिश के उद्योग ने प्रवासी मजदूरो को अपनी ओर आकर्षित किया है जनसख्या (2001) जिला कुल 49,96,391

सूरदास

(ज –1478, सीही, उत्तर प्रदेश, भारत, मृ –1581 / 1585? मथुरा, उत्तर प्रदेश), भक्ति परपरा की सगुणधारा के महत्त्वपूर्ण कवि उनका जीवन एव रचनाकर्म द्वारकाधीश कृष्ण या गीता के उपदेशक कृष्ण को नही, बल्कि ब्रज के ग्वाले, नद–यशोदा के दुलारे और गोपियो के प्राणप्रिय कृष्ण को समर्पित था सूरदास का ब्रज, जीवन का अखड उत्सव है, जहा कृष्ण की लीला मे प्रकृति भी अपने सभी तत्त्वो के साथ सक्रिय है– यहा मानिनी राधा है, चचल गोपिया, नटखट ग्वालबाल, छठी, नामकरण, अन्नप्राशन, विवाह, होली के उत्सव है दुख यहा कृष्ण का विरह है, तब फूल मुर्झाते है गौए दुबली हो जाती है, यमुना का प्रवाह मथर हो जाता है, राधा मरणासन्न हो जाती है

कहा जाता हे कि सूरदास ने लगभग सवा लाख पद रचे, लेकिन इनमे से करीब छह हजार ही मिल पाए है सूर के पदो को कृष्ण भक्ति धारा मे वही सम्मान प्राप्त है, जो राम भक्ति धारा मे तुलसीदास को है लोक ने सूर को उनकी भाव प्रवणता के कारण तुलसी से श्रेष्ठ कवि माना– *सूर सूर तुलसी ससी*, यानी सूर काव्य जगत के सूर्य है और तुलसी चद्रमा ब्रजभाषा को एक क्षेत्र विशेष की बोली से कृष्ण–भक्ति साहित्य

और काव्य की सर्वस्वीकृत भाषा के रूप मे प्रतिष्ठित करने का श्रय सूरदास को जाता हे काव्य रचना की भाषा के रूप मे ब्रजभाषा का प्रभाव क्षेत्र पजाब, राजस्थान, बनारस (वर्तमान वाराणसी) पटना तक विस्तृत हुआ

सूर के लौकिक जीवन के बारे मे एकमात्र प्रामाणिक स्रोत *चौरासी वैष्णवो की वार्ता* और *भावप्रकाश* हे *भावप्रकाश* के अनुसार, वह दिल्ली के पास के सीही गाव के एक सारस्वत ब्राह्मण के जन्माध पुत्र थ 18 वर्ष के होने पर वह मथुरा के पास गऊघाट पर रहने लगे वही उनकी भेट पुष्टिमार्ग (एक वैष्णव सप्रदाय) के सस्थापक वल्लभाचार्य से हुई, जिन्होने उन्हे प्रेरित किया कि वह अतिशय दीन विनय के पद गाना छोडकर कृष्ण की लीला का वर्णन करे सूर अच्छे गायक और सगीतकार भी थे, इसलिए वल्लभाचार्य ने उन्हे श्रीनाथ मदिर का मुख्य कीर्तनिया नियुक्त किया वल्लभाचार्य के अनुसार, भक्ति के चार प्रमुख भाव थे– वात्सल्य, दास्य, सख्य और माधुर्य सूर ने सभी भावो के पद रचे उन्होने इन पदो को 79 रागो और रागिनियो मे बाधा और 'सूर की मल्हार' और 'सूर सारग' नाम के दो नए राग रचे

रचनाए *सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी, गोवर्धनलीला, नागलीला, भागवत 10वे स्कध की टीका, प्राणप्यारी,, ब्याहलो, सूरपचीसी, सूर के पद, सूर सागर सार एकादशी महात्म्य, रामजन्म, नल दमयती*

सूर वश

एक अफगान वश, जिसने उत्तरी भारत पर 1540 से 1556 तक शासन किया इसके सस्थापक शेरशाह सूर एक अफगानी अभियानकर्ता के वशज थे, जिन्हे दिल्ली के सुल्तान बहलोल लोदी ने जौनपुर के शर्की सुल्तानो के खिलाफ लबी लडाई के दौरान अपनी सेना मे शामिल किया था शाह का असली नाम फरीद था युवावस्था मे एक शेर मारने के बाद उन्हे 'शेर' की उपाधि दी गई थी जब मुगल वश के सस्थापक बाबर ने लोदी शासको को पराजित किया, तो शेरशाह ने अफगान साम्राज्य के बिहार व बगाल क्षेत्र पर कब्जा कर लिया तथा बाद मे मुगल बादशाह हुमायू को चौसा (1539) और कन्नौज (1540) के युद्धो मे पराजित किया शेरशाह ने पूरे उत्तरी भारत पर पाच वर्ष तक शासन किया, और मालवा को अपने राज्य मे मिला लिया तथा राजपूतो के भी दात खट्टे किए उन्होने प्रशासन को फिर से सगठित किया, जिसने बाद मे मुगल बादशाह अकबर के लिए नीव का काम किया मध्य भारत मे कालिजर के दुर्ग पर अधिकार करते समय वह तोप का गोला फटने से मारे गए

शेरशाह के पुत्र इस्लाम या सलीम शाह सक्षम व्यक्ति थे और विरोधो के बावजूद उन्होने अफगान शासन को कायम रखा उनकी मृत्यु (1553) के बाद सूर वश आपस मे सघर्षरत दावेदारो के बीच बट गया सिकदर सूर को जून 1555 मे हुमायू ने पराजित करके जुलाई मे दिल्ली पर कब्जा कर लिया मुहम्मद आदिल शाह के हिंदू सेनापति हेमू द्वारा पाला बदले जाने और पानीपत मे पराजित (1556) होने के बाद सूर वश का पतन हो गया मुगल शासनकाल के सक्षिप्त अतराल मे सूर वश का शासन

रहा, जो केवल शेरशाह की चमक से आलोकित है यह उत्तरी भारत का अंतिम अफगान शासक वंश था

सूरा

अरबी शब्द, यह इस्लाम के पवित्र ग्रंथ *कुरान* का एक अध्याय है 114 सूराओ मे से प्रत्येक, जो कई शब्दो से लेकर कई पृष्ठो तक के हैं, मुहम्मद साहब को अल्लाह (खुदा) से मिली एक या अधिक जानकारियो का विवरण देते है पारपरिक मुस्लिम वर्गीकरण मे, शब्द मदनिया (मदीना का) या मक्किया (मक्का का) हर सूरा की शुरुआत मे आता है, जिससे कुछ विद्वानो को लगता है कि सूरा विशेष मुहम्मद साहब को उस समय प्राप्त हुआ होगा, जब वह इनमे से किसी शहर मे उपदेश दे रहे थे कुछ मामलो मे आयतो का इसी आधार पर अतर्मिश्रण निर्दिष्ट किया गया है बहरहाल, आधुनिक आलोचक और विद्वान इन विभाजनो की वैधता को स्वीकार नही करते पहले सूरा को छोडकर फातिहा (अरबी शब्द फातिहाह, अर्थात शुरुआत) सूरा, जो छोटी सात आयते है लबाई के घटते क्रम मे व्यवस्थित है और क्रमानुसार अकित है उन्हे नाम से भी पहचाना जाता है, जो आमतौर पर पाठ मे उभरने वाली एक छवि से लिया जाता है, लेकिन जो आवश्यक रूप से विषयवस्तु से सबधित नही होता लगभग एक–चौथाई सूरा फवातीह से शुरू होते है, जो असबद्ध अक्षर है इनकी उपयोगिता और अर्थ अब तक सतोषप्रद रूप से तय नही किए जा सके है

नौवे सूरा को छोडकर हर सूरा, जिसमे एक विशिष्ट पाठगत समस्या है, बिस्मिल्लाह (खुदा के नाम पर, जो करुणामय है, दयामय है) सूत्र के साथ शुरू होता है और इसके बाद अकित आयते (आया) आती हैं ये गद्य में लिखी गई, जिनमे से ज्यादातर के अर्थ अत्यत गूढ है और अक्सर तुकात है हर एक आयत सपूर्ण सूरा की तुलना मे आमतौर पर खुदा की सत्ता और मुहम्मद साहब के उद्देश्य के अस्तित्व और समर्थन का प्रमाण मानी जाती है वास्तव मे, सभी सूरा–फातिहा छोटी भक्तिपूर्ण प्रार्थना है अतिम दो सूराओ को छोडकर, सभी खुदा के सदेश के रूप मे है, जिनमे या तो खुदा प्रथम पुरुष मे बोल रहे है या आदेशात्मक रूप *कुल,* 'कहो' मे बोल रहे है और आदेश दे रहे है कि आगे आने वाले शब्दो को प्रामाणिक माना जाए अभिव्यक्तियो की विषयवस्तु विविधतापूर्ण हैं, जिनमे पूर्ववर्ती पैगबर (अब्राहम, मोजेज, जीजस) की कहानियो से लकर, अत्यत सुस्पष्ट युगात विज्ञान तक है इनका सामान्य स्वर गहन नैतिक और ईशकेद्रित है, जो एक ज्ञानातीत, लेकिन करुणामय ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की माग से गुजायमान है

धार्मिक क्षेत्रो में *कुरान* को अक्सर 30 समान खडो मे बाटा जाता है, जो *जुज* (फारसी और उर्दू में सिपारा या पारा) के नाम से जाने जाते है ये सूरा को मनमाने तरीके से, बिना सामग्री पर विचार किए, 30 भागो मे विभाजित करते है, ताकि पूरे *कुरान* को 30 दिनो या एक चद्रमास मे पढा जा सके

सूर्य

हिंदू पौराणिक कथाओ एव धर्म मे सूरज एव सूर्य देवता मुख्यत वैदिक धर्म मे सूरज का उल्लेख कभी देवता, तो कभी सूर्य के रूप मे हुआ एक समय सूर्य को विष्णु, शिव शक्ति और गणेश की श्रेणी मे रखा जाता था उनको समर्पित अनेक मदिर भारत भर मे पाए जाते है आधुनिक हिदू धर्म मे थोडे से ही सौरपथी है, जो उन्हे सर्वोच्च देवता के रूप म पूजते है, हालाकि सभी हिदू उनका आह्वान करते है और कई धर्मपरायण हिदुओं द्वारा हर सुबह उच्चारित गायत्री मत्र सूर्य को सबोधित होता है सूय कई उल्लेखनीय पुत्रो के पौराणिक पिता है, जिनमे मनु (मानव जाति के प्रजनक), यम (मृत्यु के देवता), अश्विन (देवताओ के जुडवा वैद्य), कर्ण (*महाभारत* के एक महायोद्धा) तथा सुग्रीव (वानरो के राजा) शामिल है पुराणो के वृत्तातो क अनुसार, सूर्य के असह्य तेज के अशो से देवताओ के शस्त्र गढे गए उनकी शक्ति अधकार हटाने बीमारियो का उपचार करने तथा विश्व को गर्म एव प्रकाशित करने वाली मानी जाती है उनकी पत्नी उषा कुछ वृत्तातो मे उनकी माता या उपपत्नी प्रात.काल का मूर्त स्वरूप है

सूर्य की मूर्ति को अक्सर उत्तरी या सीथियाई (शक) परिधान म चुस्त अगरखा एव ऊचे जूते पहने दिखाया जाता है, जो ईरानी सूर्य सप्रदाय के प्रभाव का सकेत देता है उन्ह सामान्यत सात घोडो या सात सिरो वाले एक घोडे से जुते रथ पर सवार, हाथ मे खिले कमलो का गुच्छा पकडे हुए और सिर के चारो ओर प्रभामडल या किरणो के घेरे के साथ चित्रित किया जाता है सूर्य को समर्पित भव्य मदिरो मे एक कोणार्क, उडीसा मे 13वी सदी का सूर्य देउला (सूर्य मदिर) है वहा पूरे ढाचे की परिकल्पना पहियो पर रथ के रूप मे की गई है कुलाचे भरते अश्वो से जुते इस रथ पर सूर्य देवता आकाश मार्ग के आरपार विचरण कर रहे है

सूर्यलूता

इसे सूर्यबिच्छू या वायुबिच्छू भी कहा जाता है, *ऑर्थ्रोपोड* (सधिपाद सध) वर्ग *एरेक्निडा* के गण *सोलीफ्यूजी* (पहले *सॉल्प्यूजिडा*) की 800 प्रजातियो मे से एक सूर्यलूता नाम से पता चलता है कि ये जातिया गर्म शुष्क इलाके मे रहती है और सुनहरे रग की होती है अधिकतर जातिया दिन के समय सक्रिय होती है इनको इनके फुर्तीलेपन के कारण वायु बिच्छू, कूबड सिर के कारण ऊट बिच्छू और पूर्व वैज्ञानिक नाम के कारण सॉल्प्यूजिड भी कहा जाता है इनके रोम और उदर मकडी जैसे होते है, अग्र उपाग कुछ–कुछ बिच्छू के उपागो से मिलते–जुलते है शरीर की लबाई 10 से 50 मिमी होती है सूर्यलूता अत्यधिक पेटू होते है और सबसे बडी किस्म छोटे कशेरुकियो को मार सकती है प्रकरज (केलिसेरा, उपागो का पहला जोडा), बडे सडसी जैसे दातदार जबडे होते है और पैर क जैसे पश्चस्पर्शक (पेडिपैल्प, उपागो का दूसरा जोडा) मे शिकार को पकडने के लिए चूषक नोक होती है सबसे पीछे के पैरो पर अपनी ही किस्म के रैकेट के आकार वाले अग (गुल्फवर्ध) सवेदी हो सकते है सूर्यलूता अफ्रीका

ओर दक्षिण--पूर्व की ओर भारत इडोनशिया, विशेष रूप से सलिबीस नथा नई दुनिया के कुछ हिस्सो मे पाया जाता है

सेट जॉर्ज फोर्ट

भारत मे मद्रास (वर्तमान चेन्नई) मे ब्रिटिश ईस्ट इडिया कपनी द्वारा निर्मित किला, जो बाद मे दक्षिण भारत मे ब्रिटिश राजधानी बना ब्रिटेन के सरक्षक सत की स्मृति मे बनाया गया यह किला तमिलनाडु राज्य द्वारा बहुत सुरक्षित रखा गया है ब्रिटिश ईस्ट इडिया कपनी का दक्षिण भारत का मूल व्यापार केंद्र मसुलीपट्टनम (वर्तमान मछलीपट्टनम) मे 1611 मे स्थापित किया गया था इसे मद्रास ले जाया गया ओर 1639 मे चद्रगिरि के राजा से वहा किला बनाने की अनुमति प्राप्त कर ली गई इसका मुख्य कारण यह था कि यह ऊन बुनकर केद्रो के नजदीक था, जहा से माल प्राप्त करके कपनी फारस ओर ईस्ट इडीज को निर्यात करती थी 1641 म यह दक्षिण भारत में कपनी का मुख्यालय बन गया भारत मे यह कपनी का पहला किलेबद उपनिवेश था 1746 मे इसे थोडे समय के लिए फ्रासीसियो ने हथिया लिया था और 1748 मे वापस कब्जा हाने पर इसका बड पैमाने पर पुनर्निर्माण किया गया इसीलिए 1758--59 मे फ्रासीसी सेनाओ के हमले से अग्रेज इसकी सफलतापूर्वक सुरक्षा कर पाए हैदर अली ने दो बार (1769 और 1780) इस किले पर हमला किया बाद मे बडे पैमाने पर फेरबदल करके इसे दक्षिण भारत मे ब्रिटिश प्रशासन का केद्र बनाया गया

सेन, अमर्त्य

(ज--1933, शातिनिकेतन, पश्चिम बगाल, भारत), प्रख्यात अर्थशास्त्री और दार्शनिक, जिन्हे कल्याणकारी अर्थशास्त्र मे उनके मौलिक कार्य के लिए 1998 का नोबेल पुरस्कार दिया गया उन्होने अर्थशास्त्र और इससे सबधित विषयो मे नैतिक आयाम बहाल करने म सक्रिय भूमिका निभाई है

शैक्षिक परपरा के माहौल मे जन्मे सेन को अमर्त्य नाम नोबेल पुरस्कार विजेता रबीद्रनाथ टैगोर ने दिया था, जिनके साथ सेन के परिवार के घनिष्ठ सबध थे सेन के नाना सस्कृत के विद्वान थे, जो शातिनिकतन मे टैगोर के कार्यालय के कामो मे सहयोग करते थे और उनके पिता एक कृषि वैज्ञानिक थे, जो बगाल लोक सेवा आयोग मे कार्यरत थे भारत मे (शातिनिकतन तथा प्रेजिडेसी कॉलेज, कलकत्ता [वर्तमान कोलकाता]) मे आरभिक शिक्षा पूरी करने के बाद सेन ने अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए 1955 मे ट्रिनिटी कॉलेज, केब्रिज मे दाखिला लिया और 1959 मे विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की 29 वर्ष की आयु मे वह प्रोफेसर बने और विश्व के कुछ सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक सस्थानो मे अध्यापन किया, जैसे दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (1963--71), लदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (1971--77), ऑल सोल्स कॉलेज ऑक्सफोर्ड (1977--88) और हार्वर्ड यूनिवर्सिटी (1989--97) 1998 मे उन्हे ट्रिनिटी कॉलेज का 'मास्टर' नियुक्त किया गया और यह पद पाने वाले वह पहले

गए अग्रज थे अर्थशास्त्र मे सेन ने विकास के सिद्धात, योजना, पूजी और वृद्धि प्रौद्योगिकी व रोजगार का अध्ययन, सामाजिक चयन तथा जनसख्या नीति के क्षेत्रो मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है उन्होने असमानता से जुडे नैतिक और दार्शनिक प्रश्नो तथा निर्धनता एव अकाल के कारणो की भी पडताल की विकास के अर्थशास्त्र के क्षेत्र म उनके द्वारा किए गए प्रयोगसिद्ध अध्ययनो ने अकाल के पीछे आर्थिक क्रियाविधि को उजागर और स्पष्ट किया है गरीबी रेखा जैसे मानदड का व्यापक उपयोग सयुक्त राष्ट्र तथा अन्य अतर्राष्ट्रीय सस्थाओ द्वारा किसी देश मे निर्धनता के स्तर को मापन के लिए होता है इसका श्रेय अकाल और निर्धनता के क्षेत्रो मे सेन के अध्ययनो को दिया जा सकता है उनके अध्ययनो के विस्तृत और विशाल आयाम के बावजूद उनका काम सुसबद्ध है उनका अध्ययन वितरण के मुद्दो तथा समाज के आर्थिक रूप से विपन्न सदस्यो के सामान्य हित की भावना से गुथा है

बहुआयामी प्रतिभा वाले सेन न विषयगत सीमा को पीछे छोड अर्थशास्त्र के साथ–साथ दर्शन के क्षेत्र मे भी काम किया उन्होने स्वतत्रता, मुक्ति, न्याय, असमानता और तर्कपूर्ण विवेक जेसे विषयो पर भी अध्ययन किया है सेन ने कई पुस्तके लिखी है और वैज्ञानिक पत्रिकाओ मे उनके 200 से अधिक आलेख प्रकाशित हुए है उनकी प्रमुख कृतियो मे *चॉयस ऑफ टेक्नीक्स, कलेक्टिव चॉयस ऐड सोशल वलफेयर* (1970) *ऑन इकोनॉमिक ईक्वॅलिटी* (1973) और *पॉवर्टी ऐड फैमीन्स एन एस्से ऑन एनटाइटलमेट ऐड डिप्राईवेशन* (1981) शामिल है बेल्जियम के अर्थशास्त्री जीन ड्रेज के साथ उन्होने *इडिया इकोनॉमिक डेवलपमेट ऐड सोशल अपॉरच्यूनिटी* (19^5) का सहलेखन किया

अब तक सेन का डॉक्टरेट की लगभग 20 मानद उपाधिया मिल चुकी है और अमेरिकन इकोनॉमिक एसोसिएशन, द इकानॉमेट्रिक सोसाइटी तथा इटरनेशनल इकानॉमिक ऐसोसिएशन जैसे कई वैज्ञानिक सगठनो की अध्यक्षता की है

सेन, केशवचद्र

(ज –19 नव 1838, कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता), भारत, मृ –8 जन 1884, कलकत्ता), हिदू दार्शनिक और समाज सुधारक, जिन्होने ईसाई धर्मशास्त्र को हिदू विचारधारा के ढांचे मे शामिल करने का प्रयास किया

ब्राह्मण जाति का नही होने पर भी सेन के परिवार को कलकत्ता मे प्रतिष्ठा प्राप्त थी और उन्होने समुचित शिक्षा प्राप्त की 19 वर्ष की आयु मे वह ब्रह्म समाज मे शामिल हो गए, जिसकी स्थापना हिदू धर्म तथा समाज सुधारक राममोहन रॉय ने 1828 म की थी ब्रह्म समाज का उद्देश्य प्राचीन हिदू स्रोतो तथा वेदो की सत्ता के माध्यम से हिदू धर्म को पुनर्जीवित करना था लेकिन सेन को विश्वास था कि सिर्फ ईसाई सिद्धातो के जरिये ही हिदू समाज मे नवजीवन लाया जा सकता है

इसाई मिशनरी के क्रियात्मक और व्यावहारिक तरीको के उपयाग स सेन ने समाज सुधार किए, जिनकी भारत को बहुत आवश्यकता थी, उन्होन निर्धनो के लिए राहत शिविरो का आयोजन किया, बच्चो तथा वयस्को के लिए विद्यालयो की स्थापना करक लोगो मे साक्षरता को बढावा दिया और कम कीमत पर कई पुस्तको का प्रकाशन किया, ताकि पाठ्य सामग्री सबकी पहुच मे आ सके उन्होने बाल विवाह की निदा की अपने समाज की वैवाहिक रस्मो को 1872 मे कानूनी मान्यता दिलाने मे भी उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही वह विधवा विवाह और यहा तक कि अतर्जातीय विवाह के भी समर्थक थे

जहा उनके समकालीन देबेद्रनाथ टैगोर और रामकृष्ण का दृष्टिकोण पूर्णत हिदू बना रहा वही सेन ईसाइयत मे लगभग दीक्षित ही हो गए अडचन केवल यही थी कि सेन ईसा मसीह को प्रशसनीय होने के बावजूद अद्भुत नही मानते थे फिर भी वह चाहते थे कि लोग ईसा का अनुकरण करे, क्योकि उनका विश्वास था कि सिर्फ जीवत ईसाई धर्म ही विभाजित और जड हिदू समाज का उद्धार कर सकता है वह गहरे विचारो के चितन के बजाय सामाजिक परिस्थितियो के अनुरूप धर्म के व्यावहारिक उपयोग मे ज्यादा रुचि रखते थे इससे देबेद्रनाथ टैगोर के साथ उनका मतभेद खुलकर सामने आ गया और 1866 मे सेन ने भारतवर्षीय ब्रह्म समाज की स्थापना की मूल ब्रह्म समाज का आदि समाज के रूप मे फिर से नामकरण किया गया और शीघ्र ही यह ईसाई शिक्षाओ से मुक्त हो गया

1870 मे सेन ने लदन मे व्यापक स्तर पर व्याख्यान दिए और महारानी विक्टोरिया से मुलाकात की इग्लैड के जीवन मे ईसाई धर्म की शक्ति से वह एक बार फिर प्रभावित हुए लेकिन स्वदेश वापस लौटने पर उन्होने अपनी 14 वर्षीय पुत्री को कूच बिहार के महाराजा के पुत्र से विवाह करने की अनुमति दे दी और इस प्रकार बाल विवाह के विरोध की प्रतिज्ञा को सार्वजनिक तौर पर तोड दिया परिणामस्वरूप उनके कुछ अनुयायी अलग हो गए और सेन ने एक नए समाज नव विधान की स्थापना करके हिदू दर्शन तथा ईसाई धर्मशास्त्र का मिला–जुला उपदेश देना जारी रखा उन्होंने कई पुरातन वैदिक रिवाजो को पुनर्जीवित किया और दूज का चाद, सलीब तथा त्रिशूल अकित ध्वज के साथ उन्होने लोगो को उपदेश देने के लिए 12 शिष्यो को भेजा मृत्यु तक सेन की लोक प्रतिष्ठा कायम रही

सेन, मृणाल

(ज–14 मई, 1923, फरीदपुर, पूर्वी बगाल {वर्तमान बाग्लादेश मे}, भारत), बगाली फिल्मकार, भारत मे समातर सिनेमा के सस्थापको मे से एक, आरभिक फिल्मे मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित

सेन ने जिस सृजनात्मक रास्ते को अपनाया, वह शैली और विषय–वस्तु, दोनो मामले मे उनकी समकालीन दो महान हस्तियो, सत्यजित राय और ऋत्विक घटक से काफी

भिन्न था लेकिन बगाली सिनेमा की नई धारा मे उनका योगदान कम नही है निर्देशक के रूप मे उनकी पहली फिल्म 1956 मे बनी *रात भोर* थी, जो आर्थिक रूप से काफी नुकसानदह रही इसके बाद उन्होने *नील आकाशेर नीचे* (1959) बनाई, जो खासा सफल रही लेकिन निर्देशक के रूप मे उनकी प्रतिष्ठा अपने कटु यथार्थ से स्तंभित कर देने वाली *बाईशे श्रावण* (1960), जिसमे 1943 के अकालग्रस्त बगाल के एक गाव का चित्रण है और *आकाश कुसुम* (1965) से स्थापित हुई बाग्ला के अलावा सेन ने हिंदी, उडिया (*माटिर मानिश*, 1966) ओर तेलुगु (*ओका ऊरी कथा*, 1977) भाषा मे भी फिल्मे बनाई राष्ट्रीय स्तर पर हिट होने वाली उनकी पहली कृति फिल्म फाइनन्स कॉर्पोरेशन द्वारा वित्त–प्रदत्त कम बजट की फिल्म *भुवन शोम* (1969) थी, जिसने भारत के समातर सिनेमा को खासा प्रभावित किया

सेन की कला पर कई फिल्मकारो का प्रभाव है, जिनके वह प्रशसक है, जैसे– फेदरिको फेलिनी, रॉबर्ट ब्रेसौं ओर फर्नांडो सोलानस इनका प्रभाव कलकत्ता पर आधारित उनकी तीन फिल्मो की शृखला *कलकत्ता'71* (1971), *इटरव्यू* (1971) और *पदातिक* (1973) के साथ–साथ *अकालेर सधाने* (1980) और हिंदी फिल्म *खडहर* (1983) मे भी स्पष्ट दिखता है 1980 के दशक मे सेन ने अपने पिछले दस वर्षों के राजनीति सबद्ध सिनेमा को त्याग दिया और बिल्कुल सीधी कथात्मक शैली पर लौट आए, जिसमे मुख्यधारा के दर्शको को चौकाने वाले तत्व थे यह शैली लोकप्रिय मुख्यधारा सिनेमा के कथात्मक ढाचे को नकारती थी सेन को सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए चार बार स्वर्ण कमल पुरस्कार और सिने शिल्प की विभिन्न श्रेणियों के लिए कई बार रजत कमल प्राप्त हुआ है उन्हे नेहरू सोवियत लैड पुरस्कार (1979) और पद्म भूषण (1981) भी मिला है

सेन वश

बगाल पर शासन करने वाला भारतीय वश (लगभग 1095–1245 ई) इनके पूर्वज कर्नाटक (दक्षिण भारत) से आए थे और 11वी शताब्दी के आरभ मे दक्षिण–पश्चिमी बगाल के सरदार के रूप मे स्थापित हुए इस वश के सस्थापक हेमतसेन मूलत पाल शासको के सामत थे 11वी शताब्दी के मध्य मे वह स्वय को स्वतत्र घोषित करके राजा बन बैठे उनके उत्तराधिकारी विजयसेन (शासनकाल, लगभग 1095–1158) ने पाल राज्य के अवशेषो पर अपनी सत्ता सुदृढ की और समूचे बंगाल तथा उत्तरी बिहार को अपने नियत्रण मे कर लिया

बगाल में सेन वश के शासन के दौरान रूढिवादी हिदू धर्म पुनर्जीवित हुआ पाल वश के शासनकाल मे बौद्ध प्रभावो के कारण जो जाति व्यवस्था कमजोर पड गई थी, उसे फिर से स्थापित किया गया ओर उच्च वर्ग मे स्त्रियो के विवाह की बगाली प्रथा, अनुलोम विवाह को सेन राजा वल्लालसेन ने प्रतिष्ठा प्रदान की सेन वश के अतिम महत्त्वपूर्ण राजा लक्ष्मणसेन (लगभग 1178–1205) साहित्य के महान सरक्षक थे, नादिया स्थित उनके दरबार मे जयदेव और धोई जैसे कवि विराजमान थे 1202 म

तुर्की सरदार मुहम्मद बख्तियार खलजी की सेना ने लक्ष्मणसेन को नादिया से बाहर खदेड दिया और तीन वर्ष के बाद उनकी मृत्यु हो गई पूर्वी बगाल मे कुछ दशको तक सेन राजाओ का शासन जारी रहा, लेकिन बगाल की प्रभावी राजनीतिक शक्ति तुर्को के हाथ मे चली गई थी

सेलम

शहर, उत्तर–मध्य तमिलनाडु राज्य, दक्षिण–पूर्व भारत यह तिरुमनीमुत्तर नदी के निकट, कालरायन व पचाईमलाई पहाडियो के मध्य अट्टूर दर्रे के समीप स्थित है यह बगलोर, तिरुचिराप्पल्ली और कड्डालोर को जाने वाली सडको के जक्शन पर स्थित है, जो चेन्नई (भूतपूर्व मद्रास) से 332 किमी दक्षिण–पश्चिम मे है शहर का नाम सेल नाड (चेर नाड का बिगडा रूप) से लिया गया है यह शब्द एक प्रारभिक चेर राजा के आगमन को सूचित करता है सूती व सिल्क हथकरघा बुनाई के लिए प्रसिद्ध सेलम का विकास एक बडे औद्योगिक केद्र के रूप मे हुआ है, जिसके अतर्गत विद्युत व रसायन फेक्ट्रिया, उपकरण कार्यशालाए, पीतल की रोलिग मिले व स्टेनलेस स्टील के बर्तनो का निर्माण शामिल है यहा मद्रास विश्वविद्यालय से सबद्ध अनेक महाविद्यालय है

सेलम के आसपास के क्षेत्र मे पूर्व म पहाडियो (शेवरॉय, कालरायन, कोल्लाईमलाई व पचाईमलाई) की शृखला और पश्चिम में कावेरी नदी घाटी क्षेत्र आते है यह मूल रूप स कृषि क्षेत्र है, जिसे फल, कॉफी, कपास व मूगफली उगाने मे विशेषज्ञता प्राप्त है खनिजो मे लौह अयस्क, बॉक्साइट व मैगनीज के भडार शामिल है 1937 मे मेत्तूर बाध बनने के बाद, विशेषकर सेलम मे बडे पैमाने के उद्योग विकसित हुए

पुरातात्विक प्रमाण बताते है कि यह क्षेत्र नवपाषाण काल मे बसा हुआ था ऐतिहासिक काल मे यह भूमि स्वतत्र कागूनाड का हिस्सा थी, लेकिन बाद मे यह चोल, विजयनगर व मुस्लिम शासको के कब्जे मे रही 1797 मे यह ब्रिटिश अधिकार मे चला गया जनसख्या (2001) न नि क्षेत्र 6,93,236, जिला कुल 29,92,754

सेल्फरियलाइज़ेशन (आत्मविकास) फेलोशिप

पश्चिमी देशो मे स्थायी निवास बनाने वाले प्रथम भारतीय आध्यात्मिक गुरु और योगाचार्य परमहस योगानद (1893–1952) द्वारा अमेरिका मे स्थापित आध्यात्मिक सगठन उनके प्रवचनो और उपदेशो के परिणामस्वरूप 1935 मे इस फेलोशिप की स्थापना की गई इसका मुख्यालय लॉस एजेलिस मे है अब विश्व भर मे इसके केद्र है और उनके उपदेशो से प्रभावित होकर अनेक स्वतत्र समूह भी विकसित हुए है उनकी लिखी *ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए योगी* (1946) और अन्य पुस्तके अत्यत लोकप्रिय हुई

योगानद के उपदेश पातजलि (दूसरी शताब्दी ई पू) के *योगसूत्रो* पर आधारित थे उन्होने एक विशिष्ट क्रिया योग भी सिखाया, जिसमे गहरा ध्यान लगाकर प्राण को

नियंत्रित किया जाता है, और 'बाह्य' से ऊर्जा एव ध्यान को 'अतर' मे समाहित किए जाता है आत्मविकास फेलोशिप केंद्र क्रिया योग की कक्षाओ पर ध्यान केंद्रित करते है और सर्वधर्म प्रार्थना स्थल उपलब्ध कराते है, जहा हिंदुत्व और ईसाई मत के तत्त्वो के सम्मिश्रण वाली प्रार्थनाए होती है इसमे ध्यान, प्रवचन और सगीत भी शामिल रहता है आत्मविकास फेलोशिप मे सामान्य सदस्य भी शामिल है तथा वे लोग भी है, जिन्होने तप करने का व्रत ले रखा है और जो आमतौर पर धार्मिक आदोलन मे पुरोहितो की भूमिका निभाते है

सेल्यूकस I निकेटर

(ज–358/354 ई.पू., यूरोपस, मकदूनिया, मृ–अग/सित 281 ई.पू., लाइसिमेचिया के निकट, थ्रास), मकदूनियाई सेनानायक और सेल्यूसिड राज्य के सस्थापक सिकदर महान की मृत्यु के बाद के सघर्ष मे वह बेबीलोन के प्रशासक के पद से उठकर सीरिया और ईरान मे केंद्रित एक साम्राज्य (लगभग 306 ई.पू.) के राजा बने

सेल्यूकस सिकदर महान के पिता मकदूनिया के फिलिप II के सेनापति एंटियोकस के पुत्र थे सिकदर के सेनानायक के रूप मे सेल्यूकस ने ईरानी साम्राज्य पर हमले मे हिस्सा लिया 326 मे उन्होने भारत के राजा पोरस के खिलाफ हाईडास्पीज (झेलम) नदी के किनारे हुए युद्ध मे मकदूनिया की सेना का नेतृत्व किया 324 मे सिकदर ने मकदूनिया और ईरान के लोगो को एकजुट करने के अपने आदर्श को लागू करने के लिए सुसा (ईरान) में एक सामूहिक विवाह समारोह आयोजित करने का आदेश दिया इस अवसर पर सेल्यूकस ने बैक्ट्रिया के राजा स्पिटामेनेस की पुत्री अपामा से विवाह किया मकदूनिया के कुलीनो मे वह अकेले थे, जिन्होने सिकदर की मृत्यु के बाद अपनी पत्नी का परित्याग नही किया

302 ई.पू. मे सेल्यूकस ने भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग मे घुसपैठ की कोशिश की, लेकिन प्रथम मौर्य शासक चद्रगुप्त ने उन्हे पराजित कर दिया इसके बाद, एक सधि हुई, जिसके तहत भारतीय राजा के साथ वैवाहिक सबध और 500 हाथियो के बदले सेल्यूकस को उस क्षेत्र का अधिकार सौंप दिया गया उन्होने पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना, बिहार) स्थित मौर्य शासक के दरबार मे अपने दूत मेगस्थनीज को भेजा, जिन्होने वहा का वर्णन किया है, जो बाद के लेखको द्वारा दिए गए उद्धरणो के रूप मे बचा है

सेवाग्राम

नगर, पूर्वी महाराष्ट्र राज्य, पश्चिमी भारत मूलत सेगाव नामक इस नगर का वर्तमान नाम महात्मा गाधी ने रखा था 1936 मे अहमदाबाद के समीप साबरमती नदी के तट पर स्थित आश्रम को छोडकर गांधी सेवाग्राम आ गए यहा उन्होने एक और आश्रम की स्थापना की और स्वतत्रता आदोलन का निर्देशन किया इस आश्रम में उन्होने एक

आदर्श समुदाय (समाज) की रचना की, जो आज भी फल–फूल रहा है यहा के निवासी अब भी सादा जीवन जीते है

नगर मे महात्मा गाधी द्वारा स्थापित एक शिक्षण सस्थान 'नई तालीमी सघ' है उन्होने इस सस्थान को एक ऐसे स्वावलबी समुदाय के निर्माण की जिम्मेदारी सौपी, जो अपने भोजन, वस्त्र, आवास एव औजार स्वय बनाए और एक ऐसे समाज का निर्माण करे, जो स्वरचित कला, सगीत, साहित्य व नाटक द्वारा समाज की सौदर्यपरक, आध्यात्मिक तथा बौद्धिक आवश्यकताओ को पूरा करने मे सक्षम हो

सैटिनवुड

(*क्लोरोजाइलॉन स्वीटेनिया*), रूटेसी कुल का पेड, दक्षिण–पूर्वी एशिया, भारत और श्रीलका (भूतपूर्व सीलोन) मे पाया जाने वाला इसकी कठोर पीली सी भूरी लकडी, जिसकी सैटिन जैसी चमक होती है, बारीक नक्काशी वाली अलमारी और खेती के उपकरण बनाने मे इस्तेमाल की जाती है वेस्ट इडीज का *फेगेरा फ्लेवा* और अफ्रीका का *एफ मेक्रोफाइला* सैटिनवुड रूटेसी कुल के ही है

सैयद

(अरबी शब्द, अर्थात मालिक या स्वामी), अरबी मे सम्मानसूचक उपाधि, कभी–कभी शरीफ की उपाधि की ही तरह सीमित, जिसका प्रयोग मुहम्मद साहब के कबीले के सदस्यो, बानू हशीम के लिए होता है, विशेषत मुहम्मद साहब के चाचा अब्बास व अबूतालिब और अली बिन अबी तालिब के वशजो के लिए, जो मुहम्मद साहब की बेटी फातिमा से हुए हेजाज (पश्चिमी सऊदी अरब का एक क्षेत्र) मे सैयद का प्रयोग हुसैन के वशजो तक सीमित है हुसैन अली और फातिमा के छोटे बटे थे

मुसलमानो के चार प्रमुख समूहो मे से एक होने के कारण पाकिस्तान और भारत मे सैयद बडी सख्या मे है ये यमन मे भी काफी प्रभावशाली वर्ग है, जो पैगबर के वशज होने का दावा करते है, एक ऐसे पूर्वज से, जो इराक से दक्षिण की ओर एक सहस्राब्दी पूर्व आ गए थे कई वश सीमित रूप से अपने सैयद होने का दावा करते है

सैयद वंश

भारत की दिल्ली सल्तनत के शासक (लगभग 1414–51), जिन्होने तुगलक वश से गद्दी प्राप्त की और बाद मे अफगानिस्तान के लोदियो ने जिन्हे गद्दी से हटाया यह परिवार सैयद या पैगबर मुहम्मद का वशज होने का दावा करता था 1398 मे दिल्ली पर तैमूर (तैमूरलग) के हमले से दिल्ली सल्तनत काफी हद तक कमजोर हो चुकी थी अगले 50 वर्षो तक समूचा उत्तरी भारत वस्तुत कई सैनिक सरदारो के बीच बटा रहा, जिनमे सबसे शक्तिशाली जौनपुर के शर्की सुल्तान थे

दिल्ली के पहले सैयद शासक खिज्र खा (शासनकाल, 1414--21) थे, जो पहले पजाब क सूबेदार रह चुके थे वह और उनके तीन उत्तराधिकारी लगान वसूलने के लिए छापा में व्यस्त रहते थे पूर्व मे शर्की सुल्तानो और पश्चिमोत्तर मे खोकरो म निपटने की तैयारी पर उन्होने बहुत कम ध्यान दिया खिज्र के उत्तराधिकारी मुबारक शाह को कुछ सफलता मिली, लेकिन 1434 मे उनकी हत्या के बाद उनके दा उत्तराधिकारी मुहम्मद शाह और आलम शाह नाकाम साबित हुए आलम शाह ने 1448 म बदायू जाने क लिए दिल्ली छोडी तीन साल बाद पहले से पंजाब पर काबिज बहलोल लोदी ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया और दिल्ली सल्तनत के आखिरी वश, लोदी वश, की नीव रखी

सोन चिरैया (ग्रेट इडियन बस्टर्ड)

भारतीय सोन चिरैया (*आर्डियोटिस नाइग्रीसेप्स*), भारतीय उपमहाद्वीप का स्थानीय बेहद दुर्लभ पक्षी पहले यह उत्तर मे उत्तर प्रदेश से दक्षिण क तमिलनाडु राज्य तथा पश्चिम मे सिध (वर्तमान पाकिस्तान मे) से पूर्व म उडीसा राज्य तक के घास व झाडियो के मैदानो तथा गुल्मो मे पाया जाता था यह छोटी घास वाले मैदानी क्षेत्र पसद करता है घास क्षेत्रो का विनाश और शिकार इसकी जनसख्या मे कमी के प्रमुख कारण है वर्तमान समय मे भारत मे कोई भी घास क्षेत्र मानव पहुच से दूर नही है भारतीय सोन चिरैया मनुष्यो से बहुत सतर्क रहती है और दबे पाव भी इस तक पहुच पाना बहुत मुश्किल होता है, जबकि वाहनो के मामले मे यह भोली और बेफिक्र है द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद फालतू चारपहिया वाहनो की बिक्री और अविवेकी शिकारिया के उन्नत हथियारो ने भारतीय सोन चिरैया का भारी विनाश किया था यह अब भारत के अधिकाश हिस्सो से लुप्त हो चुकी है आज यह गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र कर्नाटक, मध्य प्रदेश और आध्र प्रदश के छिटपुट अलग–थलग क्षेत्रो मे असुरक्षित जीवन व्यतीत कर रही है इसकी कुल सख्या 1,000 से भी कम है

भारतीय वन्यजीवन (सुरक्षा) अधिनियम के तहत भारतीय सोन चिरैया को सुरक्षा प्रदान करते हुए इसे मारना, शिकार करना तथा कैद करना अवैध करार दिया गया है 1980 मे यह प्रजाति पश्चिमी राजस्थान के थार मरुस्थल के विस्तृत वृक्षहीन रेतीले क्षेत्र मे अपेक्षाकृत सुरक्षित थी, किंतु फिर भी उनकी सख्या ज्यादा दिन सुरक्षित नही है अवैध शिकारी 'खेल' के नाम पर हर प्रकार की सतह पर चलने वाले वाहनों मे चढकर बची–खुची सोन चिरैयो का शिकार करते रहे है.

भारतीय सोन चिरैया एक ऊचा पक्षी है एक वयस्क नर की ऊचाई 122 सेमी तक होती है, जबकि मादा छोटी होती है और उसकी ऊचाई 92 सेमी तक होती है दोनो के पखो के आवरण मे बहुत कम अतर दिखाई देता है, परतु नर का वजन मादा स लगभग दुगुना होता है सोन चिरैया सर्वभक्षी पक्षी है इसके आहार मे छोटा साप छिपकली और बिच्छू से लेकर गेहू, चना, मूगफली तथा बाजरा तक शामिल है इसका आहार मौसम तथा क्षेत्रानुसार बदलता रहता है स्थान के अनुसार भोजन की आदत

सोन चिरैया के लिए प्रतिकूल स्थानो पर भी जीने की सुविधा देती है यह सतही पानी की कमी वाले शुष्क एव अर्द्ध शुष्क पर्यावरण के साथ भी अनुकूलन कर लेती है यह दिनो और कभी–कभी हफ्तों तक बिना पानी के रह सकती है, परतु पानी के उपलब्ध रहने पर यह नियमित रूप से पीती है

सोन चिरैया का प्रजननकाल परिवर्तनशील होता है यह कीटो की सख्या की मौसमी बहुलता से मेल खाता है, जो उसके बढते चूजो को प्रोटीन के रूप मे प्राप्त होते है प्रजनन का मौसम आने पर नर अपने झुड को छोडकर अपने पारपरिक क्षेत्र मे आकर मादा को मैथुन के लिए आकर्षित करता है मैथुन के पश्चात मादा घास क्षेत्र मे सुरक्षित स्थान पर एक अडा देती है, जिसे वह 30 दिन तक सेती है यह बहुत कठिन समय होता है, क्योकि इनके क्षेत्र मे विचरण करते पशुओ के झुड से ये अंडे आसानी से कुचले जा सकते है चूजो का पालन–पोषण पूरी तरह से मादा ही करती है

20वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे 1980 मे जयपुर मे हुई इटरनेशनल कॉन्फ्रेस के कारण पैदा हुई दिलचस्पी की वजह से भारतीय सोन चिरैया की सुरक्षा के लिए आठ अभयारण्यो की स्थापना की गई, लेकिन इसके भविष्य पर अभी भी प्रश्नचिह्न लगा है राजस्थान मे इसका शिकार बढता जा रहा है और अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि इसका आवास तेजी से क्षरित हो रहा है भारत मे पशुओ की विशाल सख्या है और अत्यधिक चराई के कारण सोन चिरैया के सभी आवास बुरी तरह प्रभावित हुए है अधिकाश सोन चिरैया अभयारण्य कृषि क्षेत्र के आसपास है, अत स्थानीय ग्रामीणो के सहयोग के अभाव मे इनके आवास को बचा पाना मुश्किल है यह विडबना है कि यह पक्षी वैधानिक तौर पर सुरक्षित है, लेकिन इसका आवास नही इन सब परेशानियो के बावजूद, भारतीय सोन चिरैया को विवेकपूर्ण भूमि–प्रयोग के द्वारा बचाया जा सकता है सोन चिरैया के सरक्षण के साथ मृदा अपरदन, बजर भूमि क विकास और घास क्षेत्र विकास को भी जोडना होगा यदि घास क्षेत्रो को पुनर्जीवित कर दिया जाए, तो चारा उत्पादन और मृदा सरक्षण तो बढेगा ही, साथ–साथ सोन चिरैया तथा घास क्षेत्र से सबद्ध प्रजातियो को भी जीवनदान मिलेगा जिस तरह बाघ जगल सरक्षण का प्रतीक है उसी तरह भारतीय सोन चिरैया उपेक्षित घास के मैदानों के पुनर्जीवन का प्रतीक हो सकती है 'प्रोजेक्ट टाइगर' और 'प्रोजेक्ट एलीफेंट' की तर्ज पर 'प्रोजेक्ट बस्टर्ड' एक ऐसे पक्षी को बचाने मे सहायता कर सकता है, जो भारत की घास भूमि की खुशहाली का प्रतीक है

सोन नदी

नदी, गगा की प्रमुख दक्षिणी सहायक नदी, मध्य प्रदेश राज्य मे उद्गम, मध्य भारत यह मानपुर तक उत्तर की ओर बहने के बाद पूर्वोत्तर दिशा मे मुडती है यह कैमूर पर्वतश्रेणी को काटती हुई 784 किमी लबा मार्ग तय करने के बाद पटना के ठीक ऊपर गगा नदी से मिलती है सोन घाटी भौगर्भिक तौर पर दक्षिण–पश्चिम मे नर्मदा नदी घाटी का लगभग अनवरत विस्तार है इसका ज्यादातर हिस्सा वनाच्छादित है और

जनसख्या विरल है यह घाटी कैमूर पर्वतश्रेणी (उत्तर) और छोटा नागपुर (दक्षिण) से घिरी हुई है मौसमी (बरसाती) नदी होने के कारण यह परिवहन की दृष्टि से महत्त्वहीन है सोन नदी की कुछ सहायक नदियो पर बाध बनाए गए है और उत्तर प्रदेश मे डेहरी ऑन सोन नहर प्रणाली के आरभिक स्थल है

सोनीपत

शहर और जिला, पूर्व–मध्य हरियाणा राज्य, पश्चिमोत्तर भारत नई दिल्ली से उत्तर मे 43 किमी दूर स्थित इस नगर की स्थापना सभवत लगभग 1500 ई पू मे आरभिक आर्यों ने की थी यमुना नदी के तट पर यह शहर फला–फूला, जो अब 14 किमी पूर्व की ओर स्थानातरित हो गई है हिंदू महाकाव्य *महाभारत* मे इसका शोनप्रस्थ के रूप मे उल्लेख है शहर मे अब्दुल्ला नसीरुद्दीन की मस्जिद (1272 मे निर्मित), ख्वाजा खिज्र का मकबरा और पुराने किले के अवशेष है सोनीपत दिल्ली से अमृतसर को जोडने वाले रेलमार्ग पर स्थित है लोग काम के लिए रोजाना सोनीपत से दिल्ली आते–जाते है दिल्ली से निकटता होने के कारण सोनीपत के औद्योगिक विकास का सहयोग मिला है सोनीपत जिला एक मैदानी इलाका है, जिसके 83 प्रतिशत हिस्से मे खेती होती है कुल कृषि योग्य क्षेत्र का लगभग 95 प्रतिशत हिस्सा नहरो और नलकूपो द्वारा सिचित है गेहू और चावल प्रमुख फसले है अन्य फसलो मे ज्वार, दलहन, गन्ना, बाजरा, तिलहन और सब्जिया शामिल है सोनीपत देश के अग्रणी साइकिल निर्माताओ मे से एक है इसके अन्य उद्योगो मे मशीनी उपकरण, सूती वस्त्र, होजरी, शक्कर, इस्पात पुनर्ढलाई, सिलाई मशीन के पुर्जे, परिवहन उपकरण तथा पुर्जे, कालीन, हथकरघा वस्त्र और हस्तशिल्प मे पीतल व ताबे की वस्तुए शामिल है जनसख्या (2001) न पा क्षेत्र 2,16,213, जिला कुल 12,78,830

सोबराव का युद्ध

(10 फर 1846), प्रथम सिक्ख युद्ध (1845–46) का चौथा और निर्णायक युद्ध अग्रेजो के कब्जे वाले सतलुज नदी के पूर्वी तट पर सिक्खो ने मोर्चा सभाला उनके बच निकलने का रास्ता एक नौका पुल था जमकर हुई गोलाबारी के बाद सिक्खों के मोर्चे तहस–नहस हो गए नौका पुल के ध्वस्त होने से बचने का रास्ता मौत के रास्ते मे तब्दील हो गया, नदी पार करने की कोशिश मे 10,000 से अधिक सिक्खो की मृत्यु हो गई

इस युद्ध मे अग्रेजो को भी भारी नुकसान हुआ, 2,383 लोग मारे गए या घायल हुए सिक्खो द्वारा और प्रतिरोध असभव हो गया तथा पश्चिमोतर भारत का सिक्ख राज्य ब्रिटिश प्रभाव मे आ गया

सोम

प्राचीन भारतीय पूजन पद्धति में एक अपरिचित पौधा, जिसका रस वैदिक यज्ञो का आधारभूत चढावा था पौधे के डठलो को पत्थर से पीसकर उसके रस को भेड की ऊन से छानकर पानी एव दूध के साथ मिलाया जाता था पहले देवता को तर्पण देन के बाद बचे हुए सोम को पुरोहित एव यज्ञकर्ता पीते थे इसके आह्लादक सभवत भ्रातिजनक असर के कारण इसका अत्यधिक महत्त्व था साकार सोम देवता 'वनस्पति क स्वामी', बीमारियो को दूर करने वाले तथा समृद्धि देने वाले थे

साम उपासना की प्राचीन ईरानी हाओम उपासना के साथ कई समानताए है तथा इससे देवताओ के अमृत के बारे मे प्राचीन भारोपीया के बीच साझी आस्थाओ का सकेत मिलता है हाओम की तरह सोम पौधा पर्वतो पर उगता है, परतु इसकी वास्तविक उत्पत्ति स्वर्ग मे मानी जाती है, जहा से एक गरुड ने इसे धरती पर उतारा साम को पीसना उपजाऊ वर्षा काल से सबद्ध था, जो सभी जीवन एव विकास को सभव बनाता है स्वर्णिम वैदिक युग क बाद से सोम की पहचान चद्रमा से की गई, जब देवता सोम पीते है तो यह घटता है, लेकिन फिर जन्म ले लेता है

सोमदेव

(उत्कर्ष– 11वी शताब्दी), शैव सप्रदाय के कश्मीरी ब्राह्मण और सस्कृत के लेखक, जिन्होने भारत की अधिकाश लोककथाओ को छदबद्ध कहानियो के रूप मे सकलित किया

जान पडता है कि कश्मीर के राजा अनत के राजकवि सोमदेव को एक राजनीतिक सकट के दौरान रानी सूर्यमति के मनोरजन और मानसिक तनाव को दूर करने हेतु कहानियो की माला गूथने को कहा गया था उन्होने सस्कृत के लेखक गुणाढ्य की पहले की कृति और अब विलुप्त *बृहत–कथा* से अपनी कहानियो को उठाया गुणाढ्य न शायद अपनी कृति के लिए प्राचीन बौद्ध स्रोतो को लिया था सोमदेव की कृति *कथासरित्सागर* (कहानियो का सागर) मध्यकालीन यूरोपीय परीकथाओ से मिलती–जुलती है ओर इसके 124 वर्गो या अध्यायो मे, जो तरग कहलाते है, उन्ही की तरह जादू, दानव, रक्त रजकता, नर पिशाच प्रेम तथा साहसिक कारनामो का आधिक्य है चार्ल्स एच टॉने द्वारा इसका अग्रेजी अनुवाद *द ओशन ऑफ स्टोरीज* के नाम से 1924–28 मे प्रकाशित हुआ था 1077 मे समाप्त हुए अनत के दो व्यवधानित शासनकालो मे सोमदेव ने अपनी चिरस्मरणीय कृति की रचना की

सोमनाथ

पाटन सोमनाथ भी कहलाता है, प्राचीन भग्नावशेष नगर, दक्षिण–पश्चिम गुजरात राज्य, पश्चिम–मध्य भारत यहा शिव का सोमनाथ (सोम के देवता, सोम का अर्थ पवित्र मादक पेय (सुरा) एव विस्तृत अर्थ चद्रमा के स्वामी) के रूप मे मदिर है इस

मन्दिर को मुस्लिम आक्रमणकारी महमूद गजनवी ने 1024–1025 ई मे नेस्तनाबूद क दिया था 1169 मे इसका पुनर्निर्माण हुआ, लेकिन 13वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे अति मुस्लिम आक्रमण मे एक बार फिर से ध्वस्त कर दिया गया इसी तरह यह कई बा पुनर्निर्माण आर विखडन के चक्र से गुजरा 1951 मे इसका अतिम बार पुनर्निर्माण हुआ एक पुरानी परपरा के अनुसार भारतीय महाकाव्य *महाभारत* मे सोमनाथ याद वश के नरसहार का स्थल था और इसके बाद भगवान विष्णु के आठवे अवतार कृष्ण का महाप्रयाण यही हुआ हाल मे हुई खुदाई से यहा 1500 ई पू के समय की एक बस्ती का पता चला है पुराने शहर के स्थल पर पाटन का बदरगाह अब समीप स्थित वेरावल के बदरगाह के कारण महत्त्वहीन हो गया है

सोलापुर

शहर, सोलापुर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय, सीना नदी के किनारे, महाराष्ट्र राज्य दक्षिण–पश्चिमी भारत प्रारभिक शताब्दियों मे यह शहर हिदू चालुक्यो और देवगिरि यादवो के शासन मे था, किंतु बाद मे यह बहमनी और बीजापुर साम्राज्य का हिस्सा बन गया सोलापुर मुबई–हैदराबाद सडक व रेलमार्गो पर स्थित है, जो बीजापुर और गडग को जाने वाली छोटी लाइनो से भी जुडा है सोलापुर कपास और अन्य कृषि उत्पादो के व्यावसायिक केद्र के रूप मे विकसित हुआ है यहा के सिद्धेश्वर मदिर मे पूजा–अर्चना के लिए श्रद्धालु दूर–दूर से बडी सख्या मे आते है सोलापुर एक औद्योगिक केद्र भी है, सूती वस्त्र के क्षेत्र मे यह मुबई के बाद दूसरा केद्र है यहा एक पुराने मुस्लिम किले के भग्नावशेष है जनसख्या (2001) न नि क्षेत्र 8,73,037

सोलापुर जिला

शालापुर भी कहलाता है, जिला (15,021 वर्ग किमी), महाराष्ट्र राज्य, दक्षिण–पश्चिमी भारत यह जिला निचले लहरदार पठार पर स्थित है भीमा (कृष्णा की सहायक नदी) और उसकी दो सहायक नदिया, नीरा व सीना जिले को अपवाहित करती है भीमा नदी पर हाल ही मे निर्मित उजानी बाध यहा की कृषि को सिचाई के लिए पानी देता है और पढरपुर सहित निचली बस्तियो मे बाढ के खतरे को कम करता है जिले की ज्यादातर आबादी कृषि कार्य मे लगी है सिचाई ने भुखमरी और अभाव के प्रभाव को काफी कम किया है गेहू, मोटा अनाज और कपास यहा की प्रधान फसले है यहा के अधिकतर उद्योग बीडी निर्माण, खली उत्पादन और हथकरघा निर्माण से जुडे है गन्ना यहा की महत्त्वपूर्ण सिचित फसल है, जिसने जिले की विभिन्न चीनी मिलों की उन्नति मे योगदान दिया है पढरपुर एक प्रसिद्ध धार्मिक केद्र है और यहां बडी सख्या मे श्रद्धालु आते है अक्कलकोट, बरशी और मगलवेढे इस जिले के महत्त्वपूर्ण नगर है कुर्दुवर्दी एक रेलवे जक्शन है जनसख्या (2001) जिला कुल 38,55,383

सौत्रातिक

यह प्राचीन बौद्ध विचारधारा भारत मे ई पू दूसरी शताब्दी के आसपास सर्वास्तिवाद (सब कुछ सत्य है का सिद्धात) की धारा के रूप मे उभरी थी बुद्ध के शब्दो या सूत्रो पर आधारित होने और धर्मशास्त्र के एक भाग अभिधर्म की सत्ता नकारने के कारण ही इस विचारधारा का ऐसा नाम पडा

सौत्रातिको का मानना है कि यद्यपि घटनाओ (धर्मो) का अस्तित्व क्षणिक होता है फिर भी चेतना की उपअवस्थाओ का परस्पर आदान–प्रदान चलता रहता है इस चैतन्य मे ही प्रत्येक व्यक्ति मे मौजूद अच्छाई की मूल भावना निहित रहती है कई बार सौत्रातिक का आशय ऐसी सक्रमण धारा से लगाया जाता है, जिसने महायान परपरा की स्थापना की और इसके अनेक दृष्टिकोणो ने बाद मे योगाचार धारणा को भी प्रभावित किया

सौर संप्रदाय

हिदू सप्रदाय, जो गुप्तकाल तथा मध्यकाल मे भारत भर मे फैला हुआ था इसके सदस्य सूर्य की उपासना करत और उन्हे ही सर्वोच्च देवता मानते थे सूर्य की पूजा भारतीयो द्वारा वैदिक काल से ही की जाती रही है, जिसका उद्देश्य पापो से मुक्ति पाना और आशीर्वाद प्राप्त करना था सौर सप्रदाय के अनुयायी अन्य सप्रदायो की भाति ही विभिन्न ग्रथो का आशय सूर्यदेव की सर्वोच्चता की घोषणा के रूप मे निकालते है विश्वास किया जाता था कि मुक्ति पाने के लिए उदीयमान तथा अस्ताचलगामी सूर्य की आराधना करनी चाहिए, सूर्य के चिह्न (जैसे मस्तक पर गोलाकार लाल तिलक) धारण करने चाहिए ओर सूर्यदेव की स्तुति की जानी चाहिए

इस सप्रदाय का ईरानी मिथ्र सप्रदाय से भी पहली शताब्दी जितना पुराना सबध दृष्टिगत होता है इसके बाद उत्तर भारतीय मदिरो मे सूर्य को विशिष्ट उत्तर भारतीय वेशभूषा मे दर्शाया गया है, जैसे जूते और कमर के आसपास करधनी या अव्यग (आवेष्टन) पहने हुए 'मग' लोग (ईरानी पुरोहित मागी) सूर्य देवता के विशिष्ट पुजारी होते थे, जो हिदू जाति सरचना मे ब्राह्मण माने जाते थे मुल्तान मे निर्मित मदिर, जो चद्रभागा नदी (वर्तमान चिनाब, अब पाकिस्तान मे) पर बना है, सातवी सदी मे इस सप्रदाय का महत्त्वपूर्ण केंद्र था

यद्यपि सौर सप्रदाय अब भारत का प्रमुख सप्रदाय नही रहा, लेकिन सूर्य की स्तुति गायत्री मत्र का पाठ बहुत से हिदू धर्मावलवियो की दैनिक क्रिया का भाग है सूर्य को स्मार्त सप्रदाय के पच महादेवो मे विष्णु, शिव, शक्ति और गणेश के साथ प्रतिष्ठित किया गया है

स्कंद

कार्तिकेय, कार्तिक, कुमार या सुब्रह्मण्यम भी कहा जाता है युद्ध के हिंदू देवता तथा शिव के सबसे वड़े पुत्र उनके जन्म की परिस्थितियो के बारे मे पौराणिक कथाओ मे भिन्नता है कालिदास (चौथी एव पाचवी सदी) के महाकाव्य *कुमारसंभवम्* (युद्ध देवता का जन्म) ने इसका एक वृत्तात दिया गया है सभी रूपातर सामान्यतया इस पर सहमत है कि तारक राक्षस के विनाश के लिए देवता चाहते थे कि स्कद का जन्म हो, क्योकि इस राक्षस को वरदान था कि वह शिव पुत्र के हाथो ही मारा जा सकेगा लेकिन शिव तपस्या मे लीन थे तथा प्रेम के देवता, कामदेव का बाण लगने तक पार्वती की ओर आकर्षित नही हुए थे कई वर्षों के सयम के कारण शिव का वीर्य इतना शक्तिशाली हो गया था कि देवताओ को इसके भयकर परिणाम की आशका होने लगी कुछ वृत्तातो के अनुसार इसे अग्नि को समर्पित किया गया (जिससे स्कद नाम आया, सस्कृत मे इसका अर्थ वीर्य की फुहार है)

एक अनुश्रुति के अनुसार, स्कद का लालन–पालन, ऋषियो की छह पत्नियो, कृत्तिकाओ, ने किया, जो तारो क रूप मे कृत्तिका का निर्माण करती है सभवत वह उन्ही के पुत्र भी थे और इसीलिए उनका नाम कार्तिकेय (कृत्तिकाओ का पुत्र) पडा छह धायो का दूध पीने के लिए उन्होने छह मुख विकसित किए पार्वती के साथ उनके सबध को भी मान्यता दी गई है चित्रो एव मूर्तियो मे उन्हे अपने भाई गणेश क साथ अक्सर मा पार्वती की गोद मे छह मुख वाले बच्चे के रूप मे चित्रित किया जाता है उन्हे कुमार भी कहा जाता है, क्योकि माना जाता है कि उन्होने कभी विवाह नही किया योग मे वह ब्रह्मचर्य की शक्ति का प्रतिनिधित्व करते है वह अत्यत शक्तिशाली है और देवताओ की सेना का नतृत्व करते है जब उन्होने अपने भाले को पृथ्वी मे गाड़ा, तो विष्णु भगवान के अलावा कोई इसे हिला नही पाया और तब पर्वत एव नदिया हिल गए

दक्षिण भारत मे उत्तर भारत के स्कद मे विलय होने से पूर्व इस देवता की उत्पत्ति मुरुगन के रूप मे हुई सुब्रह्मण्यम (ब्राह्मणो क प्रिय) नाम के तहत इनके कई अनुयायी है, प्रत्येक छोटे से छोटे गाव मे इनक मदिर या देवालय पाए जाते है मूर्तियो मे स्कद को छह या एक सिर वाले, भाला या धनुष–बाण हाथ मे लिए अपने वाहन मोर पर सवार या उसके साथ चित्रित किया जाता है

स्कध

(सस्कृत शब्द, अर्थात समष्टि), पालि खध, बौद्ध मत के अनुसार पाच तत्त्व, जो मिलकर व्यक्ति क मानसिक एव शारीरिक अस्तित्व को सपूर्ण बनाते है आत्मा की पहचान किसी एक हिस्से से नही होती, न ही यह हिस्सो का योग है ये है (1) पदार्थ या शरीर (रूप), चार तत्त्वो, पृथ्वी, वायु, अग्नि एव जल का अभिव्यक्त स्वरूप, (2) सवेदना या अनुभूति (वेदना), (3) वस्तुओ का सवेदन बोध (सस्कृत मे सज्ञा, पालि मे सन्ना), (4) मानसिक रचना (सस्कार / सखार) और (5) तीन अन्य मानसिक समष्टियो

की जागरूकता या चेतना, (विज्ञान/विन्नान) सभी व्यक्ति निरतर परिवर्तन की स्थिति म हे, क्योंकि चेतना का तत्त्व हमेशा एक सा नही रहता तथा मनुष्य की तुलना न्दी से हो सकती है, जिसकी एक पहचान बनी रहती है, हालाकि इसको बनाने वाली जल की बूद हर क्षण बदलती रहती है

स्क्वैश

रेकेट से खेला जाने वाला यह खेल चार दीवारो से घिरे कोर्ट मे दो लोगो द्वारा हवा भरी हुई गेद से खेला जाता हे, जो बहुत ही तेजी से उछलती है और उसका आकार लगभग टेनिस की गेद जितना होता है इस खल मे गेद का पूर्वानुमान लगाने और मुडने मे खिलाडी को अत्यत तेज गति की जरूरत होती है

स्क्वैश टेनिस भी स्क्वैश रैकेट की तरह ऐसे ही कोर्ट मे खेला जाता है रेखा चिह्नो मे बहुत ही थोडा फर्क है, जैसे पीछे की दीवार पर बनी 'आउट' रेखा स्क्वेश खेल के लिए बनी हुई रेखा स 61 सेमी नीचे बनी हुई होती है खिलाडी लॉन टेनिस के रैकेट का इस्तेमाल करते हैं, जिसका दस्ता सामान्य टेनिस रैकेट से एक इच छोटा होता है इस खेल मे हरे रग की गेद इस्तेमाल होती है, जिसमे दबावयुक्त हवा भरी होती है और यह सामान्य टेनिस गेद से आकार मे थोडी छोटी होती है अंको की गिनती भी अमेरिकी स्क्वैश रैकेट के समान ही होती है पहले सर्विस करने वाले को ही अक दिए जाते थे, लेकिन 1954 मे नियमो मे परिवर्तन किया गया और विपक्षी को भी अक दिए जाने लगे

स्क्वैश टेनिस मे स्क्वैश रैकेट खेल की बनिस्बत पावो पर कम जोर दिए जाने की आवश्यकता होती है, लेकिन पावो की चुस्ती, चपलता व घूमने और मुडने की त्वरित प्रतिक्रिया आवश्यक है गेद सामने वाली बाजू की ओर पीछे की दीवार से टकराकर छूटते हुए तेजी से आती है वह इतनी तेजी से आती है कि सामने की दीवार से टकराती हुई वापस लौटकर पीछे वाली दीवार से टकराकर पुन सामने की दीवार से टकरा सकती है स्क्वैश रैकेट खेल मुख्यत कलाई और स्पर्श के साथ–साथ भुजाओ का भी खेल है स्क्वैश टेनिस खेल मे स्ट्रोक की तुलना लॉन टेनिस के फ्री स्विगिग ड्राइव से की जा सकती है स्क्वैश के दोनो खेलो मे वॉली, यानी गेद को जमीन छूने से पहले वापस लौटा देना महत्त्वपूर्ण है

स्क्वैश रैकेट यह खेल चार दीवारो से घिरे कोर्ट मे लबे दस्ते वाले जालीदार रैकेट से बतौर एकल या युगल छोटी रबर की गेद से खेला जाता है स्क्वैश आमतौर पर दो लोगो द्वारा खेला जाता है, लकिन यह चार लोगो (युगल) द्वारा भी खेला जा सकता है

खेल दो प्रकार से खेला जाता है सॉफ्टबॉल (यह तथाकथित 'ब्रिटिश' या 'अतर्राष्ट्रीय' प्रकार है) और हार्डबॉल (अमेरिकी प्रकार) अतर्राष्ट्रीय मानको के अनुसार सॉफ्टबॉल को नरम व धीमी गेद से एक तरह के चौडे और ऊचे कोर्ट पर खेला जाता है, गेद

खेल मे लबे समय तक रहती है, बडे कोर्ट पर दौडना व भागना पडता है इस तरह यह खेल अधिक शारीरिक शक्ति की माग करता है, इसमे दमखम, धैर्य और सकल्प की जरूरत होती है अमेरिका मे लोकप्रिय हार्डबॉल स्क्वैश को सकरे कोर्ट पर कठोर और तेज गेद से खेला जाता है हार्डबॉल खेल मे त्वरित प्रतिक्रिया और मौलिक शॉट लगाने पर जोर दिया जाता है

स्क्वैश के बल्ले की उत्पत्ति सभवत 19वी शताब्दी के मध्य मे इग्लेड के हैरो स्कूल म हुई रैकेट्स कोर्ट जाने मे असमर्थ खिलाडी अपने मनोरजन के लिए भारतीय रबर बॉल से खलने लगे, जो किसी भी दीवार पर मारने से पिचक जाती थी यह नया खेल जल्दी ही इग्लैड के बोर्डिंग स्कूलो मे लोकप्रिय हो गया 1890 के दशक मे निजी कोर्ट बनने लगे और शताब्दी के अत तक बाथ, क्वीन और मेरीबोलीन क्रिकेट क्लब मे क्लब कोर्ट बने

प्रथम विश्व युद्ध के बाद स्क्वैश रैकेट्स लोकप्रिय होने लगा 1920 से यह खेल तेजी स फैलने लगा और मूल खेल रैकेट्स से भी अधिक लोकप्रिय हो गया क्लबा विद्यालयो और महाविद्यालयो मे अधिक कोर्ट बनने लगे, नियमो को सूत्रबद्ध किया जाने लगा, इग्लिश नेशनल एसोसिएशन का गठन हुआ और कोर्ट की लबाई–चौडाइ तय की गई साथ ही गेद और रैकेट सबधी नियम बनाए गए कई प्रतियोगिताए शुरू हुई, 1920 में प्रोफेशनल चैपियनशिप, 1922 मे पुरुष एव महिला वर्ग के लिए एमेच्योर चैपियनशिप और 1930 मे ओपन चैपियनशिप शुरू हुई अमेरिका के साथ अतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धा 1924 मे ब्रिटिश टीम को अमेरिका भेजने से शुरू हुई, हालाकि ये प्रतियोगिताए बाद मे ब्रिटिश और अमेरिकियो के बीच कोर्ट, गेद व अक गिनने की प्रणाली मे हुए मतभेद के कारण बाधित हुई

शुरुआती वर्षो मे अमेरिका म जो खेल खेला जा रहा था, वह वास्तव मे स्क्वैश टेनिस था, जिसमे लॉन टेनिस की गेद और टेनिस रैकेट इस्तेमाल हो रहा था अधिकाश अमेरिकी शहरो मे स्क्वैश टेनिस का स्थान स्क्वैश रैकेट्स ने ले लिया और सिर्फ न्यूयॉर्क शहर म ही उसके (स्क्वैश टेनिस) चाहने वाले बने रहे इग्लैड से यह खेल समूचे ब्रिटिश साम्राज्य– कनाडा, भारत, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका मे फैल गया आज स्क्वैश फ्रास, जर्मनी, डेनमार्क, स्वीडन, बेल्जियम, नीदरलैड, मिस्र, मेक्सिको पाकिस्तान, भारत, थाईलैड, केन्या और न्यूजीलैड सहित 40 देशो मे खेला जाता है एक अतर्राष्ट्रीय स्क्वैश रैकेटस फेडरेशन दुनिया भर मे इस खेल को बढावा दे रहा है और राष्ट्रो के बीच प्रतियोगिताओ तथा दौरो का समन्वय करता है.

स्क्वैश के श्रेष्ठ खिलाडिया मे मिस्र के गैर पेशेवर खिलाडी एफ.डी. अम्र बे शामिल है, जिन्होने 30 के दशक मे कई ब्रिटिश ओपन खिताब जीते थे पाकिस्तान के पेशेवर खिलाडियो और प्रशिक्षको के परिवार क खान बधुओं ने 1950 से 1990 के बीच अक्सर खुली प्रतियोगिताओ मे अपना दबदबा बनाए रखा जेनेट मॉरगन 1949–50 से 1958–1959 तक ब्रिटिश महिला चैपियन और अमेरिकी व ऑस्ट्रेलियाई पदको की

विजेता रही ऑस्ट्रेलिया की खिलाडी हीदर ने 1961–1962 से 1976–1977 तक ब्रिटिश महिला चैपियनशिप और कई अन्य प्रतियोगिताए जीती

स्क्वैश का अतर्राष्ट्रीय सस्करण बद आयताकार कोर्ट मे खेला जाता है जो 9 5 मीटर लबा और लगभग 6 4 मीटर चौडा होता है सर्विस करने के बाद सामने की दीवार पर बनी सर्विस लाइन के ऊपर ही गेद को टप्पा खाना चाहिए सामने की दीवार पर इस सर्विस लाइन के नीचे एक तख्ता या धातु की पट्टी लगी होती है, जो जमीन से 43 सेमी की ऊचाई तक जाती है अगर गेद इस पर टकरा जाए, तो खेल हार सकते है या प्रतिस्पर्द्धी खिलाडी के हक मे अक जा सकते है दूसरी रेखा सामने की ओर बाजू की दीवारो पर खेल की ऊचाई की सीमाए तय करती है जमीन पर बनी 'शॉर्टलाइन' वह बिदु दर्शाती है, जहा से आगे सर्विस की हुई बॉल को जमीन पर टप्पा खाना चाहिए और इस रेखा से सीमाबद्ध हिस्सा दो छोटे आयताकारो में विभाजित होता है ये सर्विस बॉक्स के तौर पर काम आते है, जिसमे से किसी एक मे खडे होकर सर्विस करनी होती है जमीन पर बने दूसरे आयताकार स्थान पर ही सर्विस की हुई गेद को आकर टप्पा खाना चाहिए

इस खेल का उद्देश्य यह है कि सामने की दीवार से टप्पा खाकर या लौटकर गेद कुछ इस तरह आए कि विपक्षी अपनी बारी आने पर सामने की दीवार तक गेद मारने के लिए उस तक पहुच नही पाए सर्विस करते समय अथवा दूसरे किसी समय गेद को सीधे सामने की दीवार पर टप्पा खिलाया जा सकता है या बाजू अथवा पीछे की दीवार से या सामने की दीवार से टकराने के पहले या बाद मे टकराकर लौटाई जा सकती है कोई भी गेद जमीन पर एक बार टप्पा लगने के पहले भी लौटाई जा सकती है (सामने वाली दीवार से टकराकर लौटने के बाद), लेकिन जमीन पर एक से ज्यादा बार टप्पा खा लेने के बाद गेद 'डेड' समझी जाती है किसी भी खिलाडी द्वारा विपक्षी खिलाडी को गेद तक पहुचने का उचित अवसर जरूर देना चाहिए, जिसका अर्थ है अपना शॉट खेल लेने के बाद दूसरे के रास्ते से हट जाना ब्रिटिश नियमो के अनुसार अक सिर्फ उस समय ही दिया जाता है जब रैली (शॉट का आदान–प्रदान) का विजेता गद सर्व करने वाला हो अगर सर्व करने वाला नही जीत पाता है, तो जो खिलाडी रैली जीत जाता है उसे सर्विस मिल जाती है और लगातार रैलिया जीतते रहने पर वह लगातार सर्विस भी करता रहता है अमेरिकी खेल पद्धति मे अक रैली के विजेता के पक्ष मे गिना जाता है, चाहे सर्विस करने वाला दूसरा खिलाडी ही क्यो न हो एक गेम 9 या 15 अको का हो सकता है, जिसमे 8, 13 या 14 अक पर टाई होने की स्थिति मे खेल का फैसला टाई–ब्रेकिग पद्धति द्वारा किया जाता है छोटी व तेजी से आने वाली गेद सामने तथा पीछे की दीवार से टकराकर तीव्र गति से मारी जाती है और खल की गति उसी के अनुसार तेज हो जाती है दोनो खिलाडी कुशलतापूर्वक शॉट लगाकर और गति बदल कर अपने विपक्षी को गेद की पहुच से बाहर रखने की कोशिश करते है यह खेल आखो तथा हाथो के अच्छे तालमेल की माग करता है और इससे भी कही ज्यादा त्वरित प्रतिक्रिया की माग करता है

स्क्वेश रैकेट, रैकेट्स–खेलो मे इस्तेमाल किए जा रहे रैकेट के समान होता है, लेकि इसका दस्ता छोटा होता है, अमेरिकी रैकेट, ब्रिटिश रैकेट की तुलना मे भारी होता है गेद रबर अथवा रबर और ब्यूटिल के मिश्रण की बनी होती है

मानक ब्रिटिश कोर्ट मे चार दीवार होती है, जो सामान्यत लकडी की बनी होती : तख्ता या आवाज उत्पन्न करने वाली पट्टी शीट मेटल या दूसरी आवाज उत्पन्न करने वाली सामग्री की बनी होती है, जो सामने की दीवार पर 'खेल के बाहर' वाले हिस्से पर गेद मार देने के कारण एक स्पष्ट और अलग आवाज पैदा करती ह मानक अमेरिकी कोर्ट, इग्लिश कोर्ट से सकरा होता है, जो 5 6 मीटर चौडा होता है डबल का कोर्ट 13 7 × 7 6 मीटर आकार का होता है

भारत मे स्क्वैश

यद्यपि भारत न अभी तक स्क्वेश मे कोई विश्व चेपियन नही दिया है, तथापि राष्ट्रीय चैपियन ऋत्विक भट्टाचार्य का 1999 मे अतर्राष्ट्रीय क्रम मे 138वा स्थान था इसी वर्ष मलेशिया मे हुई जूनियर चैपियनशिप मे भारतीय लडकियो ने उल्लेखनीय तीसरा स्थान प्राप्त किया पिया अब्राहम, जोशना चिन्नप्पा, वैदेही रेड्डी और रिया भडारे दल की सदस्य थी. लडको के दल ने अपने वर्ग मे चौथा स्थान प्राप्त किया अंशुल मनचदा, पार्थ दोषी, मिहिर कपूर और अभिजीत कुकरेजा दल के सदस्य थे. एशियन स्क्वैश रैकेट चैपियनशिप मे भारत ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया और 14 देशो मे दूसरे स्थान पर रहा

द स्क्वेश फेडरेशन ऑफ इडिया वह पालक संस्था है, जिसने 1953 में पहली राष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित की थी. आरभिक प्रतियोगिता राजकुमार नरपत सिह ने जीती थी वस्तुत उन्हे इस प्रतियोगिता को 1955 तक लगातार तीन सालो तक जीतने का गौरव हासिल है महिलाओ के वर्ग मे भारतीय स्क्वैश के इतिहास मे भुवनेश्वरी कुमारी सबसे अधिक सफल खिलाडी रही, उन्होंने 16 बार राष्ट्रीय खिताब जीतकर विश्व रेकॉर्ड की बराबरी की और *गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉड्‌र्स* मे स्थान पाया 1975 मे भुवनेश्वरी ने मात्र 16 वर्ष की आयु में पहला खिताब जीता उन्ह 1982 मे अर्जुन पुरस्कार मिला मीशा ग्रेवाल 1993 मे पहली पेशेवर स्क्वैश खिलाडी बनी उन्होंने एशिया, यूरोप और अमेरिका मे पेशेवर सर्किट मे खेला

स्टार ऑफ़ इडिया

अफलकित काट का बडा, थोडा अडाकार भूरा–नीला नीलम 536 कैरॅट का पॉलिश किया हुआ, लेकिन अफलकित यह रत्न सीलोन (वर्तमान श्रीलका) मे पाया गया था जे पी मॉरगन ने इसे न्यूयॉर्क स्थित प्राकृतिक इतिहास के अमेरिकी सग्रहालय (अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री) को भेट किया था

स्तूप

बौद्ध सस्मरणात्मक स्मारक, जिसमे आमतौर पर बुद्ध या किसी सत से सबद्ध पवित्र अवशेष रखे होते है यह बुद्ध के परिनिर्वाण या मृत्यु का वास्तुशिल्पीय प्रतीक है स्तूप के अर्द्धगोलाकार रूप से लगता है कि यह बौद्ध धर्म से पूर्व भारत के टीलेनुमा कब्रिस्तानो से लिया गया है साची के विशाल स्तूप मे (दूसरी से पहली सदी ई पू) यह विशेषता स्पष्टतया नजर आती है इस स्मारक का आधार वृत्ताकार है, जो एक ठोस गुबद (अड या गर्भ) को सभाले है, जिससे एक छत्र निकला हुआ है यह पूरा महास्तूप जगले एव चार प्रवेशद्वारो से घिरा है, जो बुद्ध के जीवन की घटनाओ तथा लोकप्रिय पोराणिक व्यक्तित्वो को चित्रित करने वाली *जातक* कथाओ के चरित्रो की उभरी हुई मूर्तियो से व्यापक रूप से अलकृत है

स्तूप की भारतीय अवधारणा पूरे बौद्ध जगत मे फैली तथा श्रीलका (भूतपूर्व सीलोन) मे घटाकार डागबा (गर्भ का हृदय), जावा मे बोरोबुदूर का छज्जेदार मदिर, तिब्बत मे लामावादी स्वरूप और चीन, कोरिया व जापान के बहुमज़िले पैगोडाओ जैसे अलग–अलग दिखने वाले स्मारको मे विकसित हुई मूल प्रतीकात्मकता को कायम रखा गया, जिसमे केद्रीय अवशेष को पवित्र व्यक्ति या जिस अवधारणा को स्मृतिबद्ध किया जा रहा है और स्वय भवन के साथ भी समरूप समझा जाता है स्तूप की पूजा मे सूर्य के मार्ग की दिशा मे स्मारक की परिक्रमा (प्रदक्षिणा) की जाती है स्तूप के भवन के भीतर होने की स्थिति मे भी यह हमेशा स्वतत्र स्मारक होता है

बौद्ध स्मारकों का निर्माण मूल रूप से ऐतिहासिक बुद्ध और उनके सहयोगियो के सासारिक अवशेषो को रखने के लिए किया गया और ये निश्चित तौर पर बोद्ध धर्म के पवित्र स्थलो पर ही पाए जाते है बाद मे अवशेष की अवधारणा को विस्तृत करके उसमे पवित्र ग्रथो को भी जोड लिया गया सपूर्ण एशिया मे स्तूपो एव पैगोडाओ के लघु रूपो को कामना–पूर्ति के लिए चढावे की तरह प्रयुक्त किया जाता है जैन धर्म के अनुयायियो ने भी अपने मुनियो के स्मारको के रूप मे स्तूपो का निर्माण किया

स्त्रीधन

स्त्री को विवाह के समय उसके माता–पिता द्वारा दी जाने वाली भौतिक सपत्ति यह नकद राशि, आभूषण, भूमि या बर्तनो के रूप में हो सकता है यह दहेज से भिन्न होता है और इस सपदा पर स्त्री का ही अधिकार होता है उसके पति या परिवार के अन्य सदस्यो का इस पर कोई अधिकार नही होता

स्थानकवासी

भारत के श्वेताबर जैनो का एक आधुनिक उपसप्रदाय स्थानकवासी मूल समूह से इस अर्थ मे भिन्न है कि वे मूर्ति पूजा एव मदिर के आचार को अस्वीकार करते है स्थानकवासी की स्थापना 17वी सदी मे लौकाशाह के नेतृत्व मे हुई, जो पहले लुपाक

या लोकागच्छ कहलाने वाले अमूर्तिपूजक सप्रदाय के सदस्य थे दोनो समूहो की आस्था इस तर्क पर आधारित थी कि जैन धर्मशास्त्र मे मूर्ति पूजा का उल्लेख नही है स्थानकवासी सज्ञा मदिर के बजाय मुनियो के ठहरने के स्थान (स्थानक) जैसे लौकिक स्थलो पर धार्मिक कर्तव्यो के निष्पादन को प्राथमिकता देने के कारण आई है इस समूह को कभी–कभी ढूढिया (खोजने वाला) भी कहते हैं स्थानकवासियो से एक और समूह तेरापथी (जो 13 नियमो के मार्ग का अनुसरण करते है) निकला, जिसकी स्थापना 18वी सदी मे आचार्य भिक्कु ने की

स्पेंता मैन्यु

पारसी धर्म मे मगलकामना की पवित्र आत्मा पारसी धर्म के पैगबर जरथुस्त्र की गाथाओ के अनुसार, स्पेता मैन्यू को अहुर मज्दा का एक हिस्सा माना जाता है बाद मे पारसी धर्म ने स्पेता मैन्यू को अहुर मज्दा से अलग कर दिया और उन्हे अग्र मैन्यु (अर्हिमन), विनाशकारी आत्मा, के विरुद्ध रखा *अवेस्ता* मे स्पेता मैन्यु के लिए कोई विशेष प्रार्थना नही है, जैसे अश (सत्य) और वोहू मान (अच्छा मन) के लिए है स्पेता मैन्यु आकाश, जल, पृथ्वी, वनस्पति तथा अजन्मे शिशुओ की सुरक्षा एव देखरेख करते है

स्मार्त संप्रदाय

द्विज या दीक्षित उच्च वर्ग (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) के सदस्यो वाला एक हिदू धार्मिक (एव धर्म के माध्यम से) सामाजिक समूह, जिसके मूलत ब्राह्मण अनुयायियो की विशेषता हिदू देवगण के सभी देवताओ की भक्ति तथा प्राचीन सूत्र पाठो मे निर्दिष्ट अनुष्ठान एव आचार के नियमो का पालन करना है वे अपने देवता या पूजनपद्धति के बारे मे एकनिष्ठ नही है

स्मार्त नाम सस्कृत शब्द स्मृति से निकला है, जिसे वेदो के विपरीत मानव द्वारा लिखित प्राचीन मूलपाठ माना जाता है वेदो के विषय मे मान्यता है कि उन्हे आध्यात्मिक सतो (ऋषियो) को देववाणी द्वारा उद्घाटित किया गया स्मार्त सप्रदाय स्मृति साहित्य का अनुसरण करता है उनके महानतम गुरु और कुछ लोगो के अनुसार धार्मिक--सामाजिक समूह का निर्माण करने वाले, आठवी सदी के दार्शनिक व अद्वैत वेदात के प्रतिपादक शकर इस आदोलन के सस्थापक थे शृगरी, कर्नाटक मे उनके द्वारा स्थापित मठ स्मार्त सप्रदाय का केद्र बना हुआ है, तथा इस मठ के प्रमुख, जगद्गुरु, दक्षिण भारत एव गुजरात मे स्मार्तों के आध्यात्मिक गुरु है व भारत के प्रमुख धार्मिक व्यक्तित्वो मे एक हैं

उत्तर के स्मार्त दक्षिण एव गुजरात के अपने प्रतिरूपो से इन अर्थों मे कुछ अलग है कि इस नाम का मतलब अनिवार्य रूप से शकर का अनुयायी होना नही है उत्तर मे शुद्ध स्मार्त मदिर भी दक्षिण की अपेक्षा कम है

स्मार्त अन्य देवताओ के बजाय एक देवता को प्राथमिकता दे सकते है और आजकल उनमे शिव अत्यधिक लोकप्रिय है लेकिन वे अपनी उपासना मे पाच मुख्य देवताओ–शिव, विष्णु, शक्ति (उनके दुर्गा, गौरी, लक्ष्मी, सरस्वती जैसे सभी रूपो सहित), सूर्य एव गणेश की पचायतन पूजा करते है

स्मार्त ब्राह्मण हिदू धर्म के सार्वभौमिक मूल्यो को प्राथमिकता देते है वे शिक्षा की सभी शाखाओ मे सक्रिय है तमिल मे अय्यर उपनाम की उपाधि अक्सर उनके नाम के आगे लगाई जाती है, जो अब कुलनाम बन गया है

स्मृति

(सस्कृत शब्द, अर्थात पुन स्मरण), मानवीय स्मरणशक्ति पर आधारित हिदू पवित्र साहित्य की श्रेणी यह उस वैदिक साहित्य से भिन्न है, जिसे श्रुति या देववाणी माना जाता है स्मृति साहित्य वैदिक विचारो की व्याख्या, सविस्तार प्रतिपादन एव उन्हे सहिताबद्ध करता है, किंतु अमौलिक साहित्य होने के कारण इसे वैदिक श्रुति से कम आधिकारिक माना जाता है फिर भी अधिकतर आधुनिक हिदू स्मृति धर्मग्रथो से ज्यादा परिचित है इन रचनाओ मे *कल्पसूत्र* के रूप मे ख्यात महत्त्वपूर्ण धार्मिक नियमावलिया पौराणिक कथाए, अनुश्रुतियो एव इतिहास वाले *पुराण*, दो महाकाव्य *रामायण* और *महाभारत* शामिल है *महाभारत* मे हिदू धर्म की सभवत सबसे प्रभावशाली रचना *भगवद्गीता* समाहित है समय के साथ *स्मृति* शब्द का प्रयोग विशेष रूप से विधि एव सामाजिक आचरण के लिए किया जाने लगा, जैसे प्रसिद्ध विधि–ग्रथ *मनु स्मृति*

स्याद्वाद

जैन तत्त्व–मीमासा का सिद्धात कि सभी न्याय सापेक्ष होते है, जो कुछ स्थितियो परिस्थितियो या अनुभूति मे ही सही उतरते है इसे स्यात् (सस्कृत शब्द, अर्थात शायद) शब्द से अभिव्यक्त किया जाता है चीजो को देखने के तरीके (न्याय) असख्य है जैनो का मानना है कि अन्य दृष्टिकोणो की उपेक्षा करके एक न्याय या दृष्टिकोण से अनुभव की व्याख्या गलत है इसकी तुलना हाथी को टटोलने वाले सात अधे व्यक्तियो से की जा सकती है, जिनमे से प्रत्येक का मानना था कि जिस हिस्से को उसने पकडा है, वही हाथी का सच्चा रूप है इस स्थिति का सापेक्ष द्वैतवाद जैन 'अनेकातवाद' (यथार्थ के विभिन्न पहलुओ) सिद्धात मे निहित है इस सिद्धात के अनुसार, सभी वक्तव्य सत्य या असत्य या सत्य और असत्य, दोनो माने जा सकते हैं इसलिए विभिन्न दृष्टिकोणो के अनुसार अनिर्वचनीय है इन सभावनाओ के सयोजन को सात तार्किक विकल्पो, यानी सप्तभगी मे व्यक्त किया जा सकता है

स्राओशा

पारसी धर्म मे देवता, जो अहुर मज्दा के सदेशवाहक एव दैवी जगत के मूर्तरूप है उनका नाम 'सुनने' के लिए प्रयुक्त अवेस्ताई शब्द से सबद्ध है, जो मनुष्य द्वारा अहुर

मज्दा के शब्दो को निष्ठापूर्वक ध्यान से सुनने का सकेत देता है यह अहुर मज्दा की सर्वव्याप्त श्रवण क्षमता का भी परिचायक है स्राओशा मानव एव भगवान के बीच माध्यम हैं पारसी लोगो का विश्वास है कि उनकी उपस्थिति के बिना कोई भी अनुष्टान वैध नही है और वह पारसी उपासना पद्धति मे काफी महत्त्वपूर्ण है उनका चित्रण एक सशक्त एव पवित्र युवक के रूप मे होता है, जिनका स्वर्गीय आवास हजार खभो वाला मकान है तथा जो सरक्षक की भूमिका भी निभाते है अहुर मज्दा स्राओशा को ही मनुष्यो पर अत्याचार करने वाले दानवो को दडित करने के लिए भेजते है उनकी खोपडियो को कुचलकर उनसे निपटने के लिए वह रात मे तीन बार धरती पर आते है उनका सबसे शक्तिशाली हथियार प्रार्थना है काल के समापन पर वह बुराई (दुष्टता) के अतिम विनाश का कारण होगे स्राओशा धर्मपरायण व्यक्ति की शारीरिक मृत्यु के तीन दिन बाद ईश्वरीय निर्णय की दिव्य परीक्षा द्वारा उसकी आत्मा का मार्गदर्शन करते है

स्वराज पार्टी

राजनीतिक दल, जिसे उत्तर भारत के सपन्न वकीलो मे से एक, मोतीलाल नेहरू (1861–1931) ने भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के भीतर शुरू किया था मोतीलाल नेहरू के साथ–साथ बगाल के सी आर (चितरजन) दास (1870–1925) ने इस नई पार्टी के नेतृत्व मे भागीदारी की 1923 मे केंद्रीय लेजिस्लेटिव असेबली का चुनाव लडते हुए पार्टी ने परिषद मे रहकर सरकार विरोधी आदोलन के जरिये सरकारी नीति मे बाधा डालने और ब्रिटिश शासन को पटरी से उतारने का लक्ष्य बनाया हालाकि गाधी जी का असहयोग आदोलन काग्रेस की प्राथमिक रणनीति बना रहा विश्वयुद्ध के बाद के सुधारो मे वास्तविक आशिक सहयोग उन काग्रेस नेताओ की वैकल्पिक नीति बन गया जो कम रूढिवादी हिदू या अधिक धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के थे 1923 मे केंद्रीय लेजिस्लेटिव एसेबली मे स्वराजियो ने 40 से अधिक सीटे जीती, लेकिन उनकी सख्या कभी भी इतनी नही रही कि वे अग्रेजो को ऐसा विधेयक पारित करने से रोक सकते जिसे अग्रेज आतरिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए जरूरी मानते व समझते थे

स्वस्तिक

बोलचाल की हिंदी मे सतिया कहलाने वाला समबाहु धनात्मक चिह्न (क्रॉस), जिसकी भुजाए समकोणो पर समान आवर्ती दिशा, सामान्यत दक्षिणावर्त्त मे मुडी होती है समृद्धि एव सौभाग्य के प्रतीक के रूप मे स्वस्तिक का प्रयोग पूरे प्राचीन एव आधुनिक विश्व मे व्यापक रूप से होता है यह सस्कृत स्वस्ति शब्द से बना है, जिसका अर्थ है 'कल्याण हो' यह प्राचीन मेसोपोटामिया सिक्को पर बहुप्रचलित चिह्न था स्केडिनेविया मे वामावर्त स्वस्तिक 'थोर' देवता के हथौडे (घन) का चिह्न था स्वस्तिक प्रारभिक ईसाई एव बैजतिया कला मे भी इस्तेमाल हुआ है (जहा गामा गैमेडियन क्रॉस या क्रुक्स {गामाटा} के रूप मे जाना गया, क्योकि इसे चार बडे यूनानी गामाओ {ᴦ} को

साझा आधार से जोडकर निर्मित किया गया है) यह दक्षिण एव मध्य अमेरिका (मायाओ मे) तथा उत्तरी अमेरिका मे (मुख्य रूप से नावाजो मे) भी पाया गया

भारत मे स्वस्तिक हिदुओ, जैन और बौद्धो म शुभ चिह्न की तरह व्यापक रूप से प्रयुक्त होता है जैनो मे यह उनके सातवे तीर्थकर का चिह्न है कहा जाता है कि यह अपनी चार भुजाओ द्वारा उपासको को पुनर्जन्म के चार सभावित स्थानो, जतु या वनस्पति जगत, नरक, पृथ्वी या आत्मा जगत के बार मे याद दिलाता है हिदू (और जैन भी) अपने बहीखातो के प्रथम पृष्ठो पर चिह्न के रूप मे दरवाजे, देहरी तथा चढावो मे स्वस्तिक का इस्तेमाल करते है दक्षिणावर्त स्वस्तिक, जो घडी की दिशा में चलता है तथा वामावर्त्त स्वस्तिक (ज्यादा सही ढग से सौवस्तिक कहा जाता है), जो घडी की विपरीत दिशा मे चलता है, के बीच स्पष्ट भेद किया गया है दक्षिणावर्त स्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक माना जाता है तथा उसकी भुजाए सूर्य के दैनिक मार्ग की दिशा का अनुकरण करती है, जो उत्तरी गोलार्द्ध मे पूर्व से दक्षिण और फिर पश्चिम की ओर जाता लगता है. वामावर्त स्वस्तिक अक्सर रात्रि, विकराल काली एव जादू–टोने का प्रतीक है

बौद्ध परपरा मे स्वस्तिक बुद्ध के पैर या पदचिह्नो का प्रतीक है इसे अक्सर अभिलेखो के शुरू या अत मे अकित किया जाता है, तथा आधुनिक तिब्बती बौद्ध वस्त्र–अलकरण के लिए इसका प्रयोग करते है बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ स्वस्तिक ने चीन और जापान की चित्रकला मे अपना स्थान बनाया, जहा इसका प्रयोग अनेकत्व, प्रचुरता समृद्धि एव लबा जीवन दर्शाने मे किया गया

नाजी जर्मनी मे स्वस्तिक (जर्मन शब्द, हाकेन्क्रुज), अपनी दक्षिणावर्त तिरछी भुजाओ के साथ राष्ट्रीय प्रतीक बन गया 1910 मे एक कवि तथा राष्ट्रवादी विचारक गीडो वॉन लिस्ट ने सभी सामीविरोधी सगठनो के प्रतीक के रूप मे स्वस्तिक का सुझाव दिया और जब 1919–20 मे नेशनल सोशलिस्ट पार्टी गठित की गई, उसने इसे अपनाया 15 सितबर, 1935 को सफेद गोले मे लाल पृष्ठभूमि के साथ काला स्वस्तिक जर्मनी का राष्ट्रीय ध्वज बन गया द्वितीय विश्व युद्ध मई 1945 मे जर्मनी के आत्मसमर्पण के साथ ही स्वस्तिक का यह प्रयोग समाप्त हो गया, हालाकि नव नाजी समूह अब भी स्वस्तिक को अपना प्रतीक मानते है

स्वाति तिरुनल

पूरा नाम स्वाति तिरुनल रामा वर्मा, (ज –13 अप्रै 1813, त्रावणकोर {वर्तमान तिरुवगूर केरल}, दक्षिण भारत, मृ –25 दिस 1846) त्रावणकोर के महाराजा और दक्षिण भारतीय कर्नाटक सगीत परपरा के सर्वोत्कृष्ट सगीतज्ञो मे से एक 16 वर्ष की आयु मे दक्षिण भारतीय राज्य के शासक बने स्वाति तिरुनल अपने समय मे कला के महानतम सरक्षकों में से एक थे वह स्वय 10 से अधिक भाषाओ मे पारगत थे, जिनमे सस्कृत, तेलुगु, कन्नड, मराठी, हिंदी और अग्रेजी शामिल है. वह इन भाषाओ मे कविताए लिखते थे वह चित्रकला, शिल्पकारी और अन्य कलाओ मे भी निपुण थे और

माना जाता है कि उन्होने लगभग 500 गीतो की रचना की *वर्णम, कृति, स्वरजाति पदम और जवाली* के साथ–साथ उन्होने दो गीति–नाट्यो की भी रचना की स्वाति तिरुनल ने कई ध्रुपद, खयाल और ठुमरियो की भी रचना की, लेकिन उन्हे कर्नाटक सगीत, विशेषकर *पदम* (प्रेम गीत) के लिए सबसे अधिक ख्याति मिली

स्वामीनाथन, एम.एस

पूरा नाम मोकोबू साबिसिवन स्वामीनाथन, (ज –7 अग 1925, कुबकोणम, तमिलनाडु भारत) अनुवाशिकी विशेषज्ञ और अंतर्राष्ट्रीय प्रशासक, जो भारत की हरित क्राति मे अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका के लिए विख्यात है हरित क्राति कार्यक्रम के तहत ज्यादा उपज देने वाले गेहू और चावल के बीज गरीब किसानो के खेतों मे लगाए गए थे इस क्राति ने भारत को दुनिया मे खाद्यान्न की सर्वाधिक कमी वाले देश के कलक से उबारकर 25 वर्ष से कम समय मे आत्मनिर्भर बना दिया उस समय से भारत के कृषि पुनर्जागरण मे स्वामीनाथन के योगदान ने उन्हे कृषि क्राति आदोलन के वैज्ञानिक नेता के रूप मे ख्याति दिलाई उनके द्वारा सदाबहार क्राति की ओर उन्मुख अवलबनीय कृषि की वकालत ने उन्हे अवलबनीय खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र मे विश्व नेता का दर्जा दिलाया

स्वामीनाथन को 1971 मे सामुदायिक नेतृत्व के लिए मैग्सेसे पुरस्कार, 1986 मे अल्बर्ट आइस्टीन वर्ल्ड साइंस पुरस्कार, 1987 मे पहला विश्व खाद्य पुरस्कार, 1991 मे अमेरिका मे टाइलर पुरस्कार, 1994 मे पर्यावरण तकनीक के लिए जापान का होडा पुरस्कार, 1997 में फ्रास का ऑर्डर दु मेरिट एग्रीकोल (कृषि मे योग्यताक्रम), 1998 मे मिसूरी बॉटेनिकल गार्डन (अमेरिका) का हेनरी शॉ पदक, 1999 में वॉल्वो इटरनेशनल एन्वायरमेट पुरस्कार और 1999 मे ही यूनेस्को गाधी स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया भारत सरकार ने उन्हे पद्मश्री (1967), पद्मभूषण (1972), पद्म विभूषण (1989) और भारत रत्न (1998) से सम्मानित किया विभिन्न पुरस्कारो और सम्मानो के साथ प्राप्त धनराशि से उन्होने 1990 के दशक के आरभिक वर्षों मे अवलबनीय कृषि तथा ग्रामीण विकास के लिए चेन्नई मे एक शोध केद्र की स्थापना की एम एस स्वामीनाथन रिसर्च फाउडेशन का मुख्य उद्देश्य भारतीय गावो मे प्रकृति तथा महिलाओ के अनुकूल प्रौद्योगिकी के विकास और प्रसार पर आधारित रोजगार उपलब्ध कराने वाली आर्थिक विकास की रणनीति को बढावा देना है

फाउडेशन मे स्वामीनाथन और उनके सहयोगियो द्वारा पर्यावरण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे किए जा रहे कार्य को अतर्राष्ट्रीय मान्यता मिली है स्वामीनाथन दक्षिण एशिया के उत्तरदायित्व के साथ पर्यावरण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे यूनेस्को मे भी पदासीन रहे है उनकी महान विद्वत्ता को स्वीकारते हुए इग्लैड की रॉयल सोसाइटी और बाग्लादेश चीन, इटली, स्वीडन, अमेरिका तथा सोवियत सघ की राष्ट्रीय विज्ञान अकादमियो मे उन्हें शामिल किया गया है वह वर्ल्ड एकेडमी ऑफ साइसेज के सस्थापक सदस्यो मे से एक है

1999 मे *टाइम्स* पत्रिका ने स्वामीनाथन को 20वी सदी के 20 सबसे प्रभावशाली एशियाई व्यक्तियो मे से एक बताया

स्वामी नारायणी

स्वामीनारायण भी कहलाता है, हिदू सुधारवादी सप्रदाय, जिसके बहुत से अनुयायी गुजरात मे है इसकी उत्पत्ति मूल रूप से गुरुओ का आदर करने के लिए प्रसिद्ध प्रमुख भक्ति सप्रदाय वल्लभाचार्य के उन आचरणो के विरोध मे हुई, जिनका विकास 19वी सदी के दौरान माना जाता है इस पथ की स्थापना स्वामी नारायण ने लगभग 1804 मे अहमदाबाद मे की, जिन्होने विशेष रूप से जाति, आहार एव अनुष्ठानो से सबधित परपरागत हिदू नियमो का पालन करने पर बल दिया यह सप्रदाय कृष्ण की पूजा के साथ–साथ हिंदू धर्म के पाच प्रमुख देवताओ की भी उपासना करता है तथा वल्लभ मत्र का जाप करता है इसके सिद्धात हिदू ग्रथो के चुने हुए हिस्सो के साथ एक चयनिका *शिक्षापत्री* मे सगृहीत है

हंगल, गगुबाई

पूरा नाम गाधारी हगल (ज –1913, हुबली, कर्नाटक, भारत), हिदुस्तानी शास्त्रीय परपरा की प्रख्यात गायिका और किराना घराना की वरिष्ठ सदस्या देवदासियो के परिवार मे पैदा हुई गगुबाई ने बहुत कम आयु से ही सगीत की शिक्षा ली उनकी माता और दादी, दोनो ही कर्नाटक सगीत की प्रख्यात हस्तिया थी यद्यपि उन्होने सगीत की आधारभूत शिक्षा अपनी माता से ग्रहण की, लेकिन किराना घराना के अग्रणी कलाकार महान सगीतज्ञ स्वर्गीय सवाई गधर्व ने उनकी सगीत शैली को तराशा तथा आकार दिया लगभग 70 वर्षो के गायनकाल मे गगुबाई ने अपने गुरु की शैली का नियमपूर्वक अनुपालन किया है और उसमे अन्य घरानो के तत्त्वो का समावेश नही किया उनके लगभग पुरुषोचित स्वर–सचार से यह स्पष्ट हो जाता है हालाकि पुरुषोचित स्वर का जिम्मेदार उनके गले के ऑपरेशन को ठहराया जा सकता है, लेकिन वह जान–बूझकर अपने गुरु के समान गाने की कोशिश करती है गगुबाई किसी भी राग को धीरे–धीरे खोलने मे यकीन राग के प्रत्येक स्वर का महत्त्व समझ सके वह कभी–कभी ठु उपशास्त्रीय सगीत उनका क्षेत्र नही है भारतीय शास्त्रीय सगीत गगुबाई को कई सम्मान प्रदान किए गए है, जिनमे राष्ट्र तथ नाटक अकादमी पुरस्कार और पद्म भूषण शामिल है

गगुबाई ह
सौजन्य

हकीकत

(अरबी शब्द, अर्थात 'यथार्थ', 'सत्य'), सूफी (मुस्लिम आध्यात्मिक के साथ सम्मिलन की ओर अपनी यात्रा के अत मे दिव्य सार के सूफी द्वारा प्राप्त ज्ञान सूफी को पहले फना (स्व से परे गुज अवस्था तक पहुचना पडता है, जिसमे वह सासारिक दुनिया के जाता है और स्वय को पूर्णत ईश्वर मे लीन कर देता है इस बाद वह बका (अस्तित्व) की स्थिति तक पहुचता है और उस प होता है

सूफियो ने स्वय को अहल अल–हकीकत (सच्चे लोग) कहा, ताकि वे स्वय को अहल अश–शरीअत (मजहबी कानूनी लोग) से अलग कर सके उन्होने इस नाम का उपयोग रूढिवादी मुसलमानो के उस आरोप के खिलाफ किया कि सूफी लोग *कुरान* (इस्लाम धर्मशास्त्र) और *हदीस* (मुहम्मद के वचन) द्वारा निर्धारित इस्लामी नियमो और सिद्धातो स विचलित हो गए है सूफियो का कहना था कि ये आरोप इसलिए लगाए जा रहे है, क्योकि रूढिवादी लोग धार्मिक साहित्य के बाहरी अर्थो पर ज्यादा आश्रित है और उनमे इस्लाम के आतरिक अर्थ को समझने की न तो शक्ति है व न कोई इच्छा

हज

इस्लाम मे, सऊदी अरब के पवित्र शहर की तीर्थयात्रा, जो प्रत्येक वयस्क मुस्लिम स्त्री या पुरुष को अपने जीवनकाल मे कम से कम एक बार ज़रूर करनी चाहिए इस्लाम के पाच स्तभ के रूप मे ज्ञात मूलभूत मुस्लिम आचार एवं सस्थानो मे हज का स्थान पाचवा है धू–अल–हिज्जा (इस्लामी वर्ष का आखिरी महीना) के सातवे दिन तीर्थयात्रा शुरू होती है और 12वे दिन पूरी होती है शारीरिक और वित्तीय रूप से समर्थ प्रत्येक मुसलमान के लिए हज जरूरी है, लेकिन उसकी अनुपस्थिति मे उसके परिवार को परेशानी नही होनी चाहिए कोई व्यक्ति अनुपस्थित रहकर भी हज पर जा रहे अपने रिश्तेदार या दोस्त को अपनी जगह वहा 'खडे होने' को कहकर यात्रा कर सकता है

हज के दौरान हाजी मक्का सऊदी अ[illegible] काबा की परिक्रमा करते हुए
साजन्य *हिदुस्तान टाइम्स*

हज के अनुष्ठान को पैगबर मुहम्मद ने स्थापित किया था लेकिन इसमे कुछ भिन्नताए आ गई है और कठोर औपचारिक मार्ग निर्देशन का हाजियो के समूह द्वारा, जो अक्सर बिना उचित क्रम के मक्का जाते है, सख्ती से पालन नही किया जाता

जब तीर्थयात्री मक्का से लगभग 10 किमी दूर होता है, तब वह 'इहराम' कहलाने वाली पाक (पवित्र) अवस्था मे पहुचता है और वह इहराम वस्त्र पहनता है, जो दो सफेद बिना सिली चादरो से बना होता है उसे शरीर के चारो तरफ लपेटा जाता है हज पूरा होने तक हाजी न तो अपने बाल और न ही नाखून काटता है वह मक्का पहुचता है और बडी मस्जिद स्थित पाक काबा के चारो ओर सात बार परिक्रमा करता है काले पत्थर (हजर–अल–आस्वद) को चूमता या छूता है और मकाम इब्राहीम व काबा की दीक्षा मे दो बार नमाज पढता है, फिर सफा तथा मरवाह पहाड के बीच सात बार आता–जाता है धू–अल–हिज्जा के सातवे दिन हाजी को उसके फर्ज याद दिलाए जाते हैं इस अनुष्ठान के दूसरे चरण मे, जो महीने के आठवे व बारहवे दिन के बीच होता है, हाजी मक्का के बाहर स्थित पाक जगहो, जबाल अर–रहमा, मुज्दलिफा व

मीना की यात्रा करता है और अब्राहम की कुर्बानी की याद में एक जानवर कुर्बान करता है हाजी फिर आमतौर पर अपना सिर मुडवाता है और लगातार तीन दिन तक मीना स्थित तीन खभो पर हर रोज सात पत्थर फेकता है (खभे विभिन्न शैतानो के प्रतीक है), फिर वह मक्का लौटकर शहर छोडने से पहले काबा का आखिरी तवाफ या चक्कर लगाता है

हर साल लगभग 20 लाख लोग हज करते है इस धार्मिक कृत्य मे विभिन्न पृष्ठभूमि के अनुयायियो के एक साथ आने के कारण यह इस्लाम मे एकजुट करने की शक्ति का काम करता है एक बार तीर्थयात्रा करने के बाद व्यक्ति अपने नाम के साथ हाजी जोड सकता है

हजारीबाग

नगर, दक्षिण–मध्य झारखड राज्य, पूर्वोत्तर भारत, हजारीबाग पठार पर स्थित यह नगर एक प्रमुख सडक जक्शन और कृषि व्यापार केद्र है यहा दामोदर घाटी परियोजना के कार्यालय, एक अस्पताल और कई महाविद्यालय स्थित है इनमे राज्य के सबसे पुराने कॉलेजो मे से एक सेट कोलबस कॉलेज तथा के बी विमेन्स कॉलेज शामिल है, जो विनोबा भावे विश्वविद्यालय से सबद्ध है यह एक सुदर नगर है और इसके निकट ही राष्ट्रीय उद्यान स्थित है यहा से राज्य के सबसे गर्म झरने, सूरजकुड तक जाया जा सकता है 1869 मे हजारीबाग मे नगरपालिका का गठन हुआ जनसख्या (2001) नगर 1,27,243, जिला कुल 22,77,108

हजारीबाग अभयारण्य

सरक्षित क्षेत्र, दक्षिण–पश्चिमी झारखड राज्य, पूर्वोत्तर भारत पटना–राची मुख्य मार्ग पर हजारीबाग नगर से 18 किमी दूर स्थित 1955 मे स्थापित यह अभयारण्य 186 वर्ग किमी मे फैला हुआ है इस अभयारण्य मे साल (*शोरिया रोबस्टा*) के घने जगल से ढकी पहाडिया है, जिसमे बाघ, तेदुआ, रीछ काला भालू, हिरन, जगली सूअर, लकडबग्घा, मोर, लाल जगली मुर्गी और हरे कबूतर रहते है इस अभयारण्य को पक्की सडकों से जुडी दर्शक–मीनारो से देखा जा सकता है यहा कई लवण लेविकाओ का निर्माण भी किया गया है

एक जटिल आसन
लशन कुमार *हिंदुस्तान टाइम्स*

हठयोग

(सस्कृत शब्द, अर्थात शक्ति का अनुशासन), योग का मत जो बाहरी वस्तुओ से मन को अलग करने की आध्यात्मिक पूर्णता की स्थिति प्राप्त करने के मार्ग के रूप मे शरीर पर स्वामित्व पर जोर देता है हठयोग का उद्गम विशेषकर 12वी

शताब्दी मे नाथ अथवा कनफटा योगी समुदाय के सस्थापक गोरखनाथ से जुडा है, लेकिन इसकी उत्पत्ति पातजलि (ई पू तीसरी शताब्दी मे *योगसूत्र* के लेखक) के समय की योगी परपराओ से हुई है

हठयोग भोजन, शुद्धि प्रक्रियाओ, श्वास नियमन (प्राणायाम) और शारीरिक मुद्राओ को विशेष महत्त्व देता है, जो शारीरिक उद्यम के एक कार्यक्रम की रचना करते है

पश्चिम मे हठयोग शारीरिक आराम और मानसिक एकाग्रता प्राप्त करने के व्यायाम के रूप मे लोकप्रिय हो गया है लेकिन इसका वास्तविक लक्ष्य सुप्त ऊर्जा (शक्ति) को जागृत करना है, जो स्थूल शरीर को सचालित करती है, लेकिन स्वय मानव शरीर की स्थूलता मे छिपी रहती है इसे धारण करने वाले स्थूल शरीर को विभिन्न रूपो मे वर्णित किया गया है साधारणत गुदा/जननेद्री के पास से शुरू होकर विभिन्न चक्रो की शृखला है, जो सिर के शीर्ष तक जाती है भौतिक व मानसिक क्रियाओ को बलपूर्वक (हठ) दबाकर, नारी शक्ति को चक्रो के माध्यम से ऊपर उठने मे सक्षम बनाया जाता है, ताकि वह सबसे ऊपरी चक्र मे पुरुष शिव से मिल सके और यह सम्मिलन ज्ञान प्राप्ति तथा यहा तक कि अनश्वरता से भी अविभाज्य है

हडप्पा

हडप्पा मे शिल्पकारो के आवास
सोजन्य पॉल अल्मासे

सिधु नदी की सहायक रावी नदी, जो अब सूख चुकी है, के किनारे बसा गाव, जहा दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यता मे से एक का अस्तित्व था (2700–2000 ई पू) यह पाकिस्तान के पूर्वी क्षेत्र मे साहिवाल शहर के पश्चिम–दक्षिणपश्चिमी दिशा मे स्थित है यह गाव कई टीलो पर बसा हुआ है, जिनकी 1921 से हो रही खुदाई स सिधु सभ्यता (जिसे हडप्पा सभ्यता भी कहते है, क्योकि यह पुरानी सभ्यता के ऐतिहासिक अवशेषो की पहचान का पहला स्थान है) के एक विशाल नगर का पता चला आकार मे हडप्पा 644 किमी दक्षिण–पश्चिम मे स्थित मोहेजोदाडो के बाद दूसरे स्थान पर है इस स्थान को ईंटो की चोरी के कारण बहुत नुकसान पहुचा, लेकिन यहा बस्ती की सरचना मोहेजोदाडो के समान ही प्रतीत होती है इसके पश्चिमी सिरे पर एक दुर्ग था और पूर्वी सिरे पर खाचेदार सरचना मे बस्ती थी मिट्टी की ईंटो से किलेबद दुर्ग के बाहरी हिस्से पर पकी हुई ईंटो का पलस्तर था और निश्चित दूरी पर बुर्ज बने हुए थे दुर्ग व नदी के बीच मे कामगारो के बैरकनुमा खड थे और इसके साथ ही एक क्रम मे ईंटो से बने वृत्ताकार फर्श थे, जिनका इस्तेमाल अनाज कूटने के लिए किया जाता था तथा दो समूहो मे 12 हवादार कमरे थे, जो अनाज रखने के काम आते थे समूची सरचना में दुर्ग की प्रमुखता से नदी के आसपास के क्षेत्र मे होने वाली खाद्यान्न आपूर्ति पर सीधे प्रशासनिक नियत्रण का सकेत मिलता है. हडप्पा उत्तर और पश्चिम के

अवशेषों का नक्शा
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

पर्वतीय क्षेत्रो से इमारती लकडी, पत्थर और धातु सहित कच्चा माल प्राप्त करने का भी केंद्र था

हदीस

(अरबी शब्द, अर्थात खबर या कहानी), पैगबर मुहम्मद की परपराओ या उपदेशो का अभिलेख, जिसे इस्लाम में पवित्र ग्रथ *कुरान* के बाद धार्मिक नियमो और नैतिक निर्देशन के स्रोत के रूप मे दूसरा स्थान प्राप्त है इसे मुहम्मद साहब की जीवनी के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है, जिसे उनके समुदाय न उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत करने तथा आज्ञाकारिता के लिए याद रखकर चिरस्थायी बना दिया है इस्लामी इतिहास की पहली तीन शताब्दियो के दौरान *हदीस* का विकास एक प्रमुख तत्त्व है और इसके अध्ययन से इस्लाम की सोच और प्रकृति की जानकारी मिलती है

प्रकृति और उत्पत्ति

हदीस शब्द की उत्पत्ति अरबी मूल *हदस* से हुई है, जिसका अर्थ होना और घटना का विवरण देना, सूचित करना, खबर के रूप मे सुनना या सुनाना या बताना है इसका अभिप्राय परपरा को वर्णन या अभिलेख के रूप मे देखना है इससे सुन्नत (शाब्दिक अर्थ सुगम मार्ग, जिसे पूर्वोदाहरण तथा प्राधिकार अथवा निर्देश के रूप मे लिया जा सकता है) शब्द की उत्पत्ति हुई, जिसके प्रति दीनदार लोग *हदीस* मे निहित अनुज्ञप्ति के प्रति समर्पण के अनुसरण का विश्वास व्यक्त करते है और इसी के आधार पर कानूनी लोग आदेश देते है इस प्रकार, इस्लाम मे सहमति या सतुष्टि और प्रतिबध या निरोध, दोनो का विधान है तथा इससे विधि के जीवन चरित के आधार के रूप मे *हदीस* और कर्त्तव्य प्रणाली के रूप मे सुन्ना की उत्पत्ति हुई है *हदीस* के माध्यम से मुहम्मद ने इस्लामी गृहस्थी के नियम–विधान नियत किए और उनकी नेतृत्व क्षमता मरणोपरात भी निर्विवाद रही इस दिशा मे मुख्यत दो कारक सक्रिय थे पहला इस्लाम की उत्पत्ति मे मुहम्मद की अद्‌भुत भूमिका या स्थिति, दूसरा, अपने इतिहास की पहली दो सदियो मे इस धर्म का विभिन्न सास्कृतिक टकराव के क्षेत्रो मे तेजी से भौगोलिक विस्तार इन दो तत्त्वो या कारको को परखे और इनकी अत क्रिया को समझे बिना *हदीस* का सही आकलन नही किया जा सकता हे

पश्चिम और मध्य एशिया तथा उत्तरी अफ्रीका मे जीते गए क्षेत्रो के बारे मे मुसलमानो का अनुभव उनकी आरभिक परपराओ से सबधित था इस्लामी इतिहास की नीव इस सुदृढ अवधारणा मे थी कि मुहम्मद की व्यक्तिगत नियति इस्लामिक सस्थान मे पैगबर के रूप मे है *कुरान* के लेखक और ईश्वर के धर्मदूत परपरा का सकेत शहादत या साक्ष्य (अल्लाह के अलावा और कोई नही है मुहम्मद अल्लाह के पेगबर है) के पाठ अथवा उच्चारण मे देखा जा सकता है, जिसमे उल्लिखित दो चरित्रो, अल्लाह और उसके दूत या पैगबर को एक–दूसरे से अलग नही किया जा सकता इस्लाम का विधान या इतिहास *कुरान* के आरभिक तथ्य का अनुसरण करता है, जिसे मुहम्मद ने

व्यक्तिगत रूप से ग्रहण किया था और इस प्रकार यह अविभाज्य रूप से उनके व्यक्तित्व तथा योग्यता से सबद्ध है

इस्लामी समुदाय द्वारा *कुरान* को धर्मग्रथ के रूप म मान्यता देना, मुहम्मद को इसके लिए नियुक्त ग्रहणकर्ता के रूप मे स्वीकारने की मान्यता से अविभाज्य है *कुरान* के अनुसार, अल्लाह सिर्फ मुहम्मद से ही बात करते थे और इस कार्य में उनका कोई भागीदार या साथी नही था इसलिए 632 ई मे जब मुहम्मद की मृत्यु हुई, तो मुसलमाना के भावनात्मक और बौद्धिक ससार मे एक व्यापक शून्य पैदा हुआ यह स्थायी भी था उनकी मृत्यु ने *कुरान* मे व्यक्त प्रकटीकरण या रहस्योद्घाटन को भी रोक दिया इसके साथ ही धर्मशास्त्रीय मध्यस्थता और पैगबर की उपस्थिति भी समाप्त हो गई

कहा जाता है कि पैगबर की मृत्यु रहस्योद्घाटन या प्रकटीकरण की पूर्णता के साथ हुई लेकिन जहा *कुरान* और पैगबर के जीवन का पूर्णतायुक्त अत एक अर्थ मे विजयोल्लास से भरा था, वही इस्लाम के भौगोलिक विस्तार के दौरान स्थान और समय, दोनो मे नई बदलती हुई परिस्थितियो के मद्देनजर दु खदायी भी था ऐतिहासिक परिस्थितियो के नए दबावो मे दिशा–निर्देश कहा से प्राप्त किया जाता? अगर धर्मशास्त्र रूपी वक्तव्य से नही, तो और कहा से, उसके अलावा कौन दिव्य जगत का रहस्योद्घाटक बनता और इस प्रकार, पैगबर के अनत सूचक के रूप मे स्वीकार किया जाता इस प्रकार, परपरा और उसके विकास क प्रति इस्लाम रूपी सहज वृत्ति मुहम्मद और *कुरान* की मूल प्रकृति मे शामिल है सतत इतिहास और मुस्लिम धर्मावलबियो के अधिक प्रसार ने *हदीस* के सकलन के लिए अवसर और प्रेरणा उपलब्ध कराए

ऐतिहासिक विकास

इस्लामी जनमानस मे मुहम्मद के क्रमबद्ध अनुस्मरण के प्रभाव ने तुरत औपचारिक और परिष्कृत रूप हासिल नही कर लिया इसके विपरीत, इस बात के भी प्रमाण है कि *हदीस* का पूरा विकास धीमा और असमान रहा स्मृति के शैलीबद्ध और आधिकारिक रूप ग्रहण करने से पहले समय व दूरी को अपनी भूमिका निभानी ही थी

इस्लाम–पूर्व अरब की साहित्यिक परपरा

पैगबर के जीवनकाल मे और उनके बाद के 250 वर्षो तक भी पहली पीढी मे इस्लामी अनुभव की अपनी तात्कालिकता थी गीतों और कथाओ मे कबायली इतिहास की सुपरिचित शैली का समागम था इस्लाम–पूर्व की कविता मे प्रत्येक जनजाति और उसके योद्धाओ की वीरगाथा का वर्णन था इस तरह की कविता प्रत्येक कबीले के पुरखो के सम्मान मे पढी जाती थी मूल इस्लाम की प्रबलता व उत्साह ने इन खासियतो को ग्रहण किया और उन्हे मुस्लिम गाथा मे शामिल कर लिया मुहम्मद पर केद्रित स्वाभिमानी इतिहास स्वाभाविक रूप से पहले कालानुक्रम का, बाद मे इतिहास लेखन का उत्साहपूर्ण विषय था इन दोनो को परपरा के प्रति प्रेम की आवश्यकता थी

और उन्होंने इसे बढावा भी दिया विधिज्ञो ने भी इसी स्रोत से सकेत प्राप्त किए जब *कुरान* को स्वीकार किया जा रहा था, तब पैगबर के वचनो और उनके कृत्यो को दर्ज करने के बारे मे प्रतिरोध तथा सदेह उत्पन्न हुआ कि 'कही ऐसा न हो' कि अद्‌भुत सरचना वाले इस धर्मशास्त्र को लेकर भ्रम अथवा उलझाव पैदा हो जाए वचनो को दर्ज करने की प्रथा का मुहम्मद द्वारा विरोध इस बात का प्रमाण है कि उस समय यह रिवाज मौजूद था *कुरान* के पूरा होने और धर्मविधानिकृत करने के साथ ही ये मुद्दे खत्म हो गए तथा समय और आवश्यकता ने *हदीस* की प्रक्रिया को तेज करने के लिए प्रेरित किया

पहली और दूसरी शताब्दी हिजरी में विकास

पैगबर की मृत्यु के बाद पहली शताब्दी मे ही कानून के विकास और समाज को आकार देने मे परपरा प्रमुख कारक के रूप मे स्थापित हो गई मुहम्मद के नाम और उदाहरणो के साथ *हदीस* के सबद्ध होने को लगातार प्राधिकार प्राप्त होता गया दूसरी शताब्दी मे इन प्रक्रियाओ मे बढते हुए औपचारिकतावाद ने इन सबधो का और विस्तार दिया परपराओ को सत्यापन के विशेषज्ञ 'विज्ञान' पर अवलबित होना चाहिए था ताकि वे मुहम्मद के सहयोगियो द्वारा वृत्तातो की अटूट शृखला के माध्यम से मुहम्मद के व्यक्तित्व के साथ अपने सबध को साबित करने के कडे औपचारिक मानदड पर खरी उतरे यह विज्ञान इतना सतर्क हो गया कि यह शका उठनी उचित (चाहे विरोधाभासी हो, तब भी) ही है कि जो सत्यापन जितना सपूर्ण और औपचारिक रूप से सतोषजनक होने का दावा करे, उस परपरा का जन्म काफी बाद मे तथा सुविचारित ढग से होने की उतनी ही अधिक सभावना है परपरा जिस विकसित स्वीकार्यता का दावा करती थी वह शुरुआत के अव्यवस्थित दौर मे मौजूद ही नही थी

यह स्पष्ट है कि गैर अरबी समाजो मे इस्लामीकरण से पहले के कई रिवाजो और प्रथाओ को मुहम्मद की तथाकथित या मान्य परपरा के रूप मे इस्लाम मे स्थान मिल गया, हालाकि इसमे हमेशा ही यह शर्त रही कि इस्लाम धर्म के साथ उनकी सामान्य सगतता हो मुहम्मद के व्यक्तिगत उदाहरण और मनीषा के रूप मे परपरा ने ऐसी व्यापकता और लोच दिखाई, जो इस्लाम के विस्तृत भौगोलिक अनुभव पर खरी उतरी

विधि और रिवाजो के अन्य कारको के परिप्रेक्ष्य मे विकसित हुई *कुरान* की टीका मुख्यत पारपरिक सामग्री पर आधारित थी, क्योकि *कुरान* के वृत्तातो के प्रसग और रहस्योद्‌घाटन के अवसरो को सबसे अच्छी तरह से उनके बारे मे इसके वर्णन से ही समझा जा सकता है कि परपरा अपनी सूचनाओ के माध्यम से क्या कहना चाहती है साथ ही, चूकि *कुरान* की टीका की शैलिया मुख्यत. उपदेशात्मक थी, इसलिए *हदीस* मे उपदेशो की सिफारिशो के लिए उदाहरण प्रस्तुत करने तथा लागू करने के लिए तैयार वचन और किस्सो का सकलन था दुर्लभ और असाधारण मामलो (तथाकथित *हदीस कुद्‌सी* या धार्मिक परपरा) को छोडकर, *कुरान* की व्याख्या के ये पारपरिक

फारक सिर्फ व्याख्यात्मक थे और परपराओ की कथावस्तु किसी भी प्रकार से *कुरान* की अनिवार्य और प्रमुख सत्ता पर विवाद खडा नही कर सकती या उसका स्थान नही ले सकती मुहम्मद की प्रासगिक उक्तिया (प्रासगिक अवलोकन) हालाकि अतिपवित्र है लेकिन इनमे रहस्योदघाटन के प्रमाणक नजीर (उदाहरण) की कमी है, जो सिर्फ *कुरान* मे निहित है *हदीस* के सबसे पहले विकसित हुए उदाहरणो मे जीवनीकार बिन इशाक (मृ –150 हिजरी {767 ई }) के वृत्तात और अल–मुवात्ता के नाम से ज्ञात मलिक बिन अनास (मृ–179 हिजरी {795 ई }) द्वारा कानूनो के सकलन शामिल है लेकिन इनसे करीब 50 वर्ष बाद वह सिद्धात सफल हुआ, जिसने इस्लामी कानून के मान्य विकास के लिए परपरा को अपरिहार्य बना दिया

तीसरी शताब्दी हिजरी और उसके बाद के विकास

परपरा और विधान या कानून मे सहसबध के दृष्टिकोण के प्रमुख समर्थक मुहम्मद अश्शफी (मृ –हिजरी 204 {820 ई }) थे, जिन्होने परपरा के दिव्य अकन *कुरान* के रहस्योदघाटन के विस्तार का दावा किया यह इस दृढ विश्वास के क्रम मे था कि सुन्नी इस्लाम (प्रमुख परपरावादी मत) के प्राधिकार की उत्पत्ति की व्याख्या मे 'कुरान और सुन्ना' वाक्यखड समीचीन है इस आदेश और विधिज्ञो की आविष्कारिता के कारण परपरा का तेजी से विकास हुआ जब वस्तुत किसी भी मुद्दे पर बहस नही हो सकती थी, तब मुहम्मद के विचारो और उद्धृत कृत्यो से सबधित परपराओ को छोडकर, उस समय तक अल्पनिर्णीत परपराओ पर सवाल खडा करने, कल्पना करने या आरोप लगाने का प्रलोभन अदम्य था आपूर्ति लगभग माग के अनुरूप थी और दोनो के विकास ने समर्थनकारी श्रेयता के विज्ञान को उम्दा लेकिन जटिल बना दिया *हदीस* की सामग्री के बढते हुए आकार और उसकी जटिलता ने बडे संकलनो तथा अधिक विस्तृत वर्गीकरण को आवश्यक कर दिया इन सभी कारको ने एक आलोच्य सपादकीय गतिविधि को प्रेरित किया, जिसने तीसरी शताब्दी मे उस सकलन को जन्म दिया, जिसे सुन्नी मुसलमान *हदीस* के धर्म विज्ञान से सबधित छह सकलन मानते है इनमे से पहले दो सकलनो को अत्यत पवित्र स्थिति प्राप्त है इनकी व्याख्या से पहले *हदीस* की आलोचना के विज्ञान के विकास मे शामिल सपादकीय कार्य और सपादकीय प्रक्रियाओ की व्याख्या करना आसान है

हदीस का विज्ञान

परपरा का अध्ययन दी गई सामग्री की विषय–वस्तु का साराश (मत्न) और परिपुष्टि की शृखलाओ पर आधारित रुझान (इस्नाद) के मध्य के अंतर को दिखलाता है

हदीस के स्वरूप और प्रमाणीकरण के मानदंड

मुहम्मद की उक्ति, कि 'ज्ञान प्राप्त करो, चाहे वह चीन मे ही क्यो न हो' या 'सदेह से सावधान, क्योकि यह झूठों का सबसे बडा झूठ है', मत्न या 'तत्त्व के निचोड को'

प्रस्तुत करता है इस प्रकार के *हदीस* को प्रस्तुत करने वाला सूत्र उत्तम पुरुष मे होगा यह मुझे 'क' द्वारा बताया गया, जिसे यह 'च' को 'ट' की अनुज्ञा पर, 'प' (यहा मुहम्मद साहब के साथी से आशय) द्वारा मिला, कि पैगबर ने कहा कि नामो की इस शृखला से इस्नाद का निर्माण होता है, जिस पर वह उक्ति या घटना, अपने प्रमाणीकरण के लिए आश्रित होती है परपरा के सदर्भ से सपादन या वहस मे मुख्य जोर, मत्न के अपने आलोच्य रुख के बजाय हमेशा इस्नाद पर होता है प्रश्न यह नही है कि क्या मुहम्मद ने वाकई इस तरह की बात कही होगी या की होगी, बल्कि प्रश्न यह है कि उन्होने ऐसा किया या कहा, क्या इसका वर्णन गवाहो और बताने वालो के द्वारा सुसमर्थित है? पहला प्रश्न विषयनिष्ठ मूल्याकन या मस्तिष्क की स्वतत्रता का बड़ा खतरा पैदा कर सकता था, हालाकि यह सदेह किया जा सकता है कि ये मुद्दे कई बार वस्तुत ऐसे ही गभीर मूल्य निर्धारण के माध्यम से तय किए जाते थे, जो प्रत्यक्षत सिर्फ इस्नाद से जुडे निर्णय के रूप मे होते थे दूसरा प्रश्न निश्चित रूप से एक सैद्धातिक, वस्तुनिष्ठ और मानदडो का काफी हद तक सटीक तरीका प्रस्तुत करता है

अगर प्रसारण की शृखला मे पास—पास आने वाले नाम जीवन मे एक—दूसरे से जुडते हो तो यह सुनिश्चित था कि उन्होने एक—दूसरे को सुना होगा उनकी यात्राओ की भी जाच की जाती थी कि सचमुच उनके रास्ते एक—दूसरे को काटते थे या नही यह दर्शाने के लिए कि वे ईमानदार लोग थे और सच बोल रहे थे, जीवनिया गढी जाती थी उनके समकालीनो द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर या तुलना के समय उनकी परपरा के सकेतो के आधार पर उनकी सत्यनिष्ठा की ख्याति का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता था परपराओ के मूल्याकन मे एक अन्य तत्त्व अलग—अलग स्रोतो से प्रचलन की आवृत्ति थी सबसे महत्त्वपूर्ण कारक 'सहयोगी' के साथ अतिम सबध था जिसने मुहम्मद साहब के साथ अपने सपर्क के दौरान पहली बार परपरा को सुना या ग्रहण किया था

वर्गीकरण

इन सभी तरीको और अन्य गौण बातो के जरिये *हदीस* की गुणवत्ता का वर्गीकरण करना सभव हुआ परपराए मजबूत (सही), अच्छी (हसन) या कमजोर (जईफ) हो सकती है अन्य मामलो मे स्वस्थ (सालिह) और अपुष्ट (साकिम) का भी प्रचलन था मूल्याकन के परिष्करण के आधार पर इन तीनो वर्गीकरणो के उपविभाजन हुए तथा बाद मे उत्कृष्ट सग्रहण के रुख के आधार पर भी वर्गीकृत हुए

अगर परपराओ का उल्लेख विधि परिभाषाओ के लिए नही, बल्कि सिर्फ़ नैतिक कारणो से हो रहा हो, तो विभेदो की प्रबलता कम होती थी उदाहरण के लिए, एक 'जईफ' परपरा प्रबोधन के लिए हितकारी हो सकती है भले ही विधिज्ञ उसे छोड दे या उसकी अनदेखी करे परपराओ की दृढ शक्ति इस बात पर भी निर्भर करती थी कि एक या अधिक 'सहयोगियो' का नाम उससे जुडा है या नही, इस्नाद के सादृश्य है या नही,

वे मुहम्मद तक अटूट (मुतस्सिल) है या असबधित (मौकूफ) इनकी और अन्य प्रश्नो की सूक्ष्मता समूचे विज्ञान पर लागू सक्रिय सक्षमता का हिस्सा थी

धर्मविधायी सकलनो की ख्याति और उनके प्राधिकार ने स्थिति को स्थिर करने मे बडी भूमिका निभाई, लेकिन ऐसा सिर्फ इसलिए हो सका, क्योकि उनके उद्भव ने यह प्रदर्शित किया कि परपरा के प्रति उत्साह हद से आगे बढ चुका है हिजरी की तीसरी शताब्दी के अत तक यह अत्यत आवश्यक हो गया कि *हदीस* को ऐसी स्थायी नियमावली मे परिभाषित कर दिया जाए, जिससे मूल सामग्री मे कोई भी नया तत्त्व जोडा न जा सके और जिसमे से अमर्यादित अश को निकाल दिया गया हो कई परपराओं के भीतर *हदीस* परपरा उस समय तक इस्लाम की प्राधिकार–सरचना मे स्थायी और अनुशासित अग बन चुकी थी, जो विधि और आचार का दूसरा बडा स्रोत था और जो *कुरान* का पूरक था ये हिस्से प्राथमिक रूप से *कुरान* और *सुन्ना* से तर्क करते हुए सादृश्यमूलक व्यवहार (कियास) और सर्वसम्मति (इज्तिहाद) के माध्यम से विधान के स्रोतो के रूप मे उपलब्ध थे शिया परपरा इस प्राधिकार–सरचना से अलग है

सकलन

सभी परपरावादियो मे सबसे सम्मानित मुहम्मद बिन इस्माईल अल–बुखारी (810–870 ई) थे, जिनकी कृति *किताब अल जामी अस्–सही* (प्रामाणिक सकलन) को एक महान ऐतिहासिक महत्त्व की और गभीर भक्तिभाव वाली रचना का अद्भुत सम्मान प्राप्त है बालक के रूप मे उन्होने मक्का की यात्रा की और अपनी विस्तृत यात्राओ मे परंपराओ का सकलन किया परपरा के अनुसार, उन्हे इस कार्य की प्रेरणा एक दर्शन (स्वप्न) से मिली, जिसमे सोते हुए मुहम्मद को मक्खिया परेशान कर रही थी और अल–बुखारी उन मक्खियो को पखो से उडा रहे थे मक्खिया मिथ्या परपराओ के बादल की परिचायक है, जो सत्य छवि को घेरे हुए है और पखा इसका अथक उद्धारक है इस कथा का सत्य चाहे जो भी हो, यह अल–बुखारी की योग्यतापूर्ण मनोदशा की परिचायक है उनकी कृति *सही* 16 वर्षों के सपादकीय परिश्रम और परीक्षण का परिणाम है उन्होने पूरे इस्नाद के साथ 7,397 परपराओ को शामिल किया कहा जाता है कि छह लाख से भी अधिक स्मृत विवरणो मे से पुनरावृत्तियो के साथ कुल 2,762 को एकत्र किया गया उन्होने इन सबको 97 किताबो और 3,450 अध्यायो मे व्यवस्थित किया, जिसमे विभिन्न विषय–वस्तु वाली परपराओ की पुनरावृत्ति है

इनकी तुलना मे समान महत्ता वाला *सही* मुस्लिम बिन अल–हज्जाज (817–875 ई) का था, जिसकी संकलनकर्त्ता ने *हदीस* के मानदड पर चर्चा की यह सामग्री अधिकाशत अपने समकालीनो द्वारा पुष्ट है और इन दोनो *सहियो* मे समान परपराओ को सहमत (मुत्तफक) कहा जाता है इस्नाद के मामले मे साप्रदायिक या अभिभावी सहमति को स्वतत्र सत्ता प्रदान करना एक वैशेषिक लक्षण था

परपराओ के चार अन्य शास्त्रीय सकलन है, जो सभी हिजरी की तीसरी शताब्दी से सबध रखते है, और अशत अतर्सबधित है अबू दाऊद अल–सिजिस्तानी (817–889 ई) ने *किताब अस–सुना* (परपराओ की पुस्तक) की रचना की, जिसमे न्यायशास्त्र (जैसा शब्द सुना से प्रतीत होता है, जो जामी से भिन्न है, जिसका अर्थ हे सभी क्षेत्रो के समावेश का सकलन) से सबधित 4800 परपराए शामिल है अबू ईसा मुहम्मद अत–तिरमिजी (मृ –892 ई) ने विधि मत (मसाहिब) की विभिन्न व्याख्याओ को शामिल करते हुए *जामी अस–सहीब* का सपादन किया

अबू अब्द अर–रहमान अन्–नसाई (830–915 ई) ने आनुष्ठानिक आचारो स सबधित धार्मिक कानूनो के विशेष परिप्रेक्ष्य मे एक अन्य पुस्तक *किताब अस–सुना* की रचना की अबू–दाऊद के शिष्य अबू–अब्दुल्लाह बिन माजा (824–886 ई) ने भी इसी शीर्षक से एक और सकलन तैयार किया, लेकिन उसमे कम सतोषजनक परपराओ के प्रति भी सहिष्णुता दिखाई गई थी प्राथमिकताए इन चारो के बीच बदलती रही और कुछ को अन्य के मुकाबले धीमी गति से मान्यता मिली इन सकलनो ने मलिक बिन अनास की पहले की रचनाओ को भी खारिज नही किया, जिसने बीच–बीच मे खासा प्रभाव बनाए रखा लेकिन उन्होने मुसलमानो की पीढियो मे बढते हुए मुख्य विश्वास 'युग्म' को अद्भुत पहल के साथ कायम किया और उपदेशात्मक कार्यो के लिए सामग्री के सम्मिश्रण की ओर प्रवृत्त बाद के लोकप्रिय सस्करणो के स्रोत की रचना की ऐसी ही एक कृति अबू मुहम्मद अल बगवी (मृ –1122 ई) की थी, जिसका नाम *मसविद अस–सुन्ना* (सुन्ना के दीपक) था इन सभी शास्त्रीय *मुसन्नाफत* या सकलनो की कई टीकाए थी, जो शिक्षा और धर्म या भक्ति के लिहाज से महत्त्वपूर्ण थी

मत–मतातर

इस्लाम की अल्पसख्यक शाखा शिया (पैगबर के चचेरे भाई अली और उनके वशजो की विशेष भूमिका मे विश्वास के कारण सुन्नी बहुसख्यक समुदाय से अलग एक मत) की परपरा काफी पहले से एकदम अलग थी, हालाकि इसमे भी मुहम्मद साहब के व्यक्तित्व पर उतना ही जोर दिया जाता था शिया लोग राजनीति, भावनात्मक और धर्मशास्त्र से सबधित गहन कारणो से इस्लाम के प्रधान सुन्नी समुदाय से अलग हो गए उनके बीच खलीफा के उत्तराधिकार और मुहम्मद साहब के चचेरे भाई तथा दामाद व चौथे खलीफा अली की भूमिका के बारे मे विवाद था तथा कर्बला के नरसहार मे उनके दो पुत्रो, विशेषकर हुसैन के दु खद अत से एक कटु दरार पड गई इसी नरसहार से अतत शियाओ की भक्ति और आचार मे सारगर्भित प्रतिनिधिक दु खभोग के धर्मशास्त्र का आर्विभाव हुआ, ये सभी कारक अपरिहार्य रूप से परपरा के निर्माण मे शामिल थे. इस फूट के कारण भिन्न–भिन्न निष्ठाओ के अनुरूप अलग–अलग उत्पत्तियो का देखा–पढा गया तथा कुछ प्रत्यक्ष मामलो, जैसे अली व खलीफा पद क बारे मे मुहम्मद के विचारो, इरादो को छोडकर ऐसे बहुत कम मामले थे, जिन पर विवाद नही था पैगबर के मन या उनकी सोच को लेकर इन मुद्दो पर काफी सघर्ष

हुआ, क्योकि उनका प्राधिकार ही इस झगडे मे एकमात्र सहमति का मुद्दा था इस प्रकार, शियाओं ने सुन्नियों की परपराओं को खारिज कर दिया और अपनी परपरा (हालाकि इस बात का प्रमाण है कि उत्कृष्ट सकलनकर्त्ताओ मे कम से कम अन्–नसाई ऐसे थे, जो अनेक मुद्दो के पक्षो से सहानुभूति रखते थे) का विकास किया उन्होंने सुन्नियों की इस्नाद की धारणा और प्राधिकार के रूप मे समुदाय की स्थिति पर प्रश्न खडे किए तथा अपने इमामो (शिया नेताओं) के प्रति समर्पण की अपनी प्रणाली विकसित की इसने परपरा की सभावित भूमिका को बदल दिया शियाओ के मुख्य सकलन चौथी और पाचवी शताब्दी के है और इनमे सिर्फ अली के परिवार से शुरू हुई परपराओ को स्थान दिया गया है इनमे पहली कृति अबू जफर मुहम्मद अल–कुलीनी (मृ –939 ई) की *काफी फी–इल्म अद्–दीन* थी, जो धार्मिक आचारो के विज्ञान के बारे मे एक सुविस्तृत सकलन है

हदीस का महत्त्व

गैर मुसलमानो के लिए *हदीस* के धर्मवैधानिक सकलन निष्ठा, व्यवहार तथा प्राधिकार के विश्व का एक परिचय है, जो लगभग विश्वकोश सदृश सम्मिलीकरण की दुनिया है *कुरान* की वैधानिकिता का विस्तार करते हुए न्याय की व्यवस्थाए इसके आरभिक तत्त्व है, इनमे नैतिक, सामाजिक, वाणिज्यिक और व्यक्तिगत मामलो तथा युगात विज्ञान की विषय–वस्तुओ की सामग्री निहित हे इसमे सार्वजनिक और निजी आचार के सभी पहलुओ को देखा जा सकता हे, जिसमे खजूर के बीज को फेकने से लेकर मृत्युशय्या के कष्ट तक, प्रक्षालन के तरीके से क्षमाशीलता के कर्त्तव्यो तक, पाचन की शारीरिक प्रक्रिया से लेकर कयामत के दिन के वर्णन तक, सब कुछ शामिल है कानूनी और नैतिक निर्देशो और अवधारणाओ के ब्योरे और धर्मभीरुता के मामले मे यहूदी धर्मविधि सग्रह (तालमुद) जैसी क्षमता इसमे विद्यमान है इसमे सत्यनिष्ठा तथा सत्कर्मो से सबधित कहानिया है उदाहरण के लिए, जमीन का एक टुकडा खरीदने वाले को जमीन के अदर से सोने का एक पात्र मिला, जिसे वह पुराने भूस्वामी के पास ले गया, क्योकि उसका मानना था कि उसने यह नही खरीदा था इसी प्रकार बेचने वाले ने उसे लेने से इनकार कर दिया कि जब वह जमीन बच रहा था, तब उसे सोने के बारे मे कुछ भी पता नही था मध्यस्थ या पच ने ईमानदारी के इस द्वद्व को एक व्यक्ति के पुत्र का विवाह, दूसरे की पुत्री के साथ करने के प्रस्ताव के जरिये सुलझा दिया, ताकि दान देने के बाद बचा हुआ सोना नवदपति को दे दिया जाए

परपराओ में और इसके जरिये इस्लाम मे जिस भी चीज को स्थानीय इस्तेमाल के लिए सगत पाया गया, उसे प्राधिकारिक रूप से शामिल कर लिया गया तथा कई सस्कृतियो के अपने क्षेत्र मे दक्षता के साथ इसे लागू किया गया इसमे यहूदी तथा ईसाई तत्त्वो के प्रभाव के व्यापक प्रमाण हे, विशेषकर युगात विज्ञान के परिमडल मे, जो कयामत के *कुरान* के सिद्धात की सख्त और अत्यावश्यक व्याख्या है लेकिन हर मामले मे इस्लाम का प्रभाव स्पष्ट है परपराए जीवन–धन की खान और प्रकार, दोनो है साथ

ही ये हदीस द्वारा बनाए और सरक्षित किए गए मूल्यो का स्रोत ओर प्रसार या सचरण भी है

हनबिला

मजहब हनबल भी कहलाता हे, इस्लाम मे धर्मविधि के चार सुन्नी धार्मिक कानूनों म सबसे रूढिवादी अहमद बिन हनाबल (780–855) के उपदेशो पर आधारित हनबली विधिमत (मजहब) वस्तुत विधि सिद्धात की स्थापना मे पूर्ण दैवी निर्भरता पर बल देता हे और व्यक्तिगत मत (राय), साम्यानुमान (कियास) और धर्मशास्त्र के मुताजिला मत के यूनानी सिद्धात का इस बिना पर अस्वीकार करता है कि मानवीय अनुमानो से पापपूर्ण नवीनताओ (बिदअत) के शामिल होने का खतरा है इस प्रकार, यह मत कानूनी फैसलो को सूत्रबद्ध करन के लिए पूर्णत *कुरान* और *हदीस* (पैगबर के जीवन और वचनो से सबधित कथाए) के अध्ययन पर विश्वास करता हे 14वी शताब्दी तक इराक ओर सीरिया मे लोकप्रिय परपरावादी हनबली कानून को 18वी शताब्दी मे मध्य अरब मे वहाबिया कानून आदोलन मे बिन तयमिया (1263–1328) ने अपने उपदेश के माध्यम से पुनर्जीवित किया उसके बाद से यह मजहब 20वी शताब्दी के सऊदी अरब की आधिकारिक कानूनी शाखा बन गई

हनाफ़िया

मजहब हनीफ भी कहलाता है, इस्लाम मे धार्मिक कानून के चार सुन्नी मतो मे से एक जिसमे प्राचीन इराकी मत अल कुफाह और बसरा के कानूनी मतो को भी शामिल किया गया है हनफी कानूनी विचारधारा का विकास इमाम अबू हनीफ (लगभग 700–767) के उपदेशो से उनके शिष्यो अबू यूसुफ (मृ –798) और मुहम्मद अश–शैबानी (749/750–805) ने विकसित किया तथा यह अब्बासी, सल्जुक व ऑटोमन साम्राज्यो के लिए इस्लाम की कानूनी व्याख्या का आधिकारिक तरीका बन गया हालाकि कानून के प्राथमिक स्रोत के रूप मे हनफी मत *कुरान* और *हदीस* (पैगबर के जीवन और वचनो से सबधित कथाए) को मान्यता देता है, लेकिन यह मत किसी पूर्वोदाहरण के अभाव मे व्यक्तिगत मत (राय) को स्वीकारने के लिए जाना जाता है फिलहाल यह मत मध्य एशिया, भारत, पाकिस्तान, तुर्की और भूतपूर्व ऑटोमन साम्राज्य के दशो मे मान्य है

हनीफ़

कुरान मे सच्चे एकेश्वरवादी (विशेषकर इब्राहीम) का अरबी पदनाम, जो यहूदी, ईसाई या बुतपरस्त नही है यह शब्द सीरियाई शब्द से लिया गया प्रतीत होता है, जिसका अर्थ काफिर या बुतपरस्त है और विस्तृत अर्थों मे यह सस्कृति के यूनानीकृत व्यक्ति को निरूपित करता है इस बात का कोई प्रमाण नही है कि इस्लाम–पूर्व अरब मे कोई सच्चा हनीफ सप्रदाय मौजूद था, लेकिन निश्चित रूप से कुछ व्यक्ति थे, जिन्होने

पुराने देवताओ का त्यागकर इस्लाम के लिए मार्ग प्रशस्त किया, लेकिन यहूदी और ईसाई धर्मों को नही अपनाया इस प्रकार, मुहम्मद के कुछ रिश्तेदार, समकालीन और आरम्भिक समर्थको को हनीफ कहा गया उदाहरण के लिए, वरक बिन नॉफल, पैगबर की पहली पत्नी खदीजा के चचेरे भाई, और आरम्भिक सातवी शताब्दी का अरबी कवि उमाया बिन अबी अस--सल्त

हनुमान

दिव्य वानर और *रामायण* के नायक भगवान राम के भक्त सहयोगी हनुमान पवन देवता वायु द्वारा एक अप्सरा से उत्पन्न सतान थे वानर दल के साथ उन्होने राम को दानवराज रावण से उनकी पत्नी सीता को छुडाने मे मदद की उनके शौर्य की कई कथाए है उन्होने रावण के राज्य मे राम के गुप्तचर की भूमिका निभाई वहा जब उन्हे पकड लिया गया और उनकी पूछ मे आग लगा दी गई, तो उन्होने समूची लका को जला डाला हनुमान उड़कर हिमालय तक गए और औषधीय जडी बूटियो वाले पर्वत को उठा लाए ताकि राम क घायल भाई लक्ष्मण फिर से स्वस्थ हो सके वह इतने शक्तिवान थे कि भारत की मुख्यभूमि और लका के बीच के जलडमरूमध्य को एक ही छलाग मे पार कर गए उन्हे प्रश्नातीत भक्ति का प्रतीक माना जाता है अनेक मदिर उन्हे समर्पित है

पर्वत को उठाकर ले जात हुए हनुमान, मुगल चित्रकला 16वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, फ्रीर गेलरी ऑफ आर्ट, वाशिंगटन, डी सी सौजन्य स्मिथसानियन इन्स्टिट्यूशन फ्रीर गैलरी ऑफ आर्ट, वाशिंगटन, डी सी

हनुमानगढ

इसे सादुलगढ भी कहते है, नगर, उत्तर राजस्थान, पश्चिमोत्तर भारत, घग्घर नदी के दाए तट पर स्थित पहले इसे भाटनेर (भट्टी राजपूतो का दुर्ग) कहा जाता था, 1805 मे बीकानेर रियासत मे शामिल किए जाने के बाद हनुमानगढ नाम दिया गया 1398 मे मंगोल विजेता तैमूरलग ने दुर्ग समेत इस शहर पर कब्जा कर लिया था उसके बाद से इस पर विभिन्न शासको का अधिकार रहा रेलमार्ग द्वारा बीकानेर, जोधपुर और गगानगर से जुडा हनुमानगढ एक कृषि विपणन केद्र है, जहा हथकरघा पर कपास और ऊन की बुनाई होती है यहा राजस्थान विश्वविद्यालय से सबद्ध नेहरू मेमोरियल लॉ कॉलेज और सरस्वती कन्या महाविद्यालय समेत कई कॉलेज है जनसख्या (2001) नगर 1,29,654, जिला कुल 15,17,390

हमादानी, अल

पूरा नाम अली बिन शिहाब अद–दीन मुहम्मद अल–हमादानी, (ज –22 अक्तू 1314 हमादान, ईरान, मृ –18 जन 1385, कुनार के पास, कश्मीर, भारत), रहस्यवादी अथवा आध्यात्मिक फारसी धर्मशास्त्री, जिन्हे कश्मीर मे कुब्राविया सूफी मत (इस्लामी रहस्यवादी) के प्रचार का श्रेय जाता है ईरान के प्रसिद्ध सैयद (पैगबर मुहम्मद के वशज) परिवार के वशज हमादान एक दरवश बन गए और उन्होने समूचे मध्य–पूर्व मे व्यापक यात्राए की 1372, 1378 और 1385 मे वह कश्मीर आए हमादानी और उनके अनुयायियो के प्रयासो से कश्मीर मे कुब्राविया सूफी मत लोकप्रिय हो गया उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति *दखिरात अल–मुलुक* (राज्य का शास्त्र) है, जो राजनीति के नीतिशास्त्र का अध्ययन है कुलाब स्थित उनकी मजार अब भी तीर्थस्थल है

हमीरपुर

नगर, पश्चिम–मध्य हिमाचल प्रदेश राज्य, उत्तरी भारत यह हिमालय–सतलुज बेसिन मे भाखडा बाध से लगभग 32 किमी पूर्वोत्तर मे मडी–नदौन सडक मार्ग पर स्थित है निकटतम रेलवे स्टेशन ज्वालामुखी रोड है हमीरपुर के आसपास का इलाका पर्वतीय है आजीविका का प्रमुख साधन कृषि है, यहा गेहू, मक्का, धान, आलू, सब्जिया अदरक, आलूबुखारा, आडू और खुबानी की खेती होती है क्षेत्र के उद्योगो मे साबुन–निर्माण, लकडी पर नक्काशी, चमडे का काम, रेशम की बुनाई, फलो की पैकिग और सूत कताई से जुडे उद्योग शामिल है नगर मे भारत सरकार द्वारा वित्त प्रदत्त और प्रशासित क्षेत्रीय इजीनियरिंग कॉलेज, हमीरपुर गवर्नमेट पॉलीटेक्निक और गवर्नमेट डिग्री कॉलेज स्थित है जनसख्या (2001) नगर 17,219, जिला कुल 4,12,009

हमीरपुर

नगर, दक्षिण–पश्चिमी उत्तर प्रदेश राज्य, उत्तर–मध्य भारत हमीरपुर कानपुर के दक्षिण मे यमुना नदी के तट पर स्थित है एक प्रमुख सडक जक्शन और रेलमार्ग के पास स्थित यह नगर एक कृषि व्यापार केद्र है इस नगर मे 11वी शताब्दी के भग्नावशेष है दक्षिण मे स्थित पहाडियो को छोडकर हमीरपुर के आसपास का इलाका आमतौर पर समतल है यहा की प्रमुख फसलो मे गेहू, चावल, ज्वार–बाजरा, जौ, कपास और सुपारी शामिल है जनसख्या (2001) नगर 32,035, जिला कुल 10,42,374

हरगोबिंद, गुरु

(ज –1595, वडाली, भारत, मृ –1644, कीरतपुर, पजाब, भारत), सिक्खो के छठे गुरु जिन्होने एक मज़बूत सिक्ख सेना संगठित की, अपने पिता गुरु अर्जुन के (मुगल शासको {1606} के हाथो पहले सिक्ख शहीद) निर्देशानुसार सिक्ख पथ को योद्धा–चरित्र प्रदान किया
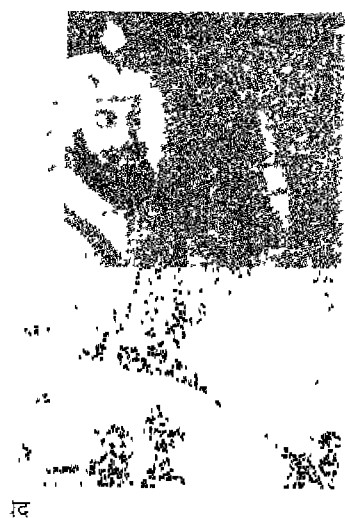
गुरु हरगोबिद से पहले सिक्ख पथ निष्क्रिय था प्रतीक रूप मे अस्त्र–शस्त्र धारण कर, हरगोबिद गुरु के तख्त पर बैठे उन्होने अपना ज्यादातर समय युद्ध प्रशिक्षण एव युद्ध कला मे लगाया तथा बाद मे वह कुशल तलवारबाज और कुश्ती व घुडसवारी मे माहिर हो गए तमाम विरोधो के बावजूद हरगोबिद ने अपनी सेना सगठित की और अपने शहरो की किलेबदी की 1609 मे उन्होने अमृतसर मे अकाल तख्त (ईश्वर का सिहासन) का निर्माण किया, जिसमे सयुक्त रूप से एक मदिर और सभागार है, जहा सिक्ख–राष्ट्रीयता से सबधित आध्यात्मिक और सासारिक मामला को निपटाया जा सकता था उन्होने अमृतसर के निकट एक किला बनवाया और उसका नाम लौहगढ रखा उन्होने बडी कुशलता से अपने अनुयायियो मे युद्ध के लिए इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास पैदा किया मुगल बादशाह जहागीर ने सिक्खो की मजबूत होती हुई स्थिति को खतरा मानकर गुरु हरगोबिद को ग्वालियर के किले मे कैद कर लिया गुरु हरगोबिद 12 वर्षो तक कैद मे रहे, लेकिन उनक प्रति सिक्खो की आस्था और मजबूत हुई अतत मुगलो का विरोध करने वाले भारतीय राज्यो के खिलाफ सिक्खो का समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से बादशाह पीछे हटे और गुरु को रिहा कर दिया हरगोबिद ने यह भापकर कि मुगलो के साथ सघर्ष का समय नजदीक है, अपनी पुरानी युद्ध नीति जारी रखी

जहागीर की मृत्यु (1627) के बाद नए मुगल बादशाह शाहजहा ने उग्रता से सिक्खो पर अत्याचार शुरू किया मुगलो की अजेयता को झुठलाते हुए गुरु हरगोबिद के नेतृत्व मे सिक्खो ने चार बार शाहजहा की सेना को मात दी इस प्रकार अपने पूर्वजो द्वारा स्थापित आदर्शो मे गुरु हरगोबिद ने एक और आदर्श जोडा, सिक्खो का यह अधिकार और कर्त्तव्य है कि अगर जरूरत हो, तो वे तलवार उठाकर भी अपने धर्म की रक्षा करे अपनी मृत्यु से ठीक पहले गुरु हरगोबिद ने अपने पोते हर राय को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया

हरदयाल, लाला

(ज –14 अक्तू 1884, दिल्ली, भारत, मृ –4 मार्च 1939, फिलाडेल्फिया, अमेरिका) क्रातिकारी और विद्वान, जो भारत से ब्रिटिश शासन समाप्त करने के प्रति समर्पित थे

हरदयाल ने लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज (पजाब विश्वविद्यालय) से स्नातक उपाधि प्राप्त की भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर ऑक्सफोर्ड के सेट जॉन्स कॉलेज मे अध्ययन के दौरान वह भारतीय क्रातिकारी आदोलन के समर्थक बन गए 1907 मे हरदयाल ने अपनी छात्रवृत्ति का परित्याग कर दिया भारत के स्वदेशी राजनीतिक सस्थानो की गतिविधियो को तेज करने और ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीयो को जगाने के लिए वह 1908 मे भारत लौट आए लेकिन सरकार ने उनके काम मे

बाधा पहुचाई और जल्दी ही उन्हे यूरोप लौट जाना पडा इस बार उन्होने फ्रास तथा जर्मनी होते हुए यात्रा की और ब्रिटिश विरोधी प्रचार किया साथ ही उन्होने सफल उपनिवेश–विरोधी सघर्ष की कुजी के रूप मे पश्चिमी विज्ञान और राजनीतिक दर्शन की प्रशसा की 1913 मे उन्होने गदर पार्टी की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारत मे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विद्रोह को सगठित करना था मार्च 1914 मे अमेरिका के आव्रजन अधिकारियो ने उन्हे अवाछित गतिविधियो के लिए गिरफ्तार कर लिया जमानत पर रिहा होने के बाद वह स्विट्जरलैड और फिर वहा से बर्लिन भाग गए जहा से उन्होने पश्चिमोत्तर भारत मे ब्रिटिश विरोधी विद्रोह को भडकाने की कोशिश की

प्रथम विश्व युद्ध मे जर्मनी की हार के बाद हरदयाल स्टॉकहोम मे भारतीय दर्शन के प्रोफेसर के रूप मे बस गए तथा उन्होने अपनी कृति *फोर्टी फोर मथ्स इन जर्मनी ऐड टर्की* मे युद्ध के समय के अपने कटु अनुभवों का उल्लेख करते हुए तर्क दिया कि अगर एशिया के कमजोर देश स्वतत्रता हासिल नही कर सकते, तो उन पर जर्मनी या जापान के मुकाबले ब्रिटिश या फ्रासीसी शासन होना ज्यादा बेहतर होगा बाद के वर्षो मे हरदयाल ने निर्णायक रूप से अपने आरभिक क्रातिकारी विचारो को खारिज कर दिया, मन से अग्रेजो का आतक निकाल दिया, भारत मे मिश्रित ब्रिटिश और भारतीय प्रशासन की वकालत की तथा पश्चिमी सस्कृति व मूल्यो के पक्के प्रशसक बन गए 1920 के दशक के अतिम वर्षों मे वह अमेरिका चले गए और बर्कले स्थित कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी मे सस्कृत के प्रोफेसर बन गए

हरदोई

नगर, मध्य उत्तर प्रदेश राज्य, उत्तर–मध्य भारत यह लखनऊ के पश्चिमोत्तर मे उत्तरी रेलवे मार्ग पर एक प्रमुख सडक जक्शन पर स्थित है हरदोई अनाज तथा अन्य फसलो का बाजार है नगर के उद्योगो में चीनी मिले, पोटैशियम नाइट्रेट प्रसस्करण और काष्ठकर्म जैसे उद्योग शामिल है

आसपास का क्षेत्र समतलीय मैदान है, जिसकी दक्षिणी सीमा गगा नदी तय करती है और गगा की सहायक नदियो द्वारा जल निकास होता है दक्षिण–पश्चिमी हिस्सा असमतलीय है, जिसमे कई रेतीले टीले है इस क्षेत्र मे कई झीले (दलदली) है इसके विस्तृत क्षेत्र मे वन एव अन्य जगली वनस्पतिया है यहा सारदा नहर प्रणाली की हरदोई और लखनऊ शाखाओ से सिचाई के लिए पानी मिलता है यहा की प्रमुख फसले चावल, गेहू, ज्वार–बाजरा, चना, गन्ना और जौ है. यहा के शिक्षण सस्थानो मे गवर्नमेट डिग्री कॉलेज, बी जी रघुवीर सहाय इटर कॉलेज, आर आर इंटर कॉलेज और एस डी ए इटर कॉलेज शामिल है जनसख्या (2001) नगर 1,12,474, जिला कुल 33 97,414

हरमंदिर

'ईश्वर का मदिर', स्वर्ण मदिर का एक नाम, जो सिक्खो का सबसे महत्त्वपूर्ण पूजन स्थल है तथा अमृतसर मे स्थित है

हर राय, गुरु

(ज –1630, पजाब, मृ –1661, पजाब, पश्चिमोत्तर भारत) सिक्खो के सातवे गुरु, जिनके समय मे सिक्ख समुदाय की आन–बान मे कमी आई अपने पितामह, महान योद्धा गुरु हरगोबिद के विपरीत गुरु हर राय शाति के समर्थक थे, जो मुगल उत्पीडन का विरोध करने के लिए उपयुक्त नही था चितनशील हर राय ने अपना अधिकाश समय प्रशासनिक व युद्ध सबधी जिम्मेदारियो के बजाय आध्यात्मिक कार्यो मे लगाया और उन्हे राजनीतिक शक्ति पर नियत्रण के बारे मे कम जानकारी थी सिक्खो की धर्मप्रचारक गतिविधियो मे कमी आई और गुरु हर राय के सिक्ख जीवन की मुख्यधारा से लगातार कटे रहने के कारण गुरु से उत्साह पाने की आशा रखने वाला समुदाय कमजोर हुआ अत उनके खिलाफ गभीर अदरूनी विरोध पैदा होने लगा तत्कालीन मुगल बादशाह औरगजेब के भाई दारा शिकोह की विद्रोह में मदद करके उन्होने पहली बडी राजनीतिक गलती की. हर राय का कहना था कि उन्होने एक सच्चा सिक्ख होने के नाते सिर्फ एक जरूरतमद व्यक्ति की मदद की है जब औरगजेब ने इस मामले पर सफाई देने के लिए उन्हे बुलाया, तो हर राय ने अपने पुत्र राम राय को प्रतिनिधि बनाकर भेज दिया

किंवदती है कि राम राय ने बादशाह के दरबार मे कई चमत्कार दिखाए, लेकिन अतत बादशाह को प्रसन्न करके अपने पिता को क्षमा दिलाने के लिए उन्हे सिक्खो की धार्मिक पुस्तक *आदि ग्रथ* की एक पक्ति मे फेरबदल करनी पडी. गुरु हर राय ने अपने पुत्र को इस ईशनिदा के लिए कभी माफ नही किया और अपनी मृत्यु से पहले राम राय के बदले अपने दूसरे पाच वर्षीय पुत्र हरि किशन को अपना उत्तराधिकारी बना दिया

हरि किशन, गुरु

(ज –1656, कीरतपुर, पजाब, भारत, मृ –1664, दिल्ली, भारत) सिक्खो के आठवे गुरु जो सिर्फ पाच वर्ष की आयु मे गद्दी पर बैठे और जिन्होने सिर्फ तीन वर्ष तक शासन

चमत्कारो का वर्णन मिलता है बालक के ज्ञान की परीक्षा लेने के उद्देश्य से राजा जय सिह ने अपनी एक रानी को दासी के वेश मे गुरु क चरणो के पास अन्य दासियो क साथ बिठा दिया बताया जाता हे कि गुरु हरि किशन ने तुरत रानी को पहचान लिया

गुरु हरि किशन

हरि किशन के बडे भाई राम राय, जो पहले से ही मुगल बादशाह औरगजेब के समर्थक थे, ने उन्हे गुरु नियुक्त किए जाने का विरोध किया इस मामले का फैसला करने के लिए औरगजेब ने आठ वर्षीय हरि किशन को दिल्ली बुलाया जब यह बालक वहां पहुचा, तो हैजे की महामारी फैली हुई थी कई लोगों को स्वास्थ्य लाभ कराने के बाद उन्हे स्वय चेचक निकल आई' मरते समय उनके मुह से 'बाबा बकाले' शब्द निकले, जिसका अर्थ था कि उनका उत्तराधिकारी बकाला गाव मे ढूढा जाए

हरित क्रांति

वह कार्यक्रम, जिसके माध्यम से भारत मे 1960 के दशक के उत्तरार्द्ध तथा 1970 के दशक के प्रारभिक वर्षो मे गेहू, चावल, मक्का तथा अन्य अनेक खाद्यान्नो की पैदावार मे उल्लेखनीय वृद्धि हुई हाथ मे कटोरा थामे रहने वाले देश की छवि वाले देश भारत ने खाद्यान्न मे आत्मनिर्भरता प्राप्त कर विदेशी सहायता से मुक्ति प्राप्त की यह क्रांति उन नवीन कृषि–प्रौद्योगिकियो का परिणाम थी, जिनके तहत किसानो के खेतो मे गेहू और चावल की अधिक पैदावार देने वाली सकर किस्मे लगाई गई पौधो की बीमारियो से रक्षा करने वाले कीटनाशको तथा रासायनिक उर्वरको के प्रयोग और भरपूर सिचाई के द्वारा पैदावार मे भारी वृद्धि की गई 'हरित क्राति' को साकार करने मे भारतीय आनुवशिक विज्ञानी तथा अतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रशासक डॉ एम एस स्वामीनाथन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई

हरिद्वार

शहर, पश्चिमोत्तर उत्तराचल राज्य (उत्तर प्रदेश से अलग कर नवगठित राज्य), उत्तरी भारत हरिद्वार गगा नदी के तट पर, भारत–गगा मैदानी क्षेत्र (दक्षिण) और हिमालय की तराई (उत्तर) के बीच की सीमा पर स्थित है यहा गगा नहर प्रणाली का आरभिक सिरा है हरिद्वार हिदुओ के सात पवित्र नगरो मे से एक प्रमुख तीर्थस्थल है यह कई नामो से विख्यात रहा है, मूलत इसे एक स्थानीय साधु के नाम पर कपिला कहा जाता
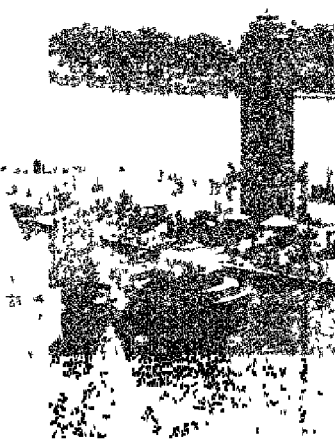
गगा नदी के तट पर मदिर
क

था इसके वर्तमान नाम का अर्थ 'हरि तक पहुचने का द्वार है 'हरि' हिदुओ के मुख्य देवता भगवान विष्णु के कई नामो मे से एक है

हरिद्वार के प्रमुख तीर्थ स्थानो मे नदी पर स्थित हर की पौडी नामक घाट है, जिसके बारे मे श्रद्धालुओ का मानना हे कि यहा एक चट्टान पर विष्णु के पदचिह्न अकित है अप्रैल मे हिदू सौर वर्ष के आरभ के अवसर पर यहा हर वर्ष बडी सख्या मे तीर्थयात्री एकत्र होते है, यहा प्रत्येक 12 वर्षो बाद कुभ मेले का आयोजन होता है धारा की दिशा मे यहा स तीन किमी दूर कनखल मे दक्षेश्वर (शिव) मदिर स्थित है जो एक अन्य महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल है इस जिले मे रुडकी विश्वविद्यालय (एशिया का सबसे पुराना सिविल इजीनियरिंग कॉलेज), सरकारी आयुर्वदिक कॉलेज और ऋषिकुल आयुर्वेदिक कॉलेज सहित अनेक कॉलेज हे यहा पर प्रसिद्ध गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय है जनसख्या (2001) न प क्षेत्र 1,75,010, जिला कुल 14,44,213

हरिभद्र

हरिभद्र सूरी भी कहलाते है (उत्कर्ष– आठवीं शताब्दी), अप्रामाणिक जैन लेखको मे से एक, जो जेन सिद्धातो तथा नीति पर सस्कृत तथा प्राकृत मे अपनी आधिकारिक कृतियो के लिए विख्यात हैं विद्वानो मे अब भी मतभेद है कि उन्हे छठी शताब्दी के जैन लेखक हरिभद्र से किस प्रकार अलग माना जाए

हरिभद्र चित्तौड के एक ब्राह्मण थे और उन्होने संस्कृत शास्त्रो की व्यापक शिक्षा ग्रहण की थी जैन धर्म स्वीकारने के बाद उन्होने मुनियो के श्वेताबर मत मे प्रवेश किया हरिभद्र अपनी कृति *सद्दर्शनसमुच्चय* के लिए विख्यात हैं, जिसमे भारतीय दर्शन की छह प्रणालियो का वर्णन है तथा जैन विचार व आचार पर उनके द्वारा कई सारसक्षेप सकलित है उन्होने तर्कशास्त्र एव योग पर भी लिखा और प्राकृत के वाचिक साहित्य मे भी योगदान दिया

हरियाणा

कुरुक्षेत्र जिला,
ात्राइडिया डॉट

राज्य, पश्चिमोत्तर भारत यह पश्चिमोत्तर मे पजाब राज्य और केद्रशासित प्रदेश चडीगढ, उत्तर मे हिमाचल प्रदेश, पूर्व मे उत्तर प्रदेश, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और एक छोटा सा हिस्सा उत्तराचल से और दक्षिण तथा दक्षिण–पश्चिम मे राजस्थान राज्य से घिरा हुआ है इसका क्षेत्रफल 44,212 वर्ग किमी है केद्रशासित प्रदेश चडीगढ न केवल पजाब की, बल्कि हरियाणा की भी राजधानी है

भाषाई आधार पर भूतपूर्व पजाब प्रात के दो राज्यो मे पुनर्गठन के फलस्वरूप 1 नवबर 1966 को हरियाणा अस्तित्व मे आया पजाबीभाषी क्षेत्र पजाब बन गया और हिंदीभाषी क्षेत्र हरियाणा बन गया हरियाणा का अर्थ है 'भगवान का घर', हरि (विष्णु) और अयन (घर) से मिलकर हरियाणा शब्द बना है

भौतिक एव मानव भूगोल

भू–आकृति

हरियाणा मे दो बडे भू–क्षेत्र है, राज्य का एक बडा हिस्सा समतल जलोढ मैदानो से युक्त है और पूर्वोत्तर मे तीखे ढाल वाली शिवालिक पहाडिया तथा सकरा पहाडी क्षेत्र हे समुद्र की सतह से 210 मीटर से 270 मीटर ऊचे मैदानी इलाको से पानी बहकर एकमात्र बारहमासी नदी यमुना मे आता हैं, यह राज्य की पूर्वी सीमा से होकर बहती हे शिवालिक पहाडियो से निकली अनेक मौसमी नदिया मैदानी भागो मे गुजरती है इनमे सबसे प्रमुख घग्घर (राज्य की उत्तरी सीमा के निकट) नदी है. ऐसा माना जाता है कि कभी यह नदी सिधु नदी मे मिलती थी, जो अब पाकिस्तान में है इस नदी के निचले क्षेत्रो मे आर्य–पूर्व सभ्यता के अवशेष मिले है. इसके अलावा दक्षिण हरियाणा के महेद्रगढ, रेवाडी और गुडगाव जिलो मे दक्षिण से उत्तर की ओर दिल्ली तक विस्तृत अरावली पर्वत श्रृखला के भी अवशेष मिलते है

हरियाणा के अधिकाश क्षेत्र मे शुष्क और अर्द्ध शुष्क परिस्थितिया है केवल पूर्वोत्तर मे थोडी आर्द्रता पाई जाती है यद्यपि राज्य मे नहर सिचाई प्रणाली और बडे पैमाने पर नलकूप है इसके बावजूद यहा कुछ अत्यधिक सूखाग्रस्त क्षेत्र है, खासकर दक्षिणी और दक्षिण–पश्चिमी हिस्सो मे, तथापि यमुना व घग्घर नदी की सहायक नदियो मे कभी–कभी बाढ भी आती है गर्मियो मे खूब गर्मी पडती है और सर्दियो मे खूब सर्दी गर्मियो मे (मई–जून) अधिकतम तापमान 46° से तक पहुच जाता है जनवरी मे कभी–कभी न्यूनतम तापमान जमाव बिदु तक पहुच जाता है राज्य के हिसार शहर मे सबसे ज्यादा गर्मी पडती है

पूर्वोत्तर मे पहाड़ के तलहटी वाले क्षेत्रो को छोडकर पूरे राज्य मे मिट्टी गहरी व उर्वर हे और दक्षिण–पश्चिम मे राजस्थान के मरुस्थल से सटे सीमावर्ती क्षेत्रो मे जमीन रेतीली है राज्य के कुल क्षेत्र के 4/5 भाग मे खेती होती है और इसमे से लगभग तीन–चौथाई क्षेत्र सिचित है यद्यपि राज्य के उत्तरी, पूर्वी और दक्षिण–पूर्वी भागो मे सिचाई नलकूपो के जरिये होती है, वहीं दक्षिण–पश्चिमी क्षेत्र मे अधिकाश सिचाई नहर के जरिये होती है राज्य मे वन क्षेत्र नगण्य है राजमार्गो के किनारे और ऊसर जमीनो पर यूकलिप्टस के पेड उगाए गए है राज्य के उत्तरी भागो मे सडक किनारे आमतौर पर शीशम (*डालबर्गिया सिस्सू*) के पेड़ पाए जाते है, जबकि दक्षिणी और दक्षिण–पश्चिमी हरियाणा मे कीकर (*अकेशिया अरेबिका*) के पेड व झाडिया आमतौर पर मिलती हैं

रियाणा मे
शासक इब्राहीम
मकबरा
ात्राइडिया डॉट

जनजीवन

2001 मे हरियाणा की कुल जनसख्या 2,10,82,989 का लगभग 90 प्रतिशत हिंदू (इनमे 1/5 अनुसूचित जाति) और शेष सिक्ख, मुसलमान व अन्य जातियो के है सिक्खो की अधिकाश आबादी पूर्वोत्तर व पश्चिमोत्तर मे और मुसलमानो की आबादी दिल्ली के आसपास दक्षिण–पूर्वी जिलो मे सकेद्रित है हिंदू जाट (एक कृषक जाति) हरियाणा की कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है और पजाब के सिक्खो की तरह भारत की सशस्त्र सेनाओ मे इनका प्रमुख स्थान है यद्यपि राज्य की 75 प्रतिशत आबादी गावो मे रहती है, किंतु औद्योगिक, व्यापारिक और कृषि विपणन केद्रो के रूप मे शहर भी तेजी से उभर रहे है एक लाख या उससे अधिक आबादी वाले शहरो में फरीदाबाद सकुल यमुना नगर, रोहतक, पानीपत, हिसार, करनाल, सोनीपत, अबाला (शहर और छावनी) गुडगाव, भिवानी और सिरसा शामिल हैं

अर्थव्यवस्था

कृषि की दृष्टि से हरियाणा एक समृद्ध राज्य है और यह केद्रीय भडार (अतिरिक्त खाद्यान्न की राष्ट्रीय सग्रहण प्रणाली) मे बडी मात्रा में गेहू और चावल देता है कपास राई, सरसो, बाजरा, चना, गन्ना, ज्वार, मक्का और आलू अन्य प्रमुख फसले है राज्य की कृषि प्रधानता ने हरित क्राति मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसके अतर्गत सिचाई उर्वरक और उच्च गुणवत्ता के बीजो में बडे पैमाने पर निवेश शामिल है हरियाणा के कुल श्रम बल का लगभग 58 प्रतिशत कृषि मे सलग्न है

हरियाणा ने कृषि आधारित और निर्माण उद्योगो मे उल्लेखनीय प्रगति की है इनमे प्रमुख है, कपास और चीनी प्रसस्करण, कृषि उपकरण, रसायन और अनेक प्रकार की उपभोक्ता वस्तुए, जिनमे साइकिल उल्लेखनीय है प्रमुख राजमार्ग और रेलवे लाइने हरियाणा से होकर गुजरती हैं और दिल्ली से मिलती है, इस वजह से यह प्रदेश औद्योगिक और वाणिज्यिक विकास का गलियारा बन गया है, खासकर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली से जुडे राज्य के हिस्सो के लिए यह भी उल्लेखनीय है कि राज्य मे कुछ औद्योगिक निवेश पजाबी उद्यमियो ने किया है, जिनका मानना है कि पजाब के बजाय हरियाणा मे निवेश करना अधिक सुरक्षित और लाभदायक है (क्योकि दिल्ली के बाजार से यह नजदीक है).

प्रशासन एवं सामाजिक विशेषताएं

प्रशासन

भारतीय संविधान के प्रावधानो के अनुसार, राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त राज्यपाल राज्य का सवैधानिक प्रमुख होता है अपने कर्त्तव्यो के निर्वहन के लिए उसे मंत्रिपरिषद से सहायता और सलाह मिलती हे, जिसका प्रमुख मुख्यमत्री होता है मत्रिपरिषद

विधानसभा के प्रति जवाबदेह होती है विधानसभा का चुनाव सामान्यत पाच वर्ष के कार्यकाल के लिए होता है हरियाणा और पजाब के लिए एक उच्च न्यायालय है राज्य 19 जिलो मे बटा हुआ है अबाला, भिवानी, फरीदाबाद, फतेहाबाद, गुडगाव, हिसार, झज्जर, जीद, कैथल, करनाल, कुरुक्षेत्र, महेद्रगढ, पचकुला, पानीपत, रिवाडी, रोहतक सिरसा, सोनीपत और यमुनानगर *पचायती राज* (ग्रामीण स्वशासन) का विस्तार सभी गावो तक हो चुका है.

शिक्षा एव जन–कल्याण

पजाब की तरह हरियाणा मे भी विद्यालय और महाविद्यालय, दोनो स्तरो पर शिक्षा को बढावा देने मे सरकार की भूमिका के अलावा निजी सस्थानो ने भी उल्लेखनीय योगदान दिया है राज्य के विकास कार्यक्रमो मे शिक्षा को उच्च प्राथमिकता दी गई है कला एव विज्ञान महाविद्यालयो की सख्या 1966–67 मे 40 से बढकर 1997–98 मे 140 हो गई, इस अवधि मे उच्च और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो की सख्या 597 से 3 517, माध्यमिक बुनियादी पाठशालाए 735 से 1,718 और प्राथमिक बुनियादी पाठशालाओ की सख्या 4,447 से 10,134 हो गई विभिन्न स्तरो के ये सस्थान राज्य के 6,759 गावो ओर 94 कस्बो मे स्थित है इनके अलावा, हरियाणा मे अब चार विश्वविद्यालय है कुरुक्षेत्र मे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, रोहतक मे महर्षि दयानद विश्वविद्यालय, हिसार मे गुरु जभेश्वर विश्वविद्यालय और विख्यात पशुपालन विज्ञान महाविद्यालय सहित हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय इसके अलावा, राज्य मे डेयरी के सभी उत्पादो के विकास के लिए करनाल मे राष्ट्रीय डेयरी शोध सस्थान की स्थापना की गई शिक्षा के विकास मे हरियाणा का स्थान भारत के उत्तरी राज्य पजाव, मध्य और कुछ पश्चिमी राज्यो मे केवल पजाब के बाद आता है, लेकिन दक्षिणी राज्यो से काफी पीछे रहता है 1991 तक स्थापित विभिन्न स्तरो के सस्थानो की सख्या को देखते हुए शिक्षा कार्यक्रमो से लाभान्वित हो रही जनसख्या का प्रतिशत कम है 2001 की जनगणना के अनुसार, जनसख्या का 68 59 प्रतिशत साक्षर है (राष्ट्रीय औसत 65 38 प्रतिशत है) पिछले दशक मे ग्रामीण क्षेत्रो मे महिला साक्षरता के मामले मे हरियाणा ने काफी लबा सफर तय किया है (2001 मे 56 31 प्रतिशत जबकि 1991 मे 32 5 प्रतिशत) अनुसूचित जाति के विद्यार्थियो की शिक्षा के लिए (सामान्य तथा तकनीकी) सरकार द्वारा सभी स्तरा पर सहायता दी जाती है राज्य मे विभिन्न नौकरियो और शिक्षा पाठ्यक्रमो मे अनुसूचित जाति वर्ग के लिए आरक्षण का प्रावधान है इसके अतिरिक्त राज्य सरकार अनुसूचित जाति वर्ग के सदस्यो को कृषि, उद्योग, व्यापार और स्वरोजगारपरक गतिविधियो के लिए ऋण व अनुदान भी उपलब्ध कराती है उदाहरण के लिए, 1997–98 मे इस उद्देश्य से लगभग 24 करोड रुपए खर्च किए गए

राज्य मे जिला और उपखड अस्पतालो व प्राथमिक स्वास्थ्य केद्रों का सजाल है और 1966 के बाद से इनकी सख्या मे कई गुना वृद्धि हुई है, किंतु इनकी गुणवत्ता अपेक्षित

स्तार की नही ह उल्लेखनीय है कि 1992 से राज्य के सभी गावो में सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है

हरियाणा मे लगभग 22,800 किमी लबी पक्की सडके है राज्य के लगभग सभी गाव पक्की सडको से एक–दूसरे स जुडे हुए है सरकारी स्वामित्व वाला हरियाणा राज्य परिवहन स्थानीय और अतर्राज्यीय यात्री बसे सचालित करता है इस प्रणाली के अतर्गत 1997–98 मे दैनिक यात्रियो की सख्या 13,86,326 थी

सास्कृतिक जीवन

हरियाणा के सास्कृतिक जीवन मे राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था के विभिन्न अवसरो की लय प्रतिबिबित होती है और इसमे प्राचीन भारत की परपराओ व लोककथाओं का भडार हे हरियाणा की एक विशिष्ट बोली है और उसमे स्थानीय मुहावरो का प्रचलन है स्थानीय लोकगीत और नृत्य अपने आकर्षक अदाज मे राज्य के सास्कृतिक जीवन को प्रदर्शित करते है ये ओज से भरे है और स्थानीय सस्कृति की विनोदप्रियता से जुड है वसत ऋतु मे मौजमस्ती से भरे हाली के त्योहार मे लोग एक–दूसरे पर गुलाल उडाकर और गीला रग डालकर मनाते है, इसमे उम्र या सामाजिक हैसियत का कोई भेद नही होता भगवान कृष्ण के जन्मदिन, जन्माष्टमी का हरियाणा मे विशिष्ट धार्मिक महत्त्व है, क्योकि कुरुक्षेत्र ही वह रणभूमि थी, जहा कृष्ण ने योद्धा अर्जुन को *भगवद्गीता* (*महाभारत* का एक हिस्सा) का उपदेश दिया था

सूर्यग्रहण पर पवित्र स्नान के लिए देश भर से लाखो श्रद्धालु कुरुक्षेत्र आते है अग्रोहा (हिसार के निकट) और पेहोवा सहित राज्य मे अनेक प्राचीन तीर्थस्थल है अग्रोहा अग्रसेन के जन्मस्थल के रूप मे जाना जाता है, जो अग्रवाल समुदाय और उसकी उपजातियो के प्रमुख पूर्वज या प्रवर्तक माने जाते हे इसलिए अग्रोहा समूचे अग्रवाल समुदाय की जन्मभूमि है भारत के व्यापारी वर्गो मे प्रमुख यह समुदाय अब देश मे फैल गया अग्रसेन की जन्मभूमि के सम्मानस्वरूप इस समुदाय ने कुछ वर्ष पहले अग्राहा मे एक चिकित्सा विद्यालय की स्थापना की पवित्र नदी सरस्वती (वेदो के अनुसार ज्ञान ओर कला की देवी) के किनारे स्थित पेहोवा को पूर्वजो के श्राद्ध पिडदान के लिए एक महत्त्वपूर्ण पवित्र स्थान माना जाता है अप्राकृतिक या प्राकृतिक, दोनो तरह की आत्मा की शाति के लिए पेहोवा मे धार्मिक क्रियाए की जाती है विभिन्न देवताओ और सतो की स्मृति मे आयोजित होने वाले मेले हरियाणा की सस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अग है अनेक स्थानो पर पशु मेले भी आयोजित किए जाते है यह क्षेत्र अच्छी नस्ल के दुधारू पशुओ, खासकर भैसो और खेती के काम मे आने वाले पशुओ और सकरित पशुओ के लिए भी जाना जाता है

गाार नर नृत्य

यात्राइडिया डॉट

हरियाणा की हवेलिया (पारपरिक पारिवारिक आवास) वास्तुशिल्प की सुदरता खासकर उनके द्वारो की सरचना, के लिए जानी जाती है इन हवेलियो के द्वारो का अभिकल्पन और हस्तकौशल ही विविध नही, बल्कि इन पर विभिन्न

विषयो की शृखला भी विस्मयकारी है ये हवेलिया हरियाणा की गलियो को मध्ययुगीन स्वरूप और सुदरता प्रदान करती हैं इन भवनो मे अनेक चबूतरे होते है, जो रिहायशी, सुरक्षा, धार्मिक और अदालती कार्यों के लिए उपयोग मे लाए जाते है इन भवनो से इनके स्वामियो की सामाजिक स्थिति का सकेत मिलता है इन चबूतरो पर उकेरी हुई कलाकृतिया इस क्षेत्र की समृद्ध सास्कृतिक विरासत की याद दिलाती है

इतिहास

अव हरियाणा के रूप मे जाना जाने वाला क्षेत्र (उत्तर वैदिक युग, लगभग 800–500 ई पू का *मध्यमा देश,* यानी मध्य क्षेत्र)– हिदू धर्म का जन्मस्थल माना जाता हे यह उस क्षेत्र मे है, जहा आर्यो का पहला स्तोत्र गाया गया था और सर्वाधिक प्राचीन पाडुलिपिया लिखी गई थी

पश्चिमोत्तर और मध्य एशियाई क्षेत्रो से हुई घुसपैठो के रास्ते मे पडने वाले हरियाणा को सिकदर महान (326 ई पू) के समय से अनेक सेनाओ के हमलो का सामना करना पडा है यह भारतीय इतिहास की अनेक निर्णायक लडाइयो का प्रत्यक्षदर्शी रहा है इनमे पानीपत की लडाइया, 1526 (जब मुगल वादशाह बाबर ने इब्राहीम लोदी को हराकर भारत मे मुगल साम्राज्य की नीव डाली), 1556 (जब अफगानी सेना मुगल शहशाह अकबर की सेना से पराजित हुई) और 1761 (जब अहमद शाह अब्दाली ने मराठा सेना को निर्णायक शिकस्त देकर भारत में ब्रिटिश हुकूमत का रास्ता साफ कर दिया), 1739 मे करनाल की लडाई (जब फारस के नादिर शाह ने ध्वस्त होते मुगल साम्राज्य को जोरदार शिकस्त दी) शामिल हैं वर्तमान हरियाणा राज्य मे आने वाला क्षेत्र 1803 मे ब्रिटिश ईस्ट इडिया कपनी को सौप दिया गया था 1832 मे यह तत्कालीन पश्चिमोत्तर प्रात को हस्तातरित कर दिया गया और 1858 मे यह क्षेत्र पजाब का हिस्सा बन गया 1947 मे भारत के विभाजन के बाद तक इसकी यही स्थिति बनी रही, हालाकि अलग हरियाणा राज्य की माग 1947 मे भारत की आजादी के काफी पहले से ही उठने लगी थी राष्ट्रीय आदोलन के प्रमुख नेता लाला लाजपत राय और आसफ अली ने पृथक हरियाणा राज्य का समर्थन किया था स्वतत्रता के पूर्व एव बाद मे पजाब का एक हिस्सा होने के बावजूद इसे विशिष्ट सास्कृतिक और भाषाई इकाई माना जाता था, हालाकि सामाजिक–आर्थिक रूप से यह पिछडा क्षेत्र था वयोवृद्ध स्वतत्रता सेनानी श्रीराम शर्मा की अध्यक्षता मे बनी हरियाणा विकास समिति ने एक स्वायत्त राज्य की अवधारणा पर ध्यान केद्रित किया था 1960 के दशक की शुरुआत मे उत्तरी पजाब के पजाबीभाषी सिक्खो और दक्षिण मे हरियाणा क्षेत्र के हिदीभाषी हिदुओ द्वारा भाषाई आधार पर राज्यो की स्थापना की माग जोर पकडने लगी थी, लेकिन सिक्खो द्वारा पजाबीभाषी राज्य की जोरदार माग के कारण ही इस मुद्दे को बल मिला 1966 मे पजाब पुनर्गठन अधिनियम के पारित होने के साथ ही पजाब के साथ–साथ हरियाणा भी भारत का एक पृथक राज्य बन गया सामाजिक और आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से छोटे राज्यो के गठन का प्रयोग सफल साबित हुआ है, बशर्ते

उन्हे सबल और योग्य नेतृत्व मिले, जैसा कि इन दो राज्यों ने सिद्ध किया है जनसख्या (2001) राज्य कुल 2,10,82,989, ग्रामीण 1,49,68,850, शहरी 61,14,139

हरिश्चंद्र पर्वत श्रृखला

पश्चिम–मध्य भारत के पश्चिमी घाट म पूर्व की ओर विस्तृत पहाडिया यह पर्वत श्रृखला पश्चिमोत्तर दक्कन के पठार मे गोदावरी और भीमा नदियो के बीच स्थित है लगभग 600 मीटर की औसत ऊचाई वाली इसकी चोटिया दक्षिण–पूर्व की ओर घटती जाती है और महाराष्ट्र राज्य का हिस्सा बन जाती है बेसॉल्टयुक्त लावा से बनी इस पर्वत श्रृखला की चोटिया समतल है और पहाडियो की ढलान लावा के बहने की दिशा मे अपक्षयित होकर सीढीदार हो गई है यह पर्वत श्रृखला पश्चिमी घाट मे मिलने तक ऊची होती गई है इसकी सबसे ऊची चोटी हरिश्चद्रगढ के नाम पर ही इस पर्वत श्रृखला का नामकरण हुआ है इन पहाडो की ढलान पर सागौन (अगूर की बेलो से लदे हुए) सहित इमारती लकडी के वन पाए जाते है साथ ही झाड–झखाडो मे बेत बास, ऊची बेले और फर्न शामिल है अहमदनगर इस क्षेत्र का प्रमुख नगर है

हरिश्चद्र, भारतेंदु

उपनाम भारतेदु (भारत का चद्रमा), (ज –9 सित 1850, वाराणसी, भारत, मृ –6 जन 1885, वाराणसी), कवि, नाटककार, समालोचक और पत्रकार, जिन्हे आमतोर पर आधुनिक हिदी का जनक कहा जाता है हिदी गद्य मे नई परपरा की स्थापना मे उनके महान योगदान को उनके सक्षिप्त जीवनकाल मे ही मान्यता मिल गई थी और प्रशसा म उन्हे भारतेदु कहा जाने लगा तथा यह सम्मानसूचक उपनाम उनके अपने नाम के आगे जुड गया

हरिश्चद्र का जन्म एक प्रतिष्ठित परिवार मे हुआ था, जिसका मूल सबध धनी महाजन अमीचद्र से था, जिनके द्वारा अपने मालिक, बगाल के नवाब, के खिलाफ षडयत्र और रॉबर्ट क्लाइव द्वारा मिला धोखा आधुनिक भारतीय इतिहास की प्रख्यात घटना हे उनके पिता गोपालचद्र (उपनाम गिरिधरदजा) एक कवि थे, जिन्होने पारपरिक ब्रजभाषा मे तकनीकी रूप से सुदृढ, कितु काव्य सवेदना मे कमजोर बहुत सी कविताए लिखी

हरिश्चद्र ने अपना साहित्यिक जीवन 17 वर्ष की आयु मे शुरू किया, जब उन्होने 1867 मे हिदी मे पहली साहित्यिक पत्रिका *कविवचन सुधा* आरभ की इसके बाद 1872 मे *हरिश्चद्र मैगजीन* का प्रकाशन शुरू हुआ, जिसे बाद मे *हरिश्चद्र चद्रिका* का नाम दिया गया उनके उदार सरक्षण मे प्रतिष्ठित कवियो और साहित्यकारो की एक मडली उनके साथ जुडी थी और इन सबकी रचनाए भारतेदु की पत्रिकाओ के माध्यम से हिदी भाषा तथा साहित्य मे आधारभूत परिवर्तन लाई

हरिश्चद्र का प्रभाव बहुत गहरा और दूरगामी था उनकी रचनाओ ने हिदी साहित्य मे रीतिकाल (लगभग 1650–1850) का समापन कर भारतेदु युग की शुरुआत की

जिससे आधुनिक काल का जन्म हुआ हिंदी भाषा के विकास के प्रति उनके समर्थन और सरकारी दायरो मे उर्दू को अनावश्यक महत्त्व दिए जाने के उनके विरोध के कुछ महत्त्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम हुए जिनके फलस्वरूप अतत आधुनिक हिंदी भारत की राजभाषा के रूप मे स्थापित हुई

हरिश्चद्र की कविता रीति काल की शुष्क कविता के विपरीत सरल व सवेदनशील है, जिसमे भक्ति, उमग और भावपूर्ण गीतात्मकता भरी हुई है उनके द्वारा रचित कई हिंदी नाटक, जिनमे छद कही–कही ब्रजभाषा मे है, आधुनिक हिंदी की प्रथम कृतियो मे है और उनमे अनेक विषयो को लिया गया है इनमे कई व्यग्यात्मक नाटक और प्रहसन है, जिनमे कवि ने भारत की जड निर्धनता तथा कई शताब्दियो के विदेशी शासन एव उपनिवेशवाद के कारण देश की सस्कृति मे आई गिरावट को गहरी वेदना के साथ दर्शाया है

सामाजिक तथा शैक्षिक गतिविधियो मे तन–मन से लगे रहने पर भी हरिश्चद्र अपने चारो ओर के ससार से आनदित होते थे उनकी ख्याति अच्छे अभिनेता, उत्सुक व विनोदपूर्ण शास्त्रार्थी तथा अपनी जाति और धार्मिक समुदाय मे असाधारण कौतुक करने वाले की भी थी

हरिहर

हिंदू धर्म मे दो प्रमुख देवताओ विष्णु (हरि) और शिव (हर) को मिलाकर बने देवता इस द्विरूप को कबोडिया मे विशेष लोकप्रियता मिली, जहा छठी और सातवी शताब्दियो के अभिलेख और मूर्तिया पाई गई है हरिहर की प्रतिमाओ मे दाए अर्द्धांश को शिव के रूप मे और बाए को विष्णु के रूप मे दिखाया गया है शिव के अर्द्धांश की मुद्रा रौद्र रूप मे है, जो सहारक के रूप मे उनके कार्य के अनुरूप है तथा उनके हाथ मे त्रिशूल है विष्णु वाला अर्द्धांश प्रशात है, जो उस देवता के पालक व सरक्षक स्वरूप के लिए समुचित है शिरस्त्राण का आधा हिस्सा शिव के जटाजूट और आधा हिस्सा विष्णु के मुकुट के रूप मे दिखाया जाता है और माथे या ललाट पर शिव की तीसरी आख का आधा हिस्सा नजर आता है कई हिंदू हरिहर और अर्द्धनारीश्वर जैसे स्वरूपो को आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया मे सहायक मानते हैं, जहा ईश्वर के सभी प्रतिरुपो को अपूर्ण पाया गया है और उन्हे पृथक ग्रहण करने पर भ्रमात्मक माना जाता है

हरिहर, उत्तर भार
पत्थर पर बनी शिल
शताब्दी, ब्रिटिश स
फोटो पी चद्रा

हरे कृष्णा

भूतपूर्व इटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (इस्कॉन), 1966 मे अमेरिका मे ए सी भक्तिवेदात (स्वामी प्रभुपाद 1896–1977) द्वारा स्थापित धार्मिक आंदोलन यह आदोलन चैतन्य (1485–1533) के काल के आध्यात्मिक गुरुओ की परपरा का होन का

। मे इस्कॉन के सस्थापक स्वामी प्रभुपाद क जन्मशताब्दी समारोह के अवसर पर हरे हुए
एस शिव कुमार, *हिदुस्तान टाइम्स*

दावा करता है, जिन्हे यह *भगवद्गीता* के युद्ध (महाभारत) मे सार के चमत्कारी प्रेमी देवता श्री कृष्ण का अवतार मानते है

अमेरिका मे हरे कृष्ण आदोलन का उत्कर्ष काल 1970 का भूतपूर्व साम्यवादी देशों मे यह ज्यादा समय तक जीवित रहा अधिकारवादी और रूढिवादी है तथा धार्मिक उत्साह पर ब मुख्यत अलग-थलग पडे युवाओ पर पडा, जिन्हे सिर मुड पहने, भजन करते और आसपास के लोगो से चदा एकत्र कर पर देखा जा सकता है इसके भक्त चार वर्णो या जातियो की है, जिनकी स्थिति जन्म के बजाय उनके कर्मों क माध्यम से

मनुष्यो को कृष्ण की सर्वोत्कृष्ट ऊर्जा से निर्मित माना जाता है, जिनका शरीर उनकी निम्नतम, भौतिक और मायावी शक्ति 'माया' से निर्मित है शाति और आनद प्राप्त करने के लिए इस मत के अनुयायियो से भक्तियोग के माध्यम से कृष्ण के प्रति उनके मूल सबध (कृष्ण चेतना) की ओर लौटने का आग्रह किया जाता है इसमे कृष्ण का देवत्व मे सर्वोत्कृष्ट व्यक्तित्त्व के रूप मे स्वीकार करना शामिल है, जिनके सेवक निस्वार्थ भाव से बिना किसी फल की इच्छा के उनकी सेवा करते है और कृष्ण तथा पृथ्वी पर उनके प्रतिनिधि आध्यात्मिक गुरु के समक्ष समर्पण करते है इसमे जुआ खेलने, नशीले पदार्थों के सेवन, मास खाने और दुराचार का निषेध भी शामिल है कीर्तन के अलावा अनुयायियो को स्वय को माया से मुक्त करने के लिए एकात मे भी भजन करना होता है

हरे कृष्ण मदिर समुदाय के रूप मे है, जिसमे अविवाहित पुरुष और स्त्रिया अलग–अलग रहते है, जबकि विवाहित दपत्ति अन्य घरो मे रहते है प्रत्येक मदिर के अपने अधिकारी होते है और ये लोग चदा इकट्ठा करके तथा भक्तिवेदात ट्रस्ट के पकाशनो को बेचकर अपनी आर्थिक आवश्यकताओ की पूर्ति करते है मदिर प्रशासनिक आयोग के सदस्यो के अतर्गत होते है प्रशासको मे से कुछ को आध्यात्मिक गुरुओ का दर्जा प्राप्त है, जो नए सदस्यो को दीक्षित करते है और मदिरो के आध्यात्मिक जीवन की देखरेख करते है हालाकि हरे कृष्ण आदोलन के कुछ सदस्य अब भी बगाली वैष्णवो की वेशभूषा और रिवाजो का पालन करते है, लेकिन अधिकाश अब अपने देशो के वस्त्र पहनते है सभी सदा गले मे तुलसी की माला धारण करते है

हर्ष

हर्षवर्द्धन भी कहा जाता है, (ज –लगभग 590 ई , मृ –647 ई), उत्तरी भारत के एक विशाल साम्राज्य के शासक (लगभग 606–647 ई) हर्ष को बौद्ध धर्म का समर्थक माना जाता है उनके शासनकाल को प्राचीन से प्रारभिक मध्यकालीन इतिहास मे परिवर्तन का काल भी माना जाता है, जिसमे विकेद्रीकृत क्षत्रीय राज्य अपने प्रभुत्व के लिए सघर्षरत थे

हर्ष थानेश्वर (हरियाणा मे) के राजा प्रभाकरवर्द्धन के दूसरे पुत्र थे वह अपने बडे भाई राज्यवर्द्धन की हत्या और बोधिसत्व (बौद्ध देवता), अवलोकितेश्वर की प्रतिमा से उत्साहवर्द्धक 'सदेश' के बाद 16 वर्ष की आयु मे गद्दी पर बैठे जल्दी ही उन्होने कामरूप (असम) के राजा भास्करवर्मन के साथ गठबधन कर लिया और अपने भाई के हत्यारे गौड (बगाल) के राजा शशाक के खिलाफ युद्ध छेड दिया पहले उन्होने राजा की उपाधि धारण न करके सरक्षक के रूप मे काम किया अपनी स्थिति मजबूत करने के बाद उन्होने स्वय को कन्नौज (उत्तर प्रदेश मे) का चक्रवर्ती सम्राट घोषित किया और औपचारिक रूप से अपनी राजधानी को उस नगर मे स्थानातरित कर लिया हालाकि वह शशांक को कभी पराजित नही कर सके, लेकिन उनकी विशाल सेना ने लगातार छह वर्षो तक युद्ध करके वल्लभी (गुजरात), मगध (दक्षिण बिहार), कश्मीर

और सिंध पर विजय प्राप्त की हर्ष का प्रभाव गुजरात से असम तक था, लेकिन वस्तुत उनके नियत्रण मे वर्तमान उत्तर प्रदेश, पजाब, हरियाणा और राजस्थान के कुछ हिस्से ही थ उन्होंने दक्कन को (लगभग 620 ई) जीतने का प्रयास किया, लेकिन चालुक्य राजा पुलकेशिन II ने उन्हे नर्मदा नदी के पार धकेल दिया हर्ष ने केंद्रीकृत साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास कम ही किया और वह जीते गए राज्य के राजाओ को उनके सिहासन पर बने रहने देते थे तथा नजराने व सम्मान से ही सतुष्ट हो जाते थे

हर्ष के बारे मे जानकारी बाण की कृतियो से प्राप्त होती है, जिनके द्वारा लिखी गई पुस्तक *हर्षचरित* मे उनके आरभिक शासनकाल का वर्णन है चीन के बौद्ध तीर्थयात्री और हर्ष के व्यक्तिगत मित्र ह्वेनसाग की कृतियों मे भी हर्ष का उल्लेख है लेकिन उनके विचार बौद्ध धर्म के प्रति सहानुभूति और राजा के साथ व्यक्तिगत सबधो से रजित है ह्वेनसाग ने राजा का वर्णन धर्मातरित महायान बौद्ध के रूप मे किया है, हालाकि ऐसा प्रतीत होता है कि अपने शासनकाल के आरभ मे हर्ष शैव मत के समर्थक थे उन्हे एक आदर्श शासक के रूप मे वर्णित किया गया है– उदार, ऊर्जावान, न्यायप्रिय और अपने साम्राज्य के प्रशासन मे सक्रिय 641 ई मे उन्होने चीन मे अपना एक दूत भेजा, अपने पूरे साम्राज्य मे यात्रियो, निर्धनो और रोगियो की सहायता के लिए उन्होने कल्याणकारी सस्थानो की स्थापना की प्रत्येक पाच वर्ष के बाद वह प्रयाग (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश) मे गगा और यमुना नदियो के सगम पर राजसभा का आयोजन करते थे, जिसमे वह पिछले चार वर्षो मे एकत्र खजाने को लोगो म बाट दिया करते थे हर्ष विद्वानो के सरक्षक थे, जिनमे इतिहासकार बाण ओर कवि मयूर भी शामिल है हर्ष स्वय भी कवि थे और उन्होने तीन सस्कृत नाटको, *नागानद, रत्नावली* और *प्रियदर्शिका,* की रचना की थी उनकी मृत्यु के बाद उनका राज्य विखडित हो गया और गुप्त वश के बाद के शासको ने उनके राज्य के अधिकाश हिस्से पर अधिकार कर लिया

हलीशहर

भूतपूर्व कुमारहाटा, शहर, दक्षिण–पूर्व पश्चिम बगाल राज्य, पूर्वोत्तर भारत, हुगली नदी के ठीक पूर्वी दिशा मे स्थित हलीशहर सस्कृत विद्वानो या पंडितो की स्थली के रूप मे विख्यात है नैहाटी नगरपालिका से अलग होने के बाद 1903 मे यहा नगरपालिका का गठन हुआ इसमे कचरापाडा शहर भी शामिल है यह कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) शहरी सकेद्रण का एक हिस्सा है और कागज निर्माण का एक विशाल केंद्र है जनसंख्या (2001) 1,24,479

हसन

पूरा नाम हसन बिन अली बिन अबी तालिब, (ज –624 ई, अरब, मृ –680 ई, मदीना), पैगबर मुहम्मद (इस्लाम के सस्थापक) के नाती और मुहम्मद की बेटी फातिमा के

सबसे बडे बेटे वह शिया इस्लाम के पाच सबसे पवित्र लोगो मे शामिल है, जिनके ऊपर मुहम्मद ने उन्हे अहल–ए–बैत (घर के लोग) घोषित करते हुए अपनी चादर डाली थी पिता के बाद अपने कई समकालीनो द्वारा अली को नेतृत्व के लिए मुहम्मद का जायज उत्तराधिकारी माना गया

बचपन मे हसन सात वर्षो तक मुहम्मद के साथ रहे और 632 मे पैगबर की मृत्यु के बाद वह तब तक राजनीतिक रूप से निष्क्रिय रहे, जब तक कि खलीफा उस्मान बिन अफ्फान (खलीफा इस्लामी समुदाय का नेता होते थे) के शासन का अत नही हो गया 656 मे उस्मान की हत्या हो गई, जिसमे हसन की कोई भूमिका नही थी हसन के पिता अली अगले खलीफा बने और इसके बाद हुए गृहयुद्धो के दौरान हसन को अली के शासन की स्वीकार्यता को सुरक्षित करने व सैन्य सहायता हासिल करने के लिए इराक के महत्त्वपूर्ण शहर कूफा भेज दिया गया बाद मे उन्होने सिफिन की लडाई लडी, जो हालाकि पराजय नही थी, लेकिन अली की स्थिति मे लगातार गिरावट की शुरुआत जरूर थी 661 मे अली की हत्या के बाद उत्तराधिकारी नामित नही किए जाने के बावजूद, उनके कई समर्थको ने हसन के प्रति वफादारी की शपथ ली तथा स्वय हसन ने पैगबर मुहम्मद के साथ अपने नजदीकी सबधो पर जोर दिया.

जब सीरिया के प्रशासक मुअविया I, जिन्होने अली के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया था, ने हसन को खलीफा के रूप मे स्वीकार करने से इनकार कर दिया और लडाई की तैयारी शुरू कर दी, लेकिन हसन समुचित प्रतिरोध करने के काबिल हो चुके थे उन्होने मुअविया को रोकने के लिए एक सेना रवाना की और स्वय बडी सेना के साथ कूच किया बहुत कम धन शेष रह जाने के कारण हसन को, जो युद्धप्रिय नही थे अपनी सेना मे दलबदल का सामना करना पडा हालांकि उनके कुछ अनुयायियो ने इसका जबरदस्त विरोध किया, लेकिन उन्होने शाति के लिए बातचीत की और 661 मे मुअविया को खलीफा पद सौप दिया हसन बिन अली को काफी धन मिला और उन्हे मदीना मे शातिपूर्वक जीवन बिताने दिया गया

हसन अल–बसरी, अल

पूरा नाम अबू सईद बिन अबी अल–हसन यासर अल–बसरी, (ज –622, मदीना, अरब {अब सऊदी अरब मे}, मृ –728, बसरा, इराक), अत्यधिक धर्मपरायण और सयमी, जो आरभिक इस्लाम के सबसे महत्त्वपूर्ण धार्मिक व्यक्तियो मे से एक माने जाते है

हसन का जन्म पैगबर मुहम्मद की मृत्यु के नौ वर्ष बाद हुआ था सिफिन की लडाई (657) के एक साल बाद वह बसरा चले गए, जो फारस की खाडी के पश्चिमोत्तर मे 80 किमी दूर स्थित सैनिक शिविर शहर था यहा से पूर्व की ओर के लिए सैनिक अभियान होते थे और एक युवा के रूप मे (670–673) हसन ने पूर्वी ईरान पर विजय से सबधित कुछ अभियानो मे हिस्सा लिया

बसरा लौटने क बाद हसन मुस्लिम समुदाय के भीतर के आतरिक सघर्ष के कारण पैदा हुई धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक उठापटक के दौरान केंद्रीय चरित्र बन गए 684–704 का काल उनकी जबरदस्त उपदेशात्मक गतिविधियों के लिए विख्यात है उनके उपदेशो के कुछ अवशेषो से, जो आरभिक अरबी गद्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरणो मे से है, उनकी एक अत्यत सवेदनशील धार्मिक मुसलमान की छवि उभरती है हसन के अनुसार सच्चे मुसलमान को न सिर्फ पाप करने से बचना चाहिए, बल्कि उस मृत्यु की निश्चितता और उसके बाद उसकी नियति की अनिश्चितता के कारण पैदा स्थायी उत्कठा की अवस्था मे रहना चाहिए हसन ने कहा कि यह ससार कष्टदायक है क्योकि यह 'एक साप के समान है, जो छूने मे तो चिकना है, लेकिन इसका जहर मारक है धार्मिक आत्मपरीक्षण का आचार (मुहासबा), जो बुराई को दूर करने व अच्छाई करने की ओर ले जाता है और सासारिक जागरूकता हसन की निष्ठा की विशेषताए है उन्होने बाद के इस्लामी साधनाशील और रहस्यवादी अथवा आध्यात्मिक रुझानो को प्रभावित किया

हसन के अनुसार, नास्तिक व्यक्ति इस्लाम का शत्रु नही है, बल्कि पाखडी (मुनाफिक) है, जो अपने धर्म को गभीरता से नही लेता और 'जो हमारे साथ यहा कमरो, सडको और बाजारो मे मौजूद है' आजादी तय करने की महत्त्वपूर्ण बहस मे उनका मानना था कि अपने कृत्य के लिए मनुष्य पूरी तरह जिम्मेदार है उन्होने उमय्या खलीफा अब्द अल–मलिक को लिखे गए एक महत्त्वपूर्ण पत्र मे इस स्थिति को क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया उनका पत्र, जो इस्लाम के धर्मशास्त्रो मे मौजूद प्राचीनतम निबध है, इस व्यापक मान्यता पर प्रहार करता है कि खुदा ही मनुष्य के कृत्यो का एकमात्र सर्जक है इस पत्र मे राजनीतिक बाते भी है और यह दर्शाता है कि आरभिक इस्लामी धर्मशास्त्रीय विवाद तात्कालिक राजनीतिक–धार्मिक विवादो से उत्पन्न हुए थे उनके राजनीतिक विचारो ने, जो उनके धार्मिक दृष्टिकोण के विस्तार थ, कई बार उन्हे सकटपूर्ण स्थिति मे डाला 705–714 के दौरान हसन को छिपकर जीवन व्यतीत करने पर मजबूर होना पडा, क्योकि उन्होने इराक के शक्तिशाली प्रशासक अल–हज्जाज की नीतियो के खिलाफ विरोधी रुख अपनाया था प्रशासक की मृत्यु के बाद हसन गुप्तवास से बाहर आए और मृत्यु तक बसरा मे रहे कहा जाता है कि बसरा के लोग उनके अतिम सस्कार मे इतने व्यस्त थे कि मस्जिद मे दोपहर की नमाज नही पढी गई, क्योकि वहा नमाज पढने के लिए कोई भी मौजूद नही था

अल–हसन अल–बसरी को उनकी पीढी मे वाकपटु उपदेशक, वस्तुत पाक मुसलमान का मूर्तिमान रूप और उमय्या वंश के (661–750 ई) राजनीतिक शासको का मुखर आलोचक माना जाता था मुसलमानो की बाद की पीढियो मे उन्हे उनकी धर्मनिष्ठा और धार्मिक साधना के लिए याद किया जाता था मुस्लिम आध्यात्मिक लोग उन्हे अपना पहला और सबसे उल्लेखनीय आध्यात्मिक गुरु मानते है आरभिक सुन्नी (परपरावादी) इस्लाम के दो सबसे महत्त्वपूर्ण धर्मशास्त्रीय मतो, मुताजिला (दार्शनिक धर्मशास्त्री) और अशारिया (धर्मशास्त्री अल–अशारी के अनुयायी), दोनो में हसन को उनका सस्थापक माना जाता है

हासी

नगर, हिसार जिले का उपमडल, पश्चिम–मध्य हरियाणा, पश्चिमोत्तर भारत, दिल्ली हिसार शहर और पजाब मे फाजिल्का को जोडने वाले प्रमुख राजमार्ग पर स्थित हासी एक प्राचीन नगर है पहली व दूसरी शताब्दी मे सभवत यह कुषाणो का गढ था मुसलमान शासक मुहम्मद गोरी क सेनापति कुतुबुद्दीन द्वारा 1192 मे इस पर कब्जा कर लिया गया 18वी शताब्दी के अतिम वर्षो मे हासी एक अग्रेज अभियानकर्ता जॉर्ज टॉमस द्वारा स्थापित स्वतत्र राज्य की राजधानी थी 1867 मे इसका नगरपालिका के रूप मे गठन हुआ पश्चिमी यमुना नहर की हासी शाखा शहर के पास से गुजरती है हासी अब एक महत्त्वपूर्ण वाणिज्यिक तथा यातायात केंद्र है यहा के उद्योगो में कपास ओटाई, हथकरघा और धातुकर्म से जुडे उद्योग शामिल है जनसख्या (2001) न पा क्षेत्र 75,730

हॉकी

11 खिलाडियो के दो विरोधी दलो क बीच मैदान मे खेले जाने वाले इस खेल मे प्रत्येक खिलाडी मारक बिदु पर मुडी हुई एक छडी (स्टिक) का इस्तेमाल एक छोटी व कठोर गेद को विरोधी दल के गोल मे मारने के लिए करता है बर्फ मे खेले जाने वाले इसी तरह के एक खेल 'आईस हॉकी' से भिन्नता दर्शाने के लिए इसे मैदानी हॉकी कहते है

भारत के हॉकी चैपियन ध्या

हॉकी की शुरुआत आरभिक सभ्यताओ के युग से मानी जाती है हॉकी खेलने क अरबी, यहूदी, फारसी और रोमन तरीके रहे और दक्षिण अमेरिका के एजटेक इडियनो द्वारा छडी से खेले जाने वाले एक खेल के प्रमाण भी मिलते है आरभिक खेलो हर्लिंग और शिटी जैसे खेलो के रूप मे भी हॉकी को पहचाना गया है मध्य काल मे छडी से खेला जाने वाला एक फ्रासीसी खेल हॉके प्रचलित था और अग्रेजी शब्द की उत्पत्ति शायद इसी से हुई है

अग्रेजी विद्यालयो मे हॉकी खेलना 19वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे शुरू हुआ और दक्षिण–पूर्वी लदन के ब्लैकहीथ मे पुरुषो के पहले हॉकी क्लब का विवरण 1861 की एक विवरण–पुस्तिका मे मिलता है लदन स्थित एक अन्य क्लब टेडिंगटन ने कई मुख्य परिवर्तनो की शुरुआत की, जिसमे हाथो का प्रयोग या छडी को कधो से ऊपर उठाने पर प्रतिबध, रबर की घनाकार गेद के स्थान पर गोलाकार स्वरूप के प्रयोग शामिल थे सबसे महत्त्वपूर्ण था (स्ट्राइकिग सर्कल) मारक चक्र को अपनाना, जिसे 1886 में लदन मे स्थापित तत्कालीन हॉकी एसोसिएशन ने अपने नियमो मे शामिल किया था
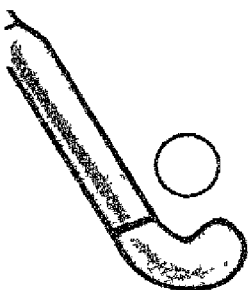
इस खेल के विस्तार का श्रेय, विशेषकर भारत और सुदूर पूर्व मे ब्रिटेन की सेना को है अनेक अतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ के आह्वान के फलस्वरुप 1971 मे विश्व कप की शुरुआत हुई हॉकी की अन्य मुख्य अतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताए है– एशियन कप एशियाई खेल, यूरेपियन कप और पैन–अमरिकी खल पुरुषो की मैदानी हॉकी को 1908 और 1920 मे ओलिपिक खेलो मे खेला गया और 1928 से इसे स्थायी तौर पर ओलिपिक मे शामिल कर लिया गया चारदीवारी मे खेली जाने वाली हॉकी जिसमे एक दल मे छह खिलाडी होते है ओर छह खिलाडी परिवर्तन के लिए रखे जाते है, यूरोप मे लोकप्रिय है

विक्टोरियाई युग मे खेलो मे महिलाओ पर प्रतिबध होने के बावजूद महिलाओ मे हॉकी की लोकप्रियता बहुत बढी यद्यपि 1895 से ही महिला टीमे नियमित रूप से मैत्री प्रतियोगिताओ मे भाग लेती रही थी, लेकिन गभीर अतर्राष्ट्रीय प्रतियोग्तिाओं की शुरुआत 1970 के दशक तक नही हुई थी 1974 मे हॉकी का पहला महिला विश्व कप आयोजित किया गया और 1980 मे महिला हॉकी ओलिपिक म शामिल की गई 1927 मे अतर्राष्ट्रीय नियामक सस्था, इटरनेशनल फेडरेशन ऑफ विमॅन्स हॉकी एसोसिएशन का निर्माण हुआ था 1901 मे अमेरिका मे कासटेस एम के एप्पेलबी द्वारा इस खेल की शुरुआत हुई और मैदानी हॉकी धीरे–धीरे यहा की महिलाओ मे लोकप्रिय मैदानी टीम खेल बन गई व विद्यालयो, महाविद्यालयो तथा क्लबो मे खेली जाने लगी

यह खेल एक चौकोर मैदान पर 11 खिलाडियो वाले दो दलो के बीच खेला जाता है यह मैदान 91 4 मीटर लबा और 55 मीटर चौडा होता है, इसके केद्र मे एक केंद्रीय रेखा व 22 8 मीटर की दो अन्य रेखाए खिची होती है गोल की चौडाई 3 66 मीटर व ऊचाई 2 13 मीटर होती है एक गोल बनाने के लिए (जिसकी गणना एक अक के रूप मे होती है) गेद को गोल के अदर जाना चाहिए और आक्रमणकारी की हॉकी से शूटिग सर्कल 'डी' के अदर गेद का स्पर्श जरूरी है यह गेद मूलत क्रिकेट की गेद थी (जिसमे बीच मे कॉर्क रहता है, जिसे रस्सी से लपेटकर चमडे के आवरण से ढकते थे) लेकिन प्लास्टिक की गेद भी अनुमोदित है इसकी परिधि लगभग 30 सेमी होती है हॉकी स्टिक लगभग एक मीटर लबी और 340 से 790 ग्राम भारी होती है स्टिक का चपटा छोर ही गेद को मारने के लिए इस्तेमाल किया जाता है

दल के सामान्य सयोजन मे पाच खिलाडी फॉरवर्ड, तीन हाफबैक, दो फुलबैक ओर एक गोलकीपर होते है एक खेल मे 35 मिनट के दो भाग होते है, जिनमे 5 से 10 मिनट का अतराल होता है केवल चोट लगने की दशा मे खेल रोका जाता हे गोलकीपर मोटे मगर हल्के पैड पहनता है और उसे 30 गज के घेरे (डी) मे गेद को पैर से मारने अथवा उसे पैरो या शरीर की मदद से रोकने की इजाजत होती है अन्य सभी खिलाडी गेद को केवल स्टिक से ही रोक सकते है

मैदान के केंद्र से पास–बैक द्वारा, जिसमे एक खिलाडी अपनी टीम के अन्य खिलाडियो की ओर गेद फेकता है, गेद पुन उस तक पहुचाई जाती है (और एक गोल करने के बाद व मध्यातर क बाद), खेल प्रारभ होता है किसी को चोट लगने पर या तकनीकी कारण से खेल रुकने पर, दोनो दलो द्वारा क्रमश एक–एक पेनल्टी करने पर या खिलाडियो के कपडो मे गेद के उलझने पर खेल को फिर से शुरू करने के लिए फेस–ऑफ या बुली का प्रयोग किया जाता है फेस–ऑफ मे दोनो टीमो के एक–एक खिलाडी आमने–सामने खडे होते है और गेद उनके बीच मैदान पर होती है एक के बाद एक जमीन पर आघात करने के बाद दोनो खिलाडी एक–दूसरे की स्टिक को आपस मे तीन बार टकराते है, प्रत्येक खिलाडी गेद को मारने का प्रयास करता है और इस प्रकार खेल फिर से शुरू हो जाता है गेद के मैदान से बाहर जाने की दशा म खेल को फिर से शुरू करने के विभिन्न तरीके है

हॉकी मे कई तरह की गलतिया (फाउल) होती है किसी खिलाडी को मैदान मे गेद स आगे रहकर और विरोधी दल के दो खिलाडियो से कम खिलाडियो के आगे रहकर लाभ उठाने से रोकने के लिए बनाए गए ऑफ साइड नियम को 1996 के ओलिपिक खेलो के बाद समाप्त कर दिया गया गेद से खेलते वक्त हॉकी को कधो से ऊपर उठाना नियमो के विरुद्ध है गेद को हाथो से रोकना उसी तरह की गलती है, जैसी गेद को शरीर या पैरो से रोकना. अडरकटिग के साथ ही विरोधी की हॉकी मे अपनी हॉकी फसाकर (हुकिग) गेद को तेजी से ऊपर उछालते हुए खेल को खतरनाक बनाना भी गलत है अत मे अवरोधन का नियम है एक खिलाडी को अपनी स्टिक या शरीर के किसी भी भाग को अपने विरोधी और गेद के बीच लाकर अवरोध खडा करने अथवा विरोधी व गेद के बीच दौडकर बाधा डालने की अनुमति नही है अधिकतर गलतियो की सजा विरोधी दल को, जिस स्थान पर नियम तोडा गया, वहा से एक फ्री हिट के रूप मे दी जाती है खेल के प्रत्येक भाग के लिए एक निर्णायक (रैफरी) होता है

भारत में हॉकी

19वीं शताब्दी के प्रारभिक वर्षो मे भारत में इस खेल के विस्तार का श्रेय मुख्य रूप से ब्रिटिश सेना को जाता है और एक स्वाभाविक परिणाम के रूप मे यह खेल छावनी नगरो व उसके आसपास तथा युद्धप्रिय समझे जाने वाले लोगो और सैनिको के बीच फला–फूला सैनिक छावनियो वाले सभी नगर, जैसे लाहौर, जलंधर, लखनऊ, झासी, जबलपुर भारतीय हॉकी के गढ थे मगर इस खेल को विभाजन–पूर्व भारत की कृषि प्रधान भूमि के मेहनती और बलिष्ठ पजाबियो ने स्वाभाविक रूप से सीखा

इस खेल की अतर्राष्ट्रीय स्पर्द्धा 1895 मे प्रारभ हुई. उपमहाद्वीप के हॉकी युग की शुरुआत 1925 मे हुई, जब अखिल भारतीय हॉकी सघ की स्थापना हुई, जिसमें कर्नल ब्रूस टर्नबुल अध्यक्ष तथा एम.एस. असारी सचिव थे. एक साल बाद ही न्यूजीलैड प्रवास के दौरान भारतीयो ने अपनी अपूर्व क्षमता का परिचय दिया दो महीने के लबे दौरे पर न्यूजीलैड गई सेना की टीम ने 21 मुकाबलो मे से 18 मुकाबले जीते और केवल दो मुकाबले हारे, जबकि एक बराबरी पर छूटा

1928 तक हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल बन गई थी और इसी वर्ष एमस्टर्डम ओलिपिक मे भारतीय टीम पहली बार प्रतियोगिता म शामिल हुई भारतीय टीम ने पाच मुकाबलो म एक भी गोल दिए बगैर स्वर्ग पदक जीता जयपाल सिंह की कप्तानी मे टीम ने, जिसमें महान खिलाडी ध्यानचद भी शामिल थे, अतिम मुकाबले मे हॉलेड को आसानी से हराकर स्वर्ण पदक जीता 1932 मे लॉस एजेलिस ओलिपिक मे जब भारतीयो ने मेजबान टीम को 24–1 से हराया, तब से अब तक की सर्वाधिक अतर से जीत का कीर्तिमान भी स्थापित हो गया 24 मे से 19 गोल दा भाइयो ने किए, रूपसिह ने 11 गोल दागे और ध्यानचद ने शेष गोल किए

1936 के बर्लिन ओलिपिक मे इन भाइयो के नेतृत्व मे भारतीय दल ने पुन स्वर्ण पदक जीता जब उन्होंने जर्मनी को हराया बर्लिन ओलिपिक मे ध्यानचद असमय बाहर हो गए और द्वितीय विश्व युद्ध ने भी इस विश्व स्पर्द्धा को बाधित कर दिया आठ वर्ष के बाद ओलिपिक की पुन वापसी पर भारत की विश्व हॉकी चेपियन की स्थिति मे कोई परिवर्तन नही आया किशनलाल के नतृत्व मे दल ने लदन में स्वर्ण पदक जीता भारत की स्वर्ण दौड 1956 मे हुए मेलबोर्न ओलिपिक तक लगातार जारी रही, उसने लगातार 6 स्वर्ण पदक जीते, एक असाधारण कार्य, जो विश्व मे कोई भी अब तक दुहरा नही पाया है अन्य टीमो के उभरने के सकेत सर्वप्रथम मेलबोर्न मे दिखाई दिए, जब भारत को पहली बार स्वर्ण पदक के लिए सघर्ष करना पडा पहले की तरह, टीम ने अपनी ओर एक भी गोल नही होने दिया और 38 गोल दागे, मगर बलवीर सिंह के नेतृत्व मे खिलाडियो को सेमीफाइन्ल मे जर्मनी के खिलाफ और फाइनल मे पाकिस्तान के खिलाफ संघर्ष करना पडा सेमीफाइन्ल मे कप्तान के गोल ने निर्णय किया, जबकि वरिष्ठ रक्षक आर.एस जेटल के बनाए गोल ने भारत की अपराजेयता को बनाए रखा 1956 के मेलबोर्न ओलिंपिक के फाइन्ल मे भारत और पाकिस्तान के बीच आधुनिक खेलो की सघर्षपूर्ण प्रतिद्वद्विता की शुरुआत हुई 1960 मे रोम ओलिपिक मे पाकिस्तान ने फाइनल मे 1–0 से स्वर्ण जीतकर भारत की बाजी पलट दी भारत ने पाकिस्तान को 1964 के टोकियो ओलिंपिक मे हराया 1968 के मेक्सिको ओलिपिक मे पहली बार भारत फाइनल मे नही पहुचा और केवल कास्य पदक जीत पाया मगर मेक्सिको के बाद, पाकिस्तान व भारत का आधिपत्य टूटने लगा 1972 के म्यूनिख ओलिपिक मे दोनो मे से कोई भी टीम स्वर्ण पदक जीतने मे सफल नही रही और क्रमश दूसरे व तीसरे स्थान तक ही पहुच सकी मुख्य रूप से भारत मे, हॉकी के पारपरिक केंद्रों के अलावा अन्य स्थानो पर लोगो की रुचि मे तेजी से गिरावट आई और इस पतन को रोकने के प्रयास भी कम ही किए गए इसके बाद भारत ने केवल एक बार 1980 के सक्षिप्त मॉस्को ओलिपिक मे स्वर्ण पदक जीता टीम का अस्थिर प्रदर्शन जारी रहा इसके बाद 1998 के एशियाई खेलो मे स्वर्ण पदक की प्राप्ति भारतीय हॉकी का एकमात्र बढिया प्रदर्शन था ऐसे बहुत कम मौके रहे, जब कौशल ने शारीरिक सोष्ठव को हराया, अन्यथा यह बारबार बहुत कम अतर से हार और गोल चूक जाने का मामला रहा है यद्यपि भारत अब विश्व हॉकी मे एक शक्ति के रूप मे नही गिना जाता, पर हाल के वर्षो मे यहा ऐसे कई खिलाडी हुए है, जिनके कौशल की बराबरी विश्व मे कुछ ही खिलाडी कर पाते हैं अजितपाल सिंह, वी भास्करन, गोविदा, अशोक कुमार, मुहम्मद शाहिद, जफर इकबाल परगट सिंह, मुकेश कुमार और धनराज पिल्ले जैसे खिलाडियो ने अपनी आक्रामक शैली की धाक जमाई है

भारत मे हॉकी के गौरव को पुनर्जीवित करने के गभीर प्रयास हुए हे भारत मे तीन हॉकी अकादमिया कार्यरत है– नई दिल्ली मे एयर इडिया अकादमी, राची (झारखड) मे विशेष क्षेत्र खेल अकादमी (स्पेशल एरिया गेम्स अकेडमी) और राउरकेला (उडीसा) मे स्टील अथॉरिटी ऑफ इडिया लिमिटेड (सेल) अकादमी. इन अकादमियो मे प्रशिक्षार्थी हॉकी क प्रशिक्षण के अलावा औपचारिक शिक्षा भी जारी रखते है और मासिक वृत्ति भी पाते है प्रत्येक अकादमी ने योग्य खिलाडी तैयार किए है, जिनसे आन वाले वर्षो मे इस खेल मे योगदान की आशा है क्रिकेट के प्रति दीवानगी के बावजूद विद्यालयो और महाविद्यालयो मे हॉकी के पुनरुत्थान से नई पीढी मे इस खेल के प्रति रुचि जागृत हुई है प्रतिवर्ष राजधानी मे होने वाली नेहरू कप हॉकी प्रतियोगिता जैसी प्रतिस्पर्द्धाओं मे उडीसा, बिहार और पंजाब के विद्यालयो, जैसे सेट इग्नेशियस विद्यालय राउरकेला, बिरसा मुडा विद्यालय, गुमला और लायलपुर खालसा विद्यालय, जालधर द्वारा उच्च स्तरीय हॉकी का प्रदर्शन देखा गया है

हाजीपुर

नगर, उत्तर–मध्य बिहार राज्य, पूर्वोत्तर भारत उत्तरी बिहार के मैदानी क्षेत्र मे स्थित हाजीपुर मध्यवर्ती गगा का मैदानी हिस्सा है यह वैशाली–नालदा सडक मार्ग पर स्थित है बुद्ध के जीवनकाल मे वैशाली उत्तरी भारत के एक राज्य की राजधानी और नालदा पाचवी से बारहवी शताब्दी के बीच बौद्ध मत के प्रख्यात विश्वविद्यालय थे इस नगर में इजीनियरिग उत्पाद, काच, धातु और इस्पात के कटेनर के निर्माण के उद्योग हे यहा राजनारायण महाविद्यालय है, जो मुजफ्फरपुर स्थित बाबासाहेब भीमराव अबेडकर विश्वविद्यालय से सबद्ध है यह नगर रेल और सडक मार्ग द्वारा राज्य की राजधानी पटना से जुडा है जनसख्या (2001) 1,19,276

हाथरस

शहर, पश्चिम–मध्य उत्तर प्रदेश राज्य, उत्तर भारत अलीगढ शहर के दक्षिण मे स्थित हाथरस सडक व रेलमार्ग द्वारा अलीगढ से जुडा है यह कृषि उत्पादो का व्यापार केद्र है और यहा के उद्योगो मे कपास तथा तेल मिले और हल्के निर्माण से जुड उद्योग शामिल है इस शहर मे पी सी बागला कॉलेज, सरस्वती डिग्री कॉलेज और आर डी ए गर्ल्स कॉलेज है आगरा विश्वविद्यालय के कई कॉलेज यहा है दक्षिण–पश्चिमी दिशा मे 19वी शताब्दी के एक दुर्ग के भग्नावशेष विद्यमान है जनसख्या (2001) न प क्षेत्र 1,23,243, जिला कुल 13,33,372

हाथी

दो प्रजातियो, एशियाई हाथी *एलिफैस मैक्सीमस* और अफ्रीकी हाथी *लॉक्सोडोटा अफ्रीकाना* मे से एक, दोनो ही एलिफैटिडी परिवार गण, कुल के है, जिनका विशिष्ट लक्षण उनका बडा आकार, लबी सूड (विस्तारित नाक), स्तभाकार पैर, विशाल कान
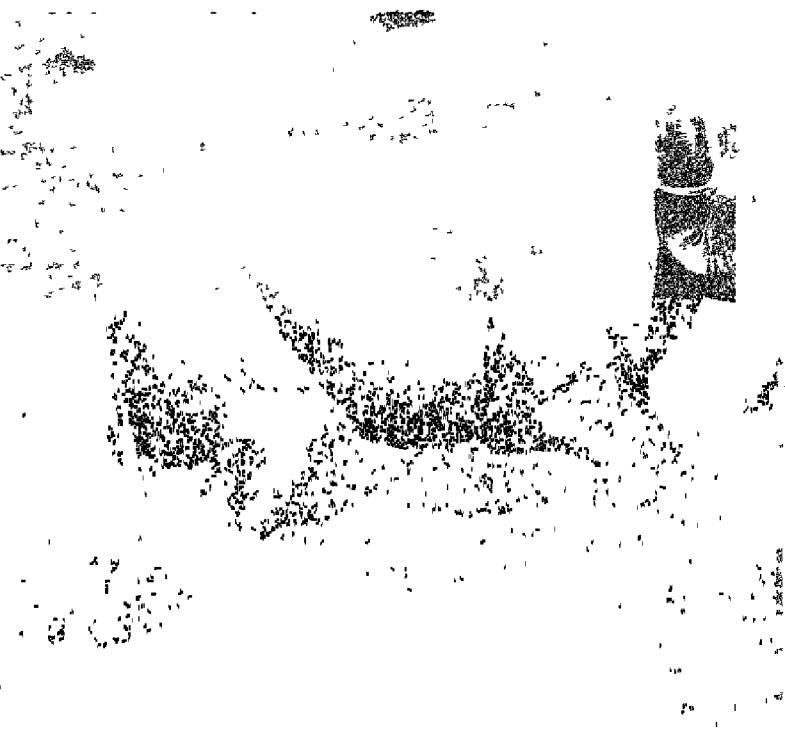
रून हुए हाथी
डॉ वकट राम नरसैया

(विशेषकर *एल अफ्रीकाना* मे) और बडा सिर है *इ मैक्सीमस*
दक्षिण–पूर्वी एशिया मे पाया जाता है, जबकि *एल अफ्रीकान*

ाथी *एलिफैस मैक्सीमस*
सटर फॉर एन्वायर्नमट एजुकशन अहमदाबाद

क्षेत्र मे पाया जाता है दोनो
से लेकर सवाना (घास के
है

वितरण

वर्तमान समय मे हाथी अ
स्तनधारी जतु के वशज है
करोड वर्ष पहले पाए जाते
मे मोएरिस झील के पास पाए
इन्हे *मोएरिथेरियम* नाम दिया
मे दो–दो बडे कृतक दात प्र
मे विकसित हो चुके थे *मोए*
प्रिमिलेफस से वृहद परिवार
हुआ, जिसके तहत नवीनत
भी आते है ये परिवार होमो

हाथी
ग

साक्षी है विकास क्रम मे इनके कई रूपो की उत्पत्ति और
गल पहले तक इस परिवार मे सिर्फ रोएदार मैमथ (*मेमथस*
कट सबधी एशियाई हाथी (*एलिफैस मैक्सीमस*), और इससे
क्सोडोंटा अफ्रीकाना) ही बचे थे लगभग 5,000 साल पहले
गए जलवायु के गर्म होने से इनके विलुप्त होने की प्रक्रिया
नका चारा जलमग्न हो गया मानव द्वारा शिकार से भी इनके
त हुई

के मुकाबल सीमित क्षेत्र म ही पाए जाते है पहले यह क्षेत्र
–यूफ्रेटस बेसिन से पूर्व की ओर उत्तरी चीन तक फैला हुआ
और पडोसी देश, दक्षिणी ईरान, पाकिस्तान, हिमालय के
उपमहाद्वीप, एशिया महाद्वीप का दक्षिण–पूर्वी हिस्सा, चीन
श्रीलका (भूतपूर्व सीलोन), सुमात्रा तथा सभवत. जावा के क्षेत्र
ता चलता हे कि किसी समय बोर्नियो मे भी हाथी थे, लेकिन
हा के मूल निवासी थे या 1750 के दशक मे वहां लाकर छोडे
गज है अभी मुख्य रूप से हाथी सबाह (मलशिया) ओर
के एक छोटे क्षेत्र तक सीमित है हाथी पश्चिम एशिया,
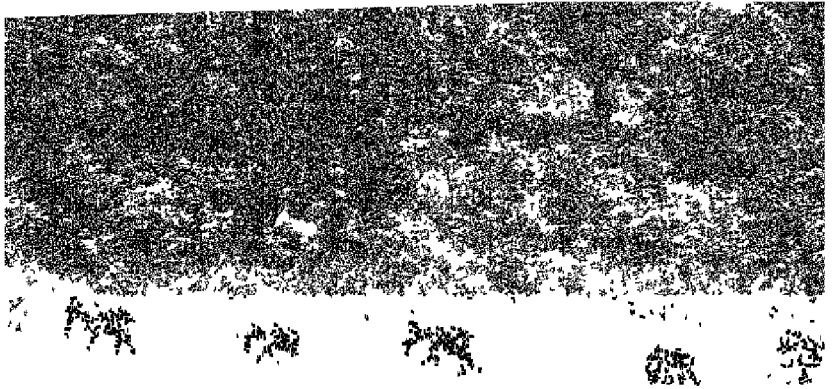
नदी तट पर हाथियो का झुड
सौजन्य डॉ वेकट राम नरसया

भारतीय महाद्वीप के अधिकाश हिस्से, दक्षिण–पूर्व एशिया के व
समूचे चीन (युन्नान प्रात के दक्षिणी क्षेत्रो को छोडकर) से वि
क्षेत्र के पश्चिमी हिस्सो की शुष्कता, पालतू बनाए जाने के f
बनाने (जो लगभग 4,000 साल पहले सिधु घाटी मे शुरू हुआ
लगातार बढने से इनके पर्यावास मे कमी और इनका शिकार
कमी के प्रमुख कारण है

एक गणना के अनुसार, जगली एशियाई हाथियो की सख्या 3
है, इनका पर्यावास लगभग 5,00,000 वर्ग किमी मे फैला
झाडीदार जगलो से लेकर सदाबहार वनो तक, दलदली क्षेत्र र
तक और शुष्क एव नम पर्णपाती वनो जैसे भिन्न पर्यावासो
हिमालय मे हाथी 3,000 मीटर की ऊचाई तक रहने मे सक्षम
अवस्था मे है भारत मे लगभग 22 हजार जगली और 3,000

कई शताब्दियो से भारतीय हाथी, समारोहो और बोझा ढोने के
रहे है अपने महावत के नियत्रण मे हाथी पेडो की कटाई

अफ्रीकी हाथी का भी इस्तेमाल बोझा ढोने के लिए होता है, लेकिन यह अपेक्षाकृत बहुत व्यापक नही है

लक्षण

हाथी कुछ–कुछ स्लेटी से भूरे रग के होते है और उनके शरीर के बाल बिखरे हुए तथा रूखे होते है दोनो प्रजातियां मे दो ऊपरी कृतक दत हाथीदात के रूप मे विकसित होते है, लेकिन भारतीय हाथियो में यह आमतौर पर नही पाए जाते नथुने, मासल सूड के छोर पर स्थित होते है, जो सास लेने, खाने और पीने मे उपयोगी होते हे हाथी सूड के जरिये पानी खीचकर अपने मुह मे डालते हे ये सूड के छोर से घास, पत्तिया और फल तोडकर अपने मुह मे डालते हैं सूंड की छोर पर छोटे उगलीनुमा उभार के जरिये ये छोटी वस्तुओ को भी उठाने मे सक्षम होते है अफ्रीकी हाथियों मे ऐसी दो सरचनाए और भारतीय हाथी मे एक होती है

अफ्रीकी हाथी जमीन पर पाया जाने वाला सबसे बडा जीवित जानवर है जिसका वजन 7,500 किग्रा तक होता है और कधे तक ऊचाई 3 से 4 मीटर होती हैं भारतीय हाथी का वजन लगभग 5,500 किग्रा और कधे तक ऊचाई 3 मीटर होती है, इसके कान अफ्रीकी हाथी की तुलना मे काफी छोटे होते है हाथियो मे चर्वणक दात एक साथ ही पैदा नही होते, बल्कि पुराने दात के घिस जाने पर नया पैदा हो जाता है लगभग 60 वर्ष की आयु मे चर्वणक दातो का छठा और अतिम जोडा निकलता है, इसलिए बहुत कम हाथी इससे अधिक आयु तक जीवित रह पाते है

जगलो मे हाथी वरिष्ठ हथिनी के नतृत्व मे छोटे पारिवारिक समूहो मे रहते है जहा भरपूर भोजन उपलब्ध होता है, वहा झुड बडे भी हो सकते है अधिकाश नर मादाओ से अलग झुड मे रहते है भोजन और पानी की उपलब्धता के अनुसार, हाथी मौसमी प्रवास करते है वे कई घटे भोजन करने मे बिताते हैं और एक दिन मे 225 किग्रा घास और अन्य वनस्पति खा सकते है एशियाई हाथी अफ्रीकी हाथी की तुलना मे छोटा होता है और उसके शरीर का उच्चतम बिदु कधे के बजाय सिर होता है सामने के पैरो पर नाखून जैसी पाच सरचनाए और पिछले पैरो पर चार सरचनाए होती हैं आमतौर पर सिर्फ नरो के ही गजदत होते है, जबकि अफ्रीकी हाथियो मे नर और मादा, दोनो मे गजदत पाए जाते है हाथियो मे घ्राणशक्ति अत्यत विकसित होती है और इसके जरिये वे खतरो का पता लगाते है तथा बास के घन झुडो मे नरम कोपल जैसे मनपसद आहार ढूढते है खाते समय हाथी इस प्रकार खडे होते हे कि सबसे बडी हथिनी हवा की दिशा मे खडी हो और बच्चे उसे ढूढ सके

एशियाई हाथी किसी भी समय भोजन कर सकते है, लेकिन 24 घटो मे दो मुख्य भोजनकाल होते है. वयस्को की गतिविधियों का 72 से 90 प्रतिशत हिस्सा भोजन ढूढने और उसे खाने मे बीतता है एक वयस्क हाथी एक घटे मे सात किग्रा भोजन ग्रहण कर सकता है और वे प्रतिदिन 18 घटे भोजन करते है, इस प्रकार वे प्रतिदिन 150 किग्रा वनस्पति सामग्री (आर्द्र वजन) का भक्षण करते है दक्षिण भारत मे एक

अध्ययन मे पाया गया कि हाथी पौधो की कम से कम 112 किस्म की प्रजातिया खाते है, लेकिन उनके आहार का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा मॉलवेल्स गण और लेगुमिनसी पाल्मे, साइपरेसी और ग्रामिनी परिवार की सिर्फ 25 प्रजातियो पर आधारित है अध्ययन से पता चला कि आर्द्र मौसम की शुरुआत मे ये प्रोटीन युक्त घास खाते है और जब शुष्क मौसम मे घास बडी हो जाती है, तब आहार मे कोपलो की प्रधानता रहती है चूकि खेत मे पैदा होने वाले खाद्यान्न तथा मिलेट फसलो मे जगली घास की अपेक्षा अधिक प्रोटीन, कैल्शियम ओर सोडियम होता है, इसलिए वे प्राय खेतो पर भी धावा बोल देते है लेकिन चाहे खेत जगलो के पास स्थित क्यो न हो, सभी हाथी फसलो मे घुसपैठ नही करते हाथी, मिट्टी से सोडियम और पेड की छालो से भी कैल्शियम प्राप्त करते है ये दिन मे कम से कम एक बार पानी अवश्य पीते है और ताजे पानी के स्थायी स्रोतो से कभी बहुत दूर नही जाते दिन के गर्म समय मे इनके लिए छाव अनिवार्य हे हाथी अपने कानो के जरिय ऊष्मा का विकिरण करते है ओर इनके कानो के फडफडाने की दर हवा के वेग, परिवेश के तापमान तथा बादलो की स्थिति के अनुसार बदलती रहती है

पारिवारिक इकाई

दोनो ही प्रजातियो की हथिनियो मे उसी झुड मे रहने की प्रवृत्ति होती है, जिसमे उनका जन्म हुआ हो हाथियो के सामाजिक सगठन की आधारभूत इकाई पारिवारिक समूह है, जिसमे दो से आठ हाथी हो सकते है कई समूह मिलकर एक झुड या कुल का निर्माण करते है तथा कई कुलो से किसी क्षेत्र मे हाथियो की सख्या का निर्धारण होता है झुड मातृवशीय आधार पर सगठित होता है और सबसे बडी व अनुभवी मादा इसके सचालन की देखरेख करती है लेकिन सबसे मजबूत बधन मादा और उसके नवजात बच्चे का होती है चार वर्ष की आयु मे युवा नर मुख्य झुड से अलग स्वतत्र गतिविधिया शुरू कर देते है सात से आठ वर्ष की आयु मे वे झुड की मादाओ के साथ कम समय व्यतीत करते है तथा अपनी उम्र के या अपने से बडे नरो के साथ अस्थायी रूप से सपर्क स्थापित करते है एशियाई नर हाथियो के सबसे बडे झुड मे सात सदस्य होते हैं नर 14 से 15 वर्ष की आयु मे यौन परिपक्वता हासिल कर लेते है और मादाए 15 या 16 वर्ष की आयु मे पहले बच्चे को जन्म देती है

वयस्क नर तब तक किसी झुड से सबद्ध नही होता है, जब तक झुड मे मैथुन के लिए तैयार कोई हथिनी मौजूद न हो दिखावटी सघर्ष और अन्य सामान्य मुकाबलो से नर एक–दूसरे की शक्ति का अनुमान लगाते है, इसलिए मादाओ के लिए गभीर सघर्ष शायद ही कभी होते है 20 वर्ष की अवस्था म नर के शरीर का पूर्ण विकास हो जाता है परिपक्व हाथी हर साल एक बार मद की स्थिति मे आता है, जिसके दौरान उसकी आखो के पीछे स्थित ग्रथियो से स्राव होता है वे आक्रामक हो जाते है और मादाओ के साथ रहने लगते है, जिसके बाद सहवास होता है मद की तुलना अन्य खुरदार

पशुओ के मैथुन काल से की जा सकती है नर हाथी कभी भी सहवास कर सकते है, लेकिन मदकाल मे उनकी यौन उत्तेजना बढ जाती है

हथिनियो मे गर्भावस्था 18 से 22 महीने तक की होती है अतिम चरण को छोडकर अन्य समय मे गर्भ का बाहर से पता नही चलता है गर्भावधि के अत मे स्तनो मे सूजन आ जाती है, थन फूल जाते है और उनसे पानी जैसे द्रव का रिसाव भी हो सकता है प्रसव पीडा कम समय से लेकर कई घटो की हो सकती है, लेकिन प्रसव लगभग पाच मिनट मे ही हो जाता है मादा आमतौर पर प्रसव के समय निकलने वाले पदार्थो को खा जाती है

बच्चो का जन्म साल के किसी भी मौसम मे हो सकता है, लेकिन अधिकाश बच्चे वर्षा ऋतु के अतिम दिनो मे पैदा होते है आमतौर पर एक ही बच्चा जन्म लेता है और कभी–कभार ही जुडवा या तीन बच्चो का जन्म होता है अनुकूल पर्यावास मे दो बच्चो के बीच का अतर 2 5–4 वर्ष होता है कम अनुकूल क्षेत्रो मे यह अतराल 5 से 8 वर्ष तक का हो सकता है नवजात का वजन 100 किग्रा (80 से 110 किग्रा तक) और कधे तक ऊचाई 75 से 90 सेमी होती है वयस्को के मुकाबले बच्चो के शरीर पर काफी बाल होते है शिशु प्राय माता की सहायता से सीध थन पर मुह लगाकर (सूड के जरिये नही) दूध पीते है, और अपनी मा या अन्य दुग्धपान करा सकने वाली मादाओ का दूध पीते है डेढ महीने से बच्चे ठोस आहार लेना शुरू कर देते है और वे वयस्को से उचित भोजन के बारे मे सीखते है प्राय बच्चे अपनी मा की लीद भी खा लेते है, जिससे सेल्युलोज पचाने मे सहायक सहजीवी बैक्टीरिया उनके जठरात्र मे पहुच जाता है

मृत्यु

हाथियो की मृत्यु छोटी अवस्था मे अन्य पशुओ द्वारा उन्हे मारकर खाने, रोग और परजीवी, दुर्घटनाओ, सूखा, तनाव, शिकार, वृद्धावस्था और आपसी सघर्ष के कारण होती है जब हाथी की छह चर्वणक दतावलियो मे से अतिम दतावली भी घिस जाती है तो वह भूख से मर जाता है, ऐसा आमतौर पर 50 वर्ष (जीवन भर सेलखडी और घास के पौष्टिक आहार के बाद) से 65 वर्ष (कई प्रकार की रसदार वनस्पतियो के आहार के बाद) के बीच होता है

झुड तथा नरो का गृहक्षेत्र 60 से 500 वर्ग किमी तक होता है, इसलिए इनके सरक्षण के सफल उपाय के लिए विभिन्न प्रकार की वनस्पतियो और पर्याप्त स्वच्छ जल वाले विशाल क्षेत्र की आवश्यकता होती है हाथियो के पर्यावास के अदर और उसके किनारे पर मानव आबादी के फलस्वरूप हाथी और मनुष्यो मे सघर्ष से हाथी व मनुष्य, दोनो की ही जानो का नुकसान होता है भारत मे प्रतिवर्ष लगभग 300 लोग हाथियो द्वारा मारे जाते है और 200 हाथी अवैध शिकार, फसल रक्षा और दुर्घटनाओ के कारण मरते हे

हाथी अपने पर्यावास के विनाश और मनुष्यों द्वारा शोषण के कारण गहरे संकट में है भारतीय हाथी को विलुप्तप्राय प्रजाति माना गया है और अफ्रीकी हाथी संकटग्रस्त वर्ग में है अफ्रीकी हाथी को प्रमुख खतरा हाथीदांत के व्यापार के कारण होने वाले अवैध शिकार से है चूंकि मादा एशियाई हाथी के गजदंत नहीं होते और सिर्फ मांस के लिए शिकार आमतौर पर नहीं होता, इसलिए वे सुरक्षित हैं लेकिन हाथीदांत के लिए नर एशियाई हाथियों के शिकार के कारण दक्षिण भारत के कई इलाकों में वयस्कों का लैंगिक अनुपात बिगड़ गया है कुछ इलाकों में गजदंत वाले नर की अनुपस्थिति में गजदंतहीन नर (जिसे मखना कहा जाता है) प्रजनन कर सकता है लेकिन कुछ इलाकों में बहुत कम गजदंतहीन नर है, इसलिए अंततः स्थिति यह है कि सभी मादाओं के साथ सहवास के लिए किसी भी प्रकार के नरों की संख्या काफी नहीं है. 1999 में दक्षिण भारत के सबसे अधिक अवैध शिकार प्रभावित पेरियार व्याघ्र अभयारण्य में यह लिंग अनुपात 100 मादाओं पर एक नर का था. दूसरी तरफ हिमालय के निचले क्षेत्रों के राजाजी कॉर्बेट अभयारण्य में यह अनुपात 2.5 मादाओं पर एक हाथी का है और वहां 90 प्रतिशत से अधिक वयस्क मादाओं के साथ 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चे थे भारत सरकार द्वारा 1992 में शुरू की गई हाथी परियोजना उनके पर्यावास विखंडन, पर्यावास क्षरण, शिकार–चोरी और हाथी–मानव संघर्ष जैसी समस्याओं को दूर करने का एक प्रयास है

वन्यजीव अभयारण्यों में हाथियों की संख्या आवश्यकता से अधिक भी हो सकती है जिससे उनके पर्यावास को और नुकसान हो सकता है इसलिए सीमित संख्या में उन्हें मार डालने की भी जरूरत होती है संरक्षण के उपायों में अवैध शिकारियों से सुरक्षा और प्रमुख प्रवासी मार्ग की रक्षा के लिए पगडंडियों समेत बड़े अभयारण्यों की स्थापना भी शामिल है

हारमोनियम

पेटी या रीड ऑर्गन भी कहलाता है मुक्त पत्ती वाला कुंजी–फलक वाद्य, जो हाथ या पैर से संचालित धौंकनी के द्वारा दबाव–समकारी वायु भंडार से हवा फेंकता है, जो धातु के खांचों में कसी गई धातु–पत्तियों को कंपन देती है और वाद्य बजता है इसमें कोई नलिका नहीं होती है और स्वर पत्ती के आकार पर निर्भर करता है पत्तियों के अलग–अलग समूह भिन्न सुर देते हैं, ध्वनि की गुणवत्ता समूह की प्रत्येक पत्ती के चारों ओर वाले सुर–कक्ष के विशिष्ट आकार एवं आकृति पर निर्भर करती है उदाहरणस्वरूप, संकुचित कक्ष शक्तिशाली कंपन एवं तीक्ष्ण सुर निकालते हैं सुर की प्रबलता घुटने से संचालित वायु कपाट या सीधे धौंकनी पैडल को रोककर, नियंत्रित की जाती है, ताकि हवा आधार के बाहर से गुजरे वाद्य का विस्तार सामान्यतः चार या पांच सप्तक होता है

हारमोनियम समूह का सबसे पहला बाजा फिसहार्मोनिका था, जिसका निर्माण 1818 में वियना में एंटन हिक्ल ने किया था इसे चीन के माउथ ऑर्गन या शेंग से प्रेरणा मिली
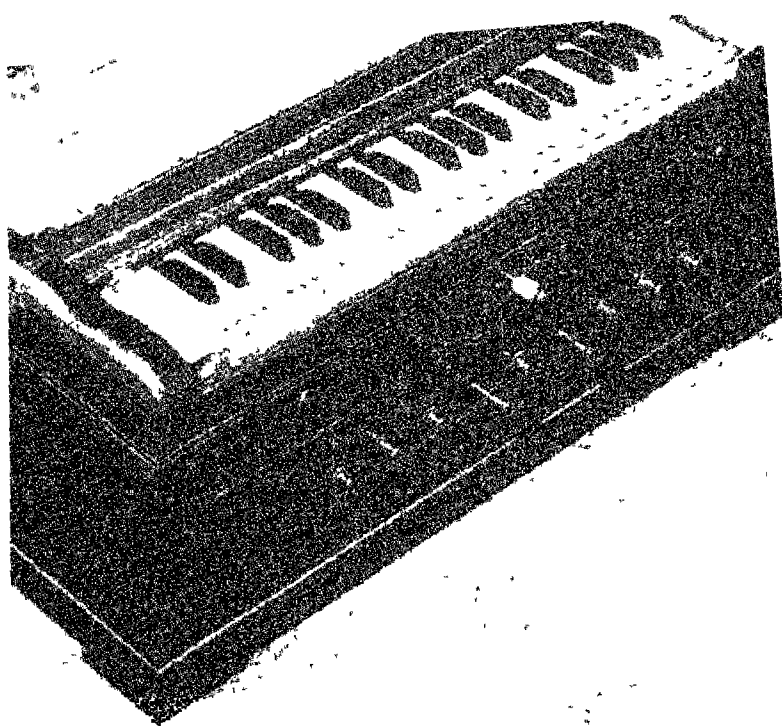
म रूस लाया गया था, जिसने यूरोप को मुक्त पत्ती से परिचित
नैकशास्त्रियो एव सगीतज्ञो मे रुचि जगाई अब विलुप्त अन्य
न का सेराफीइन) 1840 मे पेरिस मे अलेक्जाद्रे दिबेन द्वारा
पहले अस्तित्व म थी 1850 के बाद मुख्य सुधार पेरिस मे
मेरिका मे जेकब एस्टे ने किया

गिरिजाघर एव घरेलू वाद्य यत्र रहा, जब तक कि 1930 के
नेक बाजे ने उसे बाजार से बाहर नही कर दिया इस वाद्य यत्र
ओ मे फ्रासीसी सगीतकार सेजार फ्रोक व लुइ वेर्ने की कई
ई सगीतज्ञ एतोनियन द्वोरजाक की दो वॉयलिन, चेलो एव
ातुर्वाद्य–रचना शामिल है

हारूत और मारूत

इस्लामी पौराणिक कथाओ के अनुसार, दो फरिश्ते-- जो अनजाने मे बुराई के स्वामी बन गए पृथ्वी पर मनुष्यो द्वारा किए जा रहे पापो को देखने के बाद फरिश्तो के एक समूह ने मनुष्य की कमजोरियो का मजाक उड़ाना शुरू कर दिया खुदा न घोषणा की कि वैसी परिस्थितियो मे वे भी ऐसा ही करेगे और प्रस्ताव रखा कि कुछ फरिश्तो को पृथ्वी पर भेजकर देखा जाए कि वे बुतपरस्ती, कत्ल, व्यभिचार तथा शराब का कितनी सफलता से प्रतिरोध कर पाते है हारूत और मारूत नाम के दो फरिश्ते जैसे ही पृथ्वी पर उतरे, व एक सुदर स्त्री पर मोहित हो गए इसके बाद जब उन्होने देखा कि उनके पाप का एक गवाह है, तो उन्होने उसे मार डाला इसके बाद स्वर्ग के फरिश्तो को स्वीकार करना पडा कि खुदा वस्तुत सही थे, जबकि पतित फरिश्तो को उनके पापो के लिए या तो पृथ्वी पर या फिर नरक मे प्रायश्चित करने की सजा मिली हारूत और मारूत ने पृथ्वी पर दड झेलना स्वीकार किया और उन्हे श्राप दिया गया कि वे बेबीलोनिया के एक कुए म कयामत के दिन तक अपने पैरो से उलटे लटके रहे

हारूत और मारूत का पहला उल्लेख *कुरान* मे (2 102) दो फरिश्तो के रूप मे मिलता है, जो बेबीलोन मे बुराई फैला रहे थे यह कथा सभवत यह दर्शाने के लिए रची गई कि वे इस दशा मे कैसे पहुचे यह कहानी अपने आप में शेमहजाई, उज्जा और अजेल नामक दो पतित फरिश्तो की यहूदी कथा के समानातर है हारूत और मारूत नामो की उत्पत्ति की दृष्टि से पारसी महादेवदूत हारूवतात और अमेरेतात से सबधित प्रतीत होती है

हार्डिंग, चार्ल्स

(ज--20 जून, 1858, लदन, इंग्लैड, मृ--2 अग 1944, पेसहर्स्ट, केंट), ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ और भारत के वाइसरॉय, जिन्होने प्रथम विश्वयुद्ध मे ब्रिटेन के लिए भारत का समर्थन जुटाने मे प्रमुख भूमिका निभाई 1844–48 मे भारत के गवर्नर–जनरल रहे लॉर्ड हार्डिंग के पोते चार्ल्स हार्डिग ने 1880 मे राजनयिक सेवा मे प्रवेश किया 1904 मे उन्हे रूस मे राजदूत नियुक्त किया गया और 1906 मे विदेशी मामलो का स्थायी अवर सचिव बनाया गया तथा कुलीन वर्ग मे शामिल करके 1910 मे उन्हे भारत का वाइसरॉय नियुक्त किया गया उनकी सरकार ने लॉर्ड कर्जन के बगाल विभाजन के अलोकप्रिय फैसले को बदल दिया और 1911 मे सम्राट जॉर्ज पचम तथा उनकी महारानी की यात्रा के अवसर पर भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली लाने की घोषणा की हार्डिंग के प्रशासन के प्रारभिक दौर मे राजनीतिक उठापटक और आतकवाद का सिलसिला रहा, 1912 मे दिल्ली मे उनके राजकीय प्रवेश के दौरान फेके गए बम से हार्डिग खुद भी घायल हो गए, लेकिन उनके वाइसरॉय काल मे सरकार और भारतीय राष्ट्रवादियो के सबधो मे काफी सुधार हुआ इसके कारणो मे 1909 का भारतीय परिषद अधिनियम (इडियन काउसिल्स ऐक्ट, जिसे मॉर्ले--मिटो सुधारो के नाम से भी जाना जाता था) पारित होना, दक्षिण अफ्रीका के भारतीय--

विरोधी आव्रजन अधिनियम की हार्डिंग द्वारा आलोचना और भारत मे मोहनदास करमचद गाधी के निष्क्रिय प्रतिरोध के आदोलन के प्रति सहानुभूति व्यक्त किया जाना प्रमुख है

प्रथम विश्व युद्ध (अग 1914) शुरू होने पर हार्डिग ने हर उपलब्ध यूरोपीय सैनिक को तथा बडी सख्या मे भारतीय सैनिको को ब्रिटिश कमान मे भेज दिया और इस प्रकार स्थानीय सहयोग हासिल किया 1916 मे इग्लैड लौटने पर उन्हे फिर विदेश मामलो का स्थायी अवर सचिव बना दिया गया मेसोपोटामिया के असफल अभियान के कारण हुई उनकी आलोचना के बाद इस्तीफा देने का उनका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया गया 1920 मे हार्डिंग पेरिस मे राजदूत बने और 1922 मे वह सेवानिवृत्त हो गए 1948 मे उनके सस्मरणो की एक पुस्तक *माई इडियन इयर्स, 1910–1916* प्रकाशित की गई

हाल

(अरबी शब्द, अर्थात अवस्था या स्थिति), बहुवचन अह्वाल सूफी मुस्लिम आध्यात्मिक पारिभाषिक शब्दावली में परमात्मा की ओर जाने वाले मार्ग मे समय–समय पर आने वाली आध्यात्मिक मानसिक अवस्था अह्वाल परमात्मा की कृपा है, जिसे एक व्यक्ति अपने प्रयासो के माध्यम से प्राप्त नही कर सकता जब भौतिक विश्व से अपने लगाव की अवस्था से आत्मा शुद्ध हो जाती है, तभी वह परमात्मा के उन आध्यात्मिक उपहारो की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर सकता है इन उपहारो के मिलने पर सूफी नई ऊर्जा व उच्च आकाक्षाओ के साथ अपनी यात्रा जारी करने की इच्छा से भर जाता है अधिकाश सूफी दो प्रमुख फलों अह्वाल व मुकाम (आध्यात्मिक अवस्था) के बीच विभेद किया करते है पहला, अह्वाल आमतौर पर अस्थायी (क्षणिक) होते है, ठीक बिजली की चमक की तरह वे हृदय मे आते है और गायब हो जाते है दूसरा जब अह्वाल खुदा की कृपा को चिह्नित करता है, तब मुकाम योग्यता व प्रयास के आधार पर प्राप्त होते है

यद्यपि सूफियो ने सैकडो अह्वालो की बात की है, निम्नलिखित का इनमे से सर्वाधिक उल्लेख होता है

1 मुराकबाह (अवलोकन) का हाल सूफी को परमात्मा के उद्घाटित आयाम के मुताबिक भय या प्रसन्नता से भर देता है

2 कुर्ब (निकटता) का हाल एक ऐसी अवस्था है, जो सूफी को उसके अपने काम के प्रति अचेतन कर देती है और उसे सिर्फ परमात्मा के कार्य व अपने प्रति परमात्मा की कृपा दिखाई देती है

3 वज्द (भावातिरेक) का हाल, एक ऐसी अवस्था है, जिसका उल्लेख सूफी एक ऐसी अनुभूति के रूप में करते है, जो हृदय से टकराकर दु ख या खुशी, डर या प्रेम, सतुष्टि या बेचैनी जैसे विभिन्न प्रभाव पैदा करती है

4 सुक्र (उन्माद) का हाल, जिसमे सूफी अपने आसपास से पूरी तरह अनजान नही होता, लेकिन अर्द्ध स्तब्ध हो जाता है, क्योकि परमात्मा के साथ उसका जुडाव

बाकी चीजो को देखने की उसकी दृष्टि को धुधला देता है इस अवस्था मे अपने प्रिय के प्रति दृढ भावना शारीरिक पीडा और प्रसन्नता के बीच भेद करने की सूफी की क्षमता को नष्ट कर देती है सुक्र के ठीक बाद साह्व (सयम) आता है, लेकिन पूर्व अनुभव की यादे सजीव रहती है और अत्यधिक आध्यात्मिक प्रसन्नता का स्रोत बनती है

5 वुद (घनिष्ठता) के हाल मे अधीरता और अटल विस्मय खत्म होता है सूफी शात, सतुष्ट व आश्वस्त हो जाता है, लेकिन दिव्य उपस्थिति की अत्यधिक भावना उसके हृदय को एसे विस्मय से भर देती है, जो भयमुक्त है

हासन

नगर, दक्षिण–मध्य कर्नाटक (भूतपूर्व मैसूर) राज्य, दक्षिण–पश्चिम भारत 940 मीटर की ऊचाई पर स्थित इस नगर की जलवायु सर्द और आर्द्र है 12वी सदी से बसा यह नगर अब एक व्यापारिक केद्र है और अर्सिकर से मैसूर जाने वाली रेलवे लाइन से जुडा है नगर के मुख्य उद्योगो मे अनेक चावल मिले और इजीनियरिंग व सीमेट उद्योग शामिल है हासन मे एक सरकारी महाविद्यालय है और अन्य महाविद्यालय मैसूर विश्वविद्यालय से सबद्ध हैं इसके आसपास के इलाको मे उगाई जाने वाली मुख्य फसलो मे कॉफी, इलायची, ज्वार–बाजरा, तिलहन, चावल, गन्ना और कपास शामिल है अधिकतर कृषक इस नगर मे रहते है जनसख्या (2001) नगर 1,17,386, जिला कुल 17,21,319

हिद मज़दूर सभा (एच.एम एस.)

अखिल भारतीय मजदूर सघ और भारतीय राष्ट्रीय मजदूर सघ के बाद भारत का तीसरा सबसे बडा मजदूर महासघ एच एम एस का गठन 1948 मे समाजवादियों द्वारा किया गया था, लेकिन समाजवादी पार्टी से इसके वास्तविक सपर्क बहुत कम है यह भारत का सबसे कम राजनीतिक और व्यावहारिक श्रमिक सगठन है एच एम एस स्वतत्र श्रमिक सगठनो के अतर्राष्ट्रीय परिसघ से सबद्ध है

हिद महासागर

खारे पानी का जलाशय, विश्व के कुल महासागरीय क्षेत्र का लगभग पाचवा भाग यह विश्व के तीन प्रमुख महासागरो मे सबसे छोटा, सबसे नया एव भौतिक रूप म सबसे जटिल है यह अफ्रीका के दक्षिणी सिरे एव ऑस्ट्रेलिया के बीच 10 हजार किमी से अधिक फैला हुआ है तथा अपने उपातिक सागरो को छोडकर इसका क्षेत्रफल लगभग 7,34,40,000 वर्ग किमी है हिद महासागर की औसत गहराई 3,890 मीटर और इसकी अधिकतम गहराई जावा के दक्षिणी तट के पास जावा खाई के सुडा नितल मे 7,450 मीटर है

अन्य किसी महासागरीय विस्तार की तरह हिद महासागर की सीमा का भी निर्धारण करना कठिन है परपरानुसार यह उत्तर मे ईरान, पाकिस्तान, भारत, बाग्लादेश और
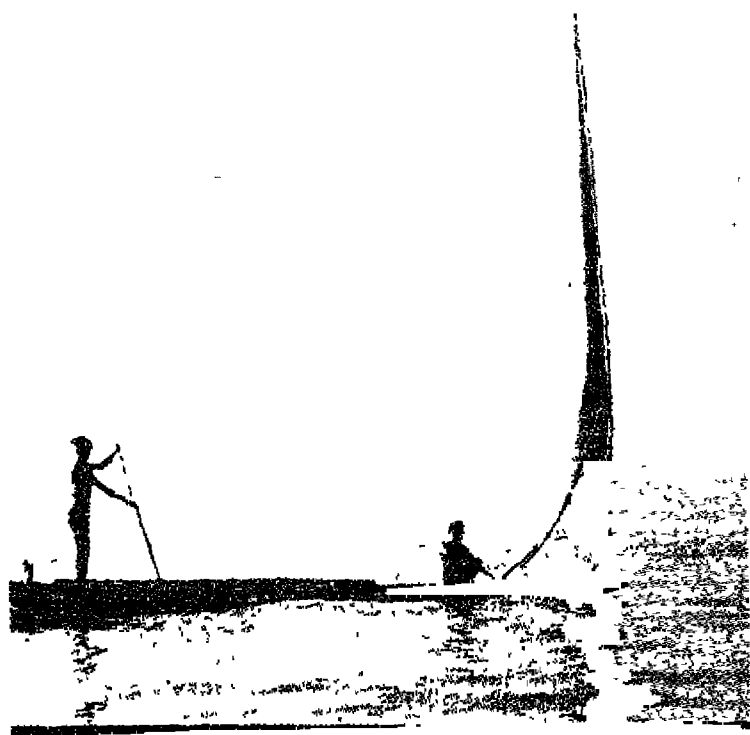
मे मछुआरे

पूर्व मे मलय प्रायद्वीप, इडोनेशिया के सुडा द्वीप समूह एव
अटार्कटिका तथा पश्चिम मे अफ्रीका और अरब प्रायद्वीप से घिरा
ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी सिरे के बीच फैले द्वीपो की श्रृखला वाले
र एव प्रशांत महासागर की सीमा सर्वाधिक अनिश्चित है
के पश्चिम की ओर के जलक्षेत्र को हिद महासागर का हिस्सा
–पश्चिम मे अफ्रीका के दक्षिणी सिरे के दक्षिण मे इसका जल
जल से मिलता हे

ा प्रमुख महासागरो की तुलना मे सबसे कम सागर है. उत्तर की
सागर व फारस की खाडी, पश्चिमोत्तर मे अरब सागर तथा
सागर है पश्चिमोत्तर मे अदन एव ओमान की बडी खाडिया,
ी खाडी तथा ऑस्ट्रेलिया के दक्षिणी तट के पास विशाल
है हिंद महासागर अटलाटिका एव प्रशात महासागरो से कई
त्तरी गोलार्द्ध मे यह भूमि से घिरा हे, आर्कटिक के जल तक
इसकी प्रकृति शीतोष्ण से शीतकटिबधीय नही है इसके पास
और सकरे महाद्वीपीय तट हैं. यह एकमात्र विषम और उत्तर मे
ी जलधारा वाला महासागर है इसका अलग से भूमिगत जल
हासागर का भूमिगत जल इसकी सीमाओ के बाहर से आता है)
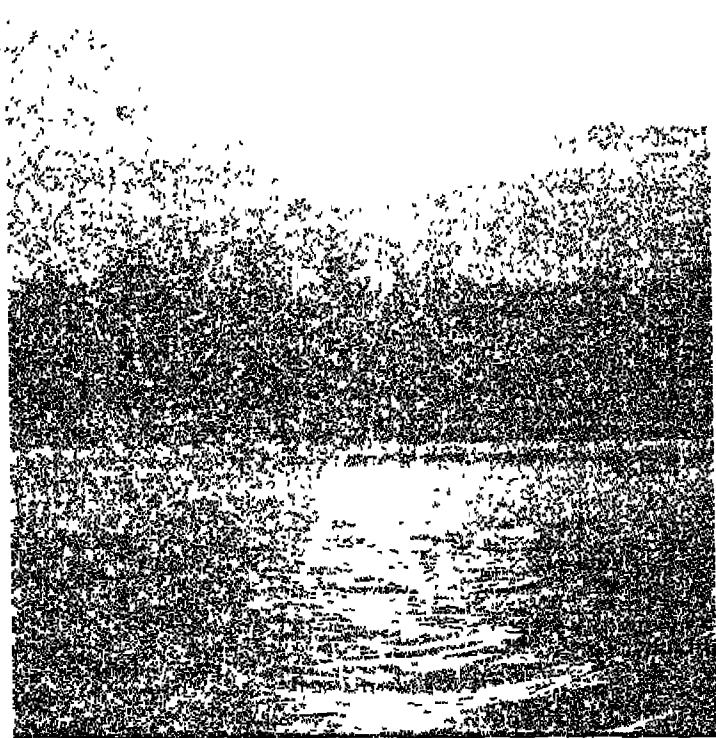
मुद्र तट पर सूर्योदय का दृश्य
सुफ सईद

और अत्यधिक खारेपन वाले जल के दो स्रोत (फारस की खा
विशेषकर उत्तर में पृष्ठ जल के नीचे इस महासागर के पानी
है

भू–आकृति एवं भू–विज्ञान

उत्पत्ति

हिंद महासागर की उत्पत्ति एवं विकास तीन प्रमुख महासागरो
है इसका निर्माण करीब 15 करोड वर्ष पहले दक्षिणी विशाल
या गोंडवानालैंड के विखंडन से हुआ लगभग 12.5 करोड वर्ष
एक हिस्से ने पूर्वोत्तर की ओर खिसकना प्रारंभ किया और लग
भारतीय उपमहाद्वीप की यूरेशिया से टक्कर की शुरुआत हुई
पहले अफ्रीका के पश्चिम की ओर सरकने और ऑस्ट्रेलिया व
होने से हिंद महासागर का निर्माण हुआ. 3.6 करोड साल
वर्तमान आकार प्राप्त किया हालाकि लगभग 12.5 करोड व
शुरु हुआ, लेकिन लगभग समूची हिंद महासागर द्रोणी 8 करो

एक जहाज

विभग क्षेत्र

ाड–खाबड, भूकप सक्रिय पर्वत शृखला के बने होते है, जो
कटक प्रणाली का हिस्सा है और अभी भी कई स्थानो पर
केद्र इसमे है ये कटक महासागर अधस्तल पर उल्टे वाई का
। पश्चिमोत्तर मे अरब सागर मे कार्ल्सबर्ग कटक से शुरू होकर,
' चागोस–लक्षद्वीप पठार से गुजरते हुए, मध्य–हिद (या मध्य
ाता है मेडागास्कर के दक्षिण–पूर्व मे कटक विभाजित होता है
टक दक्षिण–पश्चिम की ओर बढता है तथा अफ्रीका के दक्षिण
टक मे इसका विलय हो जाता है दक्षिण–पूर्व हिद कटक पूर्व
स्मानिया के दक्षिण मे प्रशात–अटार्कटिका कटक से मिलता है
गरो मे सर्वाधिक लबा एव सबसे सीधा गैर भूकपीय (वस्तुत
कटक विलक्षण हे सबसे पहले 1962 मे खोजा गया यह कटक
ुए भूमध्य रेखा से 90° पूर्व की ओर (इसीलिए इसका यह नाम
है जो क्षेत्रीय ब्रोकन रिज से 31° दक्षिण से 9° उत्तर मे है और
की खाडी के अवसाद के नीचे तक देखा जा सकता है

ागर पर सूर्यास्त का दृश्य
ातम रामचंदानी

समुद्र--पर्वत

ये मृत अंत सागरीय ज्वालामुखी है, जो शक्वाकार एव सामान्य
वे समुद्रगर्भीय मैदान से अचानक उठकर समुद्र तल से कम
ऊंचाई तक पहुच जाते है हिंद महासागर मे समुद्र पर्वत ि
बेसिन मे रीयूनियन एव सेशल्स के बीच तथा व्हार्टन बेसिन
समूह के पास बहुतायत मे है बार्डिन, कोहलर, निकिटिन ।
इसके कुछ उदाहरण है

महासागरीय द्रोणिया

महासागरीय द्रोणियो की विशिष्टताओ मे महासागरीय कट
मोटी परत वाले अवसादो के समतलीय मैदानो के साथ समुद्र
1,006 मीटर से कम) है हिंद महासागर की जटिल कट
फलस्वरूप 322 किमी से 9,010 किमी तक चौडी कई द्रोणिया
से दक्षिण तक इनमे पश्चिम मे अरब, सोमाली, मैसकरीन
अगुल्हास, और क्रोजेट द्रोणी तथा पूर्व में मध्य हिंद (सबसे
ऑस्ट्रेलियाई द्रोणिया शामिल है

जरत जहाज
द

न ढाल तथा तट

इंद महासागर मे लगभग 121 किमी की औसत चौडाई तक फैला हुआ
एव पश्चिमोत्तर ऑस्ट्रेलिया के पास अधिकतम चोडाई 306 किमी है
ग 305 मीटर ही चौडे है तट के कटाव करीब 140 मीटर की गहराई
ोय घाटिया (खड्ड) कटाव के नीचे गड्ढा बनाकर खडी ढाल का निर्माण
सिधु एव जाबेजी नदियो ने विशेष रूप से बडी घाटिया काटी है
निक्षेप का विस्तार तट से काफी आगे है, जो ढाल की तलहटी पर
र्माण करते है तथा अपनी द्रोणियो के समुद्रतलीय मैदानो के निर्माण
ो है गगा अवसाद शकु विश्व मे सर्वाधिक चौडा व मोटा है

न विश्व के किसी भी महासागर से कम खाइया है सकरी (80 किमी)
। भूकप सक्रिय जावा खाई विश्व की दूसरी सबसे लबी खाई है, जो
-पश्चिम से उत्तर की ओर सुमात्रा के पार सुडा खाई तक 2,574 किमी
स्तृत है और यह अडमान–निकोबार द्वीप समूह तक विस्तारित है

तलीय निक्षेप

हिंद महासागर मे नदियां द्वारा लाई जाने वाली निलंबित अवसादो की भारी मात्रा तीनो महासागरो मे से सबसे अधिक है इनमे से लगभग आधा केवल भारतीय महाद्वीप से आता है ये स्थलजात अवसाद मुख्य रूप से महाद्वीपीय तटो, ढालो तथा उत्थानो पर पाए जाते है और समुद्रगर्भीय मैदानो मे मिल जाते है बगाल की खाडी, अरब सागर तथा सोमाली एव मोजाबिक द्रोणियो मे कम से कम 1 6 किमी मोटे शकु पाए जात है उत्तरी ऑस्ट्रेलिया के पास व्हार्टन बेसिन मे सबस पुराने अवसाद है गगा, ब्रह्मपुत्र शकु मे अवसाद मोटाई मे 11 किमी से अधिक है तथा यह 10° दक्षिण तक फैला हुआ है द्वीपो एव महाद्वीपो से 10° उत्तर से 40° दक्षिण तक गहरे समुद्र मे भूरे व लाल चिकनी मिट्टी के अवसादो की बहुतायत है, जो 305 मीटर मोटे है उच्च महासागरीय उत्पादकता वाले भूमध्य रेखा क्षेत्र मे कैल्शियम तथा सिलिकायुक्त गाद काफी मात्रा मे है

सतह के लक्षण

हिंद महासागर मे कई सुपरिभाषित तटीय आकृतिया पाई जाती है मुहाने, डेल्टा लवण दलदल, मैंग्रोव, अनूप (लैगून), खडी चट्टाने (क्लिफ), प्रवाल भित्तिया तथा रोधिका द्वीपो के समूह, समुद्र तट एव रेतीले टीलो के जटिल सघ विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण मुहाना तत्र हुगली निकाय है, जो कोलकाता (भूतपूर्व कलकत्ता) के पास बगाल की खाडी पर हुगली नदी की तीन धाराओ द्वारा निर्मित है पाकिस्तान मे सबसे विवर्तनिक सक्रिय तटो मे से एक तट है, जिसमे 193 किमी चौडा सिधु नदी डेल्टा शामिल है इसमे कीचड एव लवणीय कचरा अक्सर बडी मात्रा मे आ जाता है भारतीय महाद्वीप मे समुद्रतटीय क्षेत्र सर्वाधिक विस्तृत है (तटवर्ती रेखा के आधे से अधिक) अधिकतर मुहानो व नदीमुख भूमि मे मैंग्रोव पाए जाते है गगा नदीमुख भूमि के निचले हिस्से मे सुदरबन मे विश्व का सबसे बडा मैंग्रोव वन है प्रवाल भित्तिया तटीय या रोधिका या प्रवाल द्वीप स्वरूप मे– उष्णकटिबध मे द्वीप के चारो ओर बहुतायत मे है तथा बाग्लादेश, म्यामार और भारत के दक्षिणी तटो पर और अफ्रीका के पूर्वी तट पर पाए जाते है

द्वीप

हिंद महासागर मे कुछ द्वीप है मेडागास्कर विश्व मे चौथा सबसे बडा द्वीप है और मालदीव, सेशल्स, सोकोत्रा व श्रीलका बडे द्वीपो मे से है अन्य द्वीप एमिरेट, अडमान निकोबार, चागोस, लक्षद्वीप (लक्कदीव, मिनिकॉय, व एमिदवी द्वीप), क्रिसमस, कोको कोमोरो, क्रोजेट, फर्क्युहर, कर्गुएलेन, मॉरीशस, प्रिस एडवर्ड, रीयूनियन, सेट पॉल ओर एम्स्टर्डम तथा सुडा द्वीप सहित ज्वालामुखी मूल वाले है इनमे से कुछ मे प्रवाल भित्तियो की मालाए है अडमान एव सुडा कटे हुए घुमावदार खाइयो वाले द्वीप समूह है, जिनमे खाइया चाप से महासागर की ओर है

जलवायु

हिंद महासागर को वायुमंडलीय प्रवाह के आधार पर चार सामान्य अक्षांशीय जलवायु क्षेत्रों में बांटा जा सकता है

मॉनसून क्षेत्र

प्रथम क्षेत्र, 10° दक्षिण से उत्तर की ओर विस्तारित, मॉनसून जलवायु वाला (जिसकी विशेषता अर्द्ध वार्षिक प्रतिवर्ती हवाएं हैं) है उत्तरी गोलार्द्ध के 'ग्रीष्म' (मई से अक्तू) में एशिया के ऊपर कम वायुदाब तथा ऑस्ट्रेलिया के ऊपर उच्च दाब के कारण 45 किमी प्रति घंटे की गति वाली हवा के साथ दक्षिण–पश्चिम मॉनसून आता है और दक्षिण एशिया में बारिश होती है उत्तरी 'शीत' (नव से अप्रै) के दौरान एशिया के ऊपर उच्च दाब एवं 10° दक्षिण से उत्तरी ऑस्ट्रेलिया तक निम्न दाब के कारण पूर्वोत्तर मॉनसूनी हवाओं से दक्षिणी इंडोनेशिया एवं उत्तरी ऑस्ट्रेलिया में बारिश होती है इस क्षेत्र में विनाशकारी चक्रवात आते हैं, जो खुले समुद्र के ऊपर बनते हैं तथा आमतौर पर पश्चिम की ओर तट की तरफ बढते हैं ये चक्रवात विशेष रूप से दक्षिण–पश्चिमी मॉनसूनी वर्षा से पहले व बाद में आते हैं और पश्चिममुखी तट आमतौर पर इससे सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं इस क्षेत्र के पश्चिमोत्तर हिस्से की जलवायु सबसे अधिक शुष्क है कुछ इलाकों में हर साल 250 मिमी से कम वर्षा होती है; इसके विपरीत विषुवतीय क्षेत्र सबसे अधिक नम है, जहां औसत वर्षा 2,032 मिमी से ज्यादा होती है

व्यापारिक पवन क्षेत्र

दूसरा क्षेत्र, व्यापारिक पवन का 10° और 30° दक्षिण के बीच स्थित है वहां स्थिर दक्षिणी–पूर्वी व्यापारिक हवाएं पूरे वर्ष चलती हैं तथा जून व सितंबर के बीच सबसे तेज होती हैं दिसंबर और मार्च के बीच मेडागास्कर के पूर्व में चक्रवात भी आते हैं इस क्षेत्र के उत्तरी हिस्से में दक्षिणी शीत (मई से अक्तू) के दौरान वायु तापमान का औसत 25° से तथा बाकी समय में थोड़ा ज्यादा रहता है पश्चिमी व्यापारिक पवन क्षेत्र में गर्म महासागरीय धाराएं वायु तापमान को पूर्वी हिस्से के मुकाबले 2°–3° से बढा देती हैं वर्षा उत्तर से दक्षिण की ओर घटती जाती है

उपोष्ण एवं शीतोष्ण क्षेत्र

यह तीसरा क्षेत्र दक्षिणी गोलार्द्ध के उपोष्ण एवं शीतोष्ण अक्षांशों में 30° और 45° दक्षिण के बीच स्थित है इस क्षेत्र के उत्तरी भाग में पवन हल्की एवं परिवर्तनशील है, जबकि दक्षिणी हिस्से में मंद से तेज पछुआ हवाएं चलती हैं दक्षिणी अक्षांश के बढ़ने के साथ औसत वायु तापमान घटता जाता है ऑस्ट्रेलियाई गर्मियों (दिस से फर) में 20°–22° से से 10° से तथा सर्दियों में 16°–17° से से 6°–7° से है वर्षा सामान्य तथा एकसमान वितरित है

उपअटार्कटिक एव अंटार्कटिक क्षेत्र

यह चौथा ओर अतिम, उपअटार्कटिक एव अटार्कटिक क्षेत्र 45° दक्षिण और अटार्कटिक महाद्वीप के बीच की चौडी पट्टी है यहा लगातार पश्चिमी हवाए चलती है, जो कभी–कभी गहरे दक्षिणी ध्रुवीय कम दाब वाले क्षेत्र से गुजरते हुए तेज होकर झझावात का रूप ले लती हे सर्दियो मे औसत वायु तापमान उत्तर मे 6°–7° से से अटार्कटिका के पास –16° से तक होता है गर्मियो मे इन क्षेत्रो का औसत तापमान 4°–10° से के बीच होता है

जल विज्ञान

हिद महासागर की जलीय विशेषताए वायुमडलीय परिस्थितियो (वर्षा, पवन एव सौर ऊर्जा) की सतह के साथ अन्योन्य क्रिया से उत्पन्न होती है इसक पानी के स्रोत ओर नितल (थर्मोहैलाइन) परिसचरण सब मिलकर आमतौर पर पानी की क्षैतिज परते बनाते हं प्रत्येक परत का भिन्न तापमान एव लवणीय सघटन होता है, जो भिन्न घनत्व वाली पृथक जलराशिया बनाते है, जिसमें हल्का पानी सघन पानी के ऊपर रहता है पृष्ठ जल तापमान मौसम, अक्षाश एव सतह परिसचरण के साथ बदलता है, सतह की लवणता वर्षा, वाष्पन एव नदी के प्रवाह के बीच का सतुलन है

सतह धारा

महासागरीय सतह परिसचरण पवन चालित है मॉनसून क्षेत्र मे सतह परिसचरण प्रत्येक आधे वर्ष मे उलट जाता है श्रीलका (भूतपूर्व सीलोन) के दक्षिण मे पूर्वोत्तर मानसून के दौरान, उत्तर विषुवतीय धारा पश्चिम की ओर बहती है, सोमालिया तट पर दक्षिण की ओर मुडती है तथा 2° ओर 10° दक्षिण के बीच विषुवतीय प्रतिधारा के रूप मे पूर्व की ओर वापस लौटती है इस समय 152 मीटर की गहराई पर एक विषुवतीय अतर्धारा पूर्व की ओर बहती है दक्षिण–पश्चिमी मॉनसून के दौरान उत्तर विषुवतीय धारा का बहाव विपरीत हो जाता है और यह तेज पूर्वी बहाव वाली मॉनसून धारा बन जाती है दक्षिण विषुवतीय धारा का एक हिस्सा सोमालिया तट के साथ बहता है और तेज (6 5 किमी प्रतिघटा) सोमाली धारा बन जाता है हिद महासागर का विशिष्ट लक्षण एक सुस्पष्ट वाताग्र 10° दक्षिण पर मानसून प्रभाव की सीमा निर्धारित करता है

मॉनसून क्षेत्र के दक्षिण मे एक स्थिर उपोष्ण प्रतिचक्रवात घूर्णन, जिसमे 10° और 20° दक्षिण के बीच पश्चिमी बहाव वाली दक्षिण विषुवतीय धारा शामिल है, मेडागास्कर पहुचने पर विभाजित हो जाता है एक शाखा मेडागास्कर के उत्तर से होती हुई अफ्रीका और मेडागास्कर के बीच मोजाबिक धारा के रूप मे दक्षिण की ओर मुडती है फिर पूर्व मे मुडने तथा 45° दक्षिण दिशा की ओर अटार्कटिक परिध्रुवीय धारा मे मिलने से पहले दक्षिण अफ्रीका तट के साथ तेज और सकरी (97 किमी) अगुल्हास धारा बन जाती है दूसरी शाखा मेडागास्कर के पूर्व मे दक्षिण की ओर मुडती है और फिर करीब 40° से 45° दक्षिण मे दक्षिण भारतीय धारा के रूप मे वापस पूर्व की ओर मुड जाती है इस महासागर की पूर्वी सीमा पर प्रवाह प्रणाली अविकसित है, लेकिन दक्षिण

भारतीय धारा स उत्तर की ओर बहने वाली पश्चिम ऑस्ट्रेलियाई धारा इस घूर्णन को कुछ सीमा तक बद करती है केवल अटार्कटिक परिध्रुवीय धारा ही महासागर के तल तक पहुचती है अगुल्हास धारा लगभग 1,219 मीटर और सोमाली धारा लगभग 792 मीटर नीचे तक जाती है, अन्य धाराए 305 मीटर से नीचे भेद नही पाती

नितल (थर्मोहेलाइन) परिसचरण

सतह परिसचरण के प्रभाव के नीचे जलगति काफी धीमी एव अनियमित है हिंद महासागर मे अरब सागर के जरियें उच्च लवणता वाले जल के दो स्रोत मिलते है, एक फारस की खाडी से और दूसरा लाल सागर से, जो अपेक्षाकृत ताजे पृष्ठ जल के नीचे जाकर 610 और 1,006 मीटर के बीच मे उत्तर हिंद उच्चलवणीय मध्यवर्ती जल का निर्माण करते है यह परत पूर्व मे बगाल की खाडी मे तथा दक्षिण मे मेडागास्कर एव सुमात्रा तक फैली है इस परत से करीब 1,524 मीटर नीचे अटार्कटिक मध्यवर्ती जल है 1,524 और 3,048 मीटर के बीच उत्तर अटलाटिक नितल जल (इस धारा के स्रोत पर नामित) तथा 3,048 मीटर के नीचे वेडेल सागर का अटार्कटिक तल जल है यह ठडी, सघन परते अटार्कटिक परिध्रुवीय क्षेत्र मे अपने स्रोत से उत्तर की ओर धीमी गति से रेंगती है, तथा रास्ते में लगभग ऑक्सीजन रहित हो जाती हैं अटलाटिक एव प्रशात महासागर की तरह हिंद महासागर मे भूजल का अलग स्रोत नही है

उत्स्रवण

उत्स्रवण हिंद महासागर मे मॉनसून व्यवस्था के कारण एक मौसमी घटना है दक्षिण–पश्चिमी मानसून के दौरान सोमाली एव अरब तट के पास तथा जावा के दक्षिण मे उत्स्रवण होता है यह 5° और 11° उत्तर मे सबसे तीव्र है, जहा लगभग 14° से वाला पानी, गर्म पृष्ठ जल को प्रतिस्थापित करता है पूर्वोत्तर मॉनसून के दौरान भारत के पश्चिमी तट पर तेज उत्स्रवण होता है इस समय 5° दक्षिण मे मध्य सागर मे उत्स्रवण होता है, जहा उत्तर विषुवतीय धारा एव विषुवतीय प्रतिधारा एक–दूसरे के बगल मे विपरीत दिशा मे बहती है

सतह तापमान

20° दक्षिण के उत्तर मे गर्मियो के सतह जल तापमान वितरण मे क्षेत्रीय विषमता देखी गई है इस क्षेत्र मे ग्रीष्मकालीन सतह तापमान पश्चिम की तुलना मे पूर्वी हिस्से मे ज्यादा है बगाल की खाडी मे अधिकतम तापमान लगभग 28° से है हॉर्न ऑफ अफ्रीका पर ग्वार्डाफुई अतरीप क्षेत्र मे निम्नतम तापमान लगभग 22° से है और अफ्रीकी तट के पास उत्स्रवण से सबद्ध है

हिम

अटार्कटिक मे हिम शीत के दौरान सुदूर दक्षिण मे बनता है जनवरी और फरवरी के बीच अटार्कटिक तट पर भयकर तूफान पिघलते हुए हिम (बडे खडो एव चौडे

हिमप्लवो क रूप मे) को तोडता है तथा पवन और जलधाराए इन्हे खुले समुद्र मे ले जाती है. कुछ तटीय इलाको मे तटीय ग्लेशियर का बाहर निकला हुआ हिस्सा टूटकर बहने वाला हिमखड बनाता है 90° पूर्व भूमध्य के पश्चिम मे तैरते हिम की उत्तरी सीमा 65° दक्षिण के पास है लेकिन इस भूमध्य के पूर्व मे तैरता हिम 60° दक्षिण तक आमतौर पर पाया जाता है, कभी–कभी तैरते हिमखड उत्तर मे काफी दूर 40° दक्षिण तक पाए जाते है

ज्वार–भाटा

तीनो प्रकार के दैनिक, अर्द्ध दैनिक एव मिश्रित ज्वार–भाटा के उदाहरण हिद महासागर मे पाए जा सकते है, हालाकि अर्द्ध दैनिक (दिन मे दो बार) सबसे व्यापक है अर्द्ध दैनिक ज्वार–भाटा पूर्वी अफ्रीकी तट पर उत्तर मे भूमध्य रेखा तक और बगाल की खाडी मे आता है अरब सागर और फारस की खाडी के अदरूनी भाग मे मिश्रित लहरे आती है ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण पश्चिमी तट पर दैनिक लहरो का छोटा क्षेत्र है, ऐसा ही अडमान सागर मे थाईलैड तट तथा मध्य फारस की खाडी के दक्षिणी तट पर भी है

आर्थिक पक्ष

खनिज ससाधन

अभी तक सबसे अधिक मूल्यवान खनिज ससाधन तेल है और फारस की खाडी विश्व मे सबसे बडा तेल–उत्पादक क्षेत्र है अरब सागर एव बगाल की खाडी मे अपतटीय तेल एव प्राकृतिक गैस की खोज जारी है माना जाता है कि इन दोनो क्षेत्रो मे विशाल भडार है अन्य अन्वेषण गतिविधि स्थल है– ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमोत्तर तट के पास, अडमान सागर मे, भूमध्य रेखा के दक्षिण मे अफ्रीकी तट के पास तथा मेडागास्कर के दक्षिणी–पश्चिमी तट के पास फारस की खाडी के देशो के अलावा केवल भारत, अपतटीय क्षेत्रो से वाणिज्यिक मात्रा मे तेल का उत्पादन करता है, जिसका अधिकतर हिस्सा मुबई (भूतपूर्व बबई) के तट के पास के क्षेत्र से आता है ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमोत्तर तट से लगे क्षेत्र से कुछ प्राकृतिक गैस का भी उत्पादन किया जाता है

अन्य मूल्यवान खनिज ससाधन मैगनीज पिडो मे है, जो हिद महासागर मे बहुतायत मे है इस महासागर के पूरे मध्य क्षेत्र मे दक्षिण अफ्रीका तक और पूर्व मे दक्षिण ऑस्ट्रेलियाई द्रोणी तक, नमूना स्थलो से पिड मिले है, मैगनीज की मात्रा पूर्व मे सबसे ज्यादा तथा पश्चिमोत्तर की तरफ सबसे कम पाई गई है प्रौद्योगिकी की प्रगति के बावजूद, इन खनिजो के खनन एव प्रसस्करण मे कठिनाई के कारण इनका वाणिज्यिक निष्कर्षण बाधित होता है सभवत वाणिज्यिक मूल्य वाले अन्य खनिज इल्मेनाइट (लोहा एव टाइटेनियम ऑक्साइड का मिश्रण), टिन, मॉनजाइट (दुर्लभ मृदा), जरकॉन और क्रोमाइट है इनमे से सभी तटस्थ रेतीले क्षेत्रो में पाए जाते है

जैविक संसाधन

हिंद महासागर के जल क्षेत्र का अधिकतर हिस्सा उष्णकटिबंध एवं शीतोष्ण क्षेत्रों में आता है कई प्रवाल एवं अन्य जीव कैल्शियम युक्त लाल शैवाल के साथ प्रवाल द्वीप बनाने में सक्षम हैं, जो उष्णकटिबंधीय क्षेत्र के उथले जल की विशेषता है ये प्रवाली संरचनाएं फलते-फूलते समुद्री प्राणी समूह को आश्रय देती हैं, जिनमें स्पंज, कृमि, केकड़े, मृदुकवची (मोलस्क), समुद्री अर्चिन, भंगुर तारा, तारामीन एवं छोटे, लेकिन अत्यधिक चटकीले रंग की भित्ति मीन शामिल हैं

उष्णकटिबंधीय तट का अधिकांश हिस्सा मैंग्रोव झाड़ियों से ढका है, जहां के वातावरण में वहां के विशिष्ट जंतु पाए जाते हैं मैंग्रोव के तटीय किनारे की भूमि को स्थिर बनाते हैं तथा ये अपतटीय प्रजातियों के प्रजनन एवं संवर्धन हेतु महत्त्वपूर्ण स्थल हैं छोटे क्रस्टेशियन (परुषकवची) जिनमें सूक्ष्म कोपिपोड (अरित्रपाद) की 100 से अधिक जातियां शामिल हैं, जंतु जगत का बड़ा हिस्सा हैं, जिसके बाद छोटे मोलस्क, जैलीफिश एवं पोलिप तथा एक-कोशिकीय रेडियोलेरिया से लेकर विशालकाय पुर्तगाली मैन ऑफ वार जैलीफिश, जिसका आकार कई फीट तक हो जाता है, जैसे अकशेरुकी जंतु आते हैं स्क्विड बड़े झुंड बनाते हैं मछलियों में उड़न मीन, दीप्त मनगू, दीप मीन, बड़ी एवं छोटी ट्यूना, ताड़मासा की कई जातियों तथा सुरा (शार्क) की विभिन्न किस्में बहुतायत में हैं यहां-वहां समुद्री कच्छप तथा हस्तिमकर (समुद्री गाय) दंतुर एवं श्रृंगास्थि तिमि (व्हेल), सूंस (डॉल्फिन) और सील जैसे समुद्री स्तनधारी पाए जाते हैं पक्षियों में एल्बेट्रॉस एवं फ्रिगेट पक्षी आम हैं, महासागर के शीतोष्ण क्षेत्र में स्थित द्वीपों एवं अंटार्कटिक तट पर पेंग्विन की कई जातियां पाई जाती हैं

मत्स्य क्षेत्र

हिंद महासागर के कई तटवर्ती क्षेत्रों, विशेष रूप से उत्तरी अरब सागर में तथा दक्षिण अफ्रीकी तट पर होने वाले उत्प्रवाह से पोषक तत्त्व सतह जल पर जमा हो जाते हैं यह बदले में अत्यधिक मात्रा में पादपप्लवक का उत्पादन करता है, जो वाणिज्यिक महत्त्व के समुद्री जंतुओं की बड़ी आबादी का आधार है मछली उत्पादन की व्यापक संभावनाओं के बावजूद व्यावसायिक रूप से मछली पकड़ने का काम छोटे पैमाने पर होता है तथा बड़े इलाके अभी भी अविकसित हैं

तटवर्ती राष्ट्रों के लिए झींगा सबसे महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक जाति है, जिनमें भारत सबसे बड़ी मात्रा में इसे पकड़ता है तटीय राष्ट्र सार्डीन, मैकरेल एवं एंचोवी का अपेक्षाकृत कम मात्रा में दोहन करते हैं तटवर्ती राष्ट्र अब अपने तट से 370 किमी तक फैले विशेष आर्थिक क्षेत्र के संसाधनों पर अधिकार का दावा कर सकते हैं, इसलिए मालदीव जैसे छोटे राष्ट्रों के लिए यह संभव हो गया है कि वे पेलाजिक संसाधनों के दोहन के लिए प्रौद्योगिकी एवं पूंजी संपन्न प्रमुख मत्स्य उद्योग राष्ट्रों को मछली पकड़ने का अधिकार बेचकर अपनी राष्ट्रीय आय बढ़ा सकें

व्यापार एव परिवहन

हिद महासागर के सीमावर्ती राष्ट्रो मे 1950 से आर्थिक विकास मे वृद्धि के बावजूद अधिकतर व्यापार इस क्षेत्र की पूर्व औपनिवेशिक ताकतो तथा उभरे तटीय राष्ट्रो के बीच जारी है तटीय देशो के बीच अनिश्चित राजनीतिक सबधो, विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान तथा भारत और श्रीलका के बीच–तथा विभिन्न देशो की आवश्यकता वाले उत्पादो एव उत्पादित वस्तुओ के बीच सगतता के अभाव के कारण अत क्षेत्रीय व्यापार काफी कम रहा है इस प्रकार एक ओर हिद महासागर के राष्ट्र कच्चा माल निर्यात करते है तथा दूसरी ओर उत्पादित निर्मित वस्तुओं का आयात करते है वाणिज्य मे पेट्रोलियम की प्रधानता है, क्योकि यूरोप, उत्तरी अमेरिका एव पूर्वी एशिया को कच्चे तेल के परिवहन के लिए हिद महासागर एक महत्त्वपूर्ण आम रास्ता बन गया है अन्य प्रमुख वस्तुओ मे लोहा, कोयला, रबड और चाय शामिल है पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया, भारत और दक्षिण अफ्रीका से लौह अयस्क जहाजो द्वारा जापान भेजा जाता है, जबकि हिद महासागर के रास्ते कोयला ऑस्ट्रेलिया से इग्लैड निर्यात किया जाता है

हिद महासागर मे जहाज–परिवहन तीन घटको मे विभाजित किया जा सकता हे पाल वाले जहाज, मालवाहक एव तेलवाहक जहाज दो सहस्राब्दी से अधिक समय से छोटे तिकोने पाल वाले जहाजो की प्रधानता थी पाल वाले जहाजो द्वारा व्यापार पश्चिम हिद महासागर मे विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण था, जहा ये पोत मानसूनी हवाओ का लाभ उठा सकते थे, पूर्वी अफ्रीका के बदरगाहो और अरब प्रायद्वीप के बदरगाहो और यहा तक कि भारत के पश्चिमी तट पर मुबई एव मगलौर के बीच व्यापक किस्म के उत्पाद लाए व ले जाए जाते थे अधिकतर पाल वाले जहाजो के यातायात की जगह बडे यात्रिक पोतो एव भू–परिवहन ने ले ली है तथा बचे पाल वाले जहाजो मे सहायक इजन लगा दिए गए है

मानवीय गतिविधियों का पर्यावरण पर प्रभाव

हिद महासागर के ससाधनो का यूरोपीय औपनिवेशिक दोहन स्थलीय एव सागरीय पर्यावरण, दोनो के ह्रास का पहला स्पष्ट सबूत है वनो की कटाई, खेती और ग्वानो (जलमुर्गे के मल का खाद) खनन का स्थलीय परितत्र पर अवाछित प्रभाव पडा ग्वानो खनन, जो वनस्पति को हटाता है एव भू–सतह को खुरचता है, से काफी देशज वनस्पति एव प्राणी समूह नष्ट हुए तथा शिकार एव विदेशी जातियो को लाने के कारण पहले से मौजूद पर्यावरणीय सतुलन मे परिवर्तन आया है सागरीय पर्यावरण के लिए मनुष्य निर्मित खतरे हाल ही मे पैदा हुए इनमे एक है घरेलू एव औद्योगिक अपशिष्ट की व्यापक मात्रा, जो तटो पर बढते शहरीकरण एव औद्योगिकीकरण के कारण निकट–तटीय जल मे जमा हो रही है भारत मे यह सबसे ज्यादा प्रत्यक्ष है, जो इस क्षेत्र का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है दूसरा है इस महासागर एव इससे लगे अर्द्ध परिबद्ध सागरो मे बडी मात्रा मे कच्चे तेल के परिवहन के कारण उत्पन्न खतरा

सामान्य तेल पोत सचालन एव कभी–कभी बडे तेलवाहक जहाज स हुए रिसाव से तेल समुद्र मे फैल जाता है, जिसका पादपप्लवक एव प्राणिप्लवक पर घातक असर पडता है जो व्यावसायिक मछलियो की आहार शृखला के आवश्यक हिस्से है

अध्ययन एव अन्वेषण

प्रारभिक अन्वेषण

इस बात के प्रमाण है कि मिस्रवासियो ने करीब 2300 ई पू हिद महासागर की खोज यात्रा शुरू की, जब उन्होने 'लैड ऑफ पुट' (पुट भूमि), जो सोमाली तट पर कही था, की खोज के लिए समुद्री अभियान भेजा ये विभिन्न खोज यात्राए इससे भी पहले शायद करीब 2900 ई पू स शुरू होकर लगभग 2200 ई पू तक चली होगी मिस्र के इतिहास मे 2200–2100 ई पू की अवधि के दौरान पुट की यात्रा का उल्लेख नही है, लेकिन ये फिर से 11वे राजवश (2081–1938 ई पू) मे शुरू हुई तथा अभिलेखो मे 20वे राजवश (1190–1075 ई पू) तक उनका लगातार उल्लेख है

पश्चिमोत्तर हिद महासागर मे प्रारभिक व्यापार मे स्वेज भू–सधि के जरिये एक सिचाई नहर (ज्वार के समय नौवहन के योग्य) की मदद ली गई, जिसे मिस्रवासियो ने 12वे राजवश (1938–1756 ई पू) के दौरान निर्मित किया था और 775 ई मे इसे पाटने से पहले इसमे लगभग लगातार जहाज चलते रहे एक भारतीय व्यापारिक जहाज से रूसी यात्री अफासी निकितिन 1469 मे भारत आए थे 1497 मे जहाज द्वारा अफ्रीका की परिक्रमा की करते हुए वास्कोडिगामा ने भारत के पश्चिमी तट पर पहुचने के लिए हिद महासागर को पार करने से पहले एक अरब चालक मालिदी को भर्ती किया था

पुर्तगालियो के बाद डच, अग्रेज और फ्रासीसी हिद महासागर आए 1521 मे स्पेनी नाविक जुआन सैबेस्टियन डे एल्कानो ने फिलीपीस द्वीप समूह मे मूल कप्तान फर्डिनाड मैगेलन की मृत्यु के बाद पृथ्वी का पूरा चक्कर लगाने के लिए की जा रही समुद्री यात्रा को जारी रखते हुए इस महासागर के मध्य भाग को पार किया

जेम्स कुक ने 1772 मे हिद महासागर के दक्षिणी हिस्से मे अन्वेषण किया 1806 से रूसी जहाजो ने बार–बार हिद महासागर की यात्रा की, जिनमे सचालक एडम जोहन क्रुसेस्टर्न, आटो वॉन कोत्जेब्यू और अन्य थे

1819 और 1821 के बीच रूसी अन्वेषक फैबियन गौटलीब वॉन बैलिगशौसेन के अभियान ने अटार्कटिका से परिनौसचालन करते समय 60° दक्षिण मे हिद महासागर मे प्रवेश किया 19वी और प्रारभिक 20वी सदी मे अटार्कटिका के लिए कई महत्त्वपूर्ण यात्राए हुई, जिनका नेतृत्व अन्वेषक चार्ल्स वाइक्स (अमेरिकी) जूल्स– सैबेस्टियन –सीजर ड्यूमौट डी–उर्विले एव जीन बैपटिस्ट–एटीने–ऑगस्टे चारकोट (फ्रासीसी), जेम्स क्लार्स रॉस (स्कॉटिश) तथा अन्य ने किया

सुव्यवस्थित अनुसंधान

ब्रिटिश नौसेना पोत चैलेजर के 1872 मे शुरू हुए प्रसिद्ध विश्व परिक्रमा अभियान ने हिद महासागर सहित अनेक महासागरो के योजनाबद्ध अनुसधान की शुरुआत की इसके बाद कई अभियान हुए

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद डेनमार्क के *गालाथी,* स्वीडन के *एल्बेट्रॉस* और इग्लैड के *चैलेंजर II* ने अन्य परिनौसचालन यात्राए की, जिन्होने हिद महासागर के उत्तरी हिस्से का अनुसधान किया अतर्राष्ट्रीय भू–भौतिकीय वर्ष (1957–1958) की तैयारी एव निष्पादन और बाद के वर्षो के दौरान ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैड, सोवियत रूस, फ्रास और जापान ने दक्षिणी हिद महासागर मे वैज्ञानिक अनुसधान किए अतर्राष्ट्रीय हिद महासागर अभियान (1960–1965) कई देशो के करीब तीन दर्जन अनुसधान पोतो का समन्वित प्रयास था

इसके बाद इस अभियान के अनुसधान कार्य के आधार पर आगे और अनुसधान किए गए, जिनमे मॉनसून की प्रकृति भी शामिल है महाद्वीपीय तट एव गहरे सागर तल के खनिज ससाधनो के बारे मे सूचना एकत्र करने के लिए कई जहाज हिद महासागर आते है गहरी समुद्रवेधन परियोजना (1968–1983) के कई चरण हिद महासागर मे सपन्न हुए हाल के उन्नत प्रौद्योगिकी वाले वैज्ञानिक अभियानो ने हिद महासागर की भूगर्भ एव भू–भौतिकीय सरचना तथा ससाधन क्षमता के बारे मे अधिक जानकारी उपलब्ध कराई है

हिंदी भाषा

भारत गणराज्य की राजकीय और मध्य भारतीय–आर्य भाषा 1991 की जनगणना के अनुसार, 23 342 कराड भारतीय हिंदी का उपयोग मातृभाषा के रूप मे करते है जबकि लगभग 33 727 करोड लोग इसकी लगभग 50 से अधिक बोलियो मे से एक इस्तमाल करते है इसकी कुछ बोलिया, जैसे मैथिली और राजस्थानी अलग भाषा होने का दावा करती हैं हिंदी की प्रमुख बोलियो मे अवधी, भोजपुरी, ब्रज भाषा, छत्तीसगढी गढवाली, हरियाणवी, कुमाऊनी, मागधी और मारवाडी शामिल हैं

हिंदी क्षेत्र की क्षेत्रीय भाषाएं

हिंदी क्षेत्र (उत्तरी–मध्य भारत, दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और हरियाणा) की इन क्षेत्रीय भाषाओ की मानक हिंदी से समरूपता भिन्न–भिन्न स्तर की है हिंदी क्षेत्र की सबसे पूर्वी क्षेत्रीय भाषा मैथिली ऐतिहासिक रूप से हिंदी के मुकाबले बाग्ला से अधिक मिलती–जुलती है इसी प्रकार इस क्षेत्र की सबसे पश्चिमी भाषा राजस्थानी कुछ मायनो मे मानक हिंदी के मुकाबले गुजराती से अधिक मिलती–जुलती है फिर भी इन क्षेत्रीय भाषाओ के अधिकाश वक्ता स्वय को हिंदीभाषी कहना पसद करते है इसके दो कारण है पहला, इन भाषाओ को ब्रिटिश शासन के आरभिक काल

मे हिंदी के साथ वर्गबद्ध कर दिया गया था और प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप मे इन भाषाओ के स्थान पर हिंदी को चुना गया दूसरा, समूचे हिंदी क्षेत्र का शहरी मध्यवर्ग और शिक्षित ग्रामीण वर्ग हिंदीभाषी होने का दावा करता है, क्योकि इन क्षेत्रीय भाषाओ या बोलियो का उपयोग परिवार और नजदीकी लोगो के अलावा कही और करने पर इसे अनुपयुक्त शिक्षा का परिचायक माना जाता है दूसरे शब्दो मे मानक हिंदी बोलना इस क्षेत्र मे लोगो को वही स्थिति प्रदान करता है, जो उच्च अभिजात्य वर्ग मे अग्रेजी बोलने से प्राप्त होती है दोनो को ऊर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता की भाषा माना जाता है

19वी या आरभिक 20वी शताब्दी मे हिंदी अपने उपक्षेत्रीय प्रकारो पर थोपी गई भाषा थी अब खडी बोली क्षेत्र (दिल्ली–मेरठ) के बाहर लगभग सभी नगरो व शहरो मे मूलरूप से इस भाषा को बोलने वाले लोग मौजूद है नौकरी की तलाश या बाहरी व्यक्ति से विवाह के कारण जो लोग खडी बोली क्षेत्र से बाहर चले गए है, उन्हे दैनिक बातचीत मे मानक हिंदी का उपयोग करना पडता है ओर कई मामलो मे युवा पीढी को उनकी तथाकथित बोली का बहुत कम ज्ञान होता है जनसचार माध्यमो (रेडियो, टेलीविजन और फिल्मो) की प्रधानता और साक्षरता के बढते स्तर ने मूलरूप से मानक हिंदी बोलने वालो की सख्या मे बढोतरी की हे

आधुनिक हिंदी का विकास

आधुनिक मानक हिंदी की उत्पत्ति खडी बोली (शौरसेनी अपभ्रश से दिल्ली व मेरठ क्षेत्र मे विकसित हुई बोली) के वक्ताओ के अफगानिस्तान, ईरान, तुर्की, मध्य एशिया तथा अरब से आकर बसे लोगो से सपर्क के कारण हुई जैसे–जैसे नए आप्रवासी बसते गए और भारत के सामाजिक माहौल मे ढलते गए, उनकी भाषाओ ने, जो अतत लुप्त हो गई खडी बोली को समृद्ध किया नई भाषा को हिदवी या हिदुस्तानी कहा गया हालाकि खडी बोली ने इसे आधारभूत शब्द–सग्रह और व्याकरण प्रदान किया, इसमे सस्कृत और फारसी से भी प्रचुर मात्रा मे शब्द लिए गए

फारसी का प्रभाव

हिंदी मे शामिल किए गए अधिकाश फारसी शब्द प्रशासन से सबधित है, इनमे अदालत, दफ्तर, चपरासी, वही, कागज, रसीद, फौजदारी, दीवानी, परगना, जिला, तहसील, दीवान, वजीर, मुसाहिब, मुशी और दरबान जैसे शब्द शामिल है दलील, दरखास्त, फैसला, गवाही, हक, हिस्सेदार और सबूत जैसे शब्दो को पूर्णरूपेण एकाकार कर लिया गया है और आमतौर पर इन्हे गृहीत शब्द नही माना जाता हे परिधान और बिस्तर से सबधित वस्तुओ को दर्शाने वाले शब्द जैसे, कुर्ता, पाजामा सलवार, कमीज, शॉल, चादर, रूमाल, तोशक, लिहाफ/रजाई, बिस्तर, तकिया, खाद्य पदार्थ जैसे, कीमा, कोरमा, कबाब, कोफ्ता, शोरबा, सूजी, या शृगार सबधी जैसे साबुन, इत्र, हिना, खिजाब, तथा फर्नीचर जैसे, कुर्सी, मेज, तख्त एव गृह निर्माण मे

प्रयुक्त शब्द, जैसे दीवार, कुर्सी, शहतीर, जीना, तहखाना तथा अन्य विभिन्न पेशो मे काम आने वाले शब्द, जैसे चरखा, करघा, जुलाहा इत्यादि शब्द हिंदी भाषा मे अगीकार किए जा चुके है स्वातत्र्योत्तर काल मे शुद्धतावादी लोगो द्वारा इन्हे हटाने का प्रयास असफल रहा है बडी सख्या मे विशेषण और उनकी नामित व्युत्पत्तिया, जैसे आबाद, आबादी, बारीक, बारीकी, गर्म, गर्मी, खुश, खुशी, इत्यादि हिंदी शब्द सग्रह के अविभाज्य अग बन चुके है

तुर्की, फारसी और अरबी शब्दो को ग्रहण करते हुए हिंदी ने ध्वनिग्राम, जैसे फ और ज को भी ग्रहण किया, हालाकि कई बार इन्हे फ और ज से विस्थापित कर दिया जाता है उदाहरण के लिए हिंदी मे जोर या जोर, नजर या नजर दोनो का उपयोग होता है

सस्कृत से लिए गए सज्ञा और सर्वनाम सस्कृत के आठ कारको के सपूर्ण शब्दरूप को खो चुके है और इसके स्थान पर परसर्ग का उपयोग होता है, जो सज्ञाओ के अत मे जुडे छोटे शब्द होते है ओर अग्रेजी के पूर्वसर्ग की भाति प्रभाव डालते है अगर एक अकारात हिंदी शब्द के बाद एक परसर्ग है, तो यह एकारात हो जाता है, जैसे अगर *लडका* के बाद *को* लगाना हो तो *लडके* लिखा जाएगा हिंदी मे सिर्फ दो लिग हे पुरुष और स्त्रीलिग, जबकि गुजराती और मराठी मे अब भी तीन लिग प्रचलित है क्रियाओ मे विभक्ति की जटिलताओ को कम कर दिया गया है, जिसमे वर्तमान और भविष्य दर्शाने वाले स्वरूपो को पूर्णत युग्मित कर दिया गया है, अन्य सरचनाए कृदत स्वरूपो पर आधारित है, अपूर्ण अत ता के साथ और पूर्ण अत आ के साथ होता है

अंग्रेजी का प्रभाव

अग्रेजी भाषा से सपर्क ने भी हिंदी को समृद्ध बनाया है बटन, फीस, मेम्बर, कमेटी पेसिल, पेन, राशन, पेट्रोल, कार, बस, पुलिस, ट्रेन, क्लर्क, स्कूल, बैक, कॉलेज लायब्रेरी और ऑफिस जैसे शब्दो को हिंदी शब्दावली मे पूर्णत अगीकार कर लिया गया है मिश्रण की प्रक्रिया ने हमे व्युत्पत्तिजन्य शब्द प्रदान किए है, जैसे, कांग्रेसी (काग्रेस+ई), अमेरिकी (अमेरिका+ई), प्रोफेसरी (प्रोफसर+ई), मेम्बरी (मेम्बर+ई), लीडरी (लीडर+ई), वाइसचास्लरी (वाइसचासलर+ई) जैसे शब्दो मे आधारभूत शब्द अंग्रेजी का है ओर प्रत्यय मूल हिंदी का मिश्रित शब्द, जेसे जिला कमेटी, टेबल–कुर्सी हैडलूम–वस्त्रालय, और स्कूल–इमारत भी पाए जाते है बोली जाने वाली हिंदी मे अग्रेजी पर आधारित जटिल क्रियाओ का भी उपयोग होता है, जैसे आराम करना को रेस्ट करना भी कहा जाता है, अध्ययन करना को स्टडी करना, बहस करना को आरग्यू करना भी कहा जाता है हिंदी मे बडी सख्या मे सयुक्त क्रियाए है, जो दो क्रियाओ को मिलाकर बनी है प्रथम क्रिया, जो साधारणत अपने धातु रूप मे होती है अभिव्यक्ति को आधारभूत अर्थ प्रदान करती है, दूसरी क्रिया इसे परिवर्तित करती हे इस प्रकार इसमे एक सामान्य किया, जैसे पढना और सयुक्त क्रिया, जैसे पढ लेना पढ देना, पढ डालना और पढ चुकना इत्यादि है हिंदी की सयुक्त क्रियाए अग्रेजी की

वाक्याश क्रियाओ के समान है जब अग्रेजी की किसी क्रिया का उपयोग हिदी मे एक अकेले शब्द के रूप मे होता है, तो इसे सज्ञा माना जाता है और इसे हिदी क्रिया का स्वरूप देने के लिए इसके पीछे करना या होना जोड दिया जाता है स्टडी करना और प्रिपेयर करना जैसी अभिव्यक्तियो का बोलचाल की हिदी मे अक्सर उपयोग होता है

हिदी वाक्य–रचना पर भी अग्रेजी का प्रभाव पडा है, हालाकि यह काफी सीमित रूप मे है, उदाहरण के लिए मध्य 19वी शताब्दी तक हिदी मे अप्रत्यक्ष कथन का कोई स्वरूप नही था सिर्फ इस प्रकार ही बोला जा सकता था– 'राम ने कहा, मै नही आऊगा' अब यह भी कहा जा सकता है कि 'राम ने कहा कि वह नही आएगा' प्राचीन हिदी मे सबधसूचक वाक्याश को मुख्य वाक्याश के आरभ या अत मे लगाया जाता था. *वो लडका मेरा दोस्त है जो कल यहा आया था,* या *जो लडका कल यहा आया था वो मेरा दोस्त है* एक तीसरी सरचना भी है, जिसमे सबधसूचक वाक्याश को मुख्य वाक्याश के सज्ञाखड से पहले जोडा जाता है, जैसे *वो लडका जो कल यहा आया था, मेरा दोस्त है*

हिदी पर दबाव सिर्फ गैर हिदीभाषियो से ही नही है, बल्कि व्यापक हिदीभाषियो से भी है जिन्होने हाल ही मे अपनी बोलियो को छोडकर मानक हिदी को अपनाया है, लेकिन वे क्षेत्रीय प्रभावो से पूरी तरह मुक्त नही हो पाए है उनकी ध्वनिप्रणाली मे एक क्षेत्रीय प्रभाव होता है (उदाहरण के लिए बिहारी लोग *'श'* के स्थान पर *'स'* का और उत्तराचल के पहाडी लोग *'स'* के लिए *'श'* का उपयोग करते है) और उनके वाक्यविन्यास की अपनी अलग शैली होती है (उदाहरण के लिए पजाब ओर दिल्ली के लोग कहते है, *मैने जाना हे,* तेलगाना के हिदी भाषी कहते है, *मैकू जाना हे,* पश्चिमी मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र के लोग कहते हे, *अपुन को जाना है,* जबकि मानक हिदी मे *मुझे जाना है* कहा जाता है)

हिदी को मानकीकृत और आधुनिक बनाने के लिए गठित केद्रीय हिदी निदेशालय तथा अन्य एजेसिया इसे एक दिशा मे खीच रही है, वे इसे अधिक सस्कृतनिष्ठ बना रही है सभवत गैर हिदीभाषियो के लिए ज्यादा बोधगम्य बनाने के उद्देश्य से लेकिन गैर हिदीभाषी लोग अधिकाधिक अग्रेजी शब्दो और वाक्यखडो के उपयोग से और हिदी के कर्ता–क्रिया सामंजस्य के जटिल नियमो के सरलीकरण के माध्यम से इसे दूसरी दिशा मे ले जा रहे है हिदी का शब्द–सग्रह विभिन्न स्रोतो से लिए गए शब्दो से समृद्ध हो रहा है उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति सस्कृत गृहीत शब्द कार्यालय, फारसी गृहीत शब्द दफ्तर या अग्रेजी गृहीत शब्द ऑफिस का इस्तेमाल कर सकता है स्थानीय वक्ता पत्रालय, डाकघर या पोस्टऑफिस का उपयोग कर सकता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि वह किससे बात कर रहा है और किस विषय पर चर्चा कर रहा है.

अग्रेजी शब्दो के लिए सस्कृतनिष्ठ अनूदित समरूप ढूढने के प्रयास किए जा रहे है, जैसे प्राइम मिनिस्टर के लिए प्रधानमत्री और काउटर–रिवोल्युशन के लिए प्रतिक्राति

इस समृद्ध शब्द संग्रह का एक प्रभाव अर्थ विज्ञान की दृष्टि से द्विगुणित समास बनाना है, जिसके दोनो सदस्य एक ही अर्थ इंगित करते है, उदाहरण के लिए शाक–सब्जी नाता–रिश्ता, विवाह–शादी

: मय सब जग जानी
ाम जोरि जुग पानी
तुलसीदास

सीदास का एक पद्य

हिंदी साहित्य

हिंदी भाषा का रचना संसार हिंदी मे पहली प्रमुख पुस्तक 12वीं सदी मे लाहौर के चंदबरदाई का *पृथ्वीराजरासो* महाकाव्य है, जिसमे इस्लामी आक्रमण से पहले दिल्ली के अंतिम हिंदू राजा पृथ्वीराज के साहसिक कार्यों का वर्णन किया गया है यह पुस्तक राजपूतो के दरबार की भाट परंपरा पर आधारित है फारसी कवि अमीर खुसरो की कविताएं भी उल्लेखनीय है, जिन्होने अवधी मे लिखा हिंदी मे अधिकतर प्रारंभिक साहित्य की प्रेरणा धर्म पर आधारित है उदाहरण के तौर पर, 15वीं सदी के अंत तथा 16वीं सदी की शुरुआत मे सुधारवादी कबीर ने दोहे लिखे, जिनमे उन्होने इस्लाम और हिंदू धर्म, दोनो के आडंबर पर करारा प्रहार किया है

हिंदी के महान कवि तुलसीदास (मृ–1623) राजापुर के ब्राह्मण थे, जिन्होने जीवन के शुरू मे ही संसार त्याग दिया और बनारस (वर्तमान वाराणसी) मे भक्त के रूप मे दिन व्यतीत किए उन्होने अधिकतर लेखन कार्य अवधी भाषा मे किया और राम की पूजा को हिंदू धर्म का केंद्र बनाया उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण रचना *रामचरितमानस* है, जो संस्कृत *रामायण* से प्रेरित है यह हिंदीभाषी क्षेत्र का पवित्र हिंदू ग्रंथ बन गया है तथा प्रत्येक साल लोकप्रिय रामलीला के रूप मे इसका मंचन होता है

मध्ययुग मे दार्शनिक एवं भक्तिमार्ग के समर्थक वल्लभ अनुयायियो मे नेत्रहीन कवि सूरदास (मृ–1563) सर्वश्रेष्ठ है, जिन्होने कृष्ण और राधा की स्तुति मे अनगिनत भजन रचे इन्हे *सूरसागर* मे संकलित किया गया है हालांकि भक्त कवियो मे से अनेक सामान्य परिवारो से थे, लेकिन जोधपुर की राजकुमारी मीराबाई अपवाद थी, जिन्होने हिंदी और गुजराती, दोनों मे अपने प्रसिद्ध गीत लिखे पूर्व अवध प्रांत के मुस्लिम कवि जायसी द्वारा रचित धार्मिक महाकाव्य *पद्मावत* (1540) अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचना है अवधी मे रचित यह महाकाव्य संस्कृत काव्यशैली के अनुरूप रचा गया है इस युग के अन्य रचनाकारो मे रहीम, रसखान, केशवदास, नंददास के नाम उल्लेखनीय है

भक्तिकाल के बाद रीतिकाल का सूत्रपात हुआ, जिसके रचनाकारो ने समकालीन ऐतिहासिक संवेदनाओ को अभिव्यक्ति दी भोग–विलास, प्रेम–सौंदर्य और श्रृंगारिकता से परिपूर्ण इस युग की कविताओ को जिन रचनाकारो ने रूप दिया, उनमे मतिराम केशव, बिहारी, घनानंद, बोधा आदि का नाम उल्लेखनीय है

18वीं सदी मे धार्मिक गीत और महाकाव्यो के पुराने स्वरूप से पश्चिमी प्रतिमानो से प्रभावित नए, अक्सर धर्मनिरपेक्ष, साहित्य के स्वरूप मे क्रमिक रूपांतरण की शुरुआत देखी गई यह नई प्रवृत्ति प्रेमचंद (मृ–1936) के साहित्य मे, जिनके उपन्यास

(विशेषकर *गोदान*) एव लघु कहानियो मे सामान्य ग्रामीण जीवन का वर्णन हे, तथा बनारस के भारतेंदु हरिश्चद्र (मृ–1885), जिन्होने ब्रजभाषा मे लिखा, के साहित्य मे अपनी पराकाष्ठा तक पहुची

आधुनिक हिंदी साहित्य की जडे कविता एव नाटक मे हरिश्चद्र के साहित्य मे, आलोचना और अन्य गद्य लेखन मे महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा कथा साहित्य मे प्रेमचद के साहित्य मे है 19वी सदी के उत्तरार्द्ध की इस अवधि मे मुख्य रूप से सस्कृत, बाग्ला और अग्रेजी से अनुवाद का जोर रहा राष्ट्रवाद एव आर्य समाज के सामाजिक सुधार आदोलन से प्रभावित होकर लबी वर्णनात्मक कविताए, जैसे मैथिलीशरण गुप्त की जयशकर प्रसाद द्वारा नाटक, तथा चतुरसेन शास्त्री एव वृदावनलाल वर्मा द्वारा ऐतिहासिक उपन्यास रचे गए इन उपन्यासो की पृष्ठभूमि मुख्यत मौर्य, गुप्त एव मुगलकालीन थी

इस अवधि के बाद महात्मा गाधी के सत्याग्रह एव असहयोग आदोलनो का दौर आया, जिसने माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त एव सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे कवियो तथा प्रेमचद और जैनेद्र कुमार जैसे उपन्यासकारो को प्रेरित किया अतत गाधीवादी प्रयोग से मोहभग तथा यूरोपीय साहित्य पर मार्क्सवाद के बढते प्रभाव ने यशपाल, रागेय राघव और नागार्जुन जैसे लेखको को प्रभावित किया 1930 के दशक के सर्जनात्मक कवियो सुमित्रानदन पत, प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा ने अग्रेजी एव बाग्ला कविता की स्वच्छदतावादी तथा मध्यकालीन हिंदी कविता की रहस्यवादी परपरा से प्रेरणा ली प्रतिक्रियास्वरूप मार्क्सवादी कवि रामविलास शर्मा और नागार्जुन तथा हीरानद सच्चिदानद वात्स्यायन अज्ञेय एव भारत भूषण अग्रवाल जैसे प्रयोगवादी कवि सामने आए निराला, जिनका विकास रहस्यवादी, स्वच्छदतावादी से यथार्थवादी एव प्रयोगवादी कवि के रूप मे हुआ, 1950 के दशक के सर्वश्रेष्ठ कवि थे, 1960 के दशक मे मुक्तिबोध, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एव रघुवीर सहाय जैसे मौलिक कवि हुए

प्रेमचद एव जैनेद्र कुमार के साहित्य का प्रतिनिधित्व करने वाली दो प्रवृत्तिया हिंदी कथा साहित्य को दो भिन्न दिशाओ मे ले गई जबकि सामाजिक यथार्थवादियो, जैसे यशपाल, उपेद्रनाथ अश्क, अमृतलाल नागर, मोहन राकेश, राजेद्र यादव, कमलेश्वर, नागार्जुन एव फणीश्वरनाथ रेणु ने भारतीय समाज के बदलते परिवेश का ईमानदारी से विश्लेषण किया, इलाचद जोशी, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, कृष्णा सोबती और श्रीकात वर्मा जैसे लेखको ने व्यक्तिगत मनोविज्ञान की, जरूरी नही कि भारतीय सदर्भ मे ही हो गवेषणा की

1930 एव 1940 के दशको के नाटककारो मे गोविद बल्लभ पत और सेठ गोविद दास भी थे, उनकी अत्यधिक सस्कृतयुक्त भाषा के कारण उनके नाटको के दर्शक सीमित थे अन्य साहित्यकारो मे नामवर सिह, केदारनाथ सिह, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, मन्नू भडारी, नासिरा शर्मा, ज्ञानरजन, विनोद कुमार शुक्ल, मगलेश डबराल, वीरेन डगवाल, उदय प्रकाश आदि अनेक महत्त्वपूर्ण नाम है

हिदुकुश

(अरबी शब्द, अर्थात भारत के पर्वत), मध्य एशिया का विशाल पर्वत तत्र मोटे तौर पर यह लगभग 800 किमी लबा व 241 किमी चौडा है हिदुकुश मध्य एशिया के विशाल जल विभाजको मे से एक है, जो महाद्वीप के पूर्व से पश्चिम मे फैले बृहद आल्पीय (पर्वतीय) क्षेत्रो का हिस्सा है यह पूर्वोत्तर से दक्षिण–पश्चिम के बीच है और दक्षिण मे स्थित सिधु नदी घाटी को उत्तर मे स्थित अमु दरिया (प्राचीन ऑक्सस नदी) की घाटी को विभाजित करता है पूर्व मे हिदुकुश पामीर श्रेणी के उस बिदु को छूता है, जहा चीन, पाकिस्तान और अफगानिस्तान की सीमाए मिलती है उसके बाद यह दक्षिण–पश्चिम मे पाकिस्तान होते हुए अफगानिस्तान और अतत पश्चिमी अफगानिस्तान की छोटी श्रेणियो मे मिल जाता है पाकिस्तान–अफगानिस्तान सीमा पर 7,690 मीटर ऊची माउट तिरिच मीर सबसे ऊची चोटी है

हिदुकुश के इन्ही ऊचे दर्रो से मध्य एशिया के आक्रमणकारी लगभग 1500 ई पू मे अपनी भारोपीय भाषा दक्षिण एशिया मे लेकर आए ऐतिहासिक तौर पर इन दर्रों का बहुत सामरिक महत्त्व रहा और ये मकदूनिया के शासक सिकदर महान व चगेज खा तैमूरलग व उनके उत्तराधिकारी प्रथम मुगल बादशाह बाबर जैसे विजेताओ के भारत के उत्तरी मैदानो तक पहुचने का मार्ग बने भारत मे ब्रिटिश शासन के दौरान भारत सरकार इन दर्रो व दक्षिण मे एक अन्य भौतिक महत्त्व के खैबर दर्रे की सुरक्षा के प्रति काफी सचेत रही है हिदुकुश श्रेणी इस क्षेत्र की प्रमुख शक्तियो के बीच शायद ही कभी सीमा के रूप मे रही हो, लेकिन यह सामान्यत एक मध्यवर्ती प्रतिरोधक क्षेत्र रहा है

भौतिक लक्षण

हिदुकुश की पूर्वी सीमा को जटिल स्थानीय स्थलाकृति के कारण सुनिश्चित करना कठिन है, हालाकि कोनार (पाकिस्तान मे कुनार या चित्राल कहलाता है) की घाटियो व गिलगित नदियो के बीच स्थित करबर दर्रे (4,343 मीटर) को अस्थायी रूप से सीमा चिह्न के रूप मे स्वीकृत किया जा सकता है पहाडो की ऊचाई घटने और उनके अफगानिस्तान की छोटी श्रेणियो के साथ मिल जाने के कारण पश्चिमी सीमा भी अनिश्चित ही है भू–विज्ञानी फिर भी हिदुकुश पर्वत शृखला को और आगे पश्चिम मे ईरान की सीमा तक विस्तृत मानते है

भौगोलिक विवरण

हिदुकुश को तीन प्रमुख भागो मे बाटा जा सकता है अपने सुदूर पूर्वी भाग मे करबर व बारोघिल (3,804 मीटर) दर्रों के बीच पूर्वी हिदुकुश क्षेत्र बहुत ऊचा नही है और ऐसी पहाडियो से युक्त है, जो अक्सर गोलाकार गुबदो की आकृति धारण कर लेते है आगे पश्चिम मे मुख्य श्रेणी बाबा तागी (6,513 मीटर) तक तेजी से ऊची उठती है और ऊबड–खाबड हो जाती है, जिसके बाद लगभग 160 किमी क्षेत्र मे वहा के उच्चतम

पहाड है, जिनमे 7,010 मीटर से अधिक ऊचाई वाली लगभग दो दर्जन चोटिया है अफगानिस्तान मे उरगड के आसपास ऊची चोटियो (7,039 मीटर) का पहला समूह है उसके बाद दक्षिण की ओर आगे सरघरारा का गिरिखड (7,349 मीटर) है, जिसमे माउट लगर (7,060 मीटर), शचौर (7,116 मीटर), उदरेम जोम (7,125 मीटर) और नादिर शाह जहारा (7,125 मीटर) पर्वत शामिल है ये आगे हिदुकुश के तीन विशालकाय पर्वतो नोशाक (नावशाक, 7,485 मीटर), इसोरा नल (7,389 मीटर) ओर तिरिच मीर की ओर जाते है हिदुकुश के प्रमुख ग्लेशियर (हिमखड) कोटगाज, निरोघी, अटरक व तिरिच इसी क्षेत्र की घाटियो मे है

दोराह दर्रे से शेबर दर्रे के बीच का भाग, उत्तर मे बदख्शा के पारपरिक अफगानी क्षेत्र ओर दक्षिण मे ऊपरी काबुल नदी के आसपास के क्षत्र नूरेस्तान व कुहेस्तान (कोहिस्तान) को अलग करता है इस प्रदेश मे ऊची चोटियो के केद्रित होने से कुछ विशेष दर्शनीय बिदुओ से यह नजारा यह एक अटूट क्षितिज जैसा दिखता है इसे जिपफेलफ्लर (जर्मन चोटी का मैदान) कहा जाता है इस प्रदेश की सर्वोच्च चोटिया, जो पूर्वी भाग से कम है, उनमें कोह बदकोर (6,843 मीटर), कोह–ए–मोडी (6,248 मीटर) और मीर सामिर (6,059 मीटर) शामिल है ये चोटिया कई छोटे पर्वतो से घिरी हैं यहा हिमनद का पूरा विकास नही हुआ है, लेकिन पुत्तिग्राम (5000 मीटर), वेरन (4,694 मीटर), राम गोल (4,694 मीटर) और अजोमन (4,221 मीटर) जैसे पर्वतीय दर्रे ऊचे है और पर्वतीय आवागमन को कठिन बनाते है पश्चिमी प्रदेश के पर्वत ईरान की सीमा के निकट, अफगान शहर हेरात की ओर धीरे–धीरे कम होने लगते है और छोटी–मोटी पहाडियो का रूप ले लते है शेबर दर्रा (2,987 मीटर) जैसे दर्रे लबे समय से सडक मार्ग द्वारा पार किए जाते रहे हैं, इससे इस क्षेत्र मे आवागमन सुगम है

हिदुकुश की व्यापक परिभाषा मे पाकिस्तान स्थित हिदुराज नामक चौथा प्रदेश शामिल हो सकता है यह पर्वतो की लबी घुमावदार शृखला से बना है, जिसमे माउट दरकोट (6 842 मीटर) और बुनी जोम (6,553 मीटर) पर्वतो की ऊची चोटिया शामिल है ये पूर्वी प्रदेश मे लपसुक चोटी (5,749 मीटर) से दक्षिण की ओर प्रवृत्त होती है, फिर लवेरई दर्रे (3,688 मीटर) से होती हुई काबुल नदी के पार तक पहुचती है यदि इस शृखला को हिदुकुश का हिस्सा माना जाए, तो दक्षिण मे पाकिस्तान के स्वात–कोहिस्तान प्रदेश के पर्वत भी इसका भाग होगे

भूगर्भशास्त्र

अपने बहुत से लक्षणो मे हिदुकुश, पश्चिम की ओर तिब्बत से पाकिस्तान तक फैली पूर्वी पडोसी कराकोरम श्रेणी से मिलता–जुलता है कुछ विद्वान हिदुकुश को कराकोरम की ही एक कडी मानते हे, क्योकि उसकी आतरिक सतह मे भी आग्नेय रूपातरित चट्टान (ताप एव दबाव से बनी चट्टान, जो लावा अवस्था से ठोस हो गई हो) है, जिसका उत्तरी भाग अवसादीय सामग्री से घिरा है वैसे हिदुकुश मे अवसादीय चट्टाने अधिक है, जिसकी वजह से यहा के कई पहाड नरम व गोलाकार है मध्य एव पश्चिमी

भागो मे इस शृखला की आतरिक सतह रूपांतरित चट्टानो के जटिल क्रम से बनी हे जिसमे सगमरमर व उसके भीतर ग्रैनाडाइयोराइट (चट्टाने, जो गहराई मे ताप एव दबाव से बनती है और जिनमे गहरे व हल्के रग के खनिजो का एक निश्चित मिश्रण होता है) का समावेश है

अपवाह तंत्र

पूर्वी हिदुकुश दो समानातर शृखलाओ से मिलकर बना प्रतीत होता है उत्तर मे निम्नतर शृखला, जो एक जल–विभाजक का काम करती है और उच्चतर दक्षिणी शृखला, जिसमे प्रमुख चोटिया है उत्तरी क्षेत्र मे अपवाह अपेक्षाकृत सरल है, लेकिन दक्षिणी क्षेत्र मे, जहा घाटिया दो विपरीत दिशाओ मे है, पूर्वोत्तर से दक्षिण–पश्चिम व मोटे तौर पर पूर्व से पश्चिम मे यह जटिल है अधिकाश नदिया, जैसे पजशेर (पजशिर), अलिगर, कोनार व पजकोरा पूर्वोत्तर से दक्षिण–पश्चिम की दिशा मे बहती है और अचानक काबुल नदी के पास पूर्व–पश्चिम धुरी पर मुड जाती है, जिसमे मिलकर वह बहती है यरखुन व गिजर नदी घाटिया भी इसी पूर्व–पश्चिम दिशा मे स्थित है सिधु नदी निचले मैदानो की ओर जाते हुए घुमावो मे बहने के कारण अपने बहाव की दिशा बदलती रहती है कोनार नदी मे ग्रीष्म ऋतु का अधिकतम बहाव शीतकालीन न्यूनतम बहाव से 60 गुना तक हो सकता है

जलवायु

चूकि हिदुकुश एशिया के एक प्रमुख जलवायु क्षेत्र को दूसरे से अलग करता है इसीलिए इस श्रेणी की जलवायु मे भी बहुत विविधता है स्वात–कोहिस्तान के पर्वत वर्षा लाने वाली मॉनसूनी हवाओ के क्षेत्र के अंतर्गत आते है, जबकि पूर्वी हिदुकुश का अधिकाश क्षेत्र व हिदुराज मॉनसूनी एशिया की सुदूर पश्चिमी सीमा से आरभ होता है मध्य एव पश्चिमी हिदुकुश भूमध्यसागरीय जलवायु क्षेत्र की सीमा से लगा है अत दक्षिण–पूर्व से पश्चिमोत्तर व पश्चिम की ओर जाते हुए जलवायु, वर्षा या हिमयुक्त ग्रीष्म (जुला से सित) और शुष्क शीत से गर्म शुष्क ग्रीष्म एव ठडे व वर्षायुक्त या हिमयुक्त शीत (दिस. से आरभिक मार्च) मे बदलती है इन विरोधी स्थितियो मे अन्य जलवायवीय विभिन्नताए भी होती है, जिसमे स्थानीय रूप से घोर विषमताए भी उत्पन्न होती है

हिमनद जलवायवीय परिस्थितियो की सजीव छवि प्रस्तुत करते है पाकिस्तान मे हिदुकुश के सुदूर पूर्वी छोर पर हिम व बर्फ की सबसे मोटी परत है, जहा चियातर ग्लेशियर (हिमनद) स्थित है तिरिच मीर व सरघरारा के उच्चतर भागो एव हिदुराज पर्वत के भागो मे भी मोटी परत है, हालाकि पश्चिम की ओर यह हिमाच्छादन विरल है. मध्य हिदुकुश पर्वत 3,658 मीटर ऊचे है और चोटी तक वनस्पतिविहीन है हिदुकुश के कुछ ग्लेशियर आगे बढते है, तो कुछ पीछे हटते प्रतीत होते है कुछ हिमाच्छादित क्षेत्रो का प्रमुख लक्षण अपक्षरित हिमशैल है, जो *नीव्स पेनिटेटेस* या *बुस्सेरश्नी*

(शाब्दिक अर्थ हिम अनुतापी) कहलाते है यह झुकी हुई मानव आकृतियो का आभास देते है कभी–कभी इनकी ऊचाई एक मीटर से भी कम होती है और ये दोपहर मे तेज धूप व तीव्र वाष्पीकरण व रात को अत्यधिक शीत मे बदलाव के कारण बनती है

वनस्पति जीवन

पूर्वी और मध्य हिदुकुश की कई दक्षिणी ढलाने वनाच्छादित है, जहा वर्षा मे अत्यधिक हिमपात और ग्रीष्म मानसून के दौरान रुक–रुककर बारिश होती रहती है पाकिस्तान के गिलगित और चित्राल जिलो मे स्थित सुदूर उत्तरी पहाडो की निचली ढलानो पर वर्षा कम होती है, इसलिए जगली वनस्पति कही–कही मिलने वाली जुनिपर (हपुषा) और भोज वृक्ष तक सीमित है पाकिस्तान और अफगानिस्तान मे हिदुकुश की पूर्वी और मध्य शाखाओ पर देवदार और नीले चीड के पेड बडी मात्रा मे पाए जाते है पश्चिमी हिदुकुश में वन लगभग नगण्य है और चारे म इस्तेमाल होने वाले पेड जैसे, पॉप्लर, विलो तथा रशियन जैतून की प्रधानता है सिचित पर्वतीय क्षेत्रो मे उगाए जाने वाले अन्य वृक्षो मे चिनार और आर्थिक रूप से महत्त्वपूर्ण प्रजातिया, जैसे शहतूत, बेर और अखरोट शामिल है यहा के ढलवा मैदान कही धूपयुक्त और कही छायादार है इसी कारण हिमाच्छादित ढलानो के साथ चरागाह भी मिलते है कई बार गर्मियो मे स्थानीय तथा ऋतु प्रवास कर रही आबादी इन चरागाहो मे कृषि कार्य भी करती है स्वात तथा दिर जिलो मे स्थित घाटियो और चित्राल क कुछ हिस्सो मे चावल की खेती होती है

पूर्वी हिदुकुश मे वृक्ष रेखा से ऊपर पामीर नामक वलयदार घास के मैदान पाए जाते है जबकि गहरी घाटियो मे चट्टानो की नगी दीवारो के बीच कही–कही हिमनद तथा हिमक्षेत्र के पिघलने से प्राप्त जल से सिचित चटख गहरे हरे रग की वनस्पति पाई जाती है. नूरेस्तान के अगम्य क्षेत्रो मे अब भी देवदार के घने वन है, लेकिन पर्वत श्रेणी के कम वर्षा वाले पश्चिमी हिस्से मे, ऊची ढलानो पर जानवर चराए जाते है उत्तरी ढलान पर आमतौर पर वनस्पति विरल है तथा घाटी के निवासियो द्वारा ग्रीष्म ऋतु मे चारे के रूप मे इस्तेमाल तक सीमित है

प्राणी जीवन

इस समूचे पर्वतीय क्षेत्र मे वन्य जीवो की अनुकूलित प्रजातिया पाई जाती हैं ऊचे क्षेत्रो मे साइबेरियाई साकिन और मारखोर नामक जगली बकरिया पाई जाती है, जबकि ऊचे पामीर मे कही–कही मार्को पोलो भेड और उरियल (भेड की एक जगली प्रजाति) मिलती है विलग घाटियो मे अब भी काले व भूरे भालू रहते है और चित्राल घाटी वन्य जीव सरक्षण मे दुर्लभ हिम तेदुओ का आवास हैं पहाडो के समृद्ध पक्षी जीवन मे गिद्ध और चील शामिल है दक्षिणी ढलान पर बहने वाली धाराओ मे ब्राउन ट्राउट मछलियो की बहुतायत है

मनुष्य द्वारा शिकार किए जाने से समूचे हिदुकुश म वन्य जीवो की विविधता और उनकी सख्या मे कमी आई है, हालाकि आबादी रहित इलाको मे वन्य जीव सरक्षण क्षेत्र बनाने के प्रयासो को कुछ सफलता मिली है

हिदुस्तान

फारसी शब्द, अर्थात 'हिदुओ की भूमि', दक्कन या दक्षिण भारत के विपरीत ऐतिहासिक रूप से उत्तरी भारत के लिए यह नाम दिया गया इस क्षेत्र को पजाब की पांच नदियो के बेसिन और गागेय मैदान के रूप मे अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जा सकता है पहाडो, मरुस्थल और समुद्र के बीच स्थित उर्वर और अधिक आबादी वाले गलियारे के रूप मे स्थित हिदुस्तान को भारतीय सत्ता की प्रमुख भूमि माना जाता है भारतीय सपदा और भौतिक ऊर्जा का एक बडा हिस्सा यही है हिदुस्तान को कभी 'विध्य पर्वतो के उत्तर' के रूप मे परिभाषित किया जाता था सपूर्ण भारत के पर्याय के रूप मे भी इस सज्ञा का उपयोग किया जाता है

यन प्रस्तुत करती किशोरी अमोनकर
'दुस्तान टाइम्स

हिदुस्तानी सगीत

उत्तरी भारत और पाकिस्तान का शास्त्रीय सगीत 12वी सदी के अत एव 13वी सदी की शुरुआत मे उपमहाद्वीप के उत्तरी हिस्सो पर इस्लामी जीत के कारण अरबी एव ईरानी सगीत शैलियो पर जोर दिया गया बाद मे ये शैलिया प्राचीन भारतीय परपराओ के साथ घुलमिल गई परिणामत एक नई विशिष्ट शैली का विकास हुआ इससे हिदुस्तानी सगीत मे नए आयाम जुडे प्राचीन भारतीय परपरा दक्षिण भारत मे विदेशी प्रभाव में न आने के कारण कर्नाटक सगीत के रूप मे कायम रही, जिसकी सीमा मोटे तौर पर आध्र प्रदेश मे हैदराबाद शहर है

उत्तरी और दक्षिणी भारत के सगीत में रागो के मूल लयात्मक सिद्धातो एव ताल के सुर सबधी सिद्धातो मे समरूपता है, लेकिन उनकी शैलियो एव वर्गीकरण में काफी भिन्नता है उत्तरी संगीत मे वाद्य सगीत ज्यादा प्रबल है जिसमे विभिन्न वाद्य यत्र अधिक सख्या मे प्रयुक्त होते है, और कुछ शुद्ध वाद्य यत्र विधाए है, जैसे गत, जिसमे किसी हद तक एक ही धुन को विभिन्न विधियो से प्रस्तुत किया जाता है

हिदुस्तानी सगीत को दक्षिण के सगीत की तुलना मे ज्यादा भावप्रद एव रूमानी माना जाता है उदाहरणस्वरूप आलाप मे लबी तान उनीदी विह्वलता पैदा कर सकती है

चरणबद्ध तरीके से द्रुत से द्रुत ताल, कभी–कभी ताल की सरचना मे सहवर्ती परिवर्तनो के साथ, हिदुस्तानी सगीत की विशेषता है.

हिदुस्तानी (हिदवी) भाषा

मध्य काल मे दिल्ली, मेरठ और सहारनपुर के क्षेत्र मे खडी बोली (शोरसेनी प्राकृत से इस क्षेत्र मे विकसित हुई बोली), फारसी, तुर्की व विभिन्न अरबी बोलियो वाले उत्तर भारत मे बसे आप्रवासियो की आपसी बातचीत से आम बोलचाल की भाषा के रूप मे विकसित भाषा 18वी शताब्दी के अत और आरभिक 19वी शताब्दी मे कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) मे ब्रिटिश लोकसेवको को प्रशिक्षण प्रदान करने वाले सस्थान फोर्ट विलियम्स कॉलेज के पहले प्राचार्य एक अग्रेज जॉन बोर्थविक गिलक्रिस्ट (1759–1841) ने इस भाषा को काफी बढावा दिया उन्होने हिदुस्तानी शब्दकोश और व्याकरण के नियमो की भी रचना की गिलक्रिस्ट ने ही हिदुस्तानी नाम की खोज की और वह इसे 'हिदूस्तानी' कहते थे बोलचाल की हिदुस्तानी से दो साहित्यिक भाषाए पैदा हुई, हिदी, जिस पर सस्कृत का व्यापक प्रभाव था और उर्दू, जिसमे भारी मात्रा मे फारसी व अरबी के शब्द थे

आरभ मे इसे विभिन्न नामो जैसे, रेख्ता (मिश्रित), उर्दू (छावनी की भाषा) और हिदवी या हिदुस्तानी (हिदुस्तान की भाषा) से जाना जाता था हालाकि खडी बोली ने इसे शब्द–सग्रह और व्याकरण प्रदान किया, इसने फारसी से कई शब्द ग्रहण किए, जो धीरे–धीरे आम शब्द बन गए प्रशासन से सबधित शब्द अदालत, सिपाही और शहर, परिधान जैसे, कुर्ता, पाजामा, सलवार, कमीज और शाल, व्यजन जैसे, कीमा, कोरमा और कबाब, श्रृगार जैसे, अबीर, गुलाल, इत्र और साबुन, तथा कई अन्य क्षेत्रों मे ऐसे शब्द है हिदुस्तानी मे कुछ उपसर्ग जैसे, कम, कमजोर मे, दर, दरअसल मे, और कुछ प्रत्यय जैसे बान, दरबान मे, और गार रोजगार मे, को ग्रहण किया ये उपसर्ग और प्रत्यय इतने एकाकार हो गए है कि इन्हे मूल खडी बोली शब्दो के साथ भी बोला जाता है, जैसे, बेतुका, बेसुरा, नादान, इत्यादि मिश्रण की प्रक्रिया ने राजमहल और रगमहल जैसे शब्दो की रचना की, जिनमे समास का पहला तत्त्व खडी बोली का और दूसरा फारसी का है

नए प्रवासियो की स्थानीय आबादी के साथ बातचीत की आवश्यकता से विकसित हुई हिदुस्तानी अमीर खुसरो (1273–1325), कबीर (1440–1518), दादू (लगभग 1544–1603), और अकबर के दरबारी कवि रहीम द्वारा उपयोग के कारण लोकप्रिय हुई बाबा फरीद जैसे सूफी सतो और नाथपथी सिद्धो द्वारा इस्तेमाल किए जाने से भी यह अधिक लोकप्रिय हुई जैसे–जैसे मुस्लिम शासन का विस्तार होता गया, हिदुस्तानी बोलने वाले भारत के पश्चिमी और दक्षिणी हिस्सो मे प्रशासक, सिपाही, व्यापारी तथा कलाकार के रूप मे गए वे दक्कन मे बस गए और उन्होने अपनी भाषा बरकरार रखी, जिसे दक्कनी या दक्खिनी कहा गया उनकी भाषा से उत्तर भारतीय हिंदुस्तानी की कुछ विशेषताओ का लोप हो गया उदाहरण के लिए उन्होंने महाप्राणित व्यजनो के

स्थान पर अमहाप्राणित व्यजनो का उपयोग किया, जैसे देख के स्थान पर देक, घुला के स्थान पर गुला, कुछ के स्थान पर कुच, समझ के स्थान पर समज और अधिक के स्थान पर अदिक स्थानीय भाषा तेलुगु के साथ हिंदुस्तानी के सम्मिलन से कुछ नई वाक्यगत विशेषताए विकसित हुई, जैसे *कल किया हुआ* के स्थान पर *करे*, जैसे *राम करे सो काम, उनके* की जगह *उन्हो*, जैसे *उन्हो आने की तारीख, बोल के या बोले तो* का उपयोग उद्धरण चिह्न के रूप मे, जैसे *मेरेकू घर जाने कु दिल बोल रा* या *मेरेकू घर जाना बोल के दिल बोल रा* या *मेरा घर जाने का दिल कर रहा है*

यह एक रोचक तथ्य है कि दक्खिनी बोलने वाले अपनी भाषा को हिंदी कहते है क्योकि वे उत्तर भारत के उर्दू बोलने वालो जितनी फारसी या अरबी का उपयोग नही करते है मुहम्मद कुली कुतुब शाह (1580–लगभग 1612) ने अपनी शायरी की किताब *कुतुब मुशतरी* की रचना इसी भाषा मे की और इसी प्रकार इब्राहीम आदिल शाह (1580–1672), अफजल (मृ –1685) और वली दक्कनी (1665–1708) ने भी रचनाए की

1991 की जनगणना के अनुसार, भारत की 5 13 प्रतिशत जनसख्या उर्दूभाषी होने का दावा करती है, जिसका वास्तविक अर्थ शायद यह होगा कि वे दैनिक बोलचाल मे हिंदुस्तानी का उपयोग करते है इस प्रकार हिंदी बोलने वालो का काफी बडा हिस्सा विशेषकर जो नगरो मे रहता है, सस्कृतनिष्ठ हिंदी की बजाय आम बोलचाल मे हिंदुस्तानी का उपयोग करता है यहा तक कि जो सस्कृतनिष्ठ हिंदी या फारसीनिष्ठ उर्दू के उपयोग का दावा करते है, उनके लिए भी सामान्य आधारभूत शब्दावली (जैसे मानव शरीर के अगो के नाम, रिश्तेदारो, सर्वनामो, सख्याओ, परसर्गों और क्रियाओ के नाम) वही है, इन्हे ही जॉन गिलक्रिस्ट ने हिंदुस्तानी कहा है

सुनीति कुमार चटर्जी (1931) ने कोलकाता की आम बोलचाल की भाषा को 'एक प्रकार की हिंदुस्तानी' बताया है उन्होंने पाया कि गलियो और बाजारो की इस हिन्दुस्तानी मे, जो बहुभाषी महानगरीय कोलकाता की सपर्क भाषा है, सबसे कम व्याकरण स्वरूप है और सबसे कम आरंभिक तथा गैर तकनीकी चरित्र के सामान्य शब्द, सामान्य मुहावरे और अभिव्यक्तिया है हिंदुस्तानी का यह सरलीकृत रूप अब भी बोलचाल की भाषा के रूप मे न सिर्फ कोलकाता मे, बल्कि भारत के सभी महानगरो तथा औद्योगिक नगरो मे, विशेषकर गैर हिंदीभाषी क्षेत्रो मे जीवित है

दृश्य प्रस्तुत

रेश कुमार

हिंदू धर्म

हिंदुओ की आस्था एव आचरण का तरीका, विशिष्ट सैद्धातिक, आनुष्ठानिक सामाजिक, वर्णनात्मक एव काव्यात्मक रूप मे अभिव्यक्त हिंदू एक प्रमुख विश्व धर्म है, जिसका अनुसरण 70 करोड से अधिक लोग करते है वर्तमान मे हिंदू इस बात पर भी जोर देते है कि हिंदू धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म

ादिर के समीप गाय

न (जहा यह राजकीय धर्म है) मे व्यापक रूप से तथा विश्व
अनुसरण किया जाता है

ाटी मे आए प्रारभिक यात्रियो ने यहा के निवासियो को 'हिदू'
फारसी मे 'स' को 'ह' बोला जाता है) कहा भारतवासी अपनी
स्वय इस शब्द का उपयोग करने मे धीमे रहे ब्रिटिश लेखको
ाती दशको मे अग्रेजी शब्द 'हिदुइज्म' का प्रयोग किया और
ार्मिक धारणाओ एव आचरण के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा

कई प्रकार से करते है, हालाकि अधिकाश ने 'हिदू धर्म' शब्द
ो वेद या वेदिक धर्म को प्राथमिकता देते है वे प्राचीन ग्रंथो
त तथा व्याख्यायित करने वाली ब्राह्मण विद्वत्ता की परपरा को
है सनातन धर्म को प्राथमिकता देने वाले आस्था एव आचरण
। पर जोर देते है, जिसे जरूरी नही कि ब्राह्मणो की सहमति

त राधा–कृष्ण व सखियो का चित्र

हिदू धर्म की परपरा, सिद्धात एव आचरण के प्रभाव वैदिक काल और दूसरी सहस्राब्दी ई पू मे मिलते है सिधु नदी सभ्यता (तीसरी–दूसरी सहस्राब्दी ई पू) स्थलो के उत्खनन से प्राप्त लघु मूर्तिया हिदू मूर्तियो से समानता रखती है

केंद्रीय अवधारणाए

हिदू धर्म मे अनुयायियो के लिए मत या न्यूनतम आस्थाओ के समूह की आवश्यकता नही है हिदू कई चीजो पर आस्था रखते है कभी–कभी एक व्यक्ति की आस्थाए दूसरे की आस्थाओ के विपरीत हाती है, फिर भी दोनो पूरे अर्थ मे हिदू ही रहते है जैसे कई हिदू प्रार्थना मे आहवान करते है, 'हमारे पास अच्छे विचार हर ओर से आए यानी सच की ऐसी प्रकृति है कि इसे विविध स्रोतो स प्राप्त करना चाहिए न कि उसके प्रति कट्टर हो जाना चाहिए हिदू मत के स्वरूप और विवेचना की एक लबी ग्रथ परपरा है, जो वेदो से जुडी है सभी के अस्तित्व का कारण आधार स्रोत तथा लक्ष्य ब्रह्म है ब्रह्म या तो ससार की रचना और सभी वस्तुओ की उत्पत्ति करता हे या ब्रह्माड का स्वरूप धारण करता है ब्रह्म सभी पदार्थो मे है तथा सभी प्राणियो की आत्मा हे

हिदू धर्म की एक मूल आस्था देहातरण एव पुनर्जन्म का सिद्धात और कर्म मे आस्था (आत्मा पिछले जीवन के कर्मो के आधार पर अगले जन्म मे सुख या दुख पाती है) हे पुनर्जन्मो की पूरी प्रक्रिया को ससार कहते है इस चक्र से मुक्ति को मोक्ष कहते है

जो नश्वरता– सासारिक अस्तित्व का अपरिहार्य हिस्सा –से मुक्ति है *भगवद्गीता* मे मोक्ष के तीन मार्ग बताए गए है कर्तव्य का मार्ग, ज्ञान का मार्ग एव भक्ति का मार्ग

तप मे लीन सन्यासी
साजन्य यात्राइडिया डॉट कॉम

हिदुओ को एक समुदाय मे लाने वाला एक महत्त्वपूर्ण आयाम वर्णनात्मक प्रवचन है कम से कम दो सहस्राब्दियो से लगभग भारत के सभी कोनों और अब उससे भी आगे लोगो ने दैवी लीला तथा भगवान एव मानव के बीच के सपर्क की कुछ प्रमुख कथाओ को अपनाया है ये हिदुओ के प्रमुख देवताओ से सबद्ध है कृष्ण और उनकी प्रेमिका राधा, राम एव उनकी पत्नी सीता और उनके भाई लक्ष्मण, शिव एव उनकी पत्नी पार्वती (या दूसरे जन्म मे सती) तथा भगवती दुर्गा, देवी या काली और अन्य कई कथाए धार्मिक आदर्श, पीढी–दर–पीढी मानव अनुभव, प्रेम के रूप तथा व्यवस्था, अव्यवस्था या कर्तव्य एव क्रीडा के बीच सघर्ष को विभिन्न सोपानो मे दर्शाती है इन कहानियो की उत्पत्ति, प्रदर्शन एव श्रवण मे हिदुओ ने अक्सर अपने को एक काल्पनिक परिवार का सदस्य अनुभव किया है

हिदू अनुभूति की जटिल एकता मे जिस अन्य सूत्र का योगदान है, वह है भक्ति, भगवान से प्रेम की व्यापक परपरा, जो विशेष रूप से भारत भर मे कवि–सतो की वाणी एव जीवन से सबद्ध है

इस केद्रीय अभिपुष्टि से कि धार्मिक उत्साह आचरण की कट्टरता या सिद्धात से ज्यादा बुनियादी है, भक्ति हिदू जीवन के अन्य पहलुओं को साझा चुनौती देती है साथ ही यह साझा हिदू विरासत मे भी योगदान देती है

पवित्र ग्रथ

हिदुओ के प्राचीनतम पवित्र ग्रथो के लिए सामूहिक शब्द वेद है सबसे महत्त्वपूर्ण पाठ चार सकलन (सहिताए) है *ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद* और *अथर्ववेद* सहिताओ के बाद ब्राह्मणो (वैदिक अनुष्ठानो की मीमासा), आरण्यक (वन मे पढी पुस्तके) एव उपनिषदो (ब्रह्माड के परस्पर संबध की गोपनीय शिक्षा) की रचना हुई

चारो वेदो के अवयव, सहिताए, ब्राह्मण, आरण्यक एव उपनिषद मिलकर हिंदू धर्म के उदघाटित धर्मग्रथो या श्रुति, 'जो सुना गया हो', दिव्य एव अपरिवर्तनीय यथार्थ का निर्माण करते है अन्य सभी पुस्तके, जिनमे हिदुओ के वास्तविक सिद्धात एव आचरण सहिताबद्ध है, मानव द्वारा रचित है और इसलिए स्मृति 'जिसे याद रखा गया है' वर्ग मे रखी गई है, जो मानवीय एव सभवत अपूर्ण ज्ञान है

वेदो से प्रेरित स्मृतियो मे शामिल है धर्मसूत्र (धर्म नियमावलि पुस्तक), जिनमे आचरण एव अनुष्ठान सबधी नियम है, धर्मशास्त्र, हिदू विधि (*मनुस्मृति* सहित) का आधार, सस्कृत महाकाव्य *महाभारत* एव *रामायण,* पुराण, 18 महापुराण, जिसमे देवी–देवताओ के क्रियाकलापो का वर्णन है

देवगण हिंदू प्राय अपने इष्टदेव की पूजा करते है, लेकिन उनका सामान्यत यह आग्रह भी नही होता कि उनके चुनाव मे कोई विशेषता है यद्यपि कई देवताओ की पूजा की जाती है, लेकिन अनेक हिंदू विष्णु एव शिव को पूजते है विष्णु को सर्वोच्च सत्ता के सरक्षक पक्ष तथा शिव को विनाशक पक्ष का प्रतीक माना जाता है अन्य दवता, ब्रह्मा, जिनका नाम नपुसक सज्ञा ब्रह्म का पौरुषीय रूप है, रचयिता है, व पृष्ठभूमि मे रहते है ये तीनो देवता त्रिमूर्ति की रचना करते है

हिंदू धर्म ग्रथ लेखन मे अब भी त्रिमूर्ति का उल्लेख होता है, लेकिन आचरण मे वस्तुत ऐसा नही है, क्योकि ब्रह्मा की विरले ही पूजा होती है व्यावहारिक धर्म से जुडा देवगण का दूसरा सस्थापित स्वरूप वह है, जिसमे महान देवी (जो भगवती, दुर्गा, काली या शक्ति के रूप मे जानी जाती है) त्रिमूर्ति मे ब्रह्मा का स्थान ले लेती है

वैष्णववाद विष्णु एव उनके विभिन्न अवतारो की पूजा की जाती है कुछ प्रमुख वैष्णव समूहो मे शामिल है– दक्षिण भारत के श्रीवैष्णव एव द्वेत (दार्शनिक या धार्मिक द्वैतवादी), पश्चिम भारत मे दार्शनिक वल्लभ की शिक्षा के अनुयायी तथा पूर्वी भारत मे बगाल में कई वैष्णव समूह, जो चैतन्य महाप्रभु की शिक्षा का अनुसरण करते है

वैष्णववाद का एक प्रमुख गुण भक्ति के प्रति अत्यधिक रुझान है, जो भगवान का प्रखर प्रेम, अनुराग एव पूर्ण आत्मसमर्पण है स्वाभाविक ही था कि प्रेम, निजी इष्टदेव और चेतना तथा निजत्व को सपूर्णत समाप्त कर देने वाले मोक्ष से विमुखता के वैष्णव आदर्श ने भक्ति आदोलन को लोगो मे फैला दिया

शैववाद शिव की भक्ति को समर्पित है शैववादी इस बहुआयामी भगवान के विभिन्न स्वरूपो की पूजा करते है रुद्र, शकर, पशुपति और अघोर के रूप मे, शैववाद के विभिन्न स्वरूपो मे अत्यधिक दार्शनिक शैव सिद्धात एव कश्मीर मत, सामाजिक रूप से विशिष्ट वीरशैव (या लिगायत), योगी सघ जैसे दशनामी सन्यासी तथा कापालिक एव कालमुख और कई क्षेत्रीय लोकरूप जैसे विविध आदोलन शामिल है

शक्तिवाद भगवती की पूजा की जाती है, विशेष रूप स जब उसे देवी या महादेवी की अभिव्यक्ति या पक्ष के रूप मे माना जाए यह देवी शक्ति या 'ऊर्जा' का अवतार है, जो विश्वभर मे व्याप्त है और इस धारणा को चुनौती देती है कि नारीत्व निष्क्रिय या शात होता है शक्ति के अनुयायियो को अक्सर शाक्त (शक्तिमान) कहा जाता है

धार्मिक आचरण की विधियां

तत्रवाद तत्र के रूप मे प्रचलित ग्रथो मे वर्णित पवित्र शब्दो एव वाक्याशो (मत्रा) को दोहराने, प्रतीकात्मक चित्रो (मडल) तथा अन्य पवित्र अनुष्ठानो की सहायता से आध्यात्मिक शक्ति एव परम मुक्ति की खोज है शरीर मे अनुभूत दैवी सर्जनात्मक ऊर्जा (शक्ति) की धारणा पर विशेष रूप से आधारित तत्रवाद, योग और अनुष्ठान के माध्यम से दैवी शक्ति से एकाकार होने और लोकातीत शक्तियो को प्राप्त करने का

तरीका है यह पाचवी सदी से बौद्ध और हिंदू धर्म मे पाया जाता है, जिसका कई धार्मिक प्रवृत्तियो एव आदोलनो पर असर पडा है

मदिर पूजा एव धार्मिक अनुष्ठान · वेदो मे पूजा का प्राथमिक रूप मत्रो का उच्चारण और देवताओ को बलि (यज्ञ) देना है कई हिंदुओ के लिए उनका धर्म उनकी सोच के बजाय उनके कर्मो से परिभाषित होता है इसलिए 'व्यावहारिक' हिंदू धर्म वैदिक पाठ म निर्दिष्ट विधियो से काफी अलग हो सकता है अब भी हिंदुओ मे पूजा मूल रूप से मूर्ति पूजा के रूप मे छोटे घरेलू पूजाघरो और मदिरो मे की जाती है कभी–कभी श्रद्धालु ध्यान, भजन गाने या प्रवचन सुनने के लिए जमा होते हे पूजा का मुख्य केद्र प्रसाद चढाना और उसका आदान–प्रदान है, जो इस मान्यता को दर्शाता है कि जब मनुष्य देवताओ को भोग लगाते है, तो यह पहल वास्तव मे उनकी नही होती, वे वास्तव मे उस उदारता का प्रत्युत्तर देते है, जिसने उन्हे जीवन से भरपूर और शुभ सभावनाओ वाले विश्व मे जन्म दिया है.

अधिकतर हिंदू अब भी जीवनचक्र अनुष्ठानो का पालन करते है परिष्कार और परिवर्तन के इन सस्कारो का उद्देश्य पापो को दूर करके या नए गुणो की उत्पत्ति से व्यक्ति को निश्चित उद्देश्य या जीवन के अगले चरण के लिए तैयार करना हे प्राचीन काल मे जीवन यात्रा के अनुष्ठानो की संख्या के बारे मे काफी मतभेद था, लेकिन बाद के समय मे 16 या 10 अनुष्ठानो को सबसे महत्त्वपूर्ण माना गया आधुनिक समय मे अब भी बच्चे का जन्म, दीक्षा, विवाह और अत्येष्टि से सबधित धार्मिक सस्कारो का पालन किया जाता है

पवित्र समय एव स्थान · त्योहार और तीर्थयात्रा भारतीय जीवन के दो सबसे विशिष्ट पहलू है हिंदू त्योहार धार्मिक समारोहो, पूजा, प्रार्थना, सगीत, नृत्य, मेलो और व्रतों का सगम है ये गतिविधिया अभीष्ट साहित्यिक स्रोतो एव मानवशास्त्रीय अवलोकन से स्पष्ट होती है इनका उद्देश्य पवित्रीकरण, दुर्भावनापूर्ण प्रभाव को टालना, समाज का नवीनीकरण, सकटकालीन क्षणो को पार करना, प्रेरित करना एवं उनका अनुष्ठान करना हे (इस प्रकार, उत्सव शब्द का अर्थ शक्ति की उत्पत्ति एव त्योहार, दोनो है) वैदिक एव महाकाव्य काल मे पवित्र नदियो, पर्वतों, वनो एव नगरो की तीर्थयात्रा के बारे मे पहले से ही जानकारी मौजूद है यह अक्सर कहा जाता है कि तीर्थयात्रा आम आदमी का सन्यास है, भौतिक रूप से यह कठिन है, इसका मतलब है कि अपने पीछे घर एव परिवार से सबद्ध कई कर्तव्यो और खुशिया को छोडना. सदियों से यह कई सन्यासियो के जीवन का प्रमुख पहलू रहा है

आधुनिक समय में हिंदू धर्म

भारतीय समाज का ढाचा बहुलतावादी एव सोपानक है समाज के प्राचीन दृष्टिकोण ने इसे चार वर्णों मे बाटा था, जिन्हे कई जातियो मे उपविभाजित कर दिया गया जाति के आधार पर भेदभाव प्राचीनकाल से चली आ रही प्रथा है और *मनु स्मृति* जैसी

पुस्तको मे निम्न सामाजिक दर्जे का औचित्य सिद्ध किया गया है, जिसे पूर्वजन्म के पापो का अपरिहार्य परिणाम बताया गया है

हिंदू धर्म मे सुधार 19वी सदी मे शुरू हुआ परपरागत हिंदू धर्म तथा सामाजिक सुधार एव उस समय प्रचलित राजनीतिक सिद्धातो के बीच सामजस्य बिठाने के प्रयास करने वालो मे रामकृष्ण परमहस, स्वामी विवेकानद और राजा राममोहन राय प्रमुख थे बाल विवाह रोकने, सती प्रथा पर प्रतिबध लगाने तथा विधवा विवाह की अनुमति जैसे मुद्दे सामने आए ये सभी प्रथाए वैदिक काल के बाद शुरू हुई या सामने आई उदाहरण के तोर पर, ब्रह्म समाज (1828 मे स्थापित) ने जाति व्यवस्था, बहुविवाह और मूर्ति पूजा की निदा की, यद्यपि यह अत्यधिक लोकप्रिय नही हुआ, लेकिन इसके द्वारा प्रस्तावित सुधारो को 20वी सदी के शुरू मे अधिकतर हिंदुओ ने स्वीकार किया दूसरी तरफ आर्य समाज (1875 मे स्थापित) ने काफी ज्यादा सामाजिक मान्यता प्राप्त की और आज भी भारत मे इसके काफी अनुयायी है आर्य समाज वेदो की श्रेष्ठता को मानता है तथा वैदिक काल के बाद के सकलन को अपभ्रष्ट मानता है परिणामस्वरूप यह पूर्वज पूजा, पशुबलि, अस्पृश्यता, बाल विवाह, पुरोहित परपरा और मदिरो मे चढावे का विरोध करता है

19वी एव 20वी सदी हिंदू धर्म में परिवर्तनशील विकास की अवधि थी और यह प्रक्रिया भारत की स्वतत्रता के बाद भी जारी है

हिजरी

अरबी हिजरा या हिज्र (पलायन या उत्प्रवास), उत्पीडन से बचने के लिए पैगबर मुहम्मद का (622 ई) मक्का से मदीना प्रस्थान, यह तिथि मुस्लिम सवत का शुरुआती बिंदु है स्वय मुहम्मद ने अपने पत्राचार, सधियो और उद्घोषणाओ की तारीखे अपने जीवन की अन्य घटनाओ पर रखी वह दूसरे खलीफा I उमर थे, जिन्होने 639 ई (17 हिजरी) मे हिजरी सवत (जिसे लेटिन शब्द ऐनो हिजरी के आद्याक्षरो 'ए एच' {हिंदी मे हि} के रूप मे जाना जाता है) शुरू किया उमर ने इस सवत का प्रथम वर्ष चद्र मास मोहर्रम के पहले दिन से शुरू किया, जो 16 जुलाई 622 को पडा 1677–78 (1088 हि) मे ऑटोमन सरकार ने हिजरी सवत का इस्तेमाल करने के साथ–साथ जूलियन तिथिपत्र के सौर वर्ष का उपयोग करना शुरू कर दिया, जिससे सौर एव चद्र वर्षो मे अतर के कारण दो विभिन्न हिजरी सवत तारीखे शुरू हो गई

हिजरी शब्द वफादारो के इथियोपिया के लिए तथा मक्का पर कब्जे से पहले मुहम्मद के अनुयायियो द्वारा मदीना उत्प्रवास के लिए भी इस्तेमाल किया गया है बाद मे ईसाई शासन के दौरान वतन छोडकर जाने वाले मुसलमानो को भी मुहाजिर (उत्प्रवासी) कहा गया खवारिजो, यानी वे मुसलमान, जिन्होने 657 मे खलीफा की गद्दी पर चौथे खलीफा 'अली' के अधिकार के प्रश्न पर आयोजित मध्यस्थता वार्ता से अपना समर्थन वापस ले लिया था, ने उनमे शामिल होने वालो के लिए इस शब्द का इस्तेमाल किया

सबसे अधिक सम्मानित मुहाजिर वे है, जिन्होने मुहम्मद के साथ मदीना के लिए प्रस्थान किया था और जिन्हे पैगबर का साथी माना जाता है मुहम्मद ने पैतृक नगर छोडन तथा उनका अनुसरण करने क लिए इन लोगो की काफी तारीफ की तथा वायदा किया कि खुदा उन पर कृपा करेगे व मक्का एव मदीना, दोनो जगह, मुसलमान समुदाय मे एक अलग और अत्यधिक सम्मानित समूह के रूप मे रहे तथा मुहम्मद की मृत्यु के बाद खलीफा के रूप मे मुसलमान राज्य का नेतृत्व सभाला

हिजरी के परिणामस्वरूप मुसलमानो मे एक और समूह असार (सहायक) अस्तित्व मे आया, ये मदीनावासी थे, जिन्होने मुहम्मद और मुहाजिरो की सहायता की असार मदीना के दो प्रमुख विरोधी कबीलो, अल' खज्राज और अल–अव्स, के सदस्य थे, जिनमे मुहम्मद से, जो अभी मक्का मे उभर ही रहे थे, सुलह कराने को कहा गया ये लोग जो बद्र की लडाई (624) मे मुसलमान सेना का तीन–चौथाई हिस्सा थे, उनके समर्पित समर्थक बन गए जब मुहम्मद के उत्तराधिकारी के रूप मे उनका कोई भी सदस्य खलीफा नही चुना गया, तो एक समूह के रूप मे उनका प्रभाव कम हो गया और अतत मदीना मे बसने वाले अन्य मुसलमानो के साथ उनका विलय हो गया

हिम उलूक

(*निक्टिया स्कैडियाका*), सफेद या धारीदार, *स्ट्रिजिडी* कुल (गण *स्ट्रिजीफॉर्मीज*) का भूरा और सफेद शिकारी पक्षी यह उत्तर ध्रुवीय टुड्रा प्रदेश मे पाया जाता है और कभी भटकते हुए दक्षिण की ओर यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका मे आ जाता है हिम उलूक करीब 60 सेमी लबा होता है तथा इसका चौडे पख और बिना कर्णगुच्छ वाला गाल सिर होता है ये छोट स्तनधारियो (जैसे खरगोश एव लेमिग [एक प्रकार का चूहा]) और पक्षिया को खाते है तथा खुले मैदान मे घोसले बनाते हे

हिमाचल प्रदेश

बजनाथ मदिर काग हिमाचल प्रदश साजन्य यात्राइडिया कॉम

राज्य, उत्तर भारत बर्फ से ढकी पहाडी ढलानो के कारण इसका यह नाम (सस्कृत मे हिम का अर्थ 'बर्फ' और अचल का अर्थ है 'स्थिर' या 'पहाड') पडा यह प्रदेश हिमालय क्षेत्र मे स्थित है उत्तर मे यह जम्मू–कश्मीर, पूर्व मे चीन के स्वशासी क्षेत्र तिब्बत, दक्षिण–पूर्व मे उत्तर प्रदेश, दक्षिण मे हरियाणा राज्य और पश्चिम मे पजाब राज्य से घिरा हुआ हे यह राज्य ऊचे, बर्फ से ढके पहाडो, गहरी खाइयो, ढलानो, घनी वनाच्छादित घाटियो, विशाल झीलो और पहाडी नदियो का मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करता है पहाडो की ढलानो पर सीढीनुमा हरे–भरे खेत इन दृश्यो को और भी मनोहारी बनाते है राज्य 55,673 वर्ग किमी क्षेत्र मे फैला है. इस राज्य की राजधानी शिमला 2,164 मीटर की ऊचाई पर स्थित है भारत मे यह एक लोकप्रिय पर्वतीय सैरगाह है 1948 मे केद्रशासित प्रदेश बनने के बाद हिमाचल प्रदेश 25 जनवरी 1971 को पूर्ण राज्य बन गया इसमे 12 जिले है

ाभूषा म स्थानीय
मला हिमाचल

ाइडिया डॉट कॉम

भौतिक एवं मानव भूगोल

भू–आकृति

हिमाचल प्रदेश मे प्रभावशाली भौगोलिक विविधता है विशाल नदी घाटिया खाइया, तीव्र प्रपाती नदिया, झरने तथा बर्फ से ढके ऊचे पहाड प्राकृतिक दृश्य की रचना करते है पश्चिमोत्तर और दक्षिण–पूर्वी पहाडियो के अनुरूप चार समानातर भौगोलिक क्षेत्रो की पहचान की गई है पजाब ओर हरियाणा से सटे मैदान है, जो दो शिवालिक पहाडी श्रृखला से बने बाहरी हिमालय को एक लबी, सकरी घाटी द्वारा अलग करते है इस क्षेत्र मे पहाडो की ऊचाई दक्षिण की ओर करीब 488 मीटर और उत्तर मे करीब 900 मीटर से 1,500 मीटर है बाह्य हिमालय उत्तर के निचले हिमालय का विस्तार है, जिसकी ऊचाई करीब 4,700 मीटर है इसी क्षेत्र मे ऊचे, बर्फ से ढके शानदार धौलाधार और पीरपजाल पर्वत है निचले हिमालय के आगे उत्तर की ओर वृहद हिमालय, मुख्यत जास्कर पर्वतमाला है, जिस्की अधिकतम ऊचाई 6,700 मीटर हे इन पर्वतश्रेणियो से अनेक ऊची व सक्रिय हिमनदियो का उद्‌गम होता है राज्य की चार प्रमुख नदियो सतलुज, व्यास रावी ओर चिनाब मे से पहली तिब्बत से प्रकट होती है, जबकि शेष तीन का उद्‌गम वृहद हिमालय से होता है जास्कर के बाद विशाल, निर्जन और ठडा हिमालय–पार क्षेत्र है

हिमाचल प्रदेश का वातावरण, वहा की मिट्टी और पेड–पौधे विविधतापूर्ण है बाह्य हिमालय क्षेत्र मे ठडी और खुश्क सर्दिया और गर्मी मे अत्यत गरम मौसम रहता है दक्षिण–पश्चिम मॉनसून की वर्षा सामान्य होती है उत्तर की ओर ऊचाई बढने के साथ–साथ वातावरण आर्द्र और ठडा होता जाता है और वृहद हिमालय मे बर्फ के साथ कडाके की ठड रहती हे और सर्दियो का मौसम लबा होता है

जनजीवन

हिमाचल प्रदेश की जनसख्या अनेक विशिष्ट भाषाभाषी जनजातियो और जातियो से मिलकर बनी है, इनमे गद्दी, लाहौली, किन्नर, गूजर और पगवाली शामिल है 1947 के बाद बडी सख्या मे पजाबी आप्रवासी राज्य के बडे शहरो और कस्बो मे आकर बस गए कुल जनसख्या का 95 प्रतिशत हिदू है, जो प्रमुख धार्मिक और सामाजिक समूह है हिमाचल के लाहौल, स्पीति और किन्नौर जिलो मे बौद्धो का वर्चस्व है राज्य मे कुछ सिक्ख, मुसलमान और ईसाई भी है राज्य की भाषा पश्चिमी पहाडी हिदी है हर पुरानी रियासत की अपने नाम वाली निजी बोली है लाहौल, स्पीति और किन्नौर जिलो मे चीनी–तिब्बती भाषा बोली जाती है भारत मे हिमाचल प्रदेश सबसे कम शहरीकृत राज्य है इसकी शहरी आबादी 4,49,196 है, जो राज्य की कुल जनसख्या 60,77,248 (2001) का करीब 10 प्रतिशत ही है यहा कुल 55 नगर है, जिनमे से सिर्फ राज्य की राजधानी शिमला की आबादी ही 80 हजार से अधिक है पूर्व रियासतो की राजधानिया

अब जिला मुख्यालय और प्रमुख नगर बन गई ह इनमे नाहन, बिलासपुर, मडी चबा और कुल्लू शामिल है डलहौजी, कसौली और सबाथु ब्रिटिश काल मे बने पहाडी सैरगाह है कागडा, पालमपुर, सोलन और धर्मशाला राज्य के कुछ अन्य शहर है

एक हिमाचली महिला मिर क पारपरिक पहनावे मे
साजन्य यात्राइडिया डॉट कॉम

अर्थव्यवस्था

हिमाचल प्रदेश मे अधिकाश लोग अपनी आजीविका के लिए कृषि, पशु चराई, ऋतु प्रवास, बागवानी और वनो पर निर्भर है राज्य के उद्योगो मे नाहन स्थित कृषि उपकरण, तारपीन का तेल और रेजिन निर्माण उद्योग, सोलन मे टीवी सेट्स, उर्वरक, बीयर, शराब और बल्ब निर्माण उद्योग, राजबन मे सीमेट उद्योग, परवानू मे प्रसस्कृत फल, ट्रैक्टर के पुर्जे और विद्युत उपकरण उद्योग, शिमला के निकट विद्युत उपकरण और बाडी तथा बरोटीवाला मे कागज और गत्ते का निर्माण उद्योग शामिल है राज्य ने अपने प्रचुर जलविद्युत, खनिजों और वन ससाधनो के आधार पर अपना विकास शुरू किया है

यह अपनी सडको और पर्यटन ससाधनों का भी विकास कर रहा है देश की कुल जलविद्युत का करीब 20 प्रतिशत हिमाचल प्रदेश पैदा करता है मौजूदा प्रमुख जलविद्युत केद्रो मे उहल नदी पर जोगिदर नगर जलविद्युत गृह, सतलुज नदी पर ऊचा और विशाल भाखडा बाध, व्यास नदी पर बना पोग बाध और गिरि नदी पर बना गिरि बाध आते है हिमाचल प्रदेश ने कद्र सरकार के साथ मिलकर शिमला जिले मे नाथपा–झाकडी जैसी नई जलविद्युत परियोजनाए शुरू की है हिमालय के सकटग्रस्त पारिस्थितिकी तत्र को बचाने और बाह्य हिमालय क्षेत्र मे भूक्षरण की गभीर समस्या से निपटने के लिए राज्य ने बडे पैमाने पर वनीकरण कार्यक्रम शुरू किया है और मौजूदा पर्यावरण कानूनो को सख्ती से लागू करना भी शुरू कर दिया है सडको के जाल के अलावा हिमाचल प्रदेश मे, कालका से शिमला और पठानकोट से जोगिदरनगर, दो छोटी रेलवे लाइने भी है सडके विभिन्न पर्वतो और घाटियो से होकर गुजरती है और ये राज्य की जीवन–रेखाए है हिमाचल प्रदेश की सीमा मे 140 से अधिक हिस्सो मे सरकारी बस सेवा सचालित होती है

प्रशासन एवं सामाजिक विशेषताएं

प्रशासन

राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त राज्यपाल राज्य का प्रमुख होता है मुख्यमत्री के नेतृत्व वाली मत्रिपरिषद विधानसभा के प्रति जिम्मेदार होती है वयस्क मताधिकार के आधार पर विधानसभा के प्रत्यक्ष चुनाव होते है राज्य 12 जिलो– बिलासपुर, चबा, हमीरपुर, कागडा, किन्नौर, कुल्लू, लाहौल एव स्पीति, मडी, शिमला, सिरमौर, सोलन और ऊना मे बटा हुआ है

हिमाचल प्रदेश की मनोरम खेजियर झील
साजन्य यात्राइडिया डॉट कॉम

शिक्षा एव जन–कल्याण

हिमाचल प्रदेश ने शिक्षा और लोक स्वास्थ्य सुविधाओ के विस्तार और सचार सुविधाओ के सुधार की दिशा मे उल्लेखनीय प्रगति की है फिर भी राज्य की अधिकाश जनता जीवनयापन के स्तर पर ही है और राज्य के विशाल प्राकृतिक ससाधनो का योजनाबद्ध रूप से दोहन होना अभी बाकी है 1970 मे शिमला मे हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही प्रदेश मे उच्च शिक्षा सभव हो सकी इस विश्वविद्यालय से 50 से अधिक महाविद्यालय सबद्ध है शिमला मे एक चिकित्सा महाविद्यालय, पालमपुर मे एक कृषि विश्वविद्यालय और सोलन के निकट एक बागबानी और वन विश्वविद्यालय भी है इडियन इस्टिट्यूट ऑफ एडवास्ड स्टडी (शिमला) और सेट्रल रिसर्च इस्टिट्यूट (कसौली) मे शोध कार्य होता है 1960 के दशक के बाद के वर्षो से प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के विद्यालयो की सख्या मे उल्लेखनीय वृद्धि हुई, इसी के अनुरूप इनमे दाखिला लेने वालो की सख्या भी बढी हमीरपुर मे एक अभियात्रिकी महाविद्यालय भी है

सास्कृतिक जीवन

पहाडी लोगो के मेले और त्योहार उल्लासपूर्ण गीतो और नृत्य के अवसर होते हैं उत्कृष्ट शैली मे बनी किन्नौर की शॉले, कुल्लू की विशिष्ट ऊनी टोपिया और चबा के कसीदाकारी किए हुए रूमाल त्योहार के रगीन परिधानो को और भी विशिष्टता प्रदान करते है हिमाचल प्रदेश अपनी कागडा घाटी चित्रकला शैली के लिए भी जाना जाता है

शिमला की पहाडिया, कुल्लू घाटी (मनाली शहर सहित) और डलहौजी पर्यटको के बडे आकर्षण है स्कीइग, गॉल्फ, मछली पकडना, लबी यात्रा और पर्वतारोहण ऐसी गतिविधिया है, जिनके लिए हिमाचल प्रदेश एक आदर्श स्थान है कुछ पौराणिक धर्मस्थलो पर पूजा–अर्चना के लिए हिमाचल और उसके पडोसी राज्यो के श्रद्धालु बडी सख्या मे एकत्र होते है

कुल्लू घाटी देवताओ की घाटी के रूप मे जानी जाती है, इसके चीड और देवदार क जगल, फूलो से लदे हरे–भरे मैदान और फलो के बगीचे प्रत्येक शरद ऋतु मे होने वाले दशहरा महोत्सव के लिए माहौल तैयार कर देते है इस मोके पर मदिरो के देवताओ को सजी हुई पालकियो मे गाजे–बाजे के साथ और नाचते हुए निकाला जाता है 1959 मे ल्हासा पर चीन के कब्जे के परिणामस्वरूप दलाई लामा तिब्बत से पलायन कर धर्मशाला आ गए थे और यही रहने लगे इसके बाद से ही बौद्धो के लिए (खासकर तिब्बतियो के लिए) धर्मशाला पवित्र स्थान हो गया है वर्ष 2000 की शुरुआत मे 14 वर्षीय 17वे करमापा भी तिब्बत से भागकर धर्मशाला आ गए और शरण मागी

इतिहास

इस पहाडी राज्य का इतिहास जटिल, अस्थिर और खडित रहा है माना जाता है कि वैदिक युग (लगभग 1500–1200 ई पू) के दौरान अनेक आर्य समूह अधिक उपजाऊ घाटी क्षेत्र मे आ गए और आर्य पूर्व जनता मे घुलमिल गए तथा उनकी सस्कृति को आत्मसात कर लिया बाद मे भारतीय–गागेय मैदान मे उभरे परवर्ती सभी भारतीय साम्राज्यो, जैस मौर्य (लगभग 321–185 ई पू), गुप्त (लगभग 320–540 ई.) और मुगल साम्राज्य (1526–1761) का न्यूनाधिक नियत्रण इस क्षेत्र पर तथा भारत व हिमालय पार तिब्बत तक फैले व्यापार और तीर्थमार्गो पर रहा

दूरस्थ बोद्ध–बहुल लाहौल और स्पीति क्षेत्र मुगल साम्राज्य के पतन (लगभग मध्य 18वी शताब्दी) से 1840 के दशक के प्रारभिक वर्षो मे थोडे समय के लिए सिक्ख शासन के अधीन आने तक लद्दाख के नियत्रण मे था इस अवधि मे अर्द्ध स्वायत्त शासक भी आज के हिमाचल प्रदेश के नाम से परिचित कुछ अन्य क्षेत्रो के व्यापार मार्गो के साथ–साथ उपजाऊ कृषि एव ग्रामीण भूमि पर नियत्रण बनाए हुए थे 1840 के दशक मे अग्रेज–सिक्ख युद्ध के बाद इस क्षेत्र पर ब्रिटिश प्रभुत्व स्थापित हो गया ओर अगले 100 वर्षो तक यह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कायम रहा

1948 मे 30 रियासतो को मिलाकर एक प्रशासनिक इकाई के रूप मे हिमाचल प्रदेश का गठन किया गया, जिसका शासन भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप मे मुख्य आयुक्त को सौपा गया हालाकि इसके पहले सामती शासन को समाप्त करने के लिए एक आदोलन हुआ और रियासतो मे से एक, सुकेत, ने शातिपूर्ण आदोलन के सामने समर्पण कर परिवर्तन की प्रक्रिया को और तेज कर दिया

1948 से 1971 के बीच (जब यह एक राज्य बना) हिमाचल प्रदेश आकार और प्रशासनिक प्रणाली की दृष्टि से अनेक परिवर्तनो से गुजरा शुरू मे यह एक उप–राज्यपाल द्वारा शासित केद्रशासित प्रदेश था, परतु सपूर्ण कागडा जिला, होशियारपुर जिले की ऊना तहसील, शिमला जिला, डलहौजी, डागशाई और कसौली के हिमाचल प्रदेश मे विलीनीकरण के बाद इसे सपूर्ण राज्य का दर्जा मिल गया 1971 मे अबाला जिल की नालागढ तहसील भी हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले मे हस्तातरित कर दी गई हिमाचल प्रदेश मे स्थानीय शासन की माग को लेकर 1940 के दशक से पहाडी जनता का नेतृत्व कर रहे वाइ एस परमार राज्य के पहले मुख्यमत्री बने

जनसख्या (2001) राज्य कुल 60,77,248, ग्रामीण 54,82,367, शहरी 5,94,881

हिमालय

(सस्कृत हिम, यानी 'बर्फ', आलय, यानी 'घर या स्थान'), एशिया की विशाल पर्वतश्रेणी, जो उत्तर मे तिब्बत के पठार और दक्षिण मे भारतीय उपमहाद्वीप के जलोढ मैदानो के बीच अवरोध का काम करती है हिमालय पर्वतश्रेणी मे विश्व के सबसे ऊचे पहाड शामिल है, जो हमेशा बर्फ से ढकी रहने वाली हिम रेखा से अधिक ऊचाई पर

उत्तुग शिखर
पीद्रनाथन पी

स्थित है और इसके 110 से अधिक शिखर समुद्र तल से
ऊचाई पर स्थित है इन चोटियो मे से एक माउट एवरेस्ट
चोटी है (तिब्बती चोमोलुग्मा, चीनी चू–मू–लग–मा फे
नेपाली सागरमाथा), जिसकी ऊचाई 8,850 मीटर है

हजारो वर्षो तक हिमालय ने दक्षिण एशिया के लोगो पर वे
डाला है, जो उनके साहित्य, राजनीति, अर्थव्यवस्था और
प्रतिबिबित होता है इसकी विस्तृत बर्फीली चाटिया लबे स
पर्वतारोही तीर्थयात्रियो को आकर्षित करती रही है, जिन्होने
का सस्कृत मे नामकरण किया आधुनिक काल मे हिमालय
के लिए सबसे बडा आकर्षण और महानतम चुनौती है

भारतीय उपमहाद्वीप की उत्तरी सीमा का निर्धारण करने और
लगभग अगम्य अवरोध बनाने वाली यह पर्वतश्रेणी एक विशाल
है, जो उत्तरी अफ्रीका से दक्षिण–पूर्व एशिया के प्रशात तट
मे फैली हुई है हिमालय पर्वतश्रेणी लगभग 2,500 किमी तक
जम्मू–कश्मीर क्षेत्र के नगा पर्वत (8,126 मीटर) से तिब्बत

एक मनोरम दृश्य

से फैली हुई है पूर्व और पश्चिम के इन दो सुदूर छोरो के बीच ाल और भूटान, स्थित है हिमालय के पश्चिमोत्तर मे हिंदुकुश ाणिया और उत्तर मे तिब्बत का ऊचा पठार है दक्षिण से उत्तर ाई 201 से 402 किमी के बीच परिवर्तित होती रहती है इसका 5 94,400 वर्ग किमी है

ाक्षणिक विशिष्टता इसकी बुलद ऊचाइया, खडे किनारो वाले ा पर्वतीय हिमनदिया, जो अक्सर विशाल होती है, अपरदन द्वारा कृति, अथाह प्रतीत होती नदी घाटिया, जटिल भौगर्भिक सरचना ा क्षेत्रो) की शृखला है, जिनमे विभिन्न प्रकार की वनस्पतिया ायु है दक्षिण की ओर से देखने पर हिमालय एक विशालकाय है जिसका मूल अक्ष हिमरेखा से ऊपर स्थित है, जहा हिमक्षेत्र ोर हिमस्खलन निचली घाटियो की उन हिमनदियो का हिस्सा से निकलने वाली अधिकाश नदियो के स्रोत है लेकिन हिमालय रेखा के नीचे स्थित है इस श्रेणी का निर्माण करने वाली अब भी क्रियाशील है जिसमे धाराओं के भारी अपरदन और ो गतिविधिया भी शामिल है
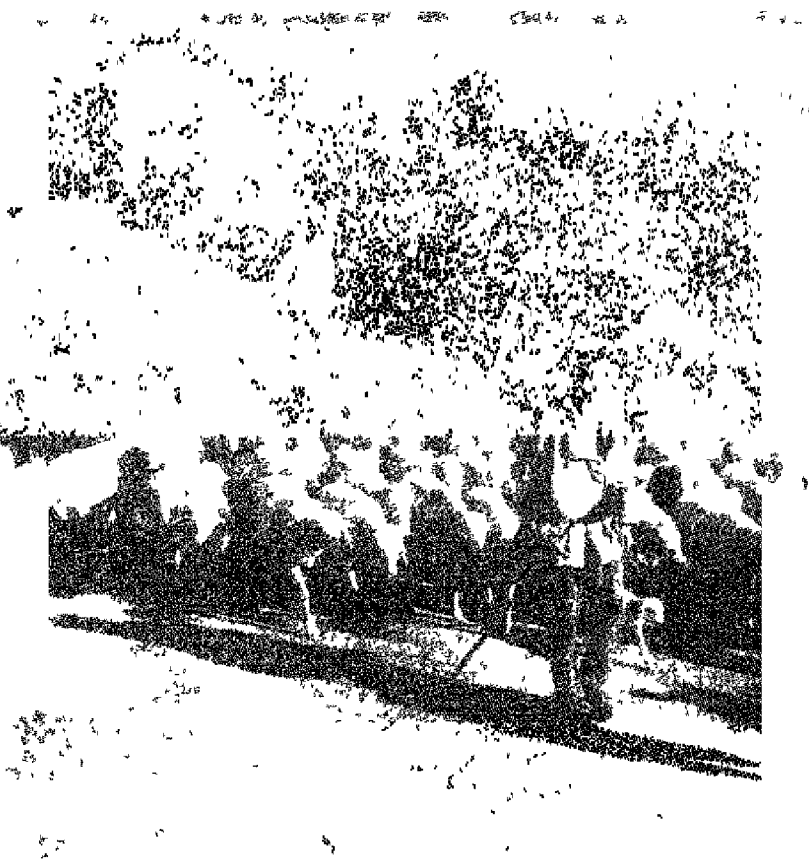
क समीप एक पारपरिक गडरिया अपनी भेडो के साथ, हिमाचल प्रदेश
य *हिंदुस्तान टाइम्स*

हिमालय पर्वतश्रेणी को चार समानातर, लबवत, भिन्न चौडाई
विभक्त किया जा सकता है, जिनमे से प्रत्येक की अपनी भ
अपना अलग भूगर्भशास्त्रीय इतिहास है इन्हे दक्षिण से उत्तर
गया है– बाहरी या उप–हिमालय, लघु या निम्न हिमालय
और टेथिस या तिब्बती हिमालय इससे आगे उत्तर मे तिब्बत
कुछ सुदूर उत्तरी हिमालयी श्रेणियो का पूर्व दिशा मे विस्तार है
हिमालय को मोटे तौर पर तीन पर्वतीय क्षेत्रो मे बाटा गया है प

भौगर्भिक इतिहास

हिमालय पर्वतश्रणी आल्प्स से दक्षिण–पूर्व एशिया के पहा
पर्वतश्रेणी के विस्तार का हिस्सा है, जिसका निर्माण पि
सार्वभौमिक प्लेट–विवर्तनिक शक्तियो के कारण पृथ्वी की ऊ
उभारो के बनने से हुआ है

लगभग 18 करोड वर्ष पहले ज्यूरैसिक काल मे, जब टेथिस
भू–अभिनति यूरेशिया के समूचे दक्षिणी किनारे को घेरे हुए थ
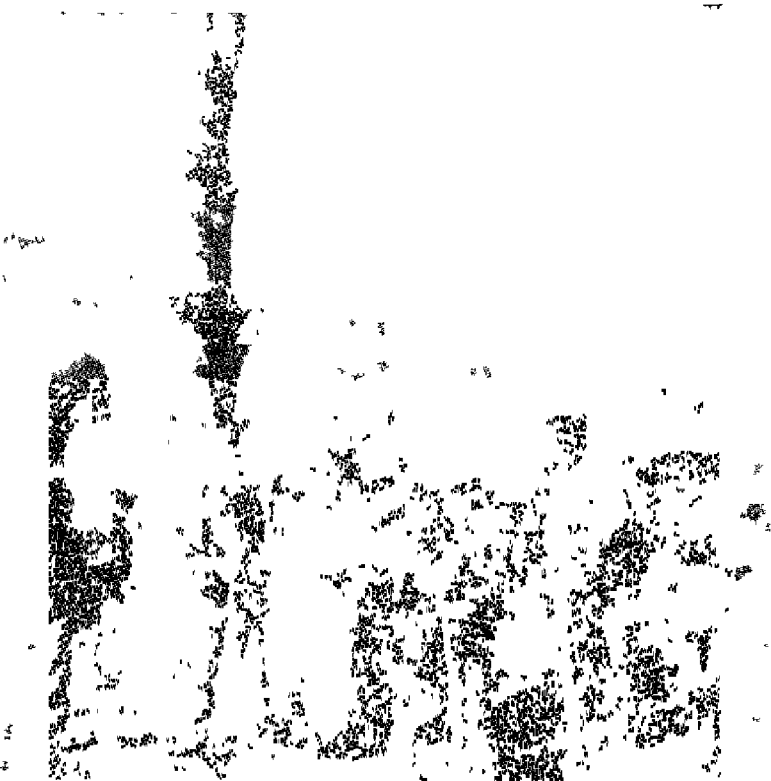
ड) के विखडन की प्रक्रिया शुरू हुई अगले 13 करोड वर्षो मे
रतीय उपमहाद्वीप का निर्माण करने वाली स्थलमडलीय प्लेट के
की ओर यूरेशियाई प्लेट से टकराने के मार्ग की ओर बढा, इस
प्लेट ने धीरे–धीरे अपने और यूरेशियाई प्लेट के बीच स्थित
ालकाय चिमटे की भाति जकड लिया जैसे–जैसे टेथिस खाई
ढते हुए दबाव की शक्तियो ने इसके समुद्री तलछट मे कई
ो और अतर्ग्रथित भ्रशो को जन्म दिया और ग्रेनाइट तथा बैसाल्ट
ाइयो से कमजोर हो चुके तलछट की ऊपरी सतह पर उभर आए
भग पाच करोड वर्ष पहले) के आरभ मे भारत, अतत यूरेशिया से
ीचे की ओर टेथिस खाई के नीचे लगातार बढने वाली अक्षनति
ो गया

र्षो मे टेथिस सागर मे भारतीय–ऑस्ट्रेलियाई प्लेट के डूबने के
तल ऊपर की ओर उठ गया तथा इसके कम गहरे हिस्से पानी
इससे तिब्बत के पठार की रचना हुई पठार के दक्षिणी किनार
न की पराहिमालय पर्वतश्रेणी, इस क्षेत्र का पहला बडा जलविभाजक
ाई तक उपर उठा कि जलवायवीय अवरोध बन सके दक्षिणी
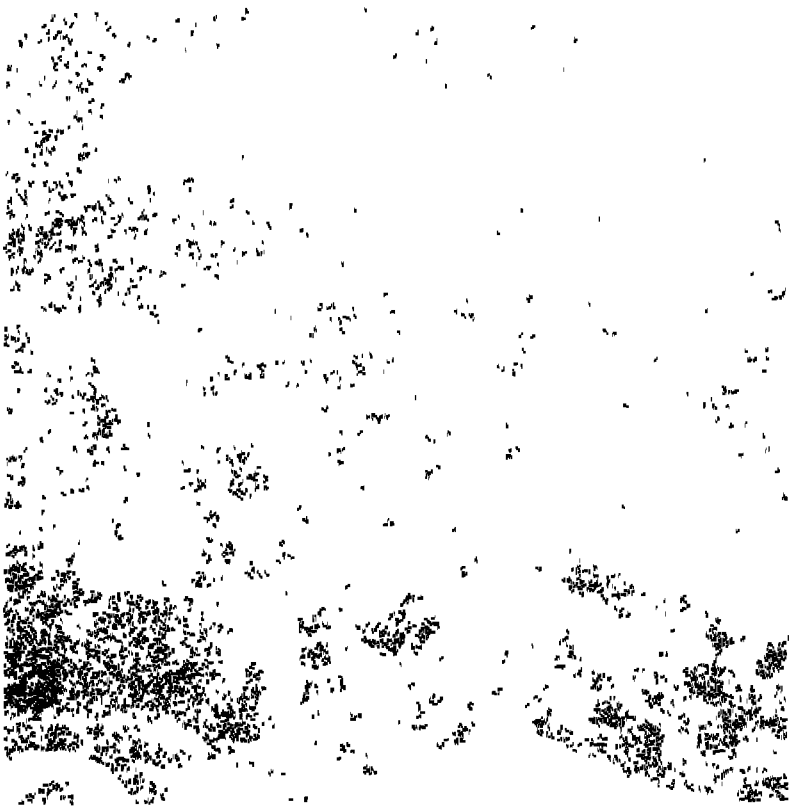
के गढवाल क्षेत्र म सीढीदार खेत
रवींद्रनाथन पी

तीखी ढलानो पर भारी वर्षा होने के साथ उत्तर दिशा में पुर
बढती हुई शक्ति के साथ प्रमुख दक्षिणवर्ती नदियो का शीर्ष
बढता गया और ये पठार पर बहने वाली धाराओ में शामिल ह
की जल अपवाह प्रणाली की रूपरेखा तैयार हुई दक्षिण की
बगाल की खाडी के पुराने मुहाने प्राचीन सिधु, गगा और ब्रह्म
लाई गई सामग्री से तेजी से भर गए विस्तृत अपरदन और नि
भी जारी है और ये नदिया प्रतिदिन भारी मात्रा मे सामग्री ब

अतत लगभग तीन करोड वर्ष पहले मध्यनूतन युग (माइओसी
के बीच टूटते हुए जुडने की प्रक्रिया मे तेजी से वृद्धि हुई
हिमालय पर्वत की निर्माण प्रक्रिया का वास्तविक आरभ हुआ
प्लेट का टेथिस खाई मे डूबना जारी रहा और प्राचीन गो
दक्षिण मे लबी क्षैतिज दूरी तक छिलके की तरह निकलकर
होती रही और इस प्रकार 'नापे' की रचना हुई भारतीय भूमि
97 किमी की दूरी तक नापे की तह बिछती गई प्रत्येक नए
मुकाबले ज्यादा पुरानी गोडवाना चट्टाने थी कालक्रम मे ये ना

के एक दुर्गम क्षेत्र मे पैदल यात्री

हले के मुकाबले लगभग 402 क्षैतिज किमी (कुछ विद्वान इसे 805 सिकुड गए इस बीच, नीचे की ओर बहने वाली नदिया भी थ भारी मात्रा में अवसाद हिमालय से मैदानो की ओर ले जा रही गगा और ब्रह्मपुत्र नदियो मे इकट्ठा हो रहा था इस अवसाद के न गए, जिससे और अधिक अवसाद एकत्र होता गया. गगा के स्थानो पर जलोढक 7,620 मीटर से भी अधिक है.

र्षों के दौरान, अत्यत नूतन युग (प्लाइस्टोसीन एपॉक, 16 लाख ने तक) मे ही हिमालय पृथ्वी की सबसे ऊची पर्वत शृखला बनी और अतिनूतन युग की विशेषता शक्तिशाली क्षैतिज बल थी, तो खासियत जबरदस्त उत्थान शक्ति थी सुदूर उत्तरी नापे के र इसके ठीक बाद नवीन पट्टिताश्म तथा ग्रेनाइट युक्त रवेदार आज दिखाई देने वाले ऊचे शिखरो का निर्माण हुआ माउट टियो पर रवेदार चट्टानो ने प्राचीन जीवाश्मो से युक्त उत्तर दिशा ो शिखर पर जमा कर दिया

ालय जलवायवीय अवरोध बन गया, तो उत्तर मे स्थित सीमात हो गए तथा तिब्बत के पठार की तरह सूख गए इसके विपरीत

कुमाऊ पहाडियो म भडो का झुड
साजन्य सुरेश कुमार

नम दक्षिणी कगारा पर नदिया इतनी अपरदनकारी शक्तिया
उन्होने शीर्ष रखा को धीरे–धीरे उत्तर दिशा मे ढकेल दिय
फूटने वाली विशाल अनुप्रस्थ नदियो ने पहाड के उठान की
ओर कटाव जारी रखा स्थलाकृति मे बदलाव ने इन विशाल
सभी को उनकी निचली धाराओ मे परिवर्तन के लिए बाध्य ि
उत्तरी शिखर ऊपर उठ रहा था वेसे ही विशाल नापे का द
था इन शक्तियो तथा वलयो स शिवालिक श्रेणी का निमाण
क्षत्र मे सवलित होकर मध्यवर्ती क्षत्र की उत्पत्ति हुई इरा दोरा
मे अवरोध आ जान से अधिकाश छोटी नदिया पूर्व या पशि
सरचनात्मक तोर पर कमजोर हिस्सो के जरिये नए दक्षिणी
किसी बडी धारा मे मिलन तक बहती रही

कश्मीर घाटी ओर नेपाल की काठमाडू घाटी जेसी कुछ घा
झीलो का निर्माण हुआ जिनमे अत्यत नूतन युग (प्लाइस्टोर्स
गया लगभग 2 लाख साल पहले सूखने के बाद काठमाडू
मीटर तक ऊपर उठी हे जा लघु हिमालय क्षेत्र मे स्थानीय

भू–आकृति विज्ञान

बाह्य हिमालय मे समतल भूमि वाली सरचनात्मक घाटिया और हिमालय पर्वतश्रेणी की दक्षिणी सीमा पर स्थित शिवालिक पहाडिया है पूर्व के कुछ छोटे दर्रो को छोडकर शिवालिक भारत के हिमाचल प्रदेश मे अधिकतम 110 किमी की चौडाई के साथ हिमालय की पूरी लबाई तक फैला हुआ है. आमतौर पर 274 मीटर की समोच्च रेखा इसकी दक्षिणी सीमा निर्धारित करती है, उत्तर मे इसकी ऊचाई 762 मीटर तक है मुख्य शिवालिक श्रेणी का दक्षिणी हिस्सा भारतीय मैदानो की ओर तीखी ढलान वाला है और उत्तर की ओर समतल भूमि वाले बेसिन, जिन्हे दून कहा जाता है की ढाल कम तीखी है इनमे से सबसे विख्यात उत्तराचल का पर्वतीय क्षेत्र देहरादून है

उत्तर मे शिवालिक श्रेणी 80 किमी चौडे एक विशाल पर्वतीय क्षेत्र से लगी हुई है, जिसे निम्न या लघु हिमालय कहते है यहा 4,572 मीटर ऊचाई वाले पर्वत तथा 914 मीटर की ऊचाई वाली घाटिया विभिन्न दिशाओ मे फैली हुई है इसके आसपास के शिखरो की ऊचाई मे आमतौर पर समानता है, जो एक अत्यत विच्छेदित पठार का आभास देती है लघु हिमालय की तीन प्रमुख श्रेणिया, नाग टिब्बा, धौलाधर और पीर पजाल हे जो सुदूर उत्तर स्थित उच्च हिमालयी श्रेणियो से प्रस्फुटित हुई है इन तीन श्रेणियो मे सबसे पूर्व मे नागटिब्बा का पूर्वी सिरा नेपाल मे लगभग 8,169 मीटर ऊचा है और यह गगा व यमुना नदियो के बीच उत्तराखड मे जलविभाजक क्षेत्र का निर्माण करता है

पश्चिम मे कश्मीर की खूबसूरत घाटी है, जो एक सरचनात्मक बेसिन है (एक वलयाकार बेसिन, जिसमे चट्टानी परत केद्रीय बिदु की ओर झुकी हुई है) और लघु हिमालय के एक महत्त्वपूर्ण खड का निर्माण करती है यह दक्षिण–पूर्व से पूर्वोत्तर की ओर लगभग 160 किमी तक फैली हुई है और इसकी चौडाई 80 किमी तक है इसकी औसत ऊचाई 1,554 मीटर है इस बेसिन से होकर तिर्यक रूप से सर्पाकार झेलम नदी बहती है, जो जम्मू–कश्मीर की विशाल मीठे पानी की वूलर झील से होकर बहती है

समूचे पर्वतीय क्षेत्र की रीढ उच्च हिमालय श्रणी है, जो सतत हिमरेखा से ऊपर तक उठी हुई है यह पर्वतश्रेणी नपाल मे अपनी अधिकतम ऊचाई तक पहुचती है, जहा विश्व की 14 सबसे ऊची चोटियो मे स 9 स्थित है इनमे से प्रत्येक की ऊचाई 7,925 मीटर से अधिक है पश्चिम से पूर्व की ओर इनके नाम है धौलागिरी–1, अन्नपूर्णा–1 मनासलू–1, चो यू, ग्याचुग काग–1, माउट एवरेस्ट, ल्होत्से, मकालू–1 और कचनजगा–1 आगे पूर्व मे भारत का हिस्सा बन चुके प्राचीन हिमालयी राज्य सिक्किम मे प्रवेश करते समय यह श्रेणी दक्षिण–पूर्वी दिशा से पूर्व दिशा अपना लेती है इसके बाद यह अगले 418 34 किमी तक भूटान और अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी हिस्से मे काग्टो शिखर (7,090

मीटर) तक यह पूर्व दिशा मे बढती है और अतत पूर्वोत्तर मे मुडकर नामचा बरवा मे समाप्त हो जाती हे

उच्च हिमालय और इसके उत्तर की श्रेणियो, पठारो तथा बेसिनो के बीच कोई स्पष्ट सीमारेखा नही है ओर इन्हे आमतौर पर टेथिस हिमालय तथा सुदूर उत्तर मे तिब्बत के रूप मे समूहबद्ध किया जाता है कश्मीर और हिमाचल प्रदेश मे टेथिस सबसे चौडे है, जिनसे स्पीति बेसिन और जॉस्कर पर्वतो का निर्माण होता है इसके सबसे ऊचे शिखर दक्षिण–पूर्व दिशा मे सतलुज नदी के उत्तर मे शिपकी दर्रे के सामने स्थित लियो पार्गियाल 6,791 मीटर और शिल्ला 7,026 मीटर है

अपवाह

हिमालय के अपवाह मे 19 प्रमुख नदिया है, जिनमे ब्रह्मपुत्र व सिधु सबसे बडी है दोनो मे से प्रत्येक का पर्वतो मे 2,59,000 वर्ग किमी विस्तृत जलसग्राहक बेसिन है अन्य नदियो मे से पाच, झेलम, चेनाब, रावी, व्यास और सतलुज सिधु तत्र की नदिया है, जिनका कुल जलग्रहण क्षेत्र लगभग 1,32,090 वर्ग किमी है, नौ नदिया, गगा यमुना, रामगगा, काली (सारदा), करनाली, राप्ती, गडक, बागमती व कोसी, गगा तत्र की है, जिनका जलग्रहण क्षेत्र 2,17,560 वर्ग किमी है और तीन, तिस्ता, रैदक व मनास, ब्रह्मपुत्र तत्र की है, जो 1,83,890 वर्ग किमी क्षेत्र को अपवाहित करती है

प्रमुख हिमालयी नदिया पर्वतश्रेणी के उत्तर से निकलती है और गहरे महाखड्डो से होती हुई बहती है, जो आमतौर पर कुछ भौगर्भिक सरचनात्मक नियत्रण को स्पष्ट करता है सिंधु तत्र की नदियों का बहाव एक नियम की तरह पश्चिमोत्तर है, जबकि गगा–ब्रह्मपुत्र नदी तत्र की नदिया पर्वतीय क्षेत्र से बहते हुए पूर्वी मार्ग अपनाती हे

भारत के उत्तर मे कराकोरम श्रेणी, जिसके पश्चिम मे हिदुकुश व पूर्व मे लद्दाख श्रेणी है, एक विशाल जलविभाजक बनाती है, जो सिधु तत्र को मध्य एशिया की नदियो से अलग करता है इस विभाजन के पूर्व मे कैलाश श्रेणी और पूर्व की ओर आगे निआनकिग तग्गुला पर्वत है, जो ब्रह्मपुत्र को उत्तर की ओर बहने से रोकते है इस विभाजन के दक्षिण मे ब्रह्मपुत्र, उच्च हिमालय श्रेणी के महाखड्ड को पार करने से पहले पूर्व की ओर लगभग 1,488 किमी बहती है इसकी बहुत सी तिब्बती सहायक नदिया विपरीत दिशा मे बहती है और सभवत कभी ब्रह्मपुत्र की भी यही दिशा रही होगी

उच्च हिमालय, जो सामान्यत अपनी समूची लबाई मे प्रमुख जल–विभाजक है, कुछ सीमित क्षेत्रो मे ही जल–विभाजक का काम करता है इसका कारण यह है कि प्रमुख हिमालयी नदिया, जैसे सिधु, ब्रह्मपुत्र, सतलुज और गगा की दो प्रमुख धाराए अलकनदा व भागीरथी उन पर्वतो से भी पुरानी है, जिन्हे वे काटती है ऐसा विश्वास है कि हिमालय इतनी धीमी गति से उठा कि पुरानी नदियो को अपनी धाराओ मे बहते रहने मे कोई परेशानी नही हुई और हिमालय के उठने से उनके बहाव ने गति पकड ली, जिससे वे घाटियो का कटाव तेजी से कर पाईं इस प्रकार हिमालय का उन्नयन

ओर घाटियों का गहरा होना साथ–साथ जारी रहा परिणामस्वरूप, पर्वतश्रेणियो के साथ पूर्णत विकसित नदी तत्र का उद्‌भव हुआ, जो गहरे अनुप्रस्थ महाखड्डो म कटा था इनकी गहराई 1,524 से 4,877 मीटर व चौडाई 10 से 48 किमी है अपवाह तत्र का आरभिक मूल इस अनोखे तथ्य को स्पष्ट करता है कि प्रमुख नदिया न केवल उच्च हिमालय की दक्षिणी ढालो को, बल्कि एक विशाल सीमा तक इसकी उत्तरी ढालो को भी अपवाहित करती है, क्योकि जल–विभाजक क्षेत्र शीर्ष रेखा के उत्तर मे स्थित है

एक जल–विभाजक के रूप मे उच्च हिमालय श्रेणी की भूमिका को सतलुज व सिधु घाटी के बीच के 579 किमी के क्षेत्र मे देखा जा सकता है उत्तरी ढालो मे उत्तर की ओर बहने वाली जॉस्कर व द्रास नदिया है, जो सिधु नदी मे अपवाहित होती है ग्लेशियर (हिमनद) भी ऊचे क्षेत्रो को अपवाहित करने व हिमालयी नदियो के पोषण (पानी देने) मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है उत्तराखड मे अनेक हिमनद है, जिनमे से सबसे बडा गगोत्री हिमनद 32 किमी लबा है और गगा के स्रोतो मे से एक है खुंबु हिमनद नेपाल के एवरेस्ट क्षेत्र को अपवाहित करता हे और इस पर्वत की चढाई का सबसे लोकप्रिय मार्ग है हिमालय क्षेत्र के हिमनदो की गति की दर उल्लेखनीय रूप से भिन्न है, उदाहरणार्थ, कराकोरम श्रेणी मे बाल्टोरो हिमनद प्रतिदिन दो मीटर खिसकता है, जबकि खुबु जैसे अन्य हिमनद प्रतिदिन केवल लगभग 30 सेमी तक ही खिसक पाते है हिमालय के अधिकाश हिमनद सिकुड रहे हैं

मिट्टी

हिमालय की मिट्टी के बारे मे अधिक जानकारी उपलब्ध नही है उत्तरमुखी ढलानो पर मिट्टी की अच्छी–खासी मोटी परत है, जो कम ऊचाइयो पर घने जगलो तथा अधिक ऊचाई पर घास का पोषण करती है जगल की मिट्टी गहरे भूरे रग की है तथा इसकी बनावट चिकनी दोमट है, यह फलो के वृक्ष उगाने के लिए आदर्श मिट्टी है पर्वतीय घास स्थली की मिट्टी भलीभाति विकसित है, लेकिन इसकी मोटाई तथा रासायनिक गुण अलग–अलग है पूर्वी हिमालय मे इस तरह की नम, गहरी और उच्चभूमि की मिट्टी मे उदाहरणार्थ दार्जिलिग की पहाडियो और असम घाटी मे खाद की मात्रा अधिक होती है, जो चाय की खेती के लिए अच्छी मानी जाती है. ऊसर मिट्टी (अनुपजाऊ) हिमालय पर्वतश्रेणी के उत्तर मे सिधु तथा इसकी सहायक श्योक नदी की घाटियो मे लगभग 644 किमी की पट्टी मे और हिमाचल प्रदेश मे कही–कही पाई जाती है सुदूर पूर्व मे लद्दाख क्षेत्र के शुष्क, ऊचे मैदानो मे लवणीय मिट्टी पाई जाती है जो मिट्टिया किसी खास क्षेत्र तक सीमित नही है, उनमे जलोढ मिट्टी (बहते हुए पानी द्वारा निक्षेपित) सबसे उपजाऊ है, हालाकि यह बहुत कम क्षेत्रो मे पाई जाती है, जैसे कश्मीर घाटी, देहरादून मे और हिमालय की घाटियो के साथ स्थित ऊचे कगारो पर अश्ममृदा, जिसमे अपूर्ण रूप से विघटित चट्टानो के टुकडे होते है और खाद की कमी होती है, अधिक ऊचाई वाले विस्तृत क्षेत्रो मे पाई जाती है और यह सबसे कम उपजाऊ मिट्टी है

जलवायु

हवा और जल सचरण की विशाल प्रणालियो को प्रभावित करने वाले विशाल जलवायवीय विभाजक के रूप मे हिमालय दक्षिण मे भारतीय उपमहाद्वीप और उत्तर मे मध्य एशियाई उच्चभूमि की मौसमी स्थितियो को प्रभावित करने मे प्रमुख भूमिका निभाता है अपनी स्थिति और विशाल ऊचाई के कारण हिमालय पर्वतश्रेणी सर्दियो मे उत्तर की ओर से आने वाली ठडी यूरोपीय वायु को भारत मे प्रवेश करने से रोकती है और दक्षिण–पश्चिम मॉनसूनी हवाओ को पर्वतश्रेणी को पार करके उत्तर मे जाने से पहले अधिक वर्षा के लिए भी बाध्य करती है इस प्रकार, भारतीय क्षेत्र मे भारी मात्रा मे वर्षा (बारिश और हिमपात) होती है, लेकिन वही तिब्बत मे मरुस्थलीय स्थितिया है दक्षिणी ढलानो पर शिमला और पश्चिमी हिमालय के मसूरी मे औसत सालाना वर्षा 1,530 मिमी तथा पूर्वी हिमालय के दार्जिलिग मे 3,048 मिमी होती है उच्च हिमालय के उत्तर मे सिधु घाटी के कश्मीर क्षेत्र मे स्थित स्कार्दू, गिलगित और लेह मे सिर्फ 76 से 152 मिमी वर्षा होती है

स्थानीय ऊचाई और स्थिति से न सिर्फ हिमालय के विभिन्न क्षेत्रो की जलवायु मे भिन्नता का निर्धारण होता है, बल्कि एक ही श्रेणी की विभिन्न ढलानो पर भी अलग–अलग जलवायु होती है उदाहरण के लिए, देहरादून के सामने मसूरी पर्वत पर 1,859 मीटर की ऊचाई पर स्थित मसूरी शहर मे अनुकूल स्थिति के कारण सालाना 2,337 मिमी तक वर्षा होती है, जबकि वहा से 145 किमी पश्चिमोत्तर मे पर्वतस्कध श्रृखलाओ के पीछे 2,012 मीटर की ऊचाई पर स्थित शिमला मे सिर्फ 1,575 मिमी बारिश होती है पूर्वी हिमालय, जो पश्चिमी हिमालय के मुकाबले कम ऊचाई पर है अपेक्षाकृत गर्म है, शिमला मे दर्ज न्यूनतम तापमान –25° से है 1,945 मीटर की ऊचाई वाले दार्जिलिग मे मई महीने मे औसत न्यूनतम तापमान 11° से रहता है इसी महीने मे 5,029 मीटर की ऊचाई पर माउट एवरेस्ट के पास न्यूनतम तापमान लगभग –8° से होता है, 5,944 मीटर पर यह –22° से तक गिर जाता है और यहा सबसे कम न्यूनतम तापमान –29° से होता है, अक्सर 161 किमी से अधिक रफ्तार स बहने वाली हवाओ से सुरक्षित क्षेत्रो मे दिन के समय सुदूर ऊचाइयो पर भी अक्सर सूर्य की गर्माहट खुशनुमा होती है

इस क्षेत्र मे आर्द्र मौसम के दो कालखड है, जाडे मे होने वाली वर्षा और दक्षिण–पश्चिमी मॉनसूनी हवाओ द्वारा लाई गई वर्षा शीतकालीन वर्षा पश्चिम की ओर से भारत मे आने वाले कम दबाव की मौसमी प्रणालियो के आगे बढने के कारण होती है, जिसके कारण भारी हिमपात भी होता है जिन क्षेत्रो मे पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव होता है, वहा सतह से 3,048 मीटर की ऊचाई पर हवा की ऊपरी परतो मे सघनन होता है परिणामस्वरूप ऊचे पर्वतो पर अधिक वर्षा या हिमपात होता है इसी मौसम मे हिमालय की ऊची चोटियो पर बर्फ एकत्र होती है और पश्चिमी हिमालय मे पूर्वी हिमालय के मुकाबले अधिक वर्षा या हिमपात होता है उदाहरण के लिए, जनवरी मे पश्चिम स्थित मसूरी मे लगभग 76 मिमी वर्षा या हिमपात दर्ज किया जाता है, जबकि पूर्व मे

दार्जिलिग मे यह 25 मिमी से भी कम होता है मई के अंत तक मौसमी परिस्थितिया उलट जाती है पूर्वी हिमालय के ऊपर से गुजरने वाली दक्षिण–पश्चिमी मॉनसूनी हवाए 5,486 मीटर की ऊचाई पर वर्षा और हिमपात का कारण बनती है, इसलिए जून मे दार्जिलिग मे लगभग 610 मिमी और मसूरी म 203 मिमी से भी कम वर्षा या हिमपात दर्ज होता है सितबर मे बारिश खत्म हो जाती है, जिसके बाद दिसबर मे जाडे के मौसम की शुरुआत से पहले तक हिमालय मे सबसे अच्छा मौसम रहता है

वनस्पति जीवन

हिमालय मे पाई जाने वाली वनस्पति को ऊचाई और बारिश के आधार पर मुख्यत चार क्षेत्रो मे बाटा जा सकता है– उष्ण, उपोष्ण, शीतोष्ण और आल्पीय ऊचाई तथा जलवायु मे स्थानीय भिन्नता तथा सूर्य के प्रकाश और हवा के कारण प्रत्येक क्षेत्र के वानस्पतिक जीवन मे काफी भिन्नता पाई जाती है उष्णकटिबधीय वर्षा प्रचुर वन, पूर्वी और मध्य हिमालय की नम तराइयो तक सीमित है सदाबहार डिप्टेरोकार्प्स, इमारती लकडी और राल उत्पादन करने वाले वृक्ष आम है, इनकी विभिन्न प्रजातिया, विभिन्न मिट्टियो तथा भिन्न ढालो वाली पर्वतीय ढलानो पर उगती है आयरनवुड (*मेसुआ फेरिया*) 183 और 732 मीटर की ऊचाइयो के बीच छिद्रदार मिट्टी के क्षेत्र मे पाया जाता है, तीखी ढलानो पर बास उगत है, ओक और चेस्टनट 1,097 से 1,737 मीटर की ऊचाइयो पर पश्चिम मे हिमाचल प्रदेश से मध्य नेपाल तक बलुई पत्थरो को ढकने वाली अश्ममृदा मे उगते है तीखी ढलानो पर जलधाराओ के किनारे एल्डर के वृक्ष पाए जाते है अधिक ऊचाई पर इनका स्थान पर्वतीय वन ले लेते है, जिनमे सामान्य सदाबहार प्रजाति *पेडानस फरकेटस* है, जो एक प्रकार का स्क्रू पाइन (केतकी) है पूर्वी हिमालय मे अनुमानत इन वृक्षो के अलावा लगभग 4,000 प्रजातियो के फूलदार पोधे पाए जाते है, जिनमे से 20 खजूर जाति के है पश्चिम की ओर घटती हुई वर्षा और बढती हुई ऊचाई के साथ–साथ वर्षा वनो का स्थान उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन ले लेते है, जहा बहुमूल्य इमारती वृक्ष साल (*शोरिया रोबस्टा*) प्रमुख प्रजाति है, साल 914 मीटर {नम साल} से 1,372 मीटर {शुष्क साल} की ऊचाइयो तक के ऊचे पठारो मे फलता–फूलता है इसके और आगे पश्चिम में क्रमश स्तेपी वन (विस्तृत मैदानो मे स्थित वन), उपोष्ण कटिबधीय काटेदार स्तेपी और उपोष्ण कटिबधीय उपमरुस्थलीय वनस्पति पाई जाती है शीतोष्ण वन लगभग 1,372 से 3,353 मीटर की ऊचाइयो के बीच फैले हुए है और इनमे शकुधारी तथा चौडी पत्तियो वाले शीतोष्ण कटिबधीय वृक्ष पाए जाते है ओक तथा शकुधारी वृक्षों के सदाबहार जगलो की सुदूर पश्चिमी पर्वतीय सीमा पाकिस्तान मे रावलपिडी के लगभग 48 किमी पश्चिमोत्तर मे मढ़ी के ऊपर के पहाडो पर स्थित है, ये वन निम्न हिमालय की विशिष्टता है, जो भारत मे कश्मीर के पीर पजाल की बाहरी ढलानो पर स्पष्ट दिखते है 823 से 1,646 मीटर की ऊंचाई तक चीड पाइन (*पाइनस रॉक्सबर्घी*) प्रमुख प्रजाति है अदरूनी घाटियो मे यह प्रजाति 1 920 मीटर की ऊचाई तक भी पाई जा सकती है देवदार, जो काफी महत्त्वपूर्ण स्थानीय प्रजाति है, मुख्यत पर्वतश्रेणी के पश्चिमी हिस्से मे पाई जाती है यह प्रजाति

1,920 और 2,743 मीटर की ऊचाई के बीच उगती है तथा सतलुज व गगा नदियो की ऊपरी घाटियो मे और अधिक ऊचाई पर भी उग सकती है अन्य शकुधारी वृक्षो मे ब्लू पाइन व स्प्रूस के वृक्ष लगभग 2,225 और 3,048 मीटर के बीच पाए जाते हैं

आल्पीय क्षेत्र 3,200 और 3,566 मीटर की ऊचाइयो के बीच वृक्ष रेखा से ऊपर का क्षेत्र है ओर पश्चिमी हिमालय म लगभग 4,176 मीटर तथा पूर्वी हिमालय मे 4,450 मीटर की ऊचाई तक फैला है इस क्षेत्र मे सभी प्रकार की नम आल्पीय वनस्पतिया पाई जाती हैं जूनिपर कई क्षेत्रो मे होता है, विशेषकर धूपदार, तीखी और चट्टानी ढलानो तथा शुष्क क्षेत्रो मे इसका आधिक्य है, नगा पर्वत पर यह 3,886 मीटर की ऊचाई पर भी पाया जाता है रोडोडेंड्रोन हर जगह होता है, लेकिन पूर्वी हिमालय के नम हिस्सो मे इसकी बहुतायत है, जहा यह वृक्षों से लेकर छोटी झाडियो तक हर आकार मे उगता है निचले क्षेत्रो मे जहा नमी की अधिकता है, वहा काई और शैवाक (लाइकेन) उगते है, अधिक ऊचाई, विशेषकर नगा पर्वत और माउट एवरेस्ट पर फूलदार पौधे भी पाए जाते है

प्राणी जीवन

पूर्वी हिमालय मे पशु जीवन का उद्‌भव मुख्यत दक्षिणी चीन और भारतीय–चीनी क्षेत्र से हुआ है इसमे प्राथमिक रूप से उष्णकटिबधीय वनो मे पाया जाने वाला पशु जीवन है और अनुपूरक रूप से ऊचे क्षेत्रो मे व्याप्त उपोष्ण, पर्वतीय और शीतोष्ण परिस्थितियो तथा शुष्क पश्चिमी क्षेत्रो के लिए अनुकूलित हुए जतु हैं लेकिन पश्चिमी हिमालय मे पशु जीवन भूमध्य सागरीय, इथियोपियाई और तुर्कमेनियाई क्षेत्रो से ज्यादा निकटता प्रदर्शित करता है अतीत मे इस क्षेत्र मे जिराफ और दरियाई घोडे जैसे अफ्रीकी जानवरो की मौजूदगी का पता बाह्य हिमालय के शिवालिक निक्षेप मे पाए जाने वाले जीवाश्मो से लगाया जा सकता है वृक्ष रेखा से ऊपर की ऊचाई पर पाया जाने वाला पशु जीवन लगभग पूर्णत स्थानीय प्रजाति का है, जो ठड के अनुकूलित हो चुके हे और इनका विकास हिमालय की ऊचाई बढने के बाद स्तेपी के वन्य जीवन से हुआ है हाथी, पहाडी भैसा और गैडा मुख्यत दक्षिणी नेपाल के निचले पर्वतीय क्षेत्र मे वनाच्छादित तराई के कुछ हिस्सो तक सीमित है, जो नम या दलदली क्षेत्र है और इनमे से अधिकाश अब सूख चुके है एक समय हिमालय के समूचे तराई क्षेत्र मे भारतीय गैडे की बहुतायत थी, लेकिन अब ये विलुप्त होने के कगार पर है, कस्तूरी मृग और कश्मीरी मृग या हगुल भी लुप्तप्राय है हिमालय का काला भालू, मेघवर्णी तेदुआ, लगूर (लबी पूछ वाला एशियाई बदर) और बिडाल परिवार की प्रजातिया हिमालय के जगलो मे पाए जाने वाले कुछ अन्य जानवर है हिमालयी बकरी और तहर जैसे मृग भी इनमे पाए जाते है

वृक्ष रेखा से ऊपर की ऊचाई पर कभी–कभार हिम तेदुआ, भूरे भालू, लाल पाडा और तिब्बती याक देखे जा सकते है याक का पालतू बना लिया गया है और लद्दाख मे इसे बोझ ढोने वाले पशु के रूप मे इस्तेमाल किया जाता है. वृक्ष रेखा से ऊपर की ऊचाई

मे रहने वाले विशेष निवासियो मे विभिन्न प्रकार के कीडे, मकडिया और बरूथी (चिचडी) है, जो 6,309 मीटर की ऊचाई मे रहने मे सक्षम प्राणी है जपालुरा वश की छिपकलिया भी कई इलाको मे पाई जाती है आमतौर पर *ग्लिप्टोथोरेक्स* मूल की मछलिया अधिकाश हिमालयी धाराओ मे रहती है और किनारो पर पानी मे रहने वाले हिमालयी छछूदर पाए जाते है पूर्वी हिमालय मे एक प्रकार का अधा साप टाईफ्लोप्स भी पाया जाता है हिमालय मे पाई जाने वाली तितलिया सुदर ओर विभिन्न प्रकार की होती हे, विशेषकर *ट्रोईडेस* वश मूल की

यहा का पक्षी जीवन भी काफी समृद्ध है, लेकिन पश्चिम की अपेक्षा पूर्व मे यह अधिक परिलक्षित होता है अकेले नेपाल मे लगभग 800 प्रजातियो को देखा जा सकता है हिमालय मे आमतौर पर पाए जाने वाले पक्षियो मे विभिन्न प्रजातियों की मेना (काली पूछ वाली, नीली और रैकेट पूछ वाली), गगरा, चौघ (कौवे से सबधित), कस्तूरिका और थिरथिरा शामिल है यहा कुछ शक्तिशाली उडाके, जैसे दाढीदार गिद्ध (*लेमरगियर*), काले कानों वाली चील और हिमालयी ग्रिफोन (पुरानी दुनिया का गिद्ध) भी दिखाई देते है हिम तीतर और कार्निश चौघ 5,669 मीटर की ऊचाई पर पाए जाते है.

लोग

भारतीय उपमहाद्वीप मे पाए जाने वाले चार प्रमुख जातीय समूहो, भारतीय–यूरोपीय, तिब्बती–बर्मी, ऑस्ट्रो–एशियाई और द्रविड मे से पहले दो समूह हिमालय क्षेत्र मे काफी सख्या मे पाए जाते है, हालाकि विभिन्न क्षेत्रो मे ये अलग–अलग अनुपात मे घुले–मिले हुए है इनका वितरण पश्चिम से यूरोपीय समूहो, दक्षिण से भारतीय लोगो ओर पूर्व व उत्तर से एशियाई जनजातियो की घुसपैठ के लबे इतिहास का परिणाम हे हिमालय के मध्यवर्ती तिहाई हिस्से नेपाल मे ये समूह अतमिश्रित है लघु हिमालय मे घुसपैठ से दक्षिण एशिया के नदी मैदानो के रास्तो मे और उनसे होते हुए प्रवास का मार्ग प्रशस्त हुआ आमतौर पर यह कहा जा सकता है कि उच्च हिमालय तथा टेथिस हिमालय मे तिब्बती व अन्य तिब्बती–बर्मी लोगो का निवास है तथा निम्न हिमालय मे लबे, गोरे भारोपीय लोगो का वास है जम्मू–कश्मीर के बाह्य हिमालय क्षेत्र मे भारोपीय लोगो को डोगरी वश का कहा जाता है कश्मीर घाटी में यह समूह कश्मीरी लोगो के रूप मे है लघु हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रो मे रहने वाले गद्दी और गूजर भी यूरोपीय समूह से सबध रखते है गद्दी निश्चित रूप से पर्वतीय लोग है, वे भेड–बकरियो के बडे–बडे झुड पालते है और सिर्फ जाडे मे बाह्य हिमालय के अपने बर्फीले इलाके से नीचे आते है तथा जून मे वे फिर सबसे ऊचे चरागाहो मे लौट जाते है गूजर लोग प्रवासी चरवाहे होते है, जो अपनी भेडो, बकरियो और कुछ मवेशियो पर गुजारा करते है और पशुओ की आवश्यकतानुसार विभिन्न ऊचाइयो पर स्थित चरागाहो की खोज करते रहते है

चपा, लद्दाखी, बाल्टी और दर्दीय लोग उच्च हिमालय पर्वतश्रेणी के उत्तर मे कश्मीर हिमालय मे रहते है. दर्दीय भारतीय–यूरोपीय मूल के है, जबकि अन्य तिब्बती–बर्मी

मूल के है चपा लोग ऊपरी सिधु घाटी मे बजारे चरवाहो का जीवन व्यतीत करते है लद्दाखी लोग कश्मीर मे सिधु के कगारो तथा जलोढ क्षेत्रो मे निवास करते है बाल्टी लोग सिधु घाटी मे अधिक नीचे तक फैले हुए है उन्होने इस्लाम धर्म अपना लिया है

लगभग 200 वर्षो तक सिक्किम और भूटान पूर्वी नेपाल की अतिरिक्त जनसख्या को अपने मे समोकर सुरक्षा वॉल्व का काम करते रहे है माउट एवरेस्ट के गृहक्षेत्र के मुकाबले कही अधिक सख्या मे शेरपा लोग (नेपाल तथा सिक्किम के पर्वत क्षेत्र मे रहने वाले लोग) दार्जिलिग क्षेत्र मे रहते है पहाडी लोग नेपाल से भारत के सिक्किम राज्य तथा भूटान देश मे आए इस प्रकार, सिक्किम के लोग लेप्चा, भूटिया और पहाडी, तीन भिन्न जातीय समूहो के है आमतौर पर नेपाली और लेप्चा पश्चिमी भूटान मे तथा तिब्बती मूल के भूटिया पूर्वी भूटान मे रहते है

अरुणाचल प्रदेश मे औबोर या आदि, आका, आप्तानी, डाफला, खपती, खोवा, मिशमी मोबा, मिरी और सिग्फो आदि कई समूहो का आवास है जातीय रूप से ये सभी समूह भारतीय–एशियाई है, भाषाई रूप से ये तिब्बती–बर्मी है प्रत्येक समूह एक अलग नदी घाटी मे रहता है और ये झूम खेती करते है

अर्थव्यवस्था

ससाधन

हिमालय की आर्थिक परिस्थितिया इस विभिन्न परिस्थिति वाले विस्तृत और विषम क्षेत्र के सीमित ससाधनो के अनुरुप है यहा की मुख्य गतिविधि पशुपालन है, लेकिन वनोपज का दोहन और व्यापार भी महत्त्वपूर्ण है हिमालय मे प्रचुर आर्थिक ससाधन है इनमे उपजाऊ कृषि योग्य भूमि, विस्तृत घास के मैदान व वन, खनन योग्य खनिज भडार और आसानी से दोहन योग्य जलविद्युत शक्ति शामिल है पश्चिमी हिमालय मे सबसे उत्पादक कृषि योग्य भूमि कश्मीर घाटी, कागडा घाटी, सतलुज नदी के बेसिन और उत्तराखड मे गंगा व यमुना नदियो के कगारी क्षेत्र के सीढीदार खेतो मे है, इन क्षेत्रो मे चावल, मक्का, गेहू और ज्वार–बाजरा का उत्पादन होता है मध्य हिमालय मे नेपाल मे दो–तिहाई कृषि योग्य भूमि तराई और इससे लगे मैदानी क्षेत्र मे है, इस भूमि मे देश के कुल चावल उत्पादन का अधिकाश हिस्सा पैदा होता है इस क्षेत्र मे बडी मात्रा मे मक्का, गेहू, आलू और गन्ने की भी खेती की जाती है

हिमालय क्षेत्र के अधिकाश फलो के बगीचे कश्मीर घाटी और हिमालय प्रदेश की कुल्लू घाटी मे स्थित है सेब, आडू, नाशपाती और चेरी की बडे पैमाने पर खेती होती है, जिनकी भारतीय नगरो मे भारी माग है कश्मीर मे डल झील के किनारे अगूर के बाग है, जहा अच्छे किस्म के अगूर होते है, जिनसे शराब और ब्राडी तैयार होती है कश्मीर घाटी के चारो तरफ स्थित पहाडो पर अखरोट और बादाम के वृक्ष है, जिनकी गिरियो से तेल निकाला जाता है भूटान मे भी फलो के बगीचे है और वहा से भारत को सतरो का निर्यात किया जाता है

बागानी फसलों मे चाय मुख्यत' पहाडो और दार्जिलिग मे तराई के मैदानो मे उगाई जाती है काशगडा घाटी मे भी कुछ मात्रा मे चाय की खेती होती है सिक्किम, भूटान और दार्जिलिग के पहाडो मे इलायची के भी बाग है उत्तराचल के उत्तरकाशी और पिथौरागढ जिलो मे स्थित बागानो मे औषधीय वनस्पतिया भी उगाई जाती हैं

गर्मी के मौसम मे कश्मीर के 'मार्ग' नामक चरागाहो मे व्यापक पैमाने पर ऋतुप्रवास (मवेशियो का मौसमी प्रवास) होता है यहा उपलब्ध विषम चरागाह भूमि मे भेड, बकरी और याक पाले जाते है

हिमालय क्षेत्र मे 1940 के दशक से शुरू हुई तेज जनसख्या वृद्धि ने कई इलाको मे जगलो पर जबरदस्त दबाव डाला है कृषि के लिए जगलो की सफाई करने और ईंधन के लिए लकडी काटने से ऊपरी क्षेत्र की खडी ढलानो पर भी जगल खत्म हो रहे है, जिससे पर्यावरण को क्षति पहुच रही है सिर्फ सिक्किम और भूटान मे ही बडे इलाको मे सघन वन बचे हुए है

हिमालय खनिज पदार्थों से समृद्ध क्षेत्र है, हालाकि इनका दोहन अपेक्षाकृत सुगम क्षेत्रो तक ही सीमित है जम्मू–कश्मीर क्षेत्र मे खनिजो का सर्वाधिक मात्रा मे सकेद्रण है जास्कर पहाडो मे नीलम पाया जाता है और निकटस्थ सिधु नदी के थाले मे जलोढीय सोना पाया जाता है बाल्टिस्तान मे ताम्र अयस्क के भडार है और कश्मीर घाटी मे लौह अयस्क भी पाया जाता है जम्मू–कश्मीर मे बॉक्साइट भी मिलता है नेपाल, भूटान और सिक्किम मे कोयला, अभ्रक, जिप्सम के भडार और लौह, ताम्र, सीसा तथा जस्ते के अयस्क के विशाल भडार है

हिमालय की नदियो मे जलविद्युत उत्पादन की जबरदस्त क्षमता है और भारत मे 1950 के दशक से ही इसका व्यापक दोहन किया जा रहा है बाह्य हिमालय मे सतलुज नदी पर भाखडा नागल मे विशालकाय बहुउद्देशीय परियोजना स्थित है 1963 मे तैयार इस बाध के जलाशय की क्षमता लगभग 10 अरब क्यूबिक मीटर है और यहा इसकी मूल विद्युत उत्पादन क्षमता कुल 1,050 मेगावाट है हिमालय की तीन अन्य नदियो, कोसी, गडक (नारायणी) और जलधाक, का भी भारत मे दोहन होता है और इनसे नेपाल तथा भूटान मे विद्युत आपूर्ति होती है

यातायात

इस क्षेत्र मे सडक यातायात सुस्थापित है, जिससे उत्तर तथा दक्षिण, दोनो दिशाओ से हिमालय मे पहुचना सुगम है नेपाल के तराई क्षेत्र मे पूर्व–पश्चिम दिशा मे एक राजमार्ग स्थित है यह देश के कई जलग्रहण बेसिनो तक जाने वाले मार्गो को जोडता है राजधानी काठमाडू लघु हिमालय राजमार्ग के जरिये पोखरा से जुडी हुई है, जबकि कोडारी दर्रे से गुज़रने वाला एक निचला हिमालयी राजमार्ग नेपाल को तिब्बत के ल्हासा से जोडता है पश्चिमोत्तर मे पाकिस्तान एक राजमार्ग से चीन से जुडा हुआ है हिमाचल प्रदेश से गुजरने वाले हिदुस्तान–तिब्बत मार्ग मे उल्लेखनीय सुधार हुआ है,

483 किमी लबा यह राजमार्ग, भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी रह चुकी शिमला से होकर गुजरता है और पजाब के मैदान को शिपकी दर्रे के पास भारत–तिब्बत सीमा से जोडता है कुल्लू घाटी मे मनाली से एक राजमार्ग न सिर्फ उच्च हिमालय से गुजरता है, बल्कि यह जास्कर श्रेणी से होता हुआ ऊपरी सिंधु घाटी मे लेह तक जाता है कश्मीर घाटी मे श्रीनगर मार्ग द्वारा भी लेह भारत से जुडा हुआ है, श्रीनगर से लेह तक का रास्ता 5,404 मीटर की ऊचाई पर स्थित खार डुगला दर्रे से गुजरता है, जो भारत से मध्य एशिया मे जाने वाले ऐतिहासिक कारवा मार्ग मे पडने वाला पहला ऊचा दर्रा है हाल के वर्षों मे अनेक नई सडको का निर्माण हुआ है

पजाब के मैदान से कश्मीर घाटी के लिए एकमात्र रास्ता भारत के पजाब राज्य के जालधर से जम्मू–बनिहाल, श्रीनगर और बारामूला से गुजरते हुए उरी जाने वाले राजमार्ग के जरिये है यह बनिहाल स्थित एक सुरग से पीर पजाल श्रेणी को पार करता है पाकिस्तान मे रावलपिडी से श्रीनगर को जोडने वाला पुराना मार्ग अपनी पहले वाली महत्ता खो चुका है

गगटोक से गुजरने वाला ऐतिहासिक कलीमपोग–ल्हासा कारवा व्यापार मार्ग हिमालय के सिक्किम क्षेत्र मे स्थित है 1950 के दशक के मध्य से पहले तिस्ता नदी पर गगटोक से रोग्फू तक 48 किमी लबा सिर्फ एक वाहन योग्य मार्ग था, जो वहा से आगे दक्षिण मे 113 किमी दूर सिलीगुडी तक जाता था तब से अब तक सिक्किम के दक्षिणी हिस्से मे जीप से गुजरने लायक कई सडके बनाई गई है और उत्तरी सिक्किम मे एक राजमार्ग गगटोक को लाचेन (लाछुग) स जोडता है

नामसाई से चौखाम, सादिया से रोईग, पासीघाट से डिब्रूगढ, सोनारी घाट के किनारे उत्तरी लखीमपुर से हपोली और तेजपुर से बमडीला को जाने वाली सडके अरुणाचल प्रदेश को ब्रह्मपुत्र नदी घाटी से जोडती है

भारत के मैदानो से सिर्फ दो मुख्य रेलमार्ग (दोनो छोटी लाइन) लघु हिमालय को भेदते हुए जाते हैं एक पश्चिमी हिमालय मे कालका और शिमला के बीच और दूसरा पूर्वी हिमालय मे सिलीगुडी तथा दार्जिलिग के बीच नेपाल मे एक और छोटी लाइन भारत मे बिहार के रक्सौल से लगभग 48 किमी दूर अमलेखगज को जोडती है और वहा से विद्युत चालित हवाई रज्जु मार्ग द्वारा राजधानी काठमाडू तक टोकरियो मे सामान की ढुलाई होती है बाह्य हिमालय मे दो अन्य छोटे रेलमार्ग है– एक कुल्लू घाटी में, पठानकोट से जोगिदरनगर रेलमार्ग, दूसरा हरिद्वार से देहरादून रेलमार्ग वजीराबाद से सियालकोट होते हुए जम्मू तक जाने वाला रेलमार्ग अब स्थायी रूप से बद कर दिया गया है

हिमालय मे दो प्रमुख हवाई पट्टिया है, एक काठमाडू मे और दूसरी कश्मीर की राजधानी श्रीनगर मे, काठमाडू हवाई अड्डे से अतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय उडाने उपलब्ध है इनके अलावा नेपाल के पहाडी और तराई क्षेत्र मे स्थानीय महत्त्व की हवाई पट्टियो

की सख्या बढ रही है, जो एस टी ओ एल (शार्ट टेक ऑफ ऐड लैडिग) विमानो के अनुकूल है

हवाई और भूमि यातायात मे हुए सुधार ने हिमालय की अर्थव्यवस्था मे पर्यटन को काफी महत्त्वपूर्ण बना दिया है विस्तृत और भिन्नताओ से परिपूर्ण हिमालय के आर्थिक विकास को बढावा देने और साथ–साथ वहा के पर्यावरण और सास्कृतिक धरोहरो के साधन के रूप मे पर्यटन को मान्यता दी जा रही है

अध्ययन तथा पर्यवेक्षण

हिमालय की आरभिक यात्राए व्यापारियो, चरवाहो और तीर्थयात्रियो द्वारा की गई थी तीर्थयात्रियो को विश्वास था कि यात्रा जितनी कष्टकर होगी, वे मोक्ष या निर्वाण के उतने ही करीब पहुच पाएगे, जबकि व्यापारियो और चरवाहो ने 5,486 से 5,791 मीटर तक की ऊचाई पर स्थित दर्रो को सामान्य जीवन मार्ग मानकर पार किया, लेकिन अन्य सभी लोगो के लिए हिमालय एक दुर्गम और भयकर अवरोध था

हिमालय का कुछ हद तक सटीक मानचित्र मुगल बादशाह अकबर के दरबार के स्पेनी दूत एतोनियो मौनसेरेट ने 1590 मे तैयार किया था फ्रासीसी भू–वैज्ञानिक ज्या बैपतिस्त बॉरगुईग्नोन डी ऑरविले ने व्यवस्थित पर्यवेक्षण के आधार पर तिब्बत और हिमालय पर्वतश्रेणी का पहला मानचित्र तैयार किया 19वी सदी के मध्य मे सर्वे ऑफ इडिया ने हिमालय की चोटियो की ऊचाई के सही आकलन के लिए व्यवस्थित कार्यक्रम का आयोजन किया 1849 से 1855 के बीच नेपाल और उत्तराखड की चोटियो का सर्वेक्षण कर उनका मानचित्र बनाया गया नंगा पर्वत और उत्तर मे कराकोरम श्रेणी की चोटियो का 1855 से 1859 के बीच सर्वेक्षण किया गया सर्वेक्षको ने इन खोई गई असख्य चोटियो को अलग–अलग नाम नही दिया, बल्कि अंको और रोमन सख्याओ से उनकी पहचान की. इस प्रकार, माउट एवरेस्ट को सर्वप्रथम सिर्फ 'एच' नाम दिया गया, 1849–50 मे इसे शिखर XV कर दिया गया 1865 मे शिखर XV का नाम भारत के महासर्वेक्षक रहे सर जार्ज एवरेस्ट (1830 से 1843 तक) के नाम पर रखा गया 1852 मे गणना का इस हद तक विकास नही हुआ था कि शिखर XV दुनिया के अन्य किसी भी शिखर से ऊचा है, इसकी जानकारी हो सके 1862 तक, 5 486 मीटर से अधिक ऊचाई वाले 40 शिखरो पर सर्वेक्षण कार्य के लिए आरोहण हो चुका था

सर्वेक्षण अभियानो के अलावा 19वी शताब्दी में हिमालय मे कई वैज्ञानिक अध्ययन भी किए गए 1848 से 1849 के बीच अग्रेज वनस्पतिशास्त्री जोजेफ डाल्टन हूकर ने सिक्किम हिमालय क्षेत्र के वनस्पति जीवन का सर्वप्रथम अध्ययन किया उसके बाद कई लोगो ने उनका अनुसरण किया, जिसमे हिमालय की ऊचाइयो मे रहने वाले जतुओ के प्राकृतिक इतिहास के महत्त्वपूर्ण विवरण के लेखक, ब्रिटिश प्रकृतिविद् रिचर्ड डब्ल्यू जी हिग्स्टन (आरभिक 20वी शताब्दी) भी शामिल थे

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से सर्वे ऑफ इडिया ने हवाई चित्रो की मदद से हिमालय के कुछ व्यापक पैमाने के मानचित्र बनाए है जर्मन भूगोलविदो और मानचित्रकारो ने भू–फोटोग्रामेट्री की मदद से हिमालय क कुछ हिस्सो का मानचित्र तैयार किया है साथ ही, उपग्रहीय सर्वेक्षण का इस्तेमाल ज्यादा सटीक और ब्योरेवार मानचित्रो के निर्माण मे किया जा रहा है

ब्रिटेन के डब्ल्यू.डब्ल्यू. ग्राहम द्वारा 1883 मे कई शिखरो पर चढने के दावे के साथ ही 1880 के दशक मे हिमालय पर्वतारोहण की शुरुआत हुई हालाकि उनकी रिपोर्ट को सशय की दृष्टि से देखा गया, लेकिन इससे अन्य यूरोपीय पर्वतारोहियो मे भी रुचि उत्पन्न हुई 20वी सदी के आरभ मे कराकोरम शृखला पर और हिमालय के कुमाऊ तथा सिक्किम क्षेत्र मे पर्वतीय अभियानो की सख्या मे उल्लेखनीय वृद्धि हुई प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के बीच के काल मे विभिन्न चोटियो के प्रति विभिन्न देशो की प्राथमिकता का विकास हुआ जर्मनो ने नगा पर्वत और कचनजगा, अमेरिकियो ने के–2 (इसे माउट गॉडविन ऑस्टिन भी कहते है) और ब्रिटिश लोगो ने माउट एवरेस्ट को चुना 1921 तक माउट एवरेस्ट पर चढने के दर्जनो प्रयास हो चुके थे मई 1953 मे न्यूजीलैड के पर्वतारोही एडमड हिलेरी और उनके सहयोगी शेरपा तेनजिग नोर्गे द्वारा सफलता प्राप्त करने से पहले लगभग दर्जन भर प्रयास हो चुके थे इसी वर्ष कार्ल–मारिया हेरलिगकोफर के नेतृत्व वाली ऑस्ट्रो–जर्मन टीम ने नगा पर्वत के शिखर तक पहुचने मे सफलता पाई जैसे–जैसे ऊचे शिखरो पर सफलता मिलने लगी, पर्वतारोही अपनी निपुणता और उपकरणो की जाच के लिए बडी चुनौतिया ढूढने लगे तथा उन्होने अपेक्षाकृत ज्यादा खतरनाक रास्तो से शिखर पर चढने का प्रयास किया 20वी शताब्दी के अत तक हिमालय पर सालाना. पर्वतारोहण अभियानो और पर्यटन यात्राओ की सख्या इतनी बढ़ गई थी कि कुछ क्षेत्रों मे लोगो द्वारा छोडे गए कचरे के बढते ढेर तथा वनस्पति और जतु जीवन के विनाश से पर्वतीय पर्यावरण के नाजुक सतुलन के लिए खतरा उत्पन्न हो गया

हिलाल (अर्द्ध चद्र)

(अरबी शब्द, अर्थात अर्द्ध चद्र), बाइजेटाइन व तुर्की साम्राज्य और बाद मे आमतौर पर सभी मुस्लिम देशो का राजनीतिक, सैन्य और धार्मिक चिह्न आरभिक समय से ही चौथ का चद्रमा एक धार्मिक प्रतीक था उदाहरण के तौर पर निकट–पूर्व की देवी एस्टार्ट की पूजा मे इसका उपयोग किया जाता था बाद मे यह बैजतिया साम्राज्य का प्रतीक बना, इसका कारण सभवत यह था कि चद्रमा के अचानक प्रकट होने पर एकाएक हुए हमले से कुस्तुनतुनिया की रक्षा हो सकी थी किसी समय यह भी मत था कि तुर्की साम्राज्य ने 1453 मे कुस्तुनतुनिया पर कब्जा करने के बाद अपने झडे के लिए हिलाल को अपनाया था लेकिन वास्तव मे एक शताब्दी पहले से ही यह प्रचलन मे था और सुल्तान ओरहान के समय (1324–1360) से ही यह साम्राज्य की पैदल सेना का चिह्न

था हो सकता है कि वह अर्द्ध चद्र अलग तरह का हो, जिसे दो पजो या दो सीगो को मिलाकर बनाया गया हो चाहे इसका मूल कुछ भी रहा हो, लेकिन हिलाल ऑटोमन साम्राज्य (यह सैन्य, नौसैनिक पताकाओ और मीनारो के शिखर पर दिखाई देता था), उसके परवर्ती शासको और सामान्यत मुस्लिम विश्व से गहरे तौर पर जुड गया इसे आज अल्जीरिया, अजरबैजान, कामोरोस, मलेशिया, मालदीव, मॉरिटानिया, पाकिस्तान, ट्यूनीशिया और तुर्की जैसे मुस्लिम देशो के झडो पर देखा जा सकता है यह रेड क्रॉस सगठन के मुस्लिम समकक्ष रेड क्रेसेट का भी प्रतीक है मध्यकालीन यूरोपीय कुल चिह्न मे अर्द्ध चद्र विशेष सम्मान का प्रतीक था और खासकर फ्रास के धर्मयोद्धाओ द्वारा इस्तेमाल किया जाता था

हिसार

शहर व जिला, पश्चिमोत्तर हरियाणा राज्य, पश्चिमोत्तर भारत, पश्चिमी यमुना नहर की हासी शाखा पर स्थित बादशाह फिरोज शाह तुगलक द्वारा 1356 मे स्थापित यह शहर बाद मे एक महत्त्वपूर्ण मुगल केंद्र बन गया 18वी शताब्दी मे जनशून्य किए गए इस शहर पर बाद मे ब्रिटिश अभियानकर्ता जॉर्ज थॉमस ने कब्जा कर लिया 1867 मे हिसार की नगरपालिका का गठन किया गया यह शहर एक दीवार से घिरा है, जिसमे चार दरवाजे है, यहा फिरोज शाह के किले व महल के अवशेषो के साथ–साथ कई प्राचीन मस्जिदे है, जिनमे जहाज भी एक है, जो अब एक जैन मदिर है हिसार क्षेत्र एक प्रमुख रेल व सडक जक्शन है जिले के 80 प्रतिशत से भी अधिक क्षेत्र मे खेती की जाती है, जो ज्यादातर दो फसलो वाली और अधिकाशत सिचित है गेहू व कपास यहा की प्रमुख फसले है अन्य फसलो मे चना, बाजरा, चावल, सरसो व गन्ना शामिल है सभी गाव सडको से जुडे हैं उद्योगो मे कपास की ओटाई, हथकरघा बुनाई और कृषि यत्रो व सिलाई मशीनो के निर्माण से जुडे उद्योग शामिल है इस शहर मे सी सी शाहू हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, गुरु जभेश्वर विश्वविद्यालय, सी.सी. शाहू प्रबधन महाविद्यालय, कृषि इजीनियरिंग व प्रौद्योगिकी महाविद्यालय और हिसार गवर्नमेट कॉलेज व डी.एन कॉलेज सहित कई महाविद्यालय शामिल है जनसख्या (2001) न पा क्षेत्र 2,56,810, जिला कुल 15,36,417

हीनयान

(सस्कृत शब्द, अर्थात लघु वाहन), बौद्ध धर्म का अधिक परपरावादी, रूढ़िवादी सप्रदाय, प्राचीन भारत मे महायान बौद्ध परपरा के अनुयायियों ने इस मत को हीनयान नाम दिया इस नाम से पता चलता है कि महायानी अपनी परपरा को उत्तम मानते थे, जो उनके अनुसार सार्वभौमिकता एवं करुणा मे अन्य से आगे थी, लेकिन रूढिवादी मत ने साझी परपरा के रूप मे इस नाम को स्वीकार नही किया. एक तरह से प्राचीन बौद्ध धर्म की कथित सभी 18 शाखाए हीनयानी है इस तरह वे अलग सिद्धात के रूप मे महायान मत के आविर्भाव के पूर्ववर्ती है

प्राचीन हीनयान परपरा के आधुनिक अनुयायी थेरवादी (गुरुजनो के दिखाए रास्त के अनुयायी) है, जो प्राचीन शाखाओ मे से एक है
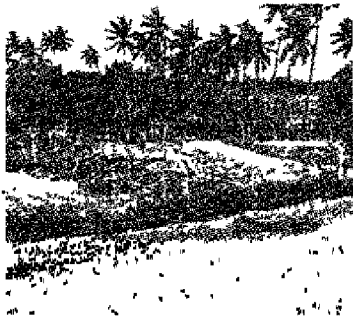
हुगली–चिनसुरा

जिले के एक खेत का दृश्य
शोस्टल– ई बी इकॉ

शहर, हुगली का जिला मुख्यालय, मध्य पश्चिम बगाल राज्य, पूर्वोत्तर भारत यह शहर हुगली नदी के ठीक पश्चिम मे, प्रमुख सडक तथा रेलमार्ग पर स्थित है चावल मिल, रबड तथा जूट के सामान के निर्माण से जुडे प्रमुख उद्योग है निचले बगाल मे व्यापारिक राजधानी सतगाव के पतन के बाद पुर्तगालियो ने 1537 मे हुगली की स्थापना की, यह निचले बगाल की पहली अग्रेज बस्ती (1657) थी, जिसे छोडकर 1690 मे कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) को अग्रजो ने अपनाया

चिनसुरा डचो की 17वी शताब्दी की एक महत्त्वपूर्ण बस्ती थी, जिन्होने वहा 1656 मे एक कारखाना (व्यापारिक चौकी) स्थापित किया 1825 मे चिनसुरा तथा अन्य डच बस्तियो को सुमात्रा पर अधिकार के बदले अग्रेजो को सत्तातरित कर दिया गया यहा स्थित महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक भवनो मे एक मुस्लिम इमामबाडा (जहा ताजिया की अनुकृति रखी जाती है), पुर्तगाली गिरजाघर (1660) और सदेश्वर मदिर शामिल है 1865 मे हुगली और चिनसुरा की सयुक्त नगरपालिका का गठन हुआ यहा कई महाविद्यालय है, जिनमे बर्द्धमान विश्वविद्यालय से सबद्ध हुगली मोहसिन महाविद्यालय शामिल है.

हुगली जिले मे उपजाऊ निम्न जलोढीय क्षेत्र है, जिसके बीच–बीच मे दलदल और नदियो की छाडन स्थित है इससे होकर रूपनारायण व दामोदर नदियो का जल निकास होता है चावल, पटसन, गन्ना और आलू यहा की प्रमुख फसले है केले व आम की भी खेती होती है हुगली नदी का तटवर्ती क्षेत्र घनी आबादी वाला है यहा भारी मात्रा मे उद्योग भी है, जिनमे पटसन, चावल, सूती वस्त्र की मिले और रबड तथा रसायन के कारखाने शामिल है आरभिक यूरोपीय बस्तियो मे श्रीरामपुर और चद्रनगर शामिल है जनसख्या (2001) शहर 1,70,201, जिला कुल 50,40,047

हुगली नदी

पुर के निकट हुगली नदी, पश्चिम बगाल
केपिक्स– शोस्टल– ई बी इकॉ

नदी, पश्चिम बगाल राज्य, पूर्वोत्तर भारत, गगा की एक धारा, जो कोलकाता (भूतपूर्व कलकत्ता) को बगाल की खाडी से जोडती है यह नबद्वीप के पास भागीरथी और जलागि नदियो के मेल से बनती है वहा से हुगली सामान्यत दक्षिण दिशा मे सघन औद्योगिक क्षेत्र (जहा पश्चिम बगाल की आधी से अधिक आबादी रहती है) से होती हुई लगभग

260 किमी दूर बंगाल की खाडी तक बहती है इस नदी के निचले हिस्से मे दामोदर, रूपनारायण और हल्दी (कसई) नदिया मिलती है, जो पश्चिमोत्तर मे छोटा नागपुर के पठार से निकलती है यद्यपि कोलकाता के बाद यह नदी गाद से भरी हुई है, लेकिन छोटे समुद्री जहाजो को नगर तक ले जाया जा सकता है तलछट की लगातार सफाई और उच्च ज्वार के समय भीतरी भाग मे पहुचने वाली ज्वार भित्ति द्वारा सफाई से नौकायन सभव हो पाता है बाग्लादेश के साथ बातचीत के फलस्वरूप गगा नदी का कुछ पानी फरक्का की ओर मोड दिया जाता है, ताकि कोलकाता मे गाद के जमाव को कम किया जा सके कोलकाता से हुगली नदी पश्चिम तथा दक्षिण मे रूपनारायण मुहाने की ओर बहती है, फिर दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम मे मुडकर 5 से 32 किमी बाहर चौडे मुहाने के जरिये बगाल की खाडी मे मिल जाती है इसकी धारा के निचले भाग मे कुछ किलोमीटर दूर हल्दी नदी के सगम पर हल्दिया का नया बदरगाह स्थित है नबद्वीप और कोलकाता के बीच हुगली पर छह पुल है, जिनमे से सिर्फ बाली (विवेकानद पुल) सडक और रेल पुल, दोनो है

हुबली–धारवाड़

शहर, पश्चिमी कर्नाटक (भूतपूर्व मैसूर) राज्य, दक्षिण–पश्चिम भारत हुबली, जिसे अक्सर हुब्बली या पुब्बली (अर्थ, पुराना गाव) कहा जाता है 11वी शताब्दी के पाषाण मदिर अहर्निशकर के आसपास विकसित हुआ यहा के उल्लेखनीय भवनो मे महदी मस्जिद, भवानीशंकर मदिर ओर नगर भवन शामिल है हुबली एक व्यापारिक केद्र है और यहा सूती वस्त्र, कपास ओटाई तथा गाठ बनाने के कारखाने और एक विशाल अखबारी कागज उद्योग स्थित है यह दक्षिणी रेलवे का सभागीय मुख्यालय है यहा एक रेलवे कार्यशाला है तथा यह प्रमुख सडक जक्शन भी है 16वी शताब्दी से किलेबद धारवाड का मूल नाम दारवडा (अर्थ, द्वार नगर) है यह दक्षिणी रेलवे और राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित एक शैक्षणिक और व्यापार (कपास) केद्र है यहा स्थित वाणिज्य, विधि, चिकित्सा और इजीनियरिग व टेक्नोलॉजी के महाविद्यालय धारवाड के कर्नाटक विश्वविद्यालय (1949) से सबद्ध है, जिनमे डी एम कॉलेज ऑफ इजीनियरिंग ऐड टेक्नोलॉजी, एस डी एम ई ट्रस्ट इजीनियरिग कॉलेज, एल ई ए होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज, आर एम एम होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज, एम आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज, एस डी एम कॉलेज ऑफ डेटल साइस, एस ई टी फार्मेसी कॉलेज, यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लॉ तथा कई अन्य महाविद्यालय शामिल है इस शहर मे एक बाल–सुधार और एक मानसिक आरोग्यशाला भी है 1961 मे धारवाड को 21 किमी दक्षिण–पूर्व मे स्थित औद्योगिक केद्र हुबली के साथ मिला दिया गया, जिससे राज्य की सबसे अधिक आबादी वाले शहरी क्षेत्र का निर्माण हुआ जनसख्या (2001) न नि क्षत्र 7,86,018, जिला कुल 16,03,794

हुमायू, मुगल चित्रकला शैली का लघुचित्र
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

हुमायू

नसीरुद्दीन मुहम्मद नाम से भी जाने जाते थे, (ज–6 मार्च 1508, काबुल, भारत {वर्तमान अफगानिस्तान} मृ–जन 1556, दिल्ली), भारत के दूसरे मुगल शासक जो अपने साम्राज्य को एकीकृत रखने के बजाय साहसिक अभियानो मे ज्यादा रुचि रखते थे मुगल साम्राज्य के सस्थापक बाबर के पुत्र और उत्तराधिकारी हुमायू ने 1530 से 1540 और फिर 1555 से 1556 तक शासन किया

हुमायू को विरासत मे साम्राज्य के यथार्थ रूप के बजाय उसकी आशाए मिली थी, क्योकि पानीपत (1526), खनवा (1527) और घाघरा (1529) मे मुगलो की जीत से अफगान और राजपूत कुछ नियत्रित अवश्य हुए, लेकिन उन्होने मुगलो की प्रभुता को पूर्ण रूप से स्वीकार नही किया था गुजरात के शासक बहादुर शाह ने मुगल और अफगान प्रवासियो से प्रेरित होकर मुगलो को राजस्थान मे चुनौती दी और हुमायू ने हालाकि 1535 मे गुजरात पर कब्जा कर लिया था, लेकिन वहा असली सकट 1537 मे बहादुर शाह की मौत के साथ ही खत्म हुआ इस बीच एक सूर अफगानी सैनिक शेरशाह ने बिहार व बगाल मे अपनी शक्ति सुदृढ कर ली तथा 1539 मे चौसा और 1540 मे कन्नौज के युद्ध मे हुमायू को पराजित करके भारत से भगा दिया

गृहविहीन हुमायू समर्थन जुटाने के लिए पहले सिध, फिर मारवाड और दुबारा सिध गए उनके विख्यात पुत्र अकबर 1542 मे पैदा हुए 1544 मे ईरान पहुचने पर हुमायू को शाह तहमस्प से सैनिक सहायता मिली और वह काधार (1545) को जीतने और काबुल को अपने धोखेबाज भाई कामरान से वापस लेने के लिए चल पडे. हुमायू ने काबुल पर तीन बार कब्जा करने की कोशिश की और अतत 1550 मे वह सफल हुए शेरशाह के वशजो के बीच चल रहे गृहयुद्ध का लाभ उठाते हुए हुमायू ने फरवरी 1555 मे लाहौर पर कब्जा कर लिया और सरहिद मे पजाब के विद्रोही अफगान गवर्नर सिकदर सूर को हराकर उसी वर्ष जुलाई मे दिल्ली और आगरा को वापस अपने कब्जे मे ले लिया हुमायू अपने पुस्तकालय की सीढियो से गिरकर जख्मी हुए, जिससे उनकी मृत्यु हो गई

हुसैन, जाकिर

जाकिर हुसैन
साजन्य *द हिंदू*

(ज –8 फर. 1897, हैदराबाद, भारत, मृ –3 मई 1969, नई दिल्ली), राजनेता, भारत का राष्ट्रपति बनने वाले पहले मुसलमान धर्मनिरपेक्षता को बढावा देने के कारण कुछ मुसलमानों द्वारा उनकी आलोचना भी की गई

देश के युवाओ से सरकारी सस्थानो के बहिष्कार की गाधी की अपील का हुसैन ने पालन किया, उन्होने अलीगढ मे मुस्लिम नेशनल यूनिवर्सिटी (बाद म नई दिल्ली ले जाई गई) की स्थापना करने मे मदद की और 1926–1948 तक वह इसके कुलपति रहे महात्मा गाधी के निमत्रण पर वह प्राथमिक शिक्षा के राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष भी बने, जिसकी स्थापना 1937 मे स्कूलो के लिए गाधीवादी पाठ्यक्रम बनाने के लिए हुई थी
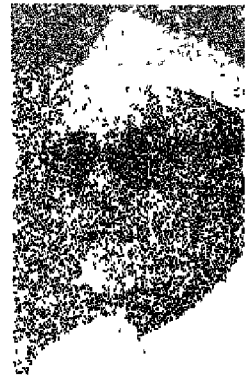
1948 मे हुसैन अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति बने ओर चार वर्ष के बाद उन्होने राज्यसभा मे प्रवेश किया 1956–58 मे वह सयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान और सस्कृति सगठन (यूनेस्को) की कार्यकारी समिति मे रहे, 1957 मे उन्हे बिहार का राज्यपाल नियुक्त किया गया और 1962 मे वह भारत के उप–राष्ट्रपति निर्वाचित हुए 1967 मे काग्रेस पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार के रूप मे वह भारत के राष्ट्रपति पद के लिए चुने गए और मृत्यु तक पदासीन रहे

हुसैन बिन अली, अल

(ज –जन 626, मदीना, अरब {अब सऊदी अरब मे}, मृ–10 अक्तू 680, कर्बला, इराक), शिया मुसलमानो के नायक, पैगबर मुहम्मद के नाती तथा अली (चौथे इस्लामी खलीफा) और फातिमा (मुहम्मद की पुत्री) के पुत्र शिया मुसलमान उन्हे तीसरा इमाम (अली तथा हुसैन के बडे भाई हसन के बाद) मानते हैं

उनके पिता अली की हत्या क बाद हसन और हुसैन ने प्रथम उमैया खलीफा मुअविया के शासन को मौन स्वीकृति दी, जिससे उन्हे अनुवृत्ति मिलती थी लेकिन हुसैन ने मुअविया के पुत्र यजीद को उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर दिया (अप्रै 680), तब तक हुसैन को शिया बहुमत वाले नगर कुफा के निवासियो ने वहा आने तथा उमैयो के खिलाफ बगावत का झडा उठाने के लिए आमत्रित किया कुछ अनुकूल सकेत मिलने के बाद हुसैन रिश्तेदारो और अनुयायियो के छोटे समूह के साथ कुफा के लिए रवाना हुए परपरागत वृत्तात के अनुसार, वह रास्ते मे शायर अल–फराजदक से मिले और उन्हे बताया गया कि इराकियो का दिल उनके साथ है, लेकिन उनकी तलवारे उमैयो के लिए है इराक के शासक ने खलीफा की ओर से हुसैन और उसके साथियो की गिरफ्तारी के लिए 400 लोगो को भेजा उन्होने यूफ्रेटस नदी के तट के पास हुसैन को घेर लिया (अक्तू 680) जब हुसैन ने आत्मसर्पण के लिए मना कर दिया, तो उनकी और उनके साथियो की हत्या कर दी गई तथा हुसैन के सिर को दमिश्क (अब सीरिया मे) मे यजीद के पास भेज दिया गया हुसैन की शहादत की याद मे शिया

मुसलमान मोहर्रम के पहले 10 दिन (इस्लामी तिथिपत्र क अनुसार, लडाई की तारीख) शोक मनाते हैं हुसैन की मृत्यु का बदला लेने की भावना एकजुट पुकार म बदल गई जिसने उमैया खलीफा साम्राज्य नष्ट करने तथा शक्तिशाली शिया आदोलन के उदय मे तेजी लाने मे मदद की

फिदा हुसेन
द हिंदू

हुसैन, मक़बूल फिदा

(ज –17 सित 1915, पढरपुर, महाराष्ट्र, भारत), समकालीन चित्रकार और फिल्म निर्माता

इदौर मे आरभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद हुसेन जे ज स्कूल ऑफ आर्ट्स मे अध्ययन के लिए 1935 मे बबई (वर्तमान मुबई) आ गए उन्होंने सडक किनारे लगे बडे–बडे सिनेमा के पोस्टरो की चित्रकारी से अपने पेशेवर जीवन की शुरुआत की. इन भीमकाय कैनवासो पर काम करने का गहरा प्रभाव उनकी कला पर पडा, हालाकि इससे प्राप्त होने वाली दिहाडी से उनका और उनकी पत्नी फजीला का गुजारा मुश्किल से ही चल पाता था उनका विवाह 1941 मे हुआ था थोडे दिन फर्नीचर और खिलौनो के डिजाइन बनाने के बावजूद हुसैन का प्यार चित्रकारी से ही था. हुसैन द्वारा प्रदर्शित पहली पेटिग *सुनहरा ससार* थी, जो 1947 मे बबई आर्ट सोसाइटी मे प्रदर्शित हुई थी

चित्रकार फ्रासिस न्यूटन सूजा के निमत्रण पर 1948 मे हुसैन *प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप* के सदस्य बन गए इस सगठन का उद्देश्य समकालीन भारतीय कला को नई प्रेरणा देना और इसे घिसी–पिटी परपराओ से दूर करके ज्यादा प्राकृतिक तथा स्वदेशी अभिव्यक्तियो की ओर ले जाना था वह जर्मन चित्रकार एमिल नॉल्डे और ऑस्ट्रिया के ऑस्कर कोकोश्का सरीखे अभिव्यजनावादी चित्रकारो से बहुत प्रभावित थे इसने उनकी कला को रेखा तथा रग की वैशिष्टिक सपन्नता प्रदान की 1952 मे ज्यूरिख मे उनकी पहली एकल प्रदर्शनी आयोजित हुई और अगले कुछ वर्षो मे उन्होंने समूचे यूरोप और अमेरिका मे प्रदर्शन किए.

कई समालोचको ने उनकी तुलना पिकासो से की है, हुसैन की कला घनवाद (क्यूबिज्म) की ओर झुकाव प्रदर्शित करती है और इतालवी चित्रकारो की तरह उनका व्यक्तित्व भी बहुरगी है वह हमेशा विवादास्पद या मशहूर विषयो या व्यक्तियो म मशगूल रहे है– जैसे, महात्मा गाधी, मदर टेरेसा, इदिरा गाधी माधुरी दीक्षित –या ब्रिटिश राज और फिर राज्यसभा मे उनके छह वर्ष का कार्यकाल हालाकि उन्होंने भारतीय पुराणो तथा समाज की समृद्ध परपरा से खूब विषय चुने है, उन्हे हिंदू देवी–देवताओं के अंकन के लिए माफी भी मागनी पडी है सीता और देवी सरस्वती के नग्न चित्र बनाने के कारण उन्हे हिंदू समुदाय का कोपभाजन बनना पडा भारत के सबसे चर्चित कलाकार के रूप मे मशहूर हुसैन की कला भवनों के भित्तिचित्रो द्वारा सचमुच ही जनजीवन का अग बन गई है भारत के आधुनिकतावादी वास्तुकार

बालकृष्ण वी दोषी के साथ मिलकर उन्होने अहमदाबाद मे *हुसैन–दोषी* गुफा का निर्माण किया, जो एक गुफा सरीखी सरचना है, जिसमे चित्रकला तथा वास्तुकला जैसी भिन्न विधाओ को बिना गाठ जोडा गया है

सिनेमा उनके कला जीवन का अटूट हिस्सा रहा है फिल्म निर्माता के रूप मे हुसैन की पहली फिल्म *थ्रू द आइज ऑफ ए पेंटर* (1967) को बर्लिन फिल्म समारोह मे गोल्डन बेयर पुरस्कार मिला, जबकि उनकी नवीनतम फिल्म *गजगामिनी* मे माधुरी दीक्षित ने अभिनय किया है, जो उनकी *क्लिंट ईस्टवुड फाइड्स मेरिल* और *माधुरी ऑन द ब्रिज ऑफ मेडिसन काउटी* जैसे कई चित्रो की कला प्रतिमा है पेंटर के रूप मे उन्होने भारतीय फिल्मो के कई दृश्यो को उकेरा है, जैसे सत्यजीत राय की *पाथेर पाचाली* (1955) और यहा तक कि सूरज बडजात्या की *हम आपके है कोन* (1994) से प्रेरित होकर चित्रो की पूरी शृखला भी बनाई है

समकालीन कला मे हुसैन के योगदान को भारत सरकार ने भी सराहा है, उन्हे पद्मश्री (1966), पद्म भूषण (1973) और पद्म विभूषण (1989) से सम्मानित किया गया उनकी हिदी मे लिखी आत्मकथा *पढरपुर का एक लडका* को एक उत्कृष्ट कृति माना जाता है

हुसैन शाह 'अलाउद्दीन'

(ज–?, बगाल {पश्चिम और पूर्वी बगाल मे विभाजित, अब पश्चिम बगाल, भारत मे है और पूर्वी बगाल को बाग्लादेश कहा जाता है}, मृ–1519, बगाल), बगाल में हुसैनशाही वश के सस्थापक इन्हे मध्ययुगीन बगाल के उत्तरार्द्ध का सबसे यशस्वी शासक (1493–1519) भी कहा जाता है

अलाउद्दीन के आरभिक जीवन का विवरण मिथको और किवदतियो से घिरा हुआ है कहा जाता है कि उनके पिता पैगबर मुहम्मद और बगाल मे प्रवास कर रहे एक अरब के वशज थे अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद अलाउद्दीन बगाल के अबीसीनियाई शासक मुजफ्फर शाह के दरबार मे नियुक्त हुए और धीरे–धीरे प्रमुख मत्री के पद तक पहुच गए शाह के खिलाफ एक सफल विद्रोह का नेतृत्व करने के बाद उन्हे वहा का राजा घोषित किया गया अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए वह अपनी राजधानी गौर से इकदाला ले गए और सभी सभावित विरोधियो को तरतीबवार खत्म कर दिया लगभग 12,000 सैनिक मौत के घाट उतार दिए, महल के कुलीन हिदू पहरेदारो, पेको, को हटा दिया, अबीसीनियाइयो को देशनिकाला दे दिया और उनकी जगह विशिष्ट वर्ग के मुसलमानो और हिदुओ को रख लिया गया

अलाउद्दीन हालाकि धर्मनिष्ठ मुसलमान थे, लेकिन उन्होंने हिदू अल्पसख्यको के साथ कभी भेदभाव नही किया बगाल साम्राज्य का मजबूत राजनीतिक ढाचा स्थापित करने मे उनकी यह नीति बहुत कारगर रही 1498 मे उन्होंने पडोसी राज्य कामरूप (वर्तमान असम) को जीत लिया फिर भी उडीसा को बगाल मे 1516 मे ही मिलाया गया

अलाउद्दीन एक बुद्धिमान और परोपकारी शासक थे, साथ ही वह कला के कर्मठ सरक्षक और सार्वजनिक निर्माण कार्य करवाने वाले व्यक्ति भी थे 1519 मे उनके सबसे बडे पुत्र नुसरत शाह ने उनके बाद गद्दी सभाली

हूण आक्रमण

ये खानाबदोश चरवाहे थे, जिन्होने लगभग 370 ई मे दक्षिण–पूर्वी यूरोप पर आक्रमण किया और अगले सात दशको के दौरान इन्होने वहा तथा मध्य यूरोप मे विशाल साम्राज्य स्थापित कर लिया हेफ्थलाइट, जिन्होने पाचवी और छठी शताब्दी मे ईरान तथा भारत पर आक्रमण किया तथा चीनियो के परिचित स्युग–नु लोगो को भी कभी–कभार हूण कहा जाता है, लेकिन यूरोप पर आक्रमण करने वालो से इनका सबध अनिश्चित है

पाचवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे गुप्त राजा कुमारगुप्त (लगभग 415–54) के शासनकाल के दौरान बैक्ट्रिया से हूणो के आक्रमण का खतरा था यह खतरा लगभग सौ वर्षों तक मडराता रहा और परवर्ती गुप्त राजा हूणों को हिदुकुश पर्वत पार करके अपने राज्य मे घुसने से रोकने के लिए सक्रिय रहे इतिहासकारो की राय मे चीनी और भारतीय प्रतिरोध के कारण इस काल मे हूण न सिर्फ कमजोर हुए, बल्कि अशात इस वजह से वे यूरोप पर उग्रता से हमले करने लगे पाचवी शताब्दी के अतिम वर्षों मे हूण उत्तरी भारत मे घुसने मे सफल रहे भारतीय हूण स्वतत्र नही थे, वे हूण अधिराज के प्रतिनिधि थे हूणो का इलाका फारस से खोतान के पार तक फैला हुआ था और उनकी प्रमुख राजधानी अफगानिस्तान मे बामियान मे स्थित थी तोरमाण पहले उल्लेखनीय राजा थे, जिन्होने मध्य भारत के एरण तक समूचे उत्तरी भारत मे शासन किया उनके पुत्र मिहिरकुल (शासन 520) भयकर हूणो की लोकछवि के सर्वाधिक निकट प्रतीत होते है एक तत्कालीन चीनी तीर्थयात्री ने मिहिरकुल का वर्णन विशेष रूप से बौद्ध धर्म से घृणा करने वाले और अशिष्ट चाल–ढाल वाले मूर्तिपूजक के रूप मे किया है अतत मिहिरकुल को मैदानो से खदेड दिया गया और वह कश्मीर चले गए, जहा लगभग 542 ई मे उनकी मृत्यु हो गई उनकी मृत्यु के साथ ही हूणों का राजनीतिक प्रभाव कम हो गया, फिर भी लगभग 50 वर्षो के काल मे हूणो ने न सिर्फ गुप्तो की शक्ति के पतन की प्रक्रिया को तेज किया, बल्कि एक साम्राज्य का रूप ग्रहण करने की सभावना भी कम कर दी, गुप्त राजाओ की सारी शक्ति हूणो के आक्रमण को विफल करने मे लगी रहती थी जब छठी शताब्दी मे बैक्ट्रिया मे हूणो पर तुर्कों तथा ईरानियो ने हमला कर दिया, तब हूणो के हमलो मे कमी आ गई

हूर

अरबी मे हौरा, बहुवचन हूर, इस्लाम मे खूबसूरत लडकिया, जो जन्नत मे धर्मपरायण मुसलमानो की प्रतीक्षा करती है अरबी शब्द हौरा का मतलब है, आख की स्वच्छ सफेदी की पुतली की कालेपन से विषमता *कुरान* मे हूरों का कई बार जिक्र आया है

जिसमे उन्हे 'पवित्र हुई पत्निया' और 'बेदाग कुवारिया' बताया गया है परपरागत रूप से हूरो की भोगवादी छवि को पेश किया गया है तथा उनके कुछ कार्यो को परिभाषित किया गया है उदाहरणस्वरूप, जन्नत मे प्रवेश के समय आस्तिक को कई हूरे पेश की जाती है, जिनमे हर एक के साथ वह रमजान मे रोजे के प्रत्येक दिन तथा प्रत्येक अच्छे कार्य के लिए एक बार के हिसाब से सहवास कर सकता है

कुछ धर्मविद्, जैसे अल–बेदबी हूरो की लाक्षणिक व्याख्या को तरजीह देत है यह भी सुझाव दिया गया है कि मुहम्मद ने ईसाई स्वर्ग की तस्वीर मे देखे गए फरिश्तो की हूरो के रूप में पुनर्व्याख्या की थी

हेफ्थलाइट

चीनी कालानुक्रम के अनुसार, यह मूलत चीन की महान दीवार के उत्तर मे रहने वाली जनजाति थी और इन्हे होआ या होआ–तुन कहा जाता था अन्य स्थानों पर इन्हे श्वेत हूण या हूण कहते थे इनके न नगर थे, न कोई लेखन प्रणाली और ये तबुओ मे रहते थे तथा बहुपति प्रथा का पालन करते थे

पाचवी और छठी शताब्दी मे श्वेत हूणो ने कई बार फारस और भारत पर आक्रमण किया छठी शताब्दी के मध्य में तुर्कों के हमलो के बाद उनकी अलग पहचान समाप्त हो गई और सभवत उनका आसपास की आबादी मे अतर्मिश्रण हो गया उनकी भाषा के बारे मे कोई जानकारी उपलब्ध नही है

हेमचद्र

हेमचद्र सूरि भी कहलाते है, सोमचद्र, मूलनाम चद्रदेव, (ज –1087, धधुका, गुजरात, पश्चिमी भारत, मृ –1172, गुजरात), श्वेताबर सप्रदाय के जैन गुरु, जिन्होने गुजरात के महान राजाओ मे से एक सिद्धराज जयसिह से अपने धर्म के लिए विशेषाधिकार प्राप्त किया अपनी वाक्पटुता और अत्यधिक विद्वत्ता के कारण हेमचद्र उत्तराधिकारी राजा कुमारपाल के धर्मातरण मे सफल रहे और इस प्रकार गुजरात मे जैन धर्म की स्थापना की

कई भारतीय पडितो की जन्मकथा की तरह, कहा जाता है कि हेमचद्र के जन्म के समय कई शकुन और अलौकिक घटनाए हुई . उनकी माता को 14 स्वप्न आए, जिनमे एक अद्‌भुत बालक के जन्म की भविष्यवाणी की गई थी जब इस बच्चे को जैन मंदिर ले जाया गया, तो पुरोहित देवचद्र ने उसके शरीर पर कई शुभ चिह्न देखे तथा बच्चे के माता–पिता को राजी किया कि वे उन्हे शिक्षा देने दे

1110 मे चद्रदेव को दीक्षा दी गई और उनका नाम बदलकर सोमचद्र रखा गया 1125 मे वह राजा कुमारपाल के सलाहकार बन गए और *अर्थनीति* लिखी, जो जैन परिप्रेक्ष्य मे राजनीति पर लिखी गई पुस्तक है एक तर्कशास्त्री और असाधारण लेखक हेम जिन्होने सस्कृत और प्राकृत व्याकरण, भारतीय दर्शन एवं विज्ञान की लगभग प्रत्येक

शाखा पर पाठ्य पुस्तके तथा *त्रिषष्टिशालाकापुरुष–चरित* (63 महान व्यक्तियो का जीवन), जैन गुरुओ द्वारा परिकल्पित विश्व के इतिहास को दर्शाने वाले सस्कृत महाकाव्य सहित कई कविताए लिखी हालाकि उनकी पुस्तके पूरी तरह मौलिक नही थी, लेकिन वे महान ग्रथ बन गई, जिन्होने सस्कृत शिक्षा के लिए ऊचे मानदड स्थापित किए

उनके प्रत्येक लेखन मे जैन सिद्धात की अतर्धारा विद्यमान है अतत जब उन्हे आचार्य (गुरु) माना गया, तो सोमचद्र ने अपना नाम हेमचद्र रख लिया अपने जीवन के अत मे जेन परपरा के अनुसार उन्होने उपवास करके मृत्यु का वरण किया

हेलेबिड

एक ऐतिहासिक स्थल और आधुनिक गाव, दक्षिण–मध्य कर्नाटक (भूतपूर्व मैसूर) राज्य, दक्षिण–पश्चिमी भारत हेलेबिड, हासन शहर क उत्तर–पश्चिमोत्तर मे स्थित है यह द्वारसमुद्र नामक कृत्रिम झील के किनारे बसा हुआ है, जिसे सभवत नौवी शताब्दी मे राष्ट्रकूटो ने बनवाया था 12वी शताब्दी के आरभ मे होयसल साम्राज्य ने इसे अपनी राजधानी बनाया और अगली दो शताब्दियो तक यह अपनी समृद्धि और वैभव के लिए विख्यात रहा इसे दो बार, 1311 और 1326 मे मुसलमानो द्वारा लूटा गया, तत्पश्चात इसका पतन हो गया

यह शहर पत्थर की विशाल प्राचीर और खाई से घिरा हुआ था, जिसक अवशेष आज भी मौजूद हें, लेकिन इसके अदरूनी हिस्सो की विस्तृत खुदाई नही की गई है बचे हुए मदिरो के अलावा यहा कई खडहर और समतलीकृत क्षेत्र है, जिनका अन्वेषण किया जाना बाकी है प्रमुख मदिर 1121 मे निर्मित होयसलेश्वर का है, जो अद्वितीय नक्काशी से सज्जित है इस मदिर के लगभग एक शताब्दी बाद निर्मित केदारेश्वर मदिर भी उतना ही सुदर है इस क्षेत्र मे जैन धर्म से सबधित कई ऐतिहासिक स्थल और दिलचस्प मदिर भी अवस्थित है

हेवलॉक, सर हेनरी

(ज –5 अप्रे 1795, सण्डरलैड के पास, डरहम, इग्लैड, मृ –24 नवं 1857, लखनऊ, भारत), भारत मे ब्रिटिश सैनिक, जिन्होने 1857 के भारतीय विद्रोह मे उल्लेखनीय कार्य किया धार्मिक वातावरण मे पले–बढे हेवलॉक ने 20 वर्ष की उम्र मे सेना मे कमीशन प्राप्त कर लिया था, लेकिन सैन्य कौशल का अध्ययन करते समय इग्लैड मे उन्होने आठ वर्ष बहुत बेचैनी मे बिताए भारत मे अपने दो भाइयो के साथ जाकर काम करने की इच्छा से उन्होने अपनी रेजीमेंट बदल ली और 13वी लाइट इन्फैट्री मे लेफ्टिनेट का पद प्राप्त किया पहले आग्ल–बर्मी युद्ध (1824–26) मे वह बहुत वीरता से लडे, लेकिन 1838 मे वह सिर्फ एक कैप्टन थे और उन्होंने देखा था कि पाच लोग पैसे के जोर पर पदोन्नति खरीदकर उनसे आगे निकल गए प्रथम अफगान युद्ध (1839–42) मे उन्होने फिर बहादुरी दिखाई और उन्हे बाथ का सहयोगी बना दिया गया लेकिन

पदोन्नति उन्हे 1843 के ग्वालियर अभियान मे सर ह्यू गो के दुभाषिए का काम करते समय मिली

खराब स्वास्थ्य और सबसे बडे बेटे के कर्ज के बोझ से हेवलॉक 1849 मे दो वर्ष की छुट्टी लेकर स्वदेश चले गए भारत लौटने के बाद (1854) उन्हे पदोन्नति देकर क्वार्टर मास्टर–जनरल बना दिया गया और इसके बाद एडजुटेंट जनरल बनाया गया सर जेम्स ऊट्रम के 1857 के फारस अभियान मे हिस्सा लेने के बाद हेवलॉक भारतीय विद्रोह के दौरान ही भारत लौट आए और उन्होने एक सचल टुकडी की कमान सभाल ली उनकी फौज देर से पहुची और हताहतो के कारण कमजोर हो चुकी सेना कानपुर और लखनऊ को बचा नही सकी लेकिन जुलाई और अगस्त मे विजय के सिलसिले से उन्हे वाहवाही मिली तथा सितबर मे उन्होने अपनी लखनऊ की रेजिडेसी को आजाद करने की चौथी कोशिश मे सफलता प्राप्त की उन्हे नाइट की उपाधि (ऑर्डर ऑफ द बाथ) प्रदान की गई और मेजर–जनरल बना दिया गया लेकिन उसके बाद जल्द ही पेचिश के कारण उनकी मृत्यु हो गई

हेस्टिंग्ज, वारेन

(ज –6 दिस 1732, चर्चिल, डेलसफोर्ड के पास, ऑक्सफोर्डशायर, इग्लैड, मृ –22 अग 1818, डेल्सफोर्ड), भारत के पहले और सबसे विख्यात ब्रिटिश गवर्नर–जनरल, जो 1712 से 1785 तक भारत के प्रशासन पर छाए रहे और इग्लेड लौटने पर उन पर महाभियोग लगाया गया (हालाकि वह बरी हो गए)

आरंभिक जीवन

स्कूली छात्र के रूप मे हेस्टिंग्ज ने प्रखर प्रतिभा का प्रदर्शन किया वेस्टमिस्टर मे रहते हुए उनमे साहित्यिक और बौद्धिक रुझान पैदा हुआ, जिसके कारण बाद मे भारतीय सस्कृति और सभ्यता मे उनकी गहरी रुचि उत्पन्न हुई लेकिन 1749 मे अपने चाचा की मृत्यु के कारण उनकी स्कूली शिक्षा अधूरी रह गई उन्हे स्कूल से हटाकर राईटर की नौकरी (ईस्ट इडिया कपनी में निचले पदो को यही कहा जाता था) पर लगा दिया गया 1750 मे 17 वर्ष की आयु मे उन्होने बगाल के लिए समुद्री यात्रा की

1750 मे भारत के साथ ब्रिटिश सपर्क पर ईस्ट इडिया कपनी का एकाधिकार था, जो भारतीय बदरगाहो पर छोटी–छोटी बस्तियो से सामान खरीदने और बेचने मे लगी हुई थी कपनी के कर्मचारी के रूप मे अपने पेशेवर जीवन के आरभिक वर्षो मे हेस्टिंग्ज को कपनी के वाणिज्यिक कामकाज मे नियुक्त किया गया लेकिन 1756 के बाद हेस्टिंग्ज समेत कंपनी के अन्य कर्मचारी भारतीय राजनीति मे अधिक से अधिक आने लगे 1758 से 1761 तक हेस्टिंग्ज बगाल के नवाबो के दरबार मे कपनी के प्रतिनिधि रहे और इसके बाद 1761 से 1764 तक वह बंगाल मे कपनी के कामकाज पर नियत्रण रखने वाली परिषद मे थे लेकिन परिषद मे कटु विवादो के कारण उन्हे

जल्दी ही काम छोडना पड़ा स्वय को अल्पमत मे पाकर हेस्टिंग्ज ने कंपनी की सेवा से इस्तीफा दे दिया और 1765 मे इग्लैड लौट गए

बंगाल के गवर्नर के पद पर

धन की कमी के कारण हेस्टिंग्ज ने फिर से भारत मे नौकरी की तलाश की 1769 मे उन्हे मद्रास (वर्तमान चेन्नई) की परिषद मे दूसरे पदक्रम पर नियुक्त किया गया दो साल बाद उन्हे बगाल मे कपनी के कामकाज की देखरेख के लिए वहा का गवर्नर बन कर जाने का सुनहरा मौका मिला उस समय तक, पलासी के युद्ध से शुरू हुई उस प्रात की भारतीय सरकार के विखडन और उत्साह भग की प्रक्रिया तेज हो चुकी थी फिर भी कपनी उसके स्थान पर एक नई व्यवस्था कायम करने मे हिचकिचा रही थी वस्तुत बगाल अग्रेजो के नियत्रण मे था, जो 1765 मे मुगल बादशाह से दीवानी प्राप्त करने के बाद इसके असली कानूनी शासक भी बन गए थे लेकिन सरकारी कामकाज भारतीय अधिकारियो द्वारा ही निपटाया जाता था और इसमे यूरोपीय लोगो की भागीदारी बहुत कम थी अपने समकालीनों की इस राय से सहमत होने के बावजूद कि हमे यहा की व्यवस्था मे ज्यादा नही उलझना चाहिए, हेस्टिंग्ज ने देख लिया कि यह व्यवस्था बहुत नही चलेगी और अंग्रेजो को पूरी जिम्मेदारी सभालनी चाहिए और अपनी शक्ति को प्रभावी बनाना चाहिए तथा प्रशासन मे अधिक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए भारत मे अग्रेजो की भूमिका पर उनके विचारो को बाद मे रूढिवादी माना गया बगाल पर बिल्कुल पारपरिक तरीके से शासन होना था और वहा के निवासियो के जीवन को नवीनीकरण से अशात नही करना था लेकिन हेस्टिंग्ज ने महसूस किया कि अच्छा प्रशासन सुनिश्चित करने के लिए अग्रेजो को सक्रिय हस्तक्षेप करना चाहिए अपने प्रशासन के सबसे रचनात्मक काल (1772–1774) मे उन्होने केंद्रीय सरकार के इतजाम को नवाब के दरबार से अलग करके कलकत्ता स्थित ब्रिटिश बस्ती मे सीधे अग्रेजो के नियत्रण मे स्थानातरित कर दिया उन्होंने समूचे बगाल मे न्याय व्यवस्था को भी पुनर्व्यवस्थित किया और कर वसूली को प्रभावशाली निरीक्षण के तहत लाने के उद्देश्य से प्रयोगो की श्रृखला आरभ की

राजनीतिक प्रतिद्वद्विता

बगाल में हेस्टिंग्ज की निर्विवाद सत्ता का काल 1774 मे कपनी के शासन परिवर्तन के साथ समाप्त हो गया उन्होंने गवर्नर–जनरल का नया पदभार ग्रहण किया और उन्हे भारत स्थित अन्य ब्रिटिश बस्तियो की देखरेख की नई जिम्मेदारी मिली लेकिन इन शक्तियो मे सर्वोच्च परिषद मे शामिल चार अन्य लोग भी भागीदार थे, जिनमे से तीन व्यक्ति भारत के लिए नए थे एक सेनाधिकारी सर जॉन क्लेवरिग के नेतृत्व मे नए पार्षदो का हेस्टिंग्ज से झगडा हो गया उनका कहना था कि हेस्टिंग्ज के सुधारो के बाद भी बगाल मे काफी कुछ ऐसा हो रहा है, जो ब्रिटेन से आए लोगो को सकते मे डाल सकता है (अग्रेजो द्वारा घूसखोरी, जबरन वसूली और सत्ता के अन्य दुरुपयोग जो प्लासी के बाद से आम हो गए थे, निस्सदेह जारी थे) नए पार्षदो और हेस्टिंग्ज

के बीच हुए झगडो ने बगाल सरकार का कामकाज ठप्प कर दिया और कई अप्रिय घटनाओ को जन्म दिया नवागतुकों ने हेस्टिंग्ज के खिलाफ अनाचार का आरोप लगाने के लिए भारतीयो को प्रोत्साहित किया, ताकि उन्हे इग्लैड मे बदनाम किया जा सके, जबकि हेस्टिंग्ज के मित्र ऐसे आरोपो के खडन के लिए विभिन्न उपाय करते रहते थे इन घटनाओ मे सबसे कुख्यात घटना महाराजा नंदकुमार की थी, जिन्होने गवर्नर–जनरल पर आरोप लगाए, लेकिन बदले मे उन पर ही धोखाधडी का आरोप लगाकर उन्हे फासी दे दी गई हेस्टिंग्ज इस न्यायिक हत्या के लिए बिल्कुल दोषी नही थे, लेकिन हाल ही मे हुए शोध दर्शाते है कि उन्हे नदकुमार के मामले मे प्रतिषड्यत्र की जानकारी जरूर थी

भारत में युद्ध

1777 मे क्लेवरिंग की मृत्यु के बाद हेस्टिंग्ज ने फिर से पूरी शक्ति प्राप्त कर ली लेकिन 1777 तक बगाल सरकार की अधिक से अधिक शक्ति युद्ध मे लगने लगी थी कपनी की बगाल विजय के बाद भारतीय राज्यो के खिलाफ युद्ध का चलते रहना एक सभावित परिणाम था कपनी, भारत में मुगल साम्राज्य के पतन से पैदा हुई अस्थिरता मे पूरी तरह भागीदार हो गई थी साम्राज्य के भग्नावशेषो पर जन्म ले रही नई शक्तियो की प्रतिद्वद्विता मे शामिल न होना कपनी को मुश्किल लगने लगा हेस्टिंग्ज की नीति भविष्य मे युद्ध तथा अभियानो से बचते हुए आसपास के राज्यो के साथ गठबधनो के माध्यम से शाति बनाए रखने की थी लेकिन 1774 मे वह एक युद्ध लड चुके थे इसमे उन्होने बगाल की पश्चिमोत्तर सीमा पर कपनी के सहयोगी अवध के वजीर को रुहेलो के कब्जे वाले एक क्षेत्र पर अधिकार जमाने मे मदद की थी 1778 मे उन्होने पश्चिमी और मध्य भारत के ढीले–ढाले हिंदू परिसघ, 'मराठो' से युद्ध किया सही था या गलत, लेकिन हेस्टिंग्ज का मानना था कि भारत मे अग्रेजो की सुरक्षा के लिए मराठा सरदारो का मित्रतापूर्ण होना जरूरी था, तथा इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सैनिक दबाव डालना उनके लिए न्यायोचित था 1778 मे अमेरिका के स्वतत्रता सग्राम मे फ्रास के प्रवेश के बाद उन्हे हिद महासागर मे फ्रासीसी अभियान सेनाओ का भी सामना करना पडा अतत 1780 मे दक्षिण भारत के मैसूर राज्य के शासक हैदर अली ने मद्रास मे अग्रेजो पर हमला कर दिया इन युद्धो ने अतिरिक्त धन एकत्र करने के लिए हेस्टिंग्ज को सदिग्ध कृत्य करने पर मजबूर कर दिया (या ऐसा उनका मानना था) इनमे से दो– बनारस (वाराणसी) के राजा चेत सिह से कपनी के लिए इमदाद (आर्थिक सहायता) की माग और अवध की बेगमो (वजीर की मां और दादी) के खजानो का अधिग्रहण –का बाद मे उनके खिलाफ गभीर असर पडने वाला था

सेवानिवृत्ति और महाभियोग

जो भी हो, 1785 मे हेस्टिंग्ज के भारत छोडने के समय यहा शाति थी और अग्रेजो के प्रभुत्व वाले क्षेत्र सुरक्षित थे लेकिन उनकी सेवानिवृत्ति से पहले ही विभिन्न आरोप ओर युद्धो की सूचनाए उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुचा चुके थे नदकुमार को फासी

देने के मामले और अवध की बेगमो एव चेत सिह के मामलो मे भी हेस्टिंग्ज पर उगलिया उठ रही थी उनकी व्यक्तिगत सपत्ति के कुछ पक्ष, जिनमे उन्होने अपनी सरकारी आय से अधिक धन एकत्र कर लिया था, पर भी सवाल खडे हो गए 1786 मे जब उनके खिलाफ महाभियोग प्रक्रिया (हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सामने हाउस ऑफ कॉमन्स द्वारा अभियोग की सुनवाई) शुरू हुई, तो उन पर लगे ये कलक हाउस ऑफ कॉमन्स, विशेषकर प्रधानमत्री विलियम पिट द यगर को हेस्टिंग्ज पर मुकदमा चलाए जाने का निर्णय देने के लिए पर्याप्त थे हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सामने (1788 से 1795) उनके बरी होने तक मुकदमा चला बरी होने के बाद हेस्टिंग्ज ने 85 वर्ष की आयु तक विनीत, विनम्र, सेवानिवृत्त ग्राम्य--परिवेशी भद्र पुरुष और अपने सक्रिय कार्यकाल वाले बौद्धिक का जीवन व्यतीत किया

मूल्याकन

बगाल के पहले गवर्नर--जनरल के रूप मे हेस्टिंग्ज को अग्रेजो द्वारा जीते गए पहले प्रमुख भारतीय प्रात पर ब्रिटिश नियत्रण को सुदृढ करने का श्रेय जाता है अपने कार्यकाल के दौरान उन्होने ऐसी समस्याओ के निदान आरभ किए, जैसे मुट्ठी भर विदेशियो द्वारा विशाल भारतीय जनता पर किस तरह शासन किया जाए, उस समय तक महत्त्वपूर्ण भारतीय शक्ति बन चुके अग्रेज 18वी शताब्दी के भारत की राज्य व्यवस्था से कैसे तालमेल बिठाए भविष्य मे इन निदानो का भारत मे ब्रिटेन की भूमिका पर जबरदस्त प्रभाव पडने वाला था हेस्टिंग्ज का कार्यकाल अग्रेजो के सामने नए भारतीय राज्य मे पैदा हुई अन्य समस्याओ के उल्लेख के कारण भी महत्त्वपूर्ण है– जैसे भारत मे रहने वाले अग्रेजो पर नियत्रण की समस्या और यह भी कि उनसे कितनी ईमानदारी ओर निष्पक्षता की आशा रखी जाए, क्योकि इन समस्याओ के समाधान भी भविष्य के लिए महत्त्वपूर्ण थे

हैज़ा

छोटी आत मे जीवाणुओ का तीव्र सक्रमण, जो *वाइब्रिओ कॉलेरी* के कारण होता है इसका लक्षण है बहुत दस्त के साथ शरीर से तेजी से तरल पदार्थो और नमक की गभीर कमी दक्षिण–पूर्वी एशिया, विशेषकर भारत और पाकिस्तान मे हैजा अक्सर महामारी की तरह उठ खडा होता है यह 1898 से 1907 के बीच भारत मे कम से कम 3,70,000 मौतो का जिम्मेदार रहा है 1980 और 1990 के बीच हैजा अकालग्रस्त अफ्रीकी देशो, खास तौर पर इथियोपिया और सूडान की शहरी झुग्गी–झोपडियो और भीड भरे शरणार्थी शिविरो मे फैल गया था पश्चिमी गोलार्द्ध से 70 वर्षो तक अनुपस्थित रहने के बाद 1991 मे पेरू मे हैजे की भीषण महामारी फैल गई थी

वाइब्रिओ शरीर मे मुह के जरिये सामान्यत प्रदूषित पानी और भोजन के साथ प्रवेश करता है और छोटी आत की ल्यूमेन मे श्लेष्मा झिल्ली की परत मे सक्रमण का कारण बनता है आतो मे *वाइब्रिओ कॉलेरी* के विष की क्रिया के कारण दस्त लगते है यह

विष आतो की दीवार के ऊतको के एक पदार्थ के साथ मिलकर एक एजाइम प्रणाली को क्रियाशील कर देता है, जिसके कारण शरीर से तेजी से बाइकार्बोनेट और सोडियम युक्त तरल पदार्थ मलद्वार से बाहर आने लगते है इस बीमारी मे 12 से 28 घटो के अतराल के बाद अमूमन दर्दरहित, पतले दस्त एकाएक शुरू हो जाते हैं, जिनकी मात्रा 24 घटो मे 15 से 20 लीटर या ज्यादा भी हो सकती है इस अतिसार के फौरन बाद उल्टिया होने लगती है और मरीज के शरीर मे तेजी से पानी की कमी होने लगती है, त्वचा ठडी पडकर मुर्झाने लगती है, चेहरा खिच जाता है, रक्तचाप गिर जाता है और नब्ज धीमी पड जाती है, स्नायविक ऐठन भी तेज हो सकती है और प्यास तीव्र हो जाती है जैसे–जैसे निर्जलीकरण बढता है, मरीज मूर्छित और उनीदा होता जाता है और सदमे से मर भी सकता है यह बीमारी आमतौर पर दो से सात दिनो मे अपना चक्र पूरा करती है

तरल पदार्थो और नमक की पूर्ति तत्परता से मुह या नसो के जरिये सोडियन क्लोराइड का क्षारीय घोल पहुचाकर की जा सकती है इससे बहुत जल्दी आराम मिल सकता हे, लेकिन अगर निदान अपर्याप्त है, तो मृत्युदर ऊची होगी इलाज के पहले दो दिनो मे प्रतिजीवी दवाएं देने से सामान्यत दस्त लगने की अवधि कम हो जाती है ओर तरल पदार्थो की आपूर्ति की आवश्यकता घट जाती है हैजे के सक्रमण की रोकथाम बेहतर जलमल निकास पर टिकी हे, खासतौर पर शुद्ध पेयजल के इस्तेमाल पर

रोगाणु प्रतिकार के लिए मृत *वाइब्रिओ* कीटाणु का लगाया गया टीका व्यक्ति को सिर्फ आशिक रूप से सीमित समय तक सुरक्षा दे पाता है, लेकिन व्यापक स्तर पर इसके इस्तेमाल से सक्रमण की रोकथाम नही हो पाती है इसे सिर्फ सक्रमण के स्रोत, आमतौर पर पीने के पानी के स्रोत पर हमला करके ही हासिल किया जा सकता है

हैदर अली

(ज–1722, बुदीकोट, मैसूर, भारत, मृ–7 दिस 1782, चित्तूर, आध्र प्रदेश, भारत), मैसूर के मुस्लिम शासक और सेनापति, जिन्होने 18वी शताब्दी के मध्य मे दक्षिण भारत मे हुए युद्धो मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई एक फ्रासीसी व्यक्ति जोजेफ–फ्रासुवा डूप्ले से युद्ध कौशल सीखने के बाद हैदर ने मैसूर सेना मे ब्रिगेड कमाडर के पद पर नियुक्त अपने बडे भाई को बबई (वर्तमान मुबई) सरकार से सैनिक साजो–सामान हासिल करने और 30 यूरोपीय नागरिको को बदूकची बहाल करने के लिए प्रेरित किया इस तरह पहली बार किसी भारतीय द्वारा बदूको और सगीनो से लैस नियत्रित सिपाहियो की टुकडी का गठन हुआ, जिसके पीछे ऐसे तोपखाने की शक्ति थी, जिसके तोपची यूरोपीय थे हैदर ने 1749 मे मैसूर मे स्वतत्र कमान प्राप्त की बाद मे उन्होने प्रधानमत्री नजराज की जगह ले ली और राजा को उसके ही महल मे नजरबद कर दिया फिर लगभग 1761 मे वह मैसूर के शासक बन गए तत्पश्चात उन्होने

बिदनूर (वर्तमान हैदरनगर), कनारा और दक्षिण भारत के कई छोटे सामतो पर जीत हासिल की

1766 मे हैदर के खिलाफ तीन शक्तिया– मराठा, हैदराबाद के निजाम अली खा ओर अग्रेज सेनाए सगठित हुई लेकिन जल्द ही हैदर ने मराठो को अपनी तरफ करके मगलोर पर कब्जा कर लिया तथा अग्रेजो की बबई सेना को पराजित कर दिया अप्रैल 1769 मे उन्होने अग्रेजो से वचन लिया कि आक्रमण होने पर वे उनका साथ देगे लेकिन 1771 मे मराठो द्वारा उनके राज्य पर हमला किए जाने पर अग्रेजो ने सहायता नही भेजी इससे क्षुब्ध होकर 1779 मे उन्होने भाडे के फ्रासीसी और यूरोपीय सैनिको की मदद से अपनी सेना सशक्त की तथा अग्रेजो के खिलाफ निजाम व मराठो स समझौता किया अग्रजो ने हैदर के इलाके मे अवस्थित 'माहे' मे फ्रासीसी उपनिवेश पर कब्जा कर लिया, जिसने हैदर की नाराजगी बढा दी 1780 में उन्होने दक्षिण भारत के क्षेत्र, कर्नाटक मे, युद्ध करके अंग्रेजो की 2,800 सैनिको की टुकडी को तहस--नहस कर दिया और ऑर्काट पर कब्जा कर लिया इसके बाद, निजाम और मराठो से हैदर का सबध विच्छेद कराने मे अग्रेज सफल रहे और 1781 मे पोर्टो नोवो, पोल्लिलूर और शोलिगूर के युद्धो मे उन्हे लगातार तीन बार पराजित किया पोर्टो नोवो मे हैदर के 10 हजार से अधिक सैनिक मारे गए

1782 मे कोलेरून नदी के तट पर हुए युद्ध मे हैदर के पुत्र टीपू ने 400 फ्रासीसी सैनिको के सहयोग से 100 ब्रिटिश और 1,800 भारतीय सैनिको को पराजित कर दिया उसी वर्ष अप्रैल मे जब अग्रेज हैदर और टीपू को मैदान मे स्थित उनके प्रमुख शस्त्रागार अरनी के किले से खदेडने का प्रयास कर रहे थे, पोर्टो नोवो मे 1,200 फ्रासीसी सैनिक उतरे और कड्डालोर पर कब्जा कर लिया जॉर्ज मैकार्टने द्वारा मद्रास (वर्तमान चेन्नई) के गवर्नर का पद सभालने के बाद ब्रिटिश नौसेना ने नागपट्टिणम पर कब्जा कर लिया और हैदर को यकीन दिला दिया कि वह अग्रेजो को नही रोक सकते. मृत्यु के समय हैदर ने टीपू से अग्रेजो के साथ शाति बनाए रखने की मनुहार की थी

हैदराबाद

शहर, आध्र प्रदेश राज्य की राजधानी, दक्षिण--पूर्वी भारत यह दक्कन क पठार पर मूसा नदी के किनारे स्थित है हैदराबाद गोलकुडा के कुतुबशाही सुल्तानो द्वारा बसाया गया था, जिनके शासन में गोलकुडा ने वह महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया, जहा केवल उत्तर मे मुगल साम्राज्य ही उससे आगे था गोलकुडा का पुराना किला राज्य की राजधानी के लिए अपर्याप्त सिद्ध हुआ और इसलिए लगभग 1591 मे कुतुबशाही मे पाचवें मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने पुराने गोलकुडा से कुछ मील दूर मूसा नदी के किनारे हैदराबाद नामक नया नगर बनाया चार खुली मेहराबो और चार मीनारों वाली भारतीय--अरबी शैली की भव्य वास्तुशिल्पीय रचना चारमीनार कुतुबशाही काल की सर्वोच्च उपलब्धि मानी जाती है यह वह केद्र है, जिसके आसपास शहर की योजना

बनाई गई बाद मे बनाई गई मक्का मस्जिद 10 हजार लोगो को समाहित कर सकती है हेदराबाद अपने सौदर्य और समृद्धि के लिए जाना जाता था, लेकिन यह गौरव केवल कुतुबशाही के दिनो तक ही कायम रहा, मुगलो ने 1685 मे हैदराबाद पर विजय प्राप्त कर ली मुगल आधिपत्य के परिणामस्वरूप लूटमार और विध्वस हुआ और इसके बाद यूरोपीय शक्तियो का भारत के मामलो म हस्तक्षेप आरभ हुआ 1724 मे दक्कन के मुगल सूबेदार आसफजाह निजाम–उल–मुल्क ने स्वतत्रता की घोषणा कर दी दक्कन का यह राज्य, जिसकी राजधानी हैदराबाद थी, हैदराबाद कहलाया 19वी शताब्दी के दौरान, आसफजाहियों ने पुराने शहर के उत्तर मे मूसा नदी के पार विस्तार कर पुन शक्ति एकत्रित करना आरंभ किया उत्तर की ओर सिकदराबाद एक ब्रिटिश छावनी के रूप मे विकसित हुआ, जो हुसैन सागर झील पर बने एक मील लबे बद (तटबध) द्वारा हेदराबाद से जुडा था यह बद एक विहारस्थल का कार्य करता है और नगर का गौरव है हिदू व मुस्लिम शैलियो का सुदर सम्मिश्रण प्रदर्शित करने वाली कई नई सरचनाए बाद मे बनाई गई
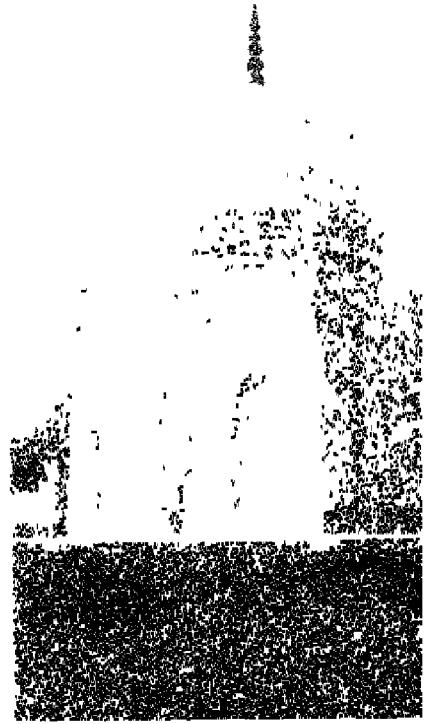
हैदराबाद आध्र प्रदेश के सात प्रसिद्ध मकबरो म
सौजन्य एथनी जॉन

निजामो के शासन मे हिदू और मुसलमान भाईचारे से रहते थे, यद्यपि भारत की आजादी के तुरत बाद एक कट्टर मुस्लिम गुट रजाकारो ने राज्य और नगर मे तनाव पेदा कर दिया था

भारत सरकार ने हस्तक्षेप किया और आखिरकार हैदराबाद का भारत मे मिला लिया गया 1956 मे राज्य का विभाजन हुआ, इसमे तेलुगुभाषी इलाको को हैदराबाद के रूप म राजधानी वाले आध्र प्रदश राज्य के गठन के लिए भूतपूर्व आध्र राज्य मे मिला लिया गया

हेदराबाद व्यापार और वाणिज्य का केंद्र बन गया है यहा सिगरेट व कपडा उत्पादन होता है और सेवा उद्योगो का विस्तार किया गया है नगर मे परिवहन की भी अच्छी सुविधाए है दिल्ली, कोलकाता, मुबई, चेन्नई और बगलोर के लिए रेल व वायु सेवाए है, साथ ही ऐतिहासिक स्थलो, अजता और एलोरा से जुडे औरगाबाद के लिए भी टैक्सिया, ऑटो–रिक्शा, साइकिल रिक्शा, निजी वाहन और बस व रेल सेवाए स्थानीय परिवहन उपलब्ध कराती है
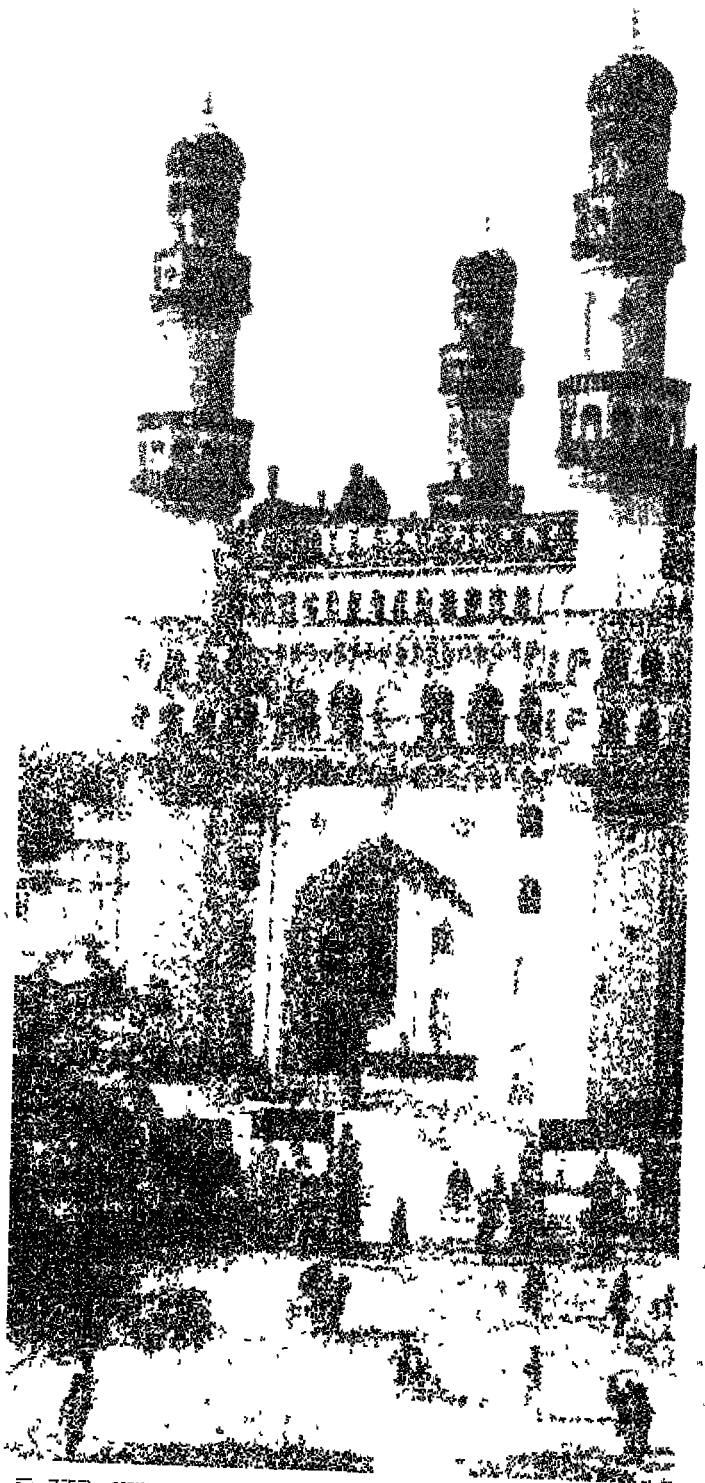
ीनार हैदराबाद आंध्र प्रदेश
। एल वर्नर/सुपरस्टॉक

आरंभ में हैदराबाद में मद्रास विश्वविद्यालय से संबद्ध दो महाविद्यालय थे लेकिन 1918 में निजाम ने उस्मानिया विश्वविद्यालय की स्थापना की और अब यह भारत के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयो मे एक है हैदराबाद विश्वविद्यालय की स्थापना 1974 मे हुई, एक कृषि विश्वविद्यालय और कई आधुनिक शोध व प्रशिक्षण संस्थान भी यहा स्थित है, साथ ही कई गैर सरकारी संस्थान, जैसे अमेरिकन स्टडीज रिसर्च सेंटर और जर्मन इंस्टिट्यूट ऑफ ओरिएंटल रिसर्च भी है

हैदराबाद मे सार्वजनिक व निजी सांस्कृतिक संगठन बड़ी संख्या मे है, जैसे राज्य द्वारा सहायता प्राप्त नाट्य, साहित्य व ललित कला अकादमिया सार्वजनिक सभागृह रवींद्र भारती नृत्य व संगीत महोत्सवो के लिए मंच प्रदान करता है और सालारजंग संग्रहालय मे दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह है, जिनमें संगेयशब, आभूषण, चित्र और फर्नीचर शामिल है

सार्वजनिक उद्यान प्रमुख मनोरंजन सुविधाए उपलब्ध कराते है कई पार्कों और सिकंदराबाद मे बड़े परेड ग्राउंडो मे खेल व मनोरंजन की सुविधाए उपलब्ध है चिड़ियाघर व विश्वविद्यालय का वानस्पतिक उद्यान लोकप्रिय आमोद स्थल है हैदराबाद फुटबॉल और क्रिकेट के लिए प्रसिद्ध है यहा एक रेसकोर्स भी है जनसंख्या (2001) न.नि. क्षेत्र 34,49,878, जिला कुल 36,86,460

हैदराबाद (पूर्व रियासत)

दक्षिण–मध्य भारत का पूर्व सामंती राज्य, निजाम–उल–मुल्क (मीर कमरुद्दीन) द्वारा स्थापित, जो 1713 से 1721 तक दक्कन मे लगातार मुगल बादशाहो के सूबेदार रहे उन्हें 1724 मे यह पद फिर से मिला और उन्होने आसफजाह की उपाधि ग्रहण की वस्तुत इस समय तक वह स्वतंत्र हो गए थे उन्होने हैदराबाद मे निजामशाही की स्थापना की 1748 मे उनकी मृत्यु के बाद अंग्रेजो और फ्रांसीसियो ने उत्तराधिकार के लिए हुए युद्धो मे भाग लिया

अस्थायी रूप से मैसूर के शासक हैदर अली के साथ रहने के बाद 1767 मे निजाम अली ने मसुलीपट्टनम की संधि (1768) द्वारा हैदराबाद पर ब्रिटिश आधिपत्य स्वीकार कर लिया 1778 से उनके राज्य मे एक ब्रिटिश रेजिडेंट और सहायक सेना तैनात की गई 1795 मे निजाम अली खा अपने कुछ क्षेत्र, जिनमे बरार के कुछ हिस्से भी शामिल थे मराठो के हाथो हार गए जब उन्होंने सहायता के लिए फ्रांसीसियो की ओर देखा, तो अंग्रेजो ने उनके राज्य मे तैनात अपनी सहायक सेना को बढा दिया टीपू सुल्तान के विरुद्ध 1792 और 1799 मे अंग्रेजो के सहयोगी के रूप मे जीत मे निजाम को मिले क्षेत्र इस सेना का खर्च चलाने के लिए अंग्रेजो को दे दिए गए

तीन ओर (उत्तर, दक्षिण और पूर्व) से ब्रिटिश आधिपत्य वाले अथवा उन पर निर्भर क्षेत्रो से घिरे होने से निजाम अली खा 1798 मे ब्रिटिश शासन के साथ एक समझौता करने पर मजबूर हो गए इस समझौते के अनुसार उन्होंने अपना राज्य अंग्रेजो के संरक्षण
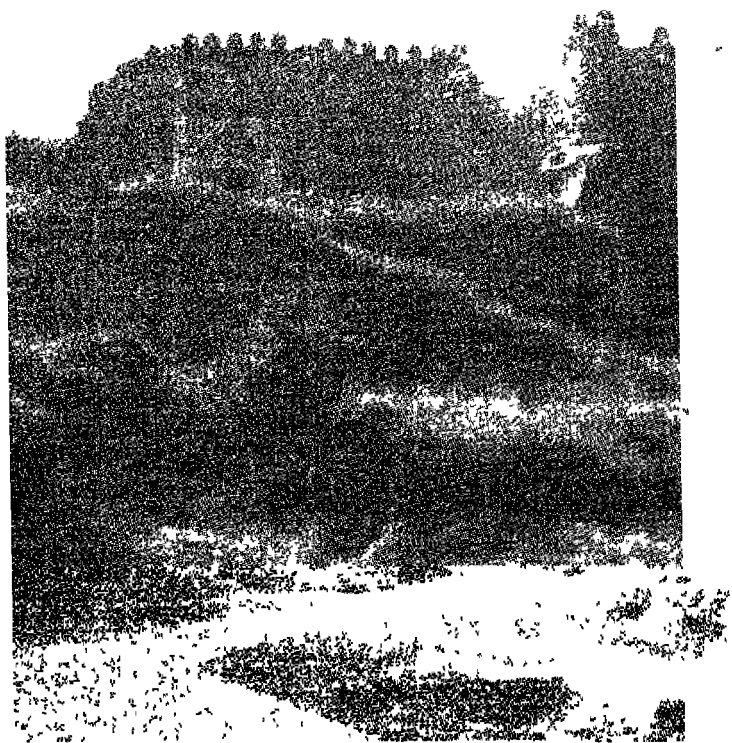
का किला हैदराबाद
एथनी जॉन

मे दे दिया इस प्रकार वह ऐसा करने वाले पहल शासक ब
मे उनकी स्वतन्त्रता की पुष्टि की गई निजाम अली खा दूस
(1803–1805, 1817–1819) मे अग्रेजो के सहयोगी थे अ
हैदराबाद का सैनिक दस्ता भारतीय गदर (1857–58) के
वफादार रहे

1918 मे निजाम मीर उस्मान अली को 'हिज एक्जॉल्टेड हा
यद्यपि भारत की ब्रिटिश सरकार ने कुशासन की स्थिति मे
करने का अधिकार सुरक्षित रखा हैदराबाद एक शात,
सामती राज्य बना रहा, जबकि भारत मे स्वतत्रता आदोलन

1947 मे भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन होने पर निजाम
की अपेक्षा स्वतत्र रहना चाहा 29 नवबर 1947 को उन्होने
की अवधि का यथास्थिति कायम रखने का समझौता किया
ली गई समस्याए बनी रही, लेकिन निजाम ने अपनी स्वायत्त
रखे भारत ने जोर दिया कि हैदराबाद भारत मे शामिल हो
राजा जॉर्ज VI के समक्ष गुहार की 13 सितबर 1948 क

आक्रमण कर दिया और चार दिन के अदर इस राज्य ने स्वतत्र भारत मे सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया कुछ समय के लिए सैनिक व अस्थाई नागरिक सरकारो के बाद राज्य मे मार्च 1952 मे एक लोकप्रिय सरकार व विधानसभा का गठन किया गया

1 नवंबर 1956 को हैदराबाद राज्य प्रशासनिक रूप से समाप्त हो गया इसे (भाषाई आधार पर) आध्र प्रदेश, जिसने तेलगाना जिले लिए, मैसूर, जिसने कन्नडभाषी जिल लिए, और बबई (वर्तमान मुबई) राज्यो मे विभाजित कर दिया गया बरार को पहले ही मध्य प्रदेश मे मिला दिया गया था

हेदराबाद के निजाम एक ऐसे मुस्लिम वश का हिस्सा थे, जिसने हिदू बहुल आबादी पर शासन किया यह इस वश के शासन के लिए गर्व की बात है कि उसकी हिदू प्रजा ने इन वर्षो मे मराठो, मैसूर अथवा यूरोपीय शक्तियो के साथ मिलकर मुस्लिम राजशाही को हटाने का कोई प्रयास नही किया

हो

लरका कोल भी कहलाते है, झारखड राज्य के आदिवासी, मुख्यत निचले छोटा नागपुर पठार के कोलहान क्षेत्र मे बसी हुई जनजाति 20वी सदी के अंत मे इनकी सख्या करीब 11 50 लाख थी, जो अधिकाशत पूर्वोत्तर भारत के झारखड (भूतपूर्व बिहार) और उडीसा राज्यो मे थे ये मुडा कुल की भाषा बोलते हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि ये सुदूर उत्तर से धीरे–धीरे इन क्षेत्रो मे आए इनकी परपरागत सामाजिक व्यवस्था मे अन्य मुडाभाषी जनजातियो की सामान्य विशेषताए शामिल है जैसे लडकियो और लडकों के युवागृहो की स्थापना, ग्राम–कार्यालयो की विस्तृत पद्धति और अर्द्ध सैनिक महासघ मे क्षेत्रीय सगठन की व्यवस्था उनका वश निर्धारण पैतृक आधार पर होता है और युवाओ से अपेक्षा रहती है कि वह अपने पैतृक कुटुब के बाहर शादी करे, लेकिन मातृपक्ष की बहन से विवाह करने की प्रथा भी प्रचलित है भागकर और अपहरण के द्वारा विवाह की प्रथा भी सामान्य परपरा है हो जनजाति के लोग आत्माओ की पूजा करते है उनका मानना है कि इनमे से कुछ बीमारियो का कारण होती है, ये दैवी भविष्यवाणी और जादू–टोने के माध्यम से उनसे सपर्क करते है हो की परपरागत अर्थव्यवस्था शिकार और आदिम झूम खेती पर आधारित थी. स्थायी खेती और पशुपालन मे वृद्धि के कारण उनका यह व्यवसाय कम होता चला गया इनमे से कई पुरुष खदानो और कारखानो में श्रमिक के रूप मे भी काम करते है

होप डायमंड

भारत का एक नीलाभ रत्न यह सबसे बडे नीले हीरो मे से एक है और माना जाता है कि इसे 112 कैरट के एक पत्थर मे से काटा गया था, जिसे एक आभूषण व्यापारी ज्या–बेप्टीस्ट टेवर्नियर फ्रास लाए थे 1668 मे होप डायमड लुई XIV द्वारा फ्रासीसी

ताज के रत्नो मे शामिल करने के लिए खरीदा गया यह रत्न, जिसे बाद मे फ्रेंच ब्लू कहा गया, 1673 मे पुन एक 67 कैरट के पान के आकार मे काटा गया 1792 मे ताज के रत्नो की लूट के बाद यह लापता हो गया इससे बने 45 5 कैरट के बैकर डायमड का नामकरण लदन के साहूकार टॉमस होप के नाम पर किया गया, जिन्होने इसे 1830 म खरीदा था होप डायमड स्मिथसोनियन इस्टिट्यूशन, वॉशिगटन डी सी सयुक्त राज्य अमेरिका मे प्रदर्शित है

होमरूल लीग

हाप डायमड, स्मिथसानियन इस्टिट्यूशन, वॉशिगटन डी सी फोटो ली बोल्टिन

स्वशासन के पक्ष मे जनमत तैयार करने वाला भारत का उदारवादी आदोलन आयरलैड से लिए गए शब्द का इस्तेमाल बाल गगाधर तिलक और एनी बेसेट ने भारत मे इसी नाम के दो सगठनो की स्थापना के लिए किया इन सगठनो का उद्देश्य भारत को स्वशासन की ओर ले जाना था बेसेट का सगठन भारत के स्वतत्रता आदोलन मे अखिल भारतीय स्तर पर शामिल हो गया, जबकि बाल गगाधर तिलक के प्रयास मुख्यत पश्चिमी भारत मे केद्रित थे होमरूल ने जनमत तैयार किया और शातिपूर्ण आदोलनो का सचालन किया उनसे कुछ अधिक हासिल नही हुआ और उन्होने केवल राष्ट्रीय आदोलन की प्रेरणा को बनाए रखा

होमियोपैथी

19वी शताब्दी मे विशेष रूप से लोकप्रिय चिकित्सा विज्ञान की एक पद्धति *सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेटर* के घोषित सिद्धात, 'जैसे को तैसा ठीक करता है' पर आधारित यह पद्धति मरीजो के लिए उन दवाओ अथवा अन्य इलाजो की अनुशसा करती है, जो स्वस्थ मनुष्यों म उन्हीं बीमारियो के लक्षण पैदा करते है, जिनका उपचार किया जा रहा है

'समानता के सिद्धात' पर आधारित चिकित्सा विज्ञान की इस पद्धति की शुरुआत जर्मन चिकित्सक सैम्युअल हैनिमैन ने 1796 मे की थी उन्होने दावा किया कि मलेरिया के उपचार के लिए प्रयुक्त कुनैन की एक बडी मात्रा ने उनमे मलेरिया के रोगियो के समान लक्षण पैदा किए अत उन्होने निष्कर्ष निकाला कि सभी व्याधिया उन्ही दवाओ से सबसे अच्छी तरह उपचारित होती है, जो स्वस्थ मनुष्यों मे इन व्याधियो के लक्षण पैदा करे इसे सिद्ध करने के लिए उन्होने कई प्रकार की दवाओ के प्रयोग भी आरभ किए हैनिमैन मानते थे कि दवा की उच्च मात्रा बीमारी को बढाती है, इसलिए औषधियों की प्रभावशीलता तनुकरण के साथ बढती है इसी के अनुसार अधिकाश होमियोपैथिक चिकित्सक औषधि की कम मात्राओ के प्रभाव पर विश्वास करते थे

ई रोगियो और कुछ चिकित्सको के लिए होमियोपैथी रक्तस्राव, शोधन, बहुऔषध
ज्ञान और उस समय की अन्य कठोर चिकित्सा प्रणालियो का एक सुखद विकल्प थी
लाकि 20वी शताब्दी मे कुछ लोग होमियोपैथी को अधिक महत्त्व नहीं देते थे और
समे व्याधि के कारणो की अपेक्षा उसके लक्षणो पर ध्यान केंद्रित करने के कारण
लोचना करते थे इसके बावजूद अब भी बहुत से लोग होमियोपैथी को मानते है और
नकी कई राष्ट्रीय और अतर्राष्ट्रीय समितिया है, जिनमे इटरनेशनल होमियोपैथिक
डेकल लीग, जिसका मुख्यालय ब्लोमेडाल, नीदरलैड मे है, भी शामिल है

भारत मे होमियोपैथी

कहा जाता है कि भारतीय उपमहाद्वीप मे होमियापैथी एक जर्मन यात्री के साथ 1801 मे उस समय पहुची, जब हैनिमैन ने *ओर्गेनोन डर रेशनेलेन हीलकुडे* का अपना पहला सस्करण प्रकाशित किया ही था वास्तव में प्राचीन हिंदू चिकित्सक तथाकथित समानता के सिद्धात को उपचार के सिद्धातो मे से एक मानते थे *भागवत–पुराण* मे एक सस्कृत श्लोक मे पूछा गया है 'क्या यह सत्य नही है कि जब किसी सजीव प्राणी द्वारा ग्रहण किया गया कोई पदार्थ किसी व्याधि का कारण बनता है, तो वही पदार्थ किसी विशेष प्रकार से अनुशसित किए जाने पर उसी प्रकार की व्याधि को दूर करता है?'

होमियोपैथी चिकित्सा के आरभ का अधिक स्पष्ट प्रमाण 1839 का है, जब पजाब के महाराजा रणजीत सिह की स्वर–नलिका के लकवे व शोफ (ईडीमा) का इलाज लाहौर यात्रा पर आए एक यात्री डॉ. मार्टिन होनिबर्गर ने किया, जिन्हे महाराजा की चिकित्सा करने को कहा गया था स्थानीय चिकित्सक उन्हे राहत दिलाने मे विफल रहे थे, लेकिन होनिबर्गर महाराजा को *डल्कमारा* (एक होमियोपैथी औषधि) की कुछ छोटी खुराकों के माध्यम से ठीक करने मे सफल रहे होनिबर्गर ट्रासिल्वानिया के रहने वाले थे उन्होने सभवत डॉ एस हैनिमैन के सपर्क मे आकर होमियोपैथी के आधार तत्त्वो को ग्रहण किया था उन्हे औषधीय पौधो का भी अच्छा ज्ञान था जो उनकी पुस्तक *थर्टी फाइव इयर्स इन द ईस्ट* से स्पष्ट है वह लगभग 1835 मे लाहोर आए और वहा लगभग 15 वर्षो तक रहे महाराजा का सफल उपचार करने के कारण उन्हें राजवैद्य नियुक्त किया गया उन्होने कश्मीर की यात्रा कर उस क्षेत्र के औषधीय पौधो की विशेषताओ और गुणो का अध्ययन भी किया था.

राजवैद्य के रूप मे रहते हुए होनिबर्गर ने उन पद्धतियो और प्रक्रियाओं का भी अध्ययन किया जिनसे आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सक रोगियो का उपचार करते थे उन्होने उनकी गतिविधियों और वह कैसे महाराजा द्वारा होनिबर्गर पर किए गए अनुग्रह से जलने लगे, इसका रोचक विवरण दिया है

होनिबर्गर को बारूद कारखाने और बदूक निर्माण कारखाने का अधीक्षक नियुक्त कर दिया गया उन्हे नगर मे बने चिकित्सालय (दारुल–शफा) का प्रभार नही दिया गया, जिसका प्रबधन दो धनी फकीरो द्वारा किया जाता था बाद मे जब अग्रेज भारत आए, उन्होने नगर के बाहर एक चिकित्सालय बनाने का आदेश दिया और इस सस्थान का प्रबध होनिबर्गर को सौपा उन्होने

अपनी पुस्तक मे लिखा, 'उनका प्रतीक्षा कक्ष रोगियो से हमेशा भरा रहता था, जो न केवल ओषधियो की मोहक बाह्याकृति, दवाओ के मीठे स्वाद और सुदर लकडी के डिब्बो, जिनमे वे दी जाती थीं, से आकर्षित होते थे, बल्कि उस प्रभावशीलता के कारण भी, जो उन्होने इन मिठाइयो मे पाई' बाद मे दरबार ने उन्हे लाहौर कारागृह मे भी एक चिकित्सालय स्थापित करने का आदेश दिया, जो उसी स्थान पर था, जहा कुछ समय पूर्व उन्होने बारूद का कारखाना बनाया था उन्होन यह भी लिखा कि अतिम दो वर्षो मे उन्होने 800 रोगियो का उपचार किया और 12 माह मे केवल 21 रोगियो की मृत्यु हुई जिनकी मृत्यु हुई, उन्हे गभीर घाव, सूखा रोग या पेचिश थी होन्बिर्गर ने 1849 मे पजाब छोड दिया और कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) चले गए

बगाल, विशेषकर कलकत्ता मे कुछ चिकित्सको ने होमियोपैथी उपचार आरंभ कर दिया था डॉ टोनर उनमे से एक थे दक्षिण मे जर्मन धर्म प्रचारक लीनर, ग्रीनर और हेविच 1834 मे होमियोपैथी औषधियो का प्रयोग निर्धनो के उपचार के लिए कर रहे थे उनके बाद फादर म्यूलर आए, जिन्होने मैंगलोर मे चिकित्सा कार्य आरभ किया उस समय फादर म्यूलर द्वारा रोपित छोटे बीज अब बडे होकर एक उच्च ख्याति प्राप्त होमियोपैथी महाविद्यालय का भाग बन गए है उन्होने होमियोपैथिक औषधियो के निर्माण की एक छोटी इकाई भी शुरू की थी यह इकाई भी अब बहुत बडी हो गई है

कलकत्ता मे एक विद्वान, लेकिन अविशेषज्ञ, बाबू राजेद्र लाल दत्त ने होमियोपैथी औषधियो के प्रभाव का अध्ययन किया और गभीर बीमारियो के उपचार के लिए बहुत प्रसिद्ध हुए. 1863 मे ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन की बगाल शाखा के शुभारभ के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम मे एलोपैथिक चिकित्सा के स्नातक डॉ एम एल सरकार ने होमियोपैथी की तीव्र निदा करते हुए एक भाषण दिया उन्हे सगठन का पहला सचिव और तीन वर्ष बाद उसका उपाध्यक्ष चुन लिया गया

यही वह भाषण था, जिसमे की गई होमियोपैथी की तीव्र निदा ने राजेद्र बाबू का ध्यान आकृष्ट किया उन्होने डॉ सरकार को होमियोपैथी की वैज्ञानिक प्रकृति का विश्वास दिलाने का निश्चय किया, क्योकि इसके प्रभाव के बारे मे आश्वस्त करने पर ऐसा व्यक्ति इस विज्ञान का प्रबल समर्थक हो सकता था डॉ सरकार राजेद्र बाबू के पडोसी थे और उन्होने राजेद्र बाबू द्वारा बडी सख्या मे रोगियो का इलाज होते और उन्हे ठीक होते देखा था उन्होने कुछ असाध्य कहलाने वाली व्याधियो का भी राजेद्र बाबू द्वारा सफल उपचार होते देखा था डॉ सरकार विज्ञान के मूलभूत सिद्धातो के प्रति समर्पित एक शुद्ध अत करण वाले व्यक्ति थे एक बार राजेद्र बाबू के उपचार की ओर आकृष्ट होने के बाद उन्होने होमियोपैथी औषधियो के दर्शन व उनके प्रभाव का सपूर्ण अध्ययन किया और इस पद्धति से इलाज शुरू कर दिया वह होमियोपैथी की ओर उन्मुख हो गए और 1867 मे इसके बारे में एक स्पष्ट व खुला बयान दिया, उनके परिवर्तन की खबर सुनकर कलकत्ता का समूचा एलोपैथी समुदाय हैरत मे पड गया वह कलकत्ता विश्वविद्यालय के चिकित्सा के दूसरे स्नातकोत्तर विद्यार्थी थे और चिकित्साशास्त्र के प्रतिभावान छात्र रहे थे उन्हे मेडिकल एसोसिएशन से निकाल दिया गया और विश्वविद्यालय से त्यागपत्र देने पर विवश किया

गया कहा जाता है कि आगे चलकर वह होमियोपैथी के सबसे महान व्यक्तित्वो व पथ–प्रदर्शको मे से एक बने उन्होने राजेंद्र दत्त के कार्य को आगे बढाया और होम्योपेथी औषधियो के वैज्ञानिक चिकित्सा कार्य को स्थापित किया डॉ सरकार आगे चलकर 19वी शताब्दी मे भारत के सर्वाधिक जाने–माने होमियोपैथी चिकित्सको मे से एक बने

कलकत्ता, भारत मे होमियोपैथी का विकास केंद्र बना यहा के डॉ. पी.सी मजूमदार ने अमेरिका के एक होमियोपैथी चिकित्सा महाविद्यालय से होमियोपैथी चिकित्सा मे अर्हता प्राप्त की बाद मे उन्होने भारत मे पहले होमियोपैथिक मेडिकल इंस्टिट्यूशन की स्थापना की और 1881 मे प्रसिद्ध कलकत्ता होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज की स्थापना की, जिसने सारे देश के विद्यार्थियो मे होमियोपैथी के ज्ञान के प्रसार मे सहायता की

होमियोपैथी औषधियो की आपूर्ति के क्षेत्र मे एक रसायनविज्ञानी व औषधि निर्माता डॉ महेश चद्र भट्टाचार्य ने वैज्ञानिक आधार पर अच्छी गुणवत्ता वाली होमियोपैथी औषधियों का निर्माण प्रारभ किया. उन्होने पहला होमियोपैथी औषध–सग्रह अग्रेजी और बाग्ला, दोनो मे प्रकाशित किया

दुर्भाग्य से कई होमियोपैथी चिकित्सक अर्हता प्राप्त नही थे और आरभिक पथ–प्रदर्शको मे से अधिकाश एलोपैथी चिकित्सक थे, जो होमियोपैथी औषधियो के साथ प्रयोग करने के बाद होमियोपैथी की ओर उन्मुख हुए थे

बगाल मे ही होमियोपैथी चिकित्सा के लिए शिक्षा का स्तर निर्धारित करने की नीव रखी गई और 1943 मे जनरल काउसिल ऐड स्टेट फैकल्टी ऑफ होमियोपैथिक मेडिसिन का गठन किया गया डॉ एस डब्ल्यू. यूनान, डॉ जे एन मजूमदार, डॉ जे एम घोष, डॉ एस.के नाग और डॉ एन एम चौधरी जैसे प्रमुख नाम इससे जुडे थे भारत के विभाजन से पहले कुछ प्रारभिक पुरोगामी होमियोपैथी चिकित्सक कलकत्ता होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज से उत्तीर्ण हुए और उन्हे जनरल काउसिल ऐड स्टेट फैकल्टी द्वारा डिग्री/डिप्लोमा दिए गए विभाजन के बाद इनमे से कुछ चिकित्सको ने अपना चिकित्सा कार्य पाकिस्तान और बाग्लादेश मे जमाया

होयसल मंदिर वास्तुशिल्प

दक्षिण भारत के कर्नाटक (भूतपूर्व मैसूर) राज्य मे प्रयुक्त वास्तुशिल्प शैली दक्षिण भारतीय शैली से जुडी इस शैली का विकास 12वी सदी के मध्य मे होयसल राजवश के तहत विशेष शैली के रूप मे हुआ

इस राजवश के मदिरो की विशेषता है– केद्रीय कक्ष के चारो ओर अनेक वेदिकाए और मूर्तिकला एव प्रचुर अलकारिक सजावट मदिरो की ऊची बुनियादे व्यापक रूप से फूल एव पशुओ की आकृति वाली अनुप्रस्थ पट्टियो से ढकी है, जो गहरे, छायादार खाचो से विभक्त है, दीवारो पर दैवी एव अर्द्ध दैवी आकृतिया बनी है और प्रत्येक अपनी पर्णिल बेल–बूटेदार छतरी के नीचे है क्लोराइटयुक्त स्तरित चट्टान के स्थानीय रूप से उपलब्ध होने के कारण अत्यधिक आलंकारिक, गहरी कटाई वाली शैली का

विकास सभव हुआ, क्योकि यह पत्थर उत्खनन के समय मुलायम होता है तथा हवा के सपर्क से कठोर हो जाता है

हेलेबिड मे दोहरी वेदी वाला होयसलेश्वर मदिर 12वी सदी की कर्नाटक शैली का विशिष्ट उदाहरण है कभी–कभी अत्यधिक नक्काशी वास्तुशिल्पीय रूप का बोध नष्ट कर देती है, लेकिन इसमे प्रयुक्त अद्भुत कौशल एव श्रम चकित करने वाले है

होयसल वंश

1006 से 1346 तक दक्षिणी दक्कन और कुछ समय कावेरी घाटी पर शासन करने वाला वश पहले शासक द्वारसमुद्र (आधुनिक हलेबिड) के पश्चिमोत्तर की पहाडियो से आए थे, जो 1060 के लगभग उनकी राजधानी बना उनके अनुयायी पहाडो पर रहने वाले साहसी कन्नडभाषी लोग थे उन्होने क्रमश गगवाडी (मैसूर राज्य, वर्तमान कर्नाटक राज्य) और तुगभद्रा नदी के पार के धारवाड और रायचूर की ओर के समृद्ध इलाको पर अधिकार कर लिया कल्याणी के चालुक्यो के साम्राज्यवादी कार्यक्रमो ने उनकी सहायता की, क्योकि होयसल शासको विनयादित्य (शासनकाल, लगभग 1047–1098) और उनके पौत्र विष्णुवर्द्धन (शासनकाल, 1110–1141) के शासन मे उन्होने सामती सेनापतियो के रूप मे वृहद अनुभव प्राप्त किया

विष्णुवर्द्धन ने हगल के शक्तिशाली कदबो से काफी क्षेत्र जीत लिया था, लेकिन उनके कमजोर पुत्र नरसिंह I उसे हार गए फिर भी विष्णुवर्द्धन चोलो को पठार से निकालने मे सफल रहे उनके पौत्र बल्लाल II (शासनकाल, 1173–1220) को मैदानो मे चोलो की सहायता का निमत्रण दिया गया वह तैयार हो गए, क्योकि उनके द्वारा 1189–1211 मे मालप्रभा और कृष्णा नदियो के पार चालुक्य वश से जो कुछ जीता गया था, वह देवगिरि के यादव वश के दबाव मे कम होता गया था फिर उन्हान अपने राज्य को मैसूर के उत्तर मे बढाया और यादवो को हराकर दक्षिण भारत मे होयसलो का प्रभुत्व स्थापित किया

बल्लाल II के पौत्र सोमेश्वर (शासनकाल, लगभग 1235–1254) चोलो द्वारा दिए गए कावेरी की एक जागीर मे रहते थे उनके पुत्र रामनाथ (शासनकाल, 1254–1295) को पाड्य सम्राट ने वहा कुछ समय शासन करने की अनुमति दी लेकिन जब उन्हे हटाया गया, तब अपने भाई नरसिह III से इस पठारी राज्य को छीनने के उनके प्रयास ने होयसलो को कमजोर किया पाड्यो के विरुद्ध दिल्ली के सुल्तान की सहायता करने वाले बल्लाल III (शासनकाल, लगभग 1292–1342) की व्यर्थ की महत्त्वाकाक्षाओ के कारण वश का पतन हुआ विजयनगर वश ने होयसलो के बाद शासन किया

होयसल वास्तुशिल्प और मूर्तिकला विशेष रूप से अलकृत और जटिल है, जिसके सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हलेबिड, बेलूर और सोमनाथपुर मे है इस वश ने कन्नड और सस्कृत साहित्य को उदारतापूर्वक प्रश्रय दिया

पूर्णिमा के दिन पूरे उत्तर भारत मे मनाया जाने वाला हिंदू
ा लेने वाले एक-दूसरे पर रग डालते है और गुलाल-अबीर
जाति, लिग, सामाजिक स्तर और आयु के भेद को भुला दिया
स्सर अनियंत्रित उत्सव और उन्मुक्तता दिखाई देती है इसके
नहाकर साफ कपडे पहनते है और मित्रो, गुरुजनो एव
ो है समाज की सामान्य व्यवस्था नए उत्साह के साथ बहाल
क्त विशेष रूप से इस त्योहार का आनद लेते है चपलता की
पेयो (ग्वालो की पत्निया एव पुत्रिया) के साथ कृष्ण की लीला
ा है ब्रज मे अनुष्ठानो की परिणति लडाई मे होती है जिसमे
रसाने की महिलाए कृष्ण के गांव के पुरुषो को लाठियो से
अपने को बचाते हैं होली की विश्राम की मन स्थिति डोलयात्रा
रह अभिव्यक्त होती है, जिसमे भगवान की मूर्तियो को विशेष
खा जाता है तथा केवल वसत मे गाए जाने वाले विशेष गीतो
जाता है लेकिन कई स्थानो पर सबसे यादगार अनुष्ठान
ाह-जगह आग जलाना है, जो हिरण्यकश्यपु की राक्षसी बहन
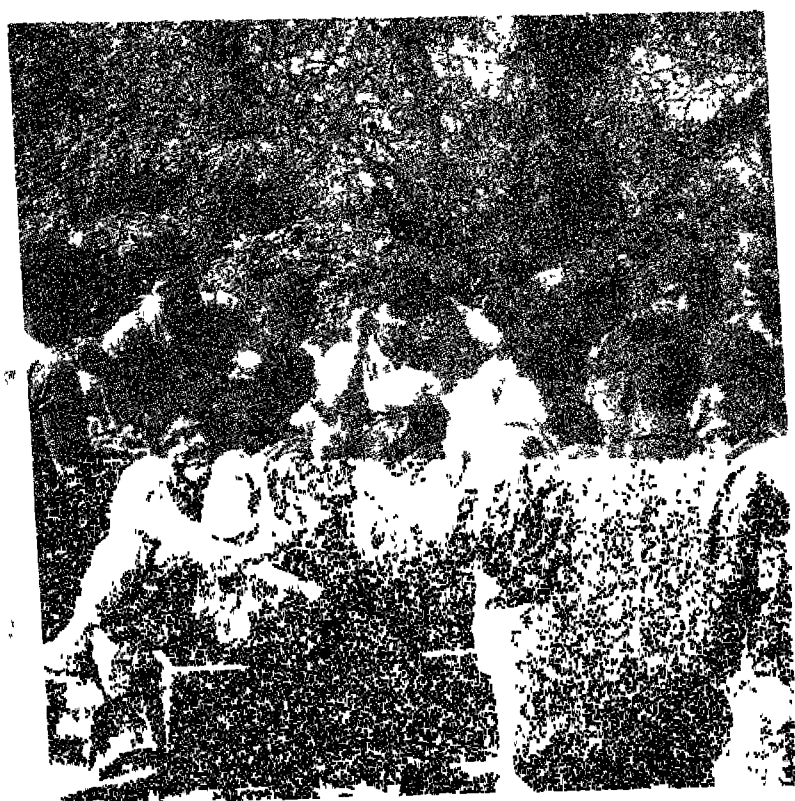
होलिका (या होली) के दहन का प्रतीक है, हिरण्यकश्यपु ने अपने बेटे प्रह्लाद की हत्या के प्रयास मे होलिका की सहायता मागी थी विष्णु के प्रति प्रह्लाद की अटल भक्ति के कारण उनके घमडी पिता, जो अपने को भगवान मानते थे, उनसे नाराज थे होलिका का दावा था कि उनके पास आग से न जलने का वरदान है उन्होने प्रह्लाद को गोद मे बिठाकर अग्नि मे प्रवेश किया किवदतियो के अनुसार, वह जिदा जल गई और प्रह्लाद का बाल भी बाका नही हुआ होलिका दहन श्रद्धालुओ को याद दिलाता है कि किस तरह विष्णु (नृसिह के रूप मे भगवान विष्णु के दस अवतारो मे चौथा) ने हिरण्यकश्यपु का वध किया और यह भी दर्शाता है कि आस्था की जीत होती है

होल्कर वश

भारत मे इदौर के मराठा शासक मूलरूप से चरवाहा जाति या कृषक वश, जो मथुरा जिले से आकर दक्कन के गाव 'होल' या 'हल' मे बस गया था, इसी गाव के निवासी के नाते इनका पारिवारिक नाम 'होल्कर' हो गया

राजवश के सस्थापक मल्हार राव होल्कर अपनी योग्यता के बलबूते पर किसान मूल से ऊपर उठे 1724 मे मराठा राज्य के पेशवा (प्रधानमत्री) बाजीराव I ने उन्हे 500 घुडसवार सैनिको की कमान सौपी और जल्दी ही वह मालवा मे पेशवा के प्रधान सेनापति बन गए, जिसका मुख्यालय महेश्वर व इदौर में था मृत्यु होने तक (1766) वह मालवा के वास्तविक शासक थे 1767 से 1794 तक उनके पुत्र की विधवा अहिल्या बाई ने बहुत कुशलता और योग्यतापूर्वक राज्य का शासन चलाया हिसा के सागर मे इदौर समृद्धि व शाति का द्वीप था और अहिल्याबाई के शासन, न्याय व बुद्धि के लिए विख्यात था उन्होने अपने दूर के सबधी तुकोजी होल्कर को अपना सेनापति नियुक्त किया था, जो दो वर्ष बाद अहिल्या बाई की मृत्यु होने पर उनके उत्तराधिकारी बने 1797 मे तुकोजी होल्कर के नाजायज बेटे जसवत राव ने सत्ता पर कब्जा कर लिया

1803 मे दूसरा मराठा युद्ध छिडने पर जसवत राव तटस्थ रहे, लेकिन 1804 मे सिधिया (मराठा महासघ की एक रियासत) की पराजय के बाद उन्होने ब्रिटिश सेना पर हमला किया और दिल्ली को घेर लिया लेकिन नवबर 1804 मे डीग और फर्रुखाबाद मे उनकी सेनाए हार गई और एक वर्ष बाद उन्होने समझौता भी कर लिया इसके बाद वह विक्षिप्त हो गए और 1811 मे उनकी मृत्यु हो गई विवादो और पदत्यागो से जूझते होल्कर वश का शासन 1947 मे देश आजाद होने और राज्य के अलग अस्तित्व की समाप्ति तक चलता रहा

होशंगाबाद

नगर, मध्य मध्य प्रदेश राज्य, मध्य भारत यह नगर नर्मदा नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा है 1406 में मालवा के दूसरे गोरी शासक सुल्तान होशग शाह ने इसकी स्थापना की थी और यह गोड आक्रमणकारियो से प्रतिरक्षा मे मदद करता था इसका किला

पत्थर से बना एक अनियमित आकार का विशाल भवन है, जो नदी के किनारे इस तरह स्थित है, जहा से भोपाल जाने वाली सडक पर नियत्रण रखा जाता था समय–समय पर इस पर भोपाल या नागपुर की सेनाओ ने हमले किए भोपाल विजय (1720) के बाद किले का विस्तार होने और व्यापारिक समुदाय के बसने तक यह नगर बहुत छोटा था यह नगर नर्मदा घाटी मे यातायात केद्र तथा नदी के किनारे स्थित बस्ती के रूप मे विकसित हुआ 1817 मे ब्रिटिश जनरल एडम्स ने इस पर अधिकार कर लिया और शत्रुओ के हमलो के खिलाफ इसे मजबूत किया उसके बाद यह नगर जिले के प्रमुख ब्रिटिश अधिकारियो का निवास स्थान बन गया और बाद मे नर्मदा मडल का मुख्यालय बना (1818) 1867 म होशगाबाद की नगरपालिका का गठन हुआ

यह एक कृषि व्यापार केद्र है और यहा कागज मिल, सूती वस्त्र निर्माण, अनाज की मिल है और हुडियो का लेन–देन भी होता है साथ ही यहा टाइल (खपडे), पीतल के बर्तन और बास का सामान भी बनाया जाता है होशगाबाद अग्रेजो के तैयार सामान के व्यापार का केद्र था और यहा यूरोपीय सामान की बिक्री होती थी इसकी वर्तमान उन्नति का कारण इसका जिला मुख्यालय होना है होशगाबाद मे सागर विश्वविद्यालय से सबद्ध कई महाविद्यालय है जनसख्या (2001) नगर 97,357, जिला कुल 10,85,011

होशियारपुर

शहर व जिला, पूर्वोत्तर पजाब राज्य, पश्चिमोत्तर भारत यह उच्च शिक्षा का प्रमुख केद्र है जिसमे विश्वेश्वरानद वैदिक शोध सस्थान शामिल है, यह पजाब व हिमाचल प्रदेश के अधिकाश शहरो से सडक द्वारा और जालधर से रेलमार्ग द्वारा जुडा है यह स्थानीय कृषि उत्पादो के लिए महत्त्वपूर्ण बाजार है, लेकिन यहा कोई महत्त्वपूर्ण उद्योग नही है जिले के दक्षिण मे तराई क्षेत्र (काडी भूभाग) और कुछ मैदानी क्षेत्र हैं तराई क्षेत्र शिवालिक पहाडियो मे बहने वाली 'चोस' (नदिकाओ) द्वारा बुरी तरह कटा–छटा है अशत पर्वतीय क्षेत्र और बटे हुए उच्चभूमि मैदान के कारण जिले के सिर्फ 69 प्रतिशत भूभाग पर खेती होती है, कृषि योग्य भूमि का लगभग 73 प्रतिशत हिस्सा सिचित है और सिचाई का काम अधिकाशत' नलकूपो द्वारा होता है गेहू, मक्का और चावल प्रमुख फसले है अन्य फसलो मे गन्ना, आलू और तिलहन शामिल हैं काडी क्षेत्र फलो के बगीचे वाले इलाके के रूप मे उभर रहा है और यहा किन्नू, आम, अमरूद व लीची उगाई जाती है लगभग 1,088 वर्ग किमी भूमि पर, विशेषकर पहाडो पर और चोस के किनारे जगल है लगभग 98 प्रतिशत गाव सडको से जुडे हुए है तथा अधिकाश घरो मे बिजली की सुविधा है इस जिले मे उत्प्रवास का लबा इतिहास रहा है बाहर रहने वाले लोगो द्वारा भेजा गया धन इस जिले मे शैक्षिक विकास का एक महत्त्वपूर्ण कारण है होशियारपुर मे गवर्नमेंट कॉलेज, डी ए वी कॉलेज, जी जी डी एस डी कॉलेज, जे आर गवर्नमेट पॉलीटेक्निक और एस जी जी एस के खालसा कॉलेज समेत कई महाविद्यालय है जनसख्या (2001) नगर 1,48,243, जिला कुल 14,78,045

ह्यूम, एलन ऑक्टेवियन

(ज –6 जून 1829, मॉन्ट्रोज, फोरफॉरशायर, स्कॉटलैड, इग्लैड, मृ –31 जुला 1912 लदन), भारत मे नियुक्त ब्रिटिश प्रशासक, भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की स्थापना करने वाली अग्रणी प्रेरणाओ मे से एक

ह्यूम, सुधारवादी राजनीतिज्ञ जोजेफ ह्यूम के पुत्र थे उन्होने 1849 मे बगाल मे इडियन सिविल सर्विस मे प्रवेश किया 1857 के भारतीय विद्रोह के समय इटावा जिले मे मजिस्ट्रेट के पद पर काम करने के बाद उन्हे पश्चिमोत्तर प्रातो के राजस्व बोर्ड मे नियुक्त कर दिया गया 1870–1879 के दौरान वह भारत की केद्र सरकार से राजस्व तथा कृषि विभाग से सचिव के रूप मे सबद्ध रहे. भारतीय मामलो मे भारतीयो की अधिक भागीदारी के उनके विचार के कारण उनके लिए मुश्किले पैदा हुईं और उन्हे वापस प्रातीय प्रशासन मे भेज दिया गया 1882 मे सिविल सेवा से सेवानिवृत्त होने के बाद वह भारतीयो को ज्यादा लोकतात्रिक और प्रतिनिधित्व वाली सरकार दिलवाने के उद्देश्य से राजनीतिक गतिविधियो मे शामिल हो गए 1885 मे वह बबई (वर्तमान मुबई) मे हुए भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के प्रथम अधिवेशन के आयोजको मे से एक थे काग्रेस के गठन के आरभिक 22 वर्षों तक वह इसके महासचिव रहे

1894 मे भारत से जाने तक राष्ट्रीय आदोलन पर ह्यूम का नियत्रण नही रह गया था क्योकि उसमे उग्र सुधारवाद ताकतवर होता जा रहा था लदन के डलविच जिले मे लौटकर 1894 मे वह *डलविच लिबरल एसोसिएशन* के अध्यक्ष बन गए तथा मूलभूत राजनीतिक मुद्दो मे हाथ बटाने और आर्थिक मदद देने मे आजीवन लगे रहे

पश्चिमोत्तर प्रातो मे कार्यकाल के दौरान उन्होने पक्षी विज्ञान पर कई पुस्तके लिखी जिनमे सह–लेखक के रूप मे एक पुस्तक *द गेम बर्ड्स ऑफ इडिया, बर्मा ऐड सीलोन* (1879–81) भी है बाद मे उन्होने चिडियो की खालो और अडो का अपना सग्रह ब्रिटिश सग्रहालय को भेट कर दिया

ह्वेनसाग

मूल नाम चेन आई, मानद उपाधि सान–त्साग, मू–चा ति–पो भी कहा जाता है सस्कृत मोक्षदेव, या युआन–त्साग, बाद मे त्रिपिटिक के रूप मे ज्ञात (ज –602, चेन–लू, चीन; मृ – चीन), बौद्ध भिक्षु ओर भारत आए चीनी यात्री, जिन्होने बौद्ध धर्मग्रथो का सस्कृत से चीनी मे अनुवाद किया और चीन मे बौद्ध चेतना मत की स्थापना की उनकी ख्याति मुख्य रूप से बौद्ध सूत्रो के अनुवाद की व्यापकता एव भिन्नता तथा मध्य एशिया और भारत की यात्रा के दस्तावेजो के कारण है, जो विस्तृत एव सटीक आकडो के कारण इतिहासकारो एव पुरातत्वविदो के लिए अमूल्य हैं

विद्वानो की पीढियो वाले परिवार मे जन्मे ह्वेनसाग ने प्राचीन कन्फ्यूशियाई शिक्षा प्राप्त की, लेकिन अपने एक बडे भाई के प्रभाव मे बौद्ध धर्मग्रथो के प्रति उनकी रुचि जागी और उन्होने शीघ्र ही बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया चीन मे उस समय जारी

राजनीतिक उथल–पुथल से बचने के लिए अपने भाई के साथ उन्होने चाग–अन और बाद मे सू–चुआन (आधुनिक सेच्वान) की यात्रा की सू–चूआन मे ह्वेनसाग ने बौद्ध दर्शन का अध्ययन शुरू किया, लेकिन शीघ्र ही मूल ग्रथ मे कई विसगतियो एव विरोधाभासो से परेशान हो गए अपने चीनी गुरुओ से कोई समाधान न मिलने पर उन्होने बौद्ध धर्म के स्रोत भारत मे जाकर अध्ययन करने का फैसला किया यात्रा अनुमति पत्र हासिल न कर पाने के कारण उन्होने चोरी–छिपे सू–चुआन छोड दिया अपनी यात्रा के दौरान वह तकला माकान रेगिस्तान के उत्तर से गुजरे, तुरफान, काराशर, कुच, ताशकद और समरकद जैसे नखलिस्तान केद्रो से होते हुए लौह दरवाजे (आयरन गेट) से आगे बैक्ट्रिया मे, फिर हिदुकुश पार करते हुए कपिशा, गाधार और अतत पश्चिमोत्तर भारत से कश्मीर पहुचे वहा स वह गगा नदी मे नौका से मथुरा पहुचे और उसके बाद गगा के पूर्वी इलाके मे बौद्ध धर्म की पवित्र भूमि मे 633 मे पहुचे

भारत मे ह्वेनसाग ने बुद्ध के जीवन से जुडे सभी पवित्र स्थलो का भ्रमण किया और उपमहाद्वीप के पूर्व एव पश्चिम से लगे इलाको की भी यात्रा की उन्होने अपना अधिकाश समय नालंदा मठ मे बिताया, जो बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केद्र था, जहा उन्होने सस्कृत, बौद्ध दर्शन एव भारतीय चितन मे दक्षता हासिल की जब वह भारत मे थे, तो एक विद्वान के रूप मे ह्वेनसाग की ख्याति इतनी फैली कि उत्तर भारत के शासक शक्तिशाली राजा हर्षवर्द्धन ने भी उनसे मिलना एव उन्हे सम्मानित करना चाहा इस राजा के सरक्षण के कारण, 643 मे ह्वेनसाग की वापसी चीन यात्रा काफी सुविधाजनक रही

ह्वेनसाग ताग की राजधानी चाग–अन मे 16 साल के बाद 645 मे लौटे राजधानी मे उनका भव्य स्वागत हुआ और कुछ दिनो बाद शहशाह ने उन्हे दरबार मे बुलाया, जो विदेशी भूमि के उनके वृत्तात से इतने रोमाचित हुए कि उन्होने इस बौद्ध भिक्षु को मत्री पद का प्रस्ताव दिया लेकिन ह्वेनसाग ने धर्म की सेवा को प्राथमिकता दी, इसलिए उन्होने सम्मानपूर्वक शाही प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया

ह्वेनसाग ने अपना शेष जीवन बौद्ध धर्मग्रथो के अनुवाद मे लगा दिया, जो 657 ग्रथ थ और 520 पेटियो मे भारत से लाए गए थे वह इस विशाल खड के केवल छोटे से हिस्से (1330 अध्यायो मे करीब 73 ग्रथ) का ही अनुवाद कर पाए, लेकिन उनके अनुवादो मे महायान के कुछ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण ग्रथ शामिल है

ह्वेनसाग की रुचि मुख्यत' योगाचार (विज्ञानवाद) दर्शन पर केद्रित थी तथा वह और उनके शिष्य क्वी–ची (632–682) ने चीन मे वी–शिह (एकमात्र चेतना मत) की स्थापना की इसका सिद्धात ह्वेनसाग के चेग–वे–शिह लुन (चेतना मात्र सिद्धात की स्थापना पर शोध निबध) मे प्रतिपादित है, जो मुख्य योगाचार लेखो का अनुवाद एव क्वी–ची की व्याख्या है इस मत की मुख्य अभिधारणा है– पूरा विश्व केवल मन की प्रतिच्छवि है जब तक ह्वेनसांग एव क्वी–ची जीवित रहे, इस मत को कुछ प्रतिष्ठा

और लोकप्रियता मिली, लेकिन इसका जटिल दर्शन, गूढ शब्दावली तथा मन और इद्रियो का बाल की खाल निकालने वाला विश्लेषण, चीनी परपरा के लिए नया था इसलिए इन दोनो हस्तियो की मृत्यु के बाद इस मत का तेजी से ह्रास हुआ लेकिन ऐसा होने से पहले जापान के एक भिक्षु दोशो, ह्वेनसाग से शिक्षा के लिए 653 मे चीन आए तथा अध्ययन पूरा करने के बाद जापान लौटने पर उन्होने 'मात्र उद्भावना' मत की स्थापना की सातवी और आठवी सदी के दौरान यह मत, जापानी जिसे *होसो* कहते थे, जापान के सभी बौद्ध मतो मे सबसे प्रभावशाली बन गया

अनुवाद के अलावा ह्वेनसाग ने *ता–ताग सी–यू–ची* (महान ताग राजवंश के पश्चिमी क्षेत्र का दस्तावेज) भी लिखा यह उन देशो का व्यापक वृत्तात है, जहा से वह अपनी यात्रा के दौरान गुजरे थे इस निर्भीक एव समर्पित बौद्ध भिक्षु और तीर्थयात्री के सम्मान मे ताग सम्राट ने ह्वेनसाग की मृत्यु के बाद तीन दिन तक सभी सभाए रद्द कर दी

ह्वेनसाग के बारे मे दो अध्ययन है– आर्थर वेली का *द रियल त्रिपिटिक* पृष्ठ 11–130 (1952), एक जीवत और रोचक शैली मे लिखी जीवनी तथा रेने ग्रुसेट द्वारा लिखी अपेक्षाकृत व्यापक जीवनी *सर लेस ट्रेसेज दु बुद्धा* (1929, *इन द फुटस्टेप्स ऑफ द बुद्धा*), जिसमे ताग इतिहास ओर बौद्ध दर्शन की पृष्ठभूमि मे इस चीनी तीर्थयात्री के जीवन की चर्चा की गई है

विशेष लेख

संकटापन्न जीवजंतु

एस.एम. नायर

भारत का प्राणी जगत समृद्ध और विविधतापूर्ण है, जिसम लगभग 85,000 प्रजातिया है इनमे 340 स्तनपायी, 1,200 पक्षी, 420 सरीसृप, 140 उभयचर, 2,000 मत्स्य, 50,000 कीट तथा 4,000 कोमल देहधारी प्राणी (मालस्क) व अन्य अकशेरुकी (बिना रीढ वाली) प्रजातिया शामिल है

स्तनपायी जीवो मे अनादिकाल से पौराणिक तथा राजसी समारोहो की शान रहे हाथी, गौर अथवा भारतीय जगली भैस, भारतीय भैसा, नीलगाय, चौसिघा (केवल भारत मे), कृष्ण मृग, गोरखर (भारतीय जगली गधा) तथा विशाल एक सीग वाला गैडा शामिल है इनके अलावा हिरनो की कई प्रजातिया जेसे दुर्लभ कश्मीरी मृग, बारासिगा, चीतल, कस्तूरी मृग, थामिन या भ्रूशृगी हिरन तथा पिसूरी मृग भी हे

शिकारी प्राणियो मे एशियाई सिह ही केवल ऐसा सिह है, जो अफ्रीका से बाहर भी पाया जाता हे भारत का राष्ट्रीय पशु राजा शेर (बाघ) अपने चटकीले रग, प्रतिभासी रूपरेखा और अदम्य बल के कारण हमेशा से भारत मे सम्मान पाता आया है बाघ शानदार दिखता है और उसकी गूजनेवाली दहाड उसकी शक्ति का प्रतीक है बाघ की ज्ञात आठ नस्लो मे भारतीय प्रजाति का रॉयल बगाल टाइगर शामिल है बाघ समूचे भारत तथा पडोसी नेपाल, भूटान और बाग्लादेश मे भी पाए जाते हे अन्य विडालो मे तेदुआ, लमचित्ता, हिम तेदुआ तथा छोटे विडालो की विभिन्न प्रजातिया आती है

बदरो तथा लगूरो की कई प्रजातिया आम है भारत मे पाया जाने वाला एकमात्र वानर हूलॉक गिबॅन पूर्वी क्षेत्र के वर्षा वनो तक सीमित है चेहरे के चारो ओर सिह जैसे बालो का घेरा रखने वाला नील वानर (शेर पूछ बदर) दक्षिण मे पाया जाता है

भारत मे पक्षी जीवन भी रग–बिरगा व समृद्ध है भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर, विशेषकर नर, सर्वाधिक सुदर पक्षियो मे से एक हे इसकी झिलमिलाती नीली गर्दन, पखाकार कलगी तथा लबी शानदार पूछ होती है इसका प्रणय नृत्य दर्शनीय लगता है, जिसमे नर अपनी पूछ के पखो को मादा के सामने पखे जेसा फैलाता है प्राचीन काल से ही इस पक्षी का भारतीय साहित्य, लोक साहित्य तथा दतकथाओ मे महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है मोर मैदानो मे सर्वत्र पाए जाते है, लेकिन उत्तर भारत के शुष्क एव खुले प्राकृतिक स्थानो मे इनकी बहुतायत है कई अन्य पक्षी जैसे चेड (वनमुर्गा), हस, बत्तख, तोता, कबूतर सारस, धनेश तथा शकरखोरा आदि वनो तथा नम क्षेत्रो मे पाए जाते है

विशाल हिमालय पर्वतमाला का प्राणी जगत दिलचस्प है, जिनमे जगली भेड, जगली बकरी, मारखोर और साकिन (पहाडी बकरा) शामिल है पर्वतो के ऊपरी भाग मे छोटा पाडा तथा हिम तेदुआ भी पाया जाता है

री प्राणिया तथा पक्षिया की उत्कृष्ट विविधता के अलावा भारत
ो के वैविध्य की दृष्टि से भी समृद्ध है सरीसृपो मे शेर कछुआ (वर्त
कूर्मकर्प, हरा कछुआ, मीठे पानी के घडियालो की कई प्रजातिया
ार है छिपकलियो की भी कई किस्मे है, जिनमे गोह तथा वरानस व
। रट स्नेक से लेकर विषैले नाग तक सापो की विभिन्न प्रजातिया
क मेढको तथा भेक (टोड) की किस्मे, सरट (सैलामैडर) की एकाध
ने नदिया तथा समुद्र मछलियो की बहुत सी प्रजातियो के घर है

ा पर्यावास वहा स्थायी रूप से मौजूद अकशेरुकी प्राणियो की प्रजा
र्मी जीवो (इकाइनोडर्म्स), कीटा की अपूर्व किस्मो और कोमल देहध
क समृद्ध है

ंकटापन्न और विलुप्त कैसे होते है

पारिस्थितिकी तत्रो के बावजूद प्रारभिक भौगर्भिक युगा मे बडी स
ाले वह प्राणी भी विलुप्त हो चुके ह, जो टिकाऊ जान पडते थे वि
कास के क्रम की एक सहज प्राकृतिक प्रक्रिया है मनुष्य की विनाशक
जीव–जतुओ की प्रजातिया विलुप्त हुई है कई स्तनपायी तथा पक्षी दुल
कई के प्राकृतिक आवास की सीमाए घटते वन क्षेत्रो के कारण आकार
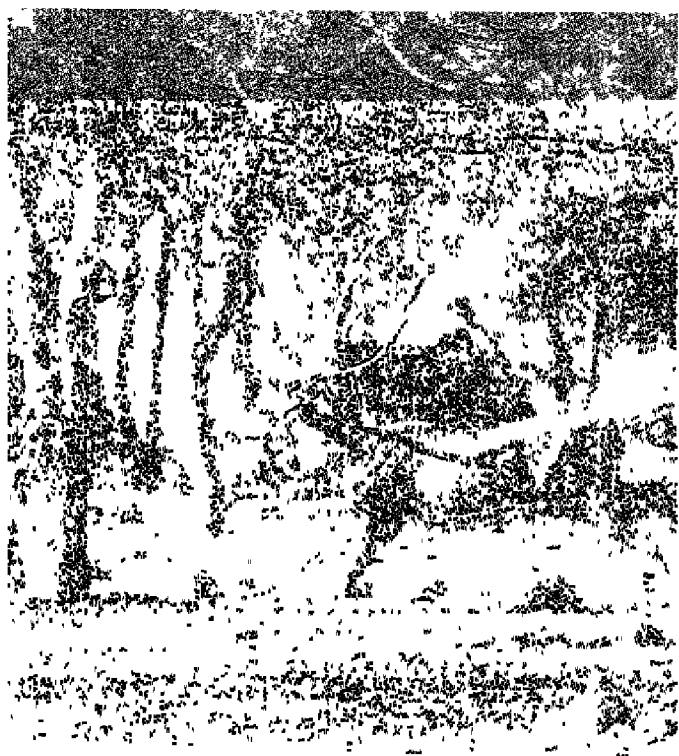
डॉ वेकट राम नरसया

प्राकृतिक विलोपन क्रमिक विकास की प्रक्रिया है, जिससे बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल स्वय को ढालने वाले उन्नत स्वरूप के प्राणियो क लिए रास्ता बनता है भारत मे चीता (*ऐसीनोनिक्स जुबेटस वेनेटिकस*) एक सीगवाला छोटा गैडा (*राइनोसिरॉस सोडाइकस डेस्मारेस्ट*) तथा गुलाबी सिर वाली बत्तख (*रोडोनेसा केरियोफाइलेसिया*) 20वी शताब्दी मे विलुप्त हो गए है डोडो, सदेशवाहक कबूतर तथा भारतीय चीते का विलोपन जैव विकास की प्रक्रिया के दौरान नही हुआ, बल्कि उनका शिकार किए जाने से हुआ है शहरीकरण तथा औद्योगिकीकरण की बढती गति, साथ ही प्राकृतिक ससाधनो के तेजी से हो रहे दोहन का प्रभाव पर्यावरण– भूमि, जल, वायु, वनस्पतियो व प्राणियो पर पडा फलस्वरूप कई प्रजातिया विलुप्ति की ओर चली गई तथा अनेक सकटापन्न की सूची मे हे

सूची से स्पष्ट है कि यदि कटोर कदम नहीं उठाए गए, तो और भी बहुत से प्राणी विलुप्त हो जाएगे शहरी क्षेत्रा का विस्तार, वनो का विनाश, सडका, रेलमार्गो तथा बाधो का निर्माण, कृषि मे कीटनाशको के अधाधुध उपयोग, बढते प्रदूषण एव अवैध शिकार के कारण प्राणियो की आबादी घटी है, साथ ही इससे उनके विस्तार क्षेत्र मे भी परिवर्तन हुआ हे

पर्यावास का विनाश

जगलो की कटाई वन्य जीवन के कम होने के प्रमुख कारणो मे से एक रही है जनसख्या विस्फोट तथा ससाधनो की बढती आवश्यकता के साथ कृषि कार्यो, मवेशियो के चरागाह तथा मानव आवास के लिए वना का सफाया या अतिक्रमण हुआ प्रौद्योगिकीय उन्नति तथा शहरीकरण का प्राकृतिक ससाधनो के दोहन पर सीधा प्रभाव पडा घरो के लिए इमारती लकडी, फर्नीचर तथा ईधन के लिए जगल के पेडो की कटाई की गई उद्योगो मे कागज बनाने, गोद, राल, खनिज अयस्को तथा भवन निर्माण सामग्री के लिए वन ससाधनों पर दबाव बढा

फलस्वरूप पर्यावासों का विनाश हुआ, जिससे जैव विविधता मे असुतलन आया तथा जीव–जंतुओ का अपने प्राकृतिक आवास से वचित होना पडा देश भर मे पर्यावास स्थलो के व्यापक रूप से उजडने के कारण कई प्रजातियो की आबादी घट गई, जिसने इन्हे दुर्लभ तथा सकटापन्न बना दिया प्रगति और समृद्धि की दौड मे सभ्यता ने प्रकृति के इस नाजुक सतुलन को बिगाड दिया हे

आखेट एवं अवैध शिकार

क्रीडा, आहार फर, खाल, सीग तथा हाथीदात के लिए किए गए अनियत्रित शिकार ने वन्य जीवन को गभीर संकट मे डाला है, भारत मे चीते का शिकार उसके विलुप्त होने तक किया गया प्राणियो की खालो का अवैध व्यापार बडी सख्या मे बाघ, तेदुए, हिरन, मछलीमार बिलाव, मगर, सर्प के साथ–साथ पक्षियो के विनाश के लिए जिम्मेदार रहा है हाथियो का शिकार हाथीदात के लिए होता हे गैडो को उनके सीगो के लिए मारा जाता है, क्योकि यह धारणा है कि उनमे कामोत्तेजक गुण होते हैं, देश मे इस अवैध व्यापार को रोकने के लिए कानून बने है, लेकिन प्राय अनैतिक शिकारियो, व्यापारियो तथा निर्यातको द्वारा इनका उल्लघन किया जाता है इसके अतिरिक्त विजातीय स्तनपायी जानवरो, पक्षियो और सरीसृपो के व्यापार तथा जैव चिकित्सकीय अनुसधान मे जगली जीवो के उपयोग का चलन है

प्रदूषण

विभिन्न औद्योगिक गतिविधियों से जनित वायु, जल तथा मृदा प्रदूषण ने न केवल मनुष्य के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाला, बल्कि प्राणियों की आबादी की खुशहाली और स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डाला हानिकारक रसायनों से युक्त औद्योगिक अवशिष्टों का झीलों, नदियों तथा समुद्र में छोड़ा जाना तथा डी.डी.टी (डाइक्लोरो डाइफिनाइल ट्राइक्लोरोइथेन) और डाइएल्ड्रीन जैसे कीटनाशक कई उपयोगी कीटों को नष्ट कर देते है और वन्य जीवन को प्रभावित करते है डी.डी.टी. खासतौर पर पक्षियों के लिए विषाक्त होती है, विशेषकर समुद्री पक्षियों के लिए, क्योंकि इससे उनके अंडों के आवरण पतले हो जाते है और थोड़े से दबाव से उनके चटकने की आशंका बढ़ जाती है

मालवाहक जहाजों से दुर्घटना के कारण हुए तेल के रिसाव से होने वाला प्रदूषण समुद्र को प्रभावित करने वाली दूसरी गंभीर समस्या है तेल सभी समुद्री जीवों के लिए हानिकारक है यह समुद्री पक्षियों के पंखों को अवरुद्ध करता है, पचने मे विषाक्त हो जाता है, जलीय जीव–जंतुओं के श्वासतंत्र तथा प्लवक (वे पौधे व प्राणी, जिनका मछलियां आहार के रूप में उपयोग करती है) को प्रभावित करता है 1991 में खाड़ी युद्ध के फलस्वरूप अत्यधिक तेल का रिसाव प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों का विनाश करने वाली खतरनाक मानव गतिविधियों के स्वरूप का उदाहरण है मानव हस्तक्षेप के कई अन्य कारक वन्यजीवों की संख्या को प्रभावित करते है बाहर की प्रजातियों का आगमन, गलत कृषि पद्धतियां, पालतू जानवरों द्वारा रोगों का प्रवेश, नदियों पर बांध बनाना, वन कटाई के कारण बाढ़ तथा सूखा, इन सभी का जीवों की प्रजातियों को संकटापन्न बनाने की प्रक्रिया मे योगदान रहा है संकटापन्न प्राणी वे होते है, जिनकी संख्या गंभीर रूप से निम्न स्तर तक पहुंच चुकी हो तथा जिनके पर्यावास तेजी से कम हुए हों या नष्ट हुए हो, जिससे उनके विलुप्त होने का खतरा नजदीक हो प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण परिसंघ (आई.यू.सी.एन.) ने संकटापन्न प्राणियों का रिकॉर्ड उपलब्ध कराने वाली *रेड डेटा बुक* तैयार की है भारत में वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम (1972) चार अनुसूचियों में भारत के प्राणियों को उनके संरक्षण की स्थिति के अनुसार श्रेणीबद्ध करता है वर्तमान आकलन के अनुसार, 81 स्तनपायी प्रजातियां, 38 पक्षी प्रजातियां तथा उभयचर व सरीसृपों की 18 प्रजातियां संकटापन्न है संरक्षण के प्रयत्नों ने इनमें से कुछ प्राणियों, जैसे बाघ, गैंडा तथा मगर की स्थिति को पुनर्स्थापित किया है वन्य जीवन मे कमी आने के बावजूद भारत मे आज भी दुनिया का समृद्धतम विविध प्राणी जगत है अब इनके संरक्षण के गंभीर प्रयास किए जा रहे है भारत मे संकटापन्न प्राणियों की प्रमुख प्रजातियों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है

स्तनपायी

वानर

नील वानर– शेर पूंछ बंदर (*मैकाका साइलेनस*)

यह पश्चिमी घाट की नीलगिरि, अन्नामलाई, कार्डमम पहाड़ियों, सायलेंट वेली और पेरियार वन्यजीव अभयारण्य मे पाया जाता हे

सुनहरा लंगूर (*प्रेस्बाइटिस गी खजूरिया*)

असम–भूटान की सीमावर्ती हिमालय की तराई में भारत व भूटान से जाने वाली सानकोश व मानस नदियों के बीच पाया जाता है

न्नी)

नीलगिरि, कर्नाकट के कुर्ग, तमिलनाडु की पालनी और करल की क
ा है

लोरिस टार्डीग्रेडस)

टक और आध्र प्रदेश के जगलो मे रहता है

रिस (*निक्टिसीबस कोकेंग*)

ऊष्णकटिबधीय जगलो मे पाया जाता है

(*हायलोबेट्स हूलॉक*)

जगलो मे पाया जाने वाला भारत का एकमात्र वनमानुष है और बांग्ल
था चीन के कुछ हिस्सो मे पाया जाता है

र 1973 मे एक विशेष कार्यक्रम, प्रोजक्ट टाइगर शुरू हुआ तथा कई र
र संरक्षण क्षेत्र बनाए गए भारत मे आज 25 ऐसे बाघ सरक्षण क्षेत्र है
रिस्थितिकी का सरक्षण हो रहा है प्रोजेक्ट टाइगर के फलस्वरूप बाघ
700 थी, 1999 मे बढकर 3,000 से अधिक हो गई
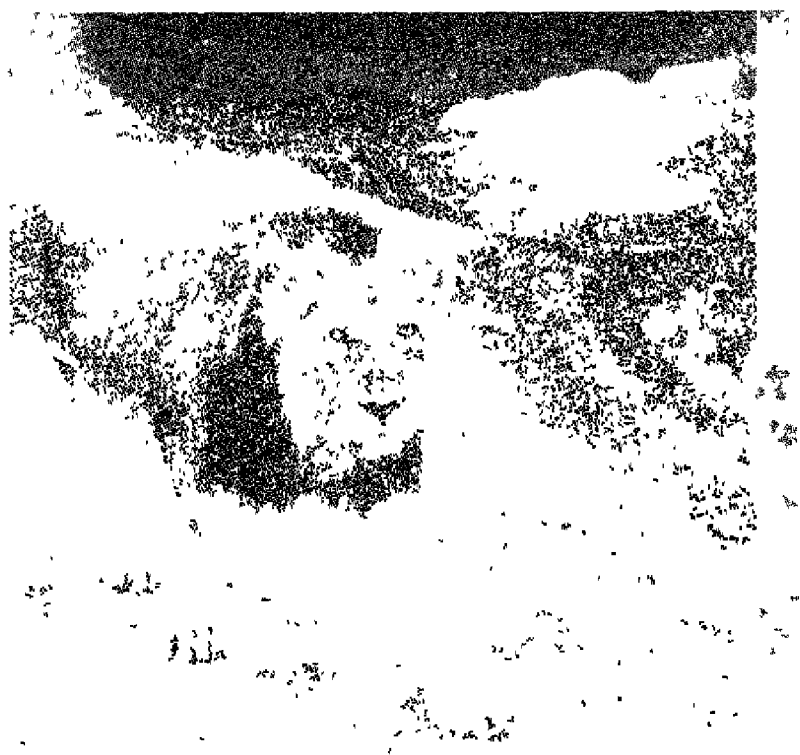
एशियाई सिह (*पेंथरा लिओ पर्सिका*)
अब केवल गुजरात के गिर वन मे पाया जाता है

मेघवर्णी तेदुआ (*नियोफ़ीलिस नेब्यूलोसा*)
सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, असम के पूर्वी इलाको और नागालैंड के सदाबहार जगलो मे पाया जाता है

हिम तेदुआ (*पेंथरा अनसिया*)
3 000 से 4,000 मीटर ऊँचाई वाली हिमालय की पर्वतमालाओ पर पाया जाता है

तेदुआ विडाल (*फीलिस बेगालेसिस*)
भारत के सभी जगलो मे इसे सीमित सख्या मे देखा जा सकता है

सुनहरा विडाल (*फीलिस टेमिंकी*)
सिक्किम स असम तक के पूर्वी इलाको मे पाई जाने वाली सर्वाधिक सकटापन्न प्रजाति है

पहाडी बिल्ली (*फीलिस मेनुल*)
लद्दाख और जम्मू–कश्मीर मे पाई जाती है

भारतीय रेगिस्तानी बिल्ली (*फीलिस सिल्वेस्ट्रिस ऑर्नेटा*)
समूचे राजस्थान, कच्छ और मध्य भारत के झाडीदार जगलो मे पाई जाती है

मछलीमार बिलाव (*फीलिस विवेरिना*)
यह असम के जगलो से लगी जलधाराओ, नदियो तथा दलदली मैंग्राव, पश्चिम बगाल के सुदरबन, उडीसा की चिल्का झील, केरल के पश्च जल के आसपास रहता है

सिकमार, मार्बल कैट (*फीलिस मार्मोरेटा शार्लटोनी*)
सिक्किम, दार्जिलिग (पश्चिम बगाल) और नागालैंड मे पाई जाती है

स्याहगोश (*फीलिस केरेकल' श्मिट्जी*)
पश्चिमोत्तर और मध्य भारत के शुष्क और अर्द्ध शुष्क प्रदेशा मे पाई जाती है

वनविडाल अथवा ऊनी बिलाव, (*फीलिस लिक्स इसाबेलिना*)
जम्मू–कश्मीर क्षेत्र मे पाया जाता है

श्वान कुल

भारतीय भेडिया (*कैनिस लूपस लीनियस*)
एक समय सपूर्ण भारत मे पाए जाने वाले भेडिए की संख्या हाल के वर्षो मे तेजी से घटी है अब ये महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान तथा बिहार मे छोटे झुडो मे पाए जाते हैं

भारतीय लोमडी (*वल्पीस बेंगालेंसिस*)
सुदूर पश्चिमोत्तर सीमात क्षेत्र को छोड पूरे भारत मे पाई जाती है

सोनहा, भारतीय जंगली कुत्ता (*क्यूआन ऐल्पाइनस*)
देश के जगली इलाको मे मिलता है

भालू समूह

हिमालय का भूरा भालू (*अर्सस आर्कटॉस इसाबेलिनस*)
पश्चिमोत्तर और मध्य हिमालय क्षेत्र के ऊचाई वाले स्थानो मे पाया जाता है

रीछ (*मेलर्सस अर्सिनस*)
सपूर्ण भारत मे जलस्रोतो के नजदीकी वनो मे तथा चट्टानी भूभाग मे मिलता है

मार्जार कस्तूरी (गधबिलाव) (सिवेट)

मालाबार सिवेट (*विवेरा मेगास्पिला*)
केरल के तटवर्ती जिलो, विशेषकर मालाबार क्षेत्र मे मिलता है

चित्तीदार लिन्सैंग (*प्रायनोडॉन पार्डीकलर*)
मध्य और पूर्वी हिमालय के जगलो तथा पहाडी क्षेत्रो मे पाया जाता है

भालू बिलाव (*आर्किटिक्टिस बिट्यूरोग*)
असम और सिक्किम के जगलो मे पाया जाता है

लाल (छोटा) पाडा (*एलुरस फल्जेंस एफ.*)
हिमालय क्षेत्र के नेपाल, सिक्किम, ऊपरी म्यामार और दक्षिणी चीन मे मिलता है

भारतीय पैंगोलिन, साह (*मेनीस क्रेसीकॉडेटा*)
हिमालय के मैदानो तथा निचली ढलानो मे मिलता है

चीनी पैंगोलिन (*मेनीस पेंटाडेक्टाइला*)
असम और पूर्वी हिमालय मे पाया जाता है पर्यावास के उजडने और तथाकथित औषधीय उद्देश्यो के लिए मारे जाने से पेगोलिन की आबादी मे उल्लेखनीय कमी आई हे

शाकाहारी जंतु

एशियाई हाथी (*एलीफैंस मैक्सीमस*)
हाथी दात के लिए होने वाले अवैध शिकार ने हाथियो की सख्या घटाई है आज यह केरल, कर्नाटक उडीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बगाल तथा असम के अभयारण्यो एव राष्ट्रीय उद्यानो मे सरक्षित हैं

विशाल एक सीग वाला गैंडा (*रायनोसेरॉस यूनिकॉर्निस*)
विश्व मे आज पाई जाने वाली गैंडा की पाच प्रजातियो मे एक, भारत व नेपाल मे पाया जाने वाला एक सीग वाला गैंडा सर्वाधिक सकटापन्न है एक समय सिधु घाटी से उत्तरी म्यामार (भूतपूर्व बर्मा) तक पाया जाने वाला भारतीय गैंडा आज असम की ब्रह्मपुत्र घाटी, पश्चिम बगाल के दो सरक्षित क्षेत्रो

ाला गेडा
ॅ वकट राम नरसैया
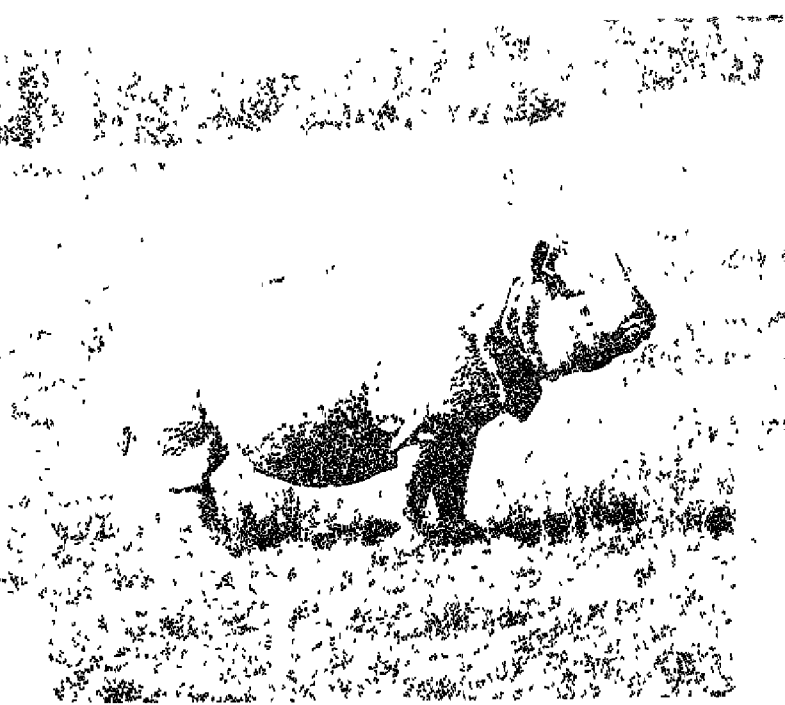
ा तराई इलाके की चितवन घाटी तक सीमित हो गया है आज जीवित
ा राष्ट्रीय उद्यान, असम और लगभग 400 नेपाल मे मौजूद है

जगली गधा (*एसीनस हेमिओनस खर*)

रण के शुष्क लवणीय प्रदेश मे यह पशु झाडी, घास, मरुस्थलीय पो
ीय हस्तक्षेप, भेड एव मवेशियो के चरागाहों मे वृद्धि और पालतू पशु
। कभी पश्चिमोत्तर भारत के ज्यादातर हिस्सो मे पाए जाने वाले इस
ुछ सौ रह गई है

ााक (*बॉस म्यूटस*)

ओर उत्तरी कुमाऊ की पहाडियो मे पाया जाता है सदियो से छोटे याक
पालतू बनाया जाता रहा है

भैस, अरना भैंसा (*बुबैल्स बुबैलिस*)

ाति असम के ब्रह्मपुत्र क्षेत्र और अरुणाचल प्रदेश मे दलदली घास क
कुछ हिस्सो, पश्चिमी उडीसा और पूर्वी महाराष्ट्र मे पाई जाती हे

ंस गौरस)

बारह के समूहो मे अरुणाचल प्रदेश, नागालैड, असम, मिजोरम, पश्चिम
ेश तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल के सघन उष्णकटिबधीय जगलो मे

ऱ्दम हिरन, बारहसिघा (*सर्वस डूवासेली*)

उत्तरी व पूर्वी भारत, उत्तर प्रदेश, असम, मध्य प्रदेश के दलदली या शुष्क घास के मैदानो मे पाया जाता है

चौसिघा (*टेट्रासिरस क्वॉड्रिकोर्निस*)

प्रायद्वीपीय भारत मे ऊचे–नीचे पहाडी भूभागो मे पाया जाता है यह घने जगलो मे नहीं होता

थ्राभिन अथवा शगाई हिरन (*सर्वस एल्डी*)

खुले झाडीदार जगलो को पसद करने वाला यह प्राणी अब मणिपुर की लोकटक झील के किनारे स्थित कैबुल लमजाओ राष्ट्रीय उद्यान तक ही सीमित रह गया है

हगुल या कश्मीरी हिरन (*सर्वस इलेफस हग्लू*)

उत्तरी क्षेत्र की कश्मीर घाटी के घने तटवर्ती जगलो मे य दो से अठारह के समूह मे मिलते है कश्मीर मे ये दाचिगाम के ऊचाई वाले क्षेत्रो (3,048 मीटर) तक ही सीमित है दुर्भाग्यवश इनकी सख्या तेजी से कम हो रही है, जो 20वी सदी की शुरुआत मे 5,000 के आसपास थी, 1970 मे लगभग 150 रह गई

कृष्ण मृग अथवा भारतीय मृग (*एंटीलोप सर्विकाप्रा*)

इसका पर्यावास राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रदेश के मैदानो और खुले झाडीदार जगलो मे हे आखेट, मास व खाल के लिए बढते शिकार और इसके पर्यावास के नष्ट होने के कारण इनकी आबादी पर विपरीत प्रभाव पडा इनमे से अधिकाश अब केवल वन्य जीव अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यानो के सुरक्षित इलाको मे मौजूद है राजस्थान की बिश्नोई जाति ने अपनी धार्मिक आस्था के चलते सदियो से इनका सरक्षण किया है बिश्नोई इन्हे कृष्ण मृग, यानी भगवान कृष्ण का पशु कहते है इसीलिए वे इनकी पूजा व सरक्षण करते है राजस्थान के खेजडली क्षेत्र मे इस प्राणी को मानव बस्तियो के बीच स्वच्छद विचरण करते देखा जा सकता है

कस्तूरी मृग (*मॉस्कस मॉशिफेरस*)

यह वर्तमान मृगो की सबसे आदिम प्रजाति है, जो उत्तरी भारत के उच्च क्षेत्रो मे कश्मीर से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक पाई जाती है इत्र बनाने के उपयोग मे आने वाली कस्तूरी को पाने के लिए इसकी निर्मम हत्या करने के कारण इसकी सख्या मे तेजी से कमी आई है और यह अत्यधिक सकटापन्न प्रजाति बन गई है

पिसूरी (*ट्रेग्यूलस मेमिन्ना*)

एक डरपोक जानवर, जो दक्षिण भारत, मध्य प्रदेश, उडीसा तथा बिहार के जगलो में 1,800 मीटर की ऊचाई पर पाया जाता है

चिंकारा (*गेजेला डोर्कस*)

10 से 20 के समूह मे विरल और झाडीदार जगलो तथा पश्चिमोत्तर व मध्य भारत के अर्द्ध शुष्क इलाको मे मिलता है

गुजरात पर्यटन विभाग

चिंकारा (*प्रोकेप्रा पिक्टीकॉडेटा*)

के पठार, पूर्वोत्तर लद्दाख, कुमाऊ और सिक्किम के पहाडी इलाको त

यी तहर (*हेमिट्रैगस जेम्लेहीकस*)

से भूटान तक के हिमालय क्षेत्र मे 2,000 से 4,000 मीटर की ऊंचाई क्षेत्रों मे पाया जाता है

रि तहर (*हेमिट्रैगस हाइलोक्रिनस*)

गडु की नीलगिरि पहाडी, केरल की अन्नामलाई पर्वतमाला और पश्चि मीटर ऊचाई पर स्थित इलाको मे मिलता हे

I, बडे सीगों वाली जगली भेड़ (*कैप्रा आइबेक्स*)

स 7,000 मीटर की ऊंचाई पर पाई जाने वाली इस भेड से पश्मीना शॉ इत्यादि के लिए उत्तम गुणवत्ता की ऊन प्राप्त की जाती है

र या जंगली बकरी (*कैप्रा फल्कोनेराइ*)

50 के झुड मे कश्मीर सहित पश्चिमी हिमालय क्षेत्र मे 600 से 3,00 ाती है

रोएदार खरगोश (*केप्रोलेगस हिस्पिडस*)

एक समय उत्तर प्रदेश के तराई के घास के जगलो, असम, पश्चिम बगाल, त्रिपुरा मे पाया जाने वाला यह पशु आज केवल पश्चिम बगाल और असम तक सीमित रह गया है

पक्षी

भारत मे पाए जाने वाले प्राणी जगत मे समृद्धि एव विविधता है और पक्षियो की भी अच्छी–खासी सख्या है 27 प्राकृतिक गणो मे विभक्त विश्व के जीवित पक्षियो मे से 21 का प्रतिनिधित्व भारतीय पक्षी करते है भारत मे 1,200 पक्षी प्रजातिया पाई जाती है, जो विश्व की कुल 8,600 प्रजातियो का 14 प्रतिशत है यदि जलीय और स्थलीय पक्षियो की उपजातियो व भौगोलिक प्रजातियो को साथ रखा जाए तो भारतीय पक्षी पजातिया 2,060 तक पहुच जाएगी इनमे 1,750 प्रजातिया स्थानीय और शष प्रवासी है यद्यपि मानवीय गतिविधियो के फलस्वरूप पर्यावास के विनाश, वनो की कटाई और प्रदूषण ने कई पक्षी प्रजातियो को दुर्लभ एव सकटापन्न स्थिति मे ला दिया है, जिनमे से कुछ का उल्लेख निम्नलिखित सूची मे है

द्विपट्ट या जर्डनी क्षिप्रचला, जेर्डन्स कोर्सर (*कर्सोरियस बायटॉरक्वेट्स*)

बबई नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी द्वारा जनवरी 1986 मे आध्र प्रदेश की गोदावरी नदी घाटी मे पुन खोजी गई

सोन चिरैया (*आर्डियोटिस नाइग्रीसेप्स*)

बगाल, असम तथा मैसूर के दक्षिणी भाग को छोडकर एक समय सपूर्ण देश मे पाई जाने वाली सोन चिरैया अब केवल राजस्थान के शुष्क तथा अर्द्ध शुष्क प्रदेशो, गुजरात तथा महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले तक सीमित रह गई है

बडा नीलगिरि धनेश (*ब्यूसेरॉस बाइकॉर्निस होमराई*)

पश्चिमी घाट के केरल तक के विस्तार तथा अरुणाचल प्रदेश और अन्य पूर्वोत्तर क्षेत्रो मे हिमालय की निचली पहाडियो म पाया जाता है

खरमोर (*सिफियोटाइडस इंडिका*)

यह प्रजाति सपूर्ण भारत मे सभी लबी घास वाले इलाका तथा झाडीदार क्षेत्रो मे पाई जाती है मास के लिए किए गए शिकार तथा पर्यावास के उजडने से यह दुर्लभ हो गई हे

कलगीदार चकोर (*ट्रेगोपेन मेलेनोसिफेलस*)

कभी हिमालय क्षेत्र मे पाया जाता था, पर्यावास के उजडने से इसकी सख्या गभीर रूप से घट गई अब यह कश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सो मे पाया जाता है

हिमालयी मुनाल फेजेंट या चेड़ (*लोफ़ोफोरस इंपेजेनस*)

इसकी आबादी तेजी से कम हुई और अब यह हिमाचल प्रदेश के कुछ क्षेत्रो मे सिमट गया है

चिअर फेज़ेट (*केटरियस वालिची*)

एक समय यह प्रजाति कश्मीर, पजाब, हिमाचल प्रदेश तथा गढवाल व कुमाऊ मे पाया जाता था, लेकिन हाल के वर्षो मे इसकी आबादी गभीर रूप से कम हुई है

साइबेरियाई सारस (*ग्रस ल्यूकोजेरेनस*)

उत्तरी साइबेरिया से शीतकालीन पर्यटक बनकर भारत आता है उत्तरी बिहार, उत्तर प्रदेश मे प्रयागपुर झील तथा भरतपुर के केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान मे नवबर के अत या दिसबर के शुरु मे पहुचता है और मार्च अत या अप्रैल की शुरुआत मे चला जाता है लगभग 100 साइबेरियाई क्रेन शीतकाल मे 1950 तथा 1970 के दशक मे भरतपुर आते थे हाल के वर्षो मे यह सख्या घटती जा रही हे 1989 मे मात्र 21 मेहमान पक्षी भरतपुर आए थे 1990 मे यह सख्या गिरकर 14 तथा 1991 म केवल 7 रह गई 1992 तथा 2000 मे भरतपुर आने वाले इन साइबेरियाई सारसो की सख्या और भी कम होकर प्रतिवर्ष 2 से 4 के बीच रह गई ऐसा लगता है कि यह गिरावट इस प्रदेश मे अनियमित मॉनसून तथा सूखे के कारण आई है

काली गर्दन वाले सारस (*ग्रस नाइग्रिकोलिस*)

अप्रैल–मई से अक्तूबर तक प्रजनन काल मे केवल लद्दाख मे तथा सितबर से मार्च तक अरुणाचल प्रदेश और भूटान मे पाए जाते है

अन्य पक्षी

भारत मे पाई जाने वाली पक्षियो की 2,060 प्रजातियो तथा उपप्रजातियों मे उपरोक्त के अलावा कई अन्य भी सकटापन्न है इनमे श्वेतपखी वन मुर्गाबी (*कैरिना स्कुट्युलेटा*), बडा चैती (*डेड्रोसिग्ना बायकॉलर*), अदमानी चैती (*अनास गिबरिफार्न साल्बोग्युरेलिस*), महाश्येन, हिमालयी गरुड (*एक्विला क्रायसीटोस डेफेनिया*), निकोबारी मेगापोड (*मेगापोडियस फ्रेसिनेट*) तथा मालाबारी काली–सफेद चोचवाला धनेश *(एथ्रेकेसिरस कोरोनेटस)* शामिल है

सरीसृप

कछुए

शेर कछुआ, चीमड कछुआ (*डर्मोचेलस कोरिएसिया*)

400 से 700 किलोग्राम वजनी विश्व का विशालतम जीवित कछुआ हिद महासागर मे पाया जाता है मई–जून इसका प्रजनन चरम है, जब मादा 90 से 200 अडे देती है मन्नार की खाडी के द्वीपो और अडमान द्वीप समूह मे इनके अडे देन के स्थल पाए जाते हैं मनुष्यो द्वारा अडे बटोरने तथा जल प्रदूषण के कारण ये कछुए दुर्लभ होते जा रहे है

हरा समुद्री कछुआ (*कीलोनिया मिडास*)

अडमान और सौराष्ट्र के समुद्री तट तथा समतल चट्टानो पर धूप मे पडे रहने वाले इन कछुओ के मास व अडे का भोजन के लिए उपयोग होने से इन पर विलुप्ति का खतरा मडरा रहा है

कूर्मकर्प कछुआ (*इरेटमोचिलीस इब्रीकेटा*)

विश्व के कई भागो मे गर्म समुद्र मे पाया जाने वाला कूर्मकर्प कछुआ हिद महासागर मे, विशेषकर अडमान–निकोबार द्वीप समूह के आसपास पाया जाता है सुदर कवच से साज–सज्जा के सामान बनाने हेतु इनके व्यापारिक दोहन से यह सर्वाधिक सकटापन्न स्थिति मे है

मगर

घडियाल (*गैविएलिस गैंजेटिकस*)

गगा, सिधु, महानदी और ब्रह्मपुत्र नदियो मे पाया जाता है घडियाल की आबादी 1980 के बाद तेजी से घटी है चमडे के लिए इनका शिकार होता रहा है, लेकिन प्रजनन परियोजनाओ और सरक्षण के उपायो के कारण इनकी स्थिति मे अपेक्षाकृत सुधार आया है

नदी मुहानो के मगर (*क्रौकोडाइलस पोरोसस*)

यह विशालतम घडियाल तटीय मैग्रोव के दलदली इलाको और मुहानो मे पाया जाता है यह भारत के पूर्वी तट तथा अडमान–निकोबार द्वीप समूह मे पाया जाता है

मगर या दलदली मगर (*क्रौकोडाइलस पैलुस्ट्रिस*)

जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पजाब और मरुस्थलीय इलाको को छोड सपूर्ण भारत मे पाया जाता है बाढ और सूखे के कारण प्राकृतिक पर्यावास खत्म होने, खाल के लिए शिकार और अडो की खपत के कारण इनकी आबादी घटी है सरक्षण के प्रयासो तथा मगर प्रजनन योजनाओ के कारण स्थिति मे सुधार हुआ है

छिपकलिया

भारतीय गोह (*वैरेनस बेंगालेंसिस*)

भारत के सभी प्रकार के पर्यावासो मे पाई जाती है इस छिपकली की त्वचा का व्यावसायिक दोहन होता है, जिसके फलस्वरूप इस प्रजाति मे गभीर रूप से कमी आई है

चदन गोह (*वैरेनस सैल्वेटर*)

सपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप मे पाई जाने वाली दुनिया की सभी छिपकलियो मे दूसरी सबसे बडी छिपकली (इंडोनेशिया की कोमोडो ड्रैगन विशालतम है) त्वचा के व्यापार के कारण इसकी सख्या गभीर रूप से कम हुई है

पीली गोह (*वैरेनस फ्लैवेसेंस*)

भूरी त्वचा पर लाल आभा वाला यह प्राणी उत्तर भारत मे पजाब से पश्चिम बगाल तक पाया जाता है सुदर्शन त्वचा ने इसके अस्तित्व के लिए खतरा खडा कर दिया है इसकी सुदर त्वचा की व्यापारिक प्रसिद्धि ही इसकी आबादी के कम होने का कारण है

मरुस्थलीय गोह (*वैरेनस ग्रेसियस*)

मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र तथा पंजाब के शुष्क क्षेत्रो मे पाई जाती है यह प्राणी रेतीला भूरा–पीला या हरा–पीला, गहरा चितकबरा भूरा होता है इस प्राणी को खाल के लिए अधाधुध मारा गया, फलस्वरूप आज इसकी आबादी बहुत कम रह गई है

सर्प

भारतीय अजगर (*पायथन मोलुरस*)
यह एक सामान्य सर्प है, जो सपूर्ण भारत मे झाडीदार जगलो, मैग्रोव के तथा घने जगलो मे पाया जाता है इसकी खाल का अवैध व्यापार होने के कारण इसकी आबादी गभीर रूप से कम हुई है

जालीदार अजगर (*पायथन रेटिकुलेटस*)
जालीदार अजगर मुख्यत पूर्वोत्तर भारत और निकोबार द्वीप समूह मे पाया जाता है खाल के व्यापार के कारण जालीदार अजगर प्रजाति सकटापन्न हो गई है

धामन या अंडभक्षी सर्प (*इलेकिस्टोडॉन वेस्टरमनी*)
बगाल और बिहार मे पाई जाने वाली यह एक दुर्लभ प्रजाति है पक्षियो और सरीसृपो के अडे मुख्य भोजन होने से इसका यह नाम पडा

उभयचर

हिमालयी न्यूट (*ट्रयूलोटोट्रिटॉन वेरुकोकस*)
गहरे भूरे रग का सैलामेडर, जो दार्जिलिग, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर मे पाया जाता है भारत मे पाया जाने वाला यह एकमात्र सैलामेडर है

मालाबार ट्री टोड (*निक्टोफ्राइन ट्यूबरकुलोसा*)
केरल के मालाबार क्षेत्र मे पाए जाने वाले इस छोटे टोड का शरीर काला, कदाकार होता है ओर उगलिया झिल्लीदार होती है

गारो पहाडी का ट्री टोड (*निक्टोफ़्राइन केपी*)
मेघालय की गारो पहाडियो पर पाया जाता है

अकशेरुकी जीव

जीव जगत का अधिकाश हिस्सा अकशेरुकी, यानी बिना रीढ वाले जतु, जैसे कृमि, मूगा, समुद्री पवन पुष्प, कीट, मोलॅस्क तथा स्टारफिश आदि बनाते है इनके बगैर उच्च श्रेणी के जीवो का काम नही चलता, क्योकि ये खाद्य श्रृखला का एक भाग है और वे इन पर आश्रित है सरक्षणवादियो ने इनकी अपक्षा सरीसृप, पक्षियो ओर स्तनपायी जीवो के सरक्षण पर ही अधिक ध्यान दिया और इस कारण पर्यावास मे हुए परिवर्तन एव पर्यावरण के क्षय से इन पर पडने वाले प्रभाव पर ध्यान नही दिया गया फलस्वरूप, कुछ अकशेरुकी प्रजातियो की खोज से पहले ही उनके विलुप्त होने का खतरा है

अकशेरुकियो के विलुप्त होने या सकटापन्न होने के अनेक कारण है– वन कटाई से पर्यावास का विनाश, एकल प्रजाति वानिकी तथा कीटनाशको का अधाधुध उपयोग महाविद्यालय के विद्यार्थियो तथा प्राणीशास्त्रियो द्वारा अनियत्रित एवं बार–बार प्रजातियो के नमूनो का सग्रहण इन सबसे तटीय एव तटवर्ती समुद्री जीवो की सख्या कम व नष्ट हो गई उदाहरणार्थ, तमिलनाडु के क्रुसाडी द्वीप एव गुजरात मे ओखा मे शखो, सीपियो तथा मूगे की सजावटी वस्तुएं बनाने से उनका व्यापारिक दोहन बढा, सीमेट उत्पादन मे मूगे के उपयोग के कारण भी इन प्रजातियो के अस्तित्व को गभीर खतरा हो गया

दुर्लभ तथा सकटापन्न अकशेरुकी प्रजातियो मे कई प्रजातिया कवचदार प्राणियो तथा कीटो की है स्थलीय केकडो मे सर्वाधिक प्रसिद्ध नाम रॉबर क्रैब या कोकोनट क्रैब (बर्गस लेट्रो) है, जो हिद एव प्रशात महासागरो के द्वीपो पर पाया जाता है यह दक्षिण सटीनेल द्वीप तथा निकोबार द्वीप पर मिलता हे यह प्राणी लगभग 33 सेमी या उससे अधिक लबा होता है तथा नारियल के पेडो के निचले खोखल मे नारियल के रेशेदार छिलको की तहो वाल बिलो मे रहता है मास के लिए जरूरत से ज्यादा दोहन होने से यह केकडा भी सकटापन्न हो गया हे

कीट

प्राणी जगत के इस सबस बडे समूह म कीटो की 10 लाख स भी अधिक प्रजातिया ज्ञात है तथा कई की खोज अभी बाकी है भारत मे कीटो का वैविध्य विपुल है, जिसका प्रतिनिधित्व कीटो की 50,000 से भी अधिक प्रजातियो द्वारा किया जाता है इस तथ्य के बावजूद कि कीटो मे प्रतिकूल पर्यावरण क प्रति अनुकूलन की क्षमता होती है, पर्यावास का विनाश तथा प्रदूषण, विशेषकर कीटनाशको का अधाधुध उपयोग इन्हे सकट मे डाल सकता है इस पहलू पर अपर्याप्त जानकारी मिलती है, फिर भी कई प्रजातियो को अब असुरक्षित मान लिया गया है तथा वन्य जीव (सरक्षण) अधिनियम के तहत सरक्षित सूची मे इन्हे शामिल कर लिया गया है इनमे से कुछ का उल्लेख यहा किया गया है–

शल्किपक्ष वर्ग (लेपिडोप्टेरा)

इसमे तितलिया तथा पतगे (मॉथ) आते है, जिनमे से कुछ रग–बिरगे ओर आकर्षक होते है भारत मे शल्किपक्ष कीटो की कई प्रजातिया दुर्लभ हो चुकी है तथा पर्यावास के उजडने तथा कीटनाशको क उपयोग के कारण सकट मे आ गई है शल्किपक्ष वर्ग की सरक्षित प्रजातियो मे धारीदार पतगा या बैडेड डफर (*डिस्कोफोरा डियो डियो*), नीला भौरा (*बिदुएडा मेलिसा साएना*), मोरपखी–तितली (*थेल्कापेवो*), राजसी तितलियो की कई किस्मे (*ऐपेट्यूरा उलूपी उलूपी, दिलिपा मोर्जियाना, यूलेसियूरा मणिप्यूरेन्सिस*), मालाबार की धारीदार अवावील पूछी तितली (*पेपिलियो लायोमैंडान*), कॉमन क्लबटेल (*पोलिडोरस कुसमबिलिएगा*), जगली शलभ (*पिएरिस क्रूपेरी डेवता*), परपल बुशब्राउन (*मायसेलेसिस ओरसिएस नॉटिलस*) तथा अन्य कई शामिल है

ओडोनेटा

इनमे व्याधपतग या ड्रैगनफ्लाई तथा डैमसेलफ्लाई शामिल है भारतीय ओडोनेटा मे आने वाली सकटापन्न प्रजातियो मे हिमालय की ड्रैगनफ्लाई अथवा टीलीयाड्र्स ड्रैगनफ्लाई (*इपियोफ्लेबिया लेडलॉवी*) केवल दार्जिलिग के आसपास छोटे–छोटे भूभागो मे पाई जाती है

कचुकपक्ष वर्ग (कोलिओप्टेरा)

इनमे भृग बीटल आते है भारत मे पाए जाने वाले दुर्लभ भृगो मे *केरेबिडी* कुल के भृग आते है, जैसे *ऐगोनोट्रेकस एन्ड्रीवेसी, अमारा इलिगेन्फ्यूला, अमारा ब्रूसी, ब्रोस्कोसोमा ग्रेसाइल, चेनियस कानेरी* तथा *कलेथस अमेरॉइड्स*

कई निम्न श्रेणी के जीवो के सरक्षण की स्थिति के बारे मे पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नही है, अत सकटापन्न अकशेरुकी प्रजातियो का विस्तृत ब्योरा प्राप्त कर पाना मुश्किल है

* * *

डॉ एस.एम नायर निदेशक, पर्यावरण शिक्षा, विश्व वन्य जीवन निधि (डब्ल्यू डब्ल्यू एफ), नई दिल्ली, भारत, के सस्थापक निदेशक, प्राकृतिक इतिहास के राष्ट्रीय सग्रहालय तथा विभिन्न पर्यावरण सबधी प्रदर्शनियो के मुख्य समन्वयक पर्यावरण शिक्षा केद्र तथा अतर्राष्ट्रीय सग्रहालय परिषद सहित विभिन्न सस्थाओ के सक्रिय सदस्य इनके पर्यावरण शिक्षा, प्राकृतिक इतिहास, सग्रहालयशास्त्र तथा सास्कृतिक सपदा के सरक्षण, जिसमे *एन्डेजर्ड एनिमल ऑफ इडिया ऐड देयर कजर्वेशन* (1992) तथा *एन्वायर्नमेट द चॉयस बिफोर अस* (1979) सहित 150 शोध पत्र तथा आलेख प्रकाशित हो चुके है इन्हे स्मिथसोनियन इस्टिट्यूशन फेलो (1981), होमी भाभा फेलो (1972–73) तथा जे डी रॉकफेलर फेलो (1968–69) के रूप मे सम्मानित किया जा चुका है

संगीत : एक विकासवादी विहंगावलोकन

शुभा मुद्गल

अनादि काल से मनुष्य अपनी भावनाओ की अभिव्यक्ति व विचारो तथा सूचनाओ के आदान–प्रदान के लिए हाव–भाव और भाषा का इस्तेमाल आदिम व अत्यत जटिल, दोनो सचार पद्धतियो मे करता आया ह सगीत रचना की प्रक्रिया भी अभिव्यक्ति एव संप्रेषण की ही एक प्रणाली रही है, जो समय के साथ विकसित होती गई और इस तरह कई शैलियो तथा स्वरूपो मे वैसी ही समृद्ध व विविध बनी, जैसी स्वय मानव जाति है कहा जा सकता है कि अपने आदिम, प्राकृतिक रूप में सगीत पक्षियो की चहचहाहट, बादलो की गरज, लहरो की कलकल और प्रकृति के दूसरे ध्वन्यात्मक स्वरूपो मे था एसे प्राथमिक तत्त्वो मे इसकी जडो के होने के कारण ही सगीत की श्रवण–प्रक्रिया के रूप मे सार्वभौमिक मान्यता है लय, जिसे एकल सगीतमय स्वरो की स्पष्ट शृखला के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है और ताल या नियमित बानगी से पैदा होने वाली ध्वनि को सगीत के प्रमुख तत्त्व के रूप मे स्वीकार किया गया है लय तत्त्व, जो प्राय लोकसगीत मे दो या तीन स्वरो की सहज रचनाओ मे पाए जाते हे को भारतीय शास्त्रीय सगीत के 'राग' जैसे अत्यत जटिल एव शैलीबद्ध रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है इसी प्रकार, 'ताल' मानव हृदय की धडकन मे भी है और अतिविकसित सगीत शैलियो की जटिल गणितीय व्यवस्थाओ मे भी रहती है

स्वर और कविता के सगम से सगीत 'गीत' का रूप ले लेता है ऐसा ही एक और सगम नृत्य मे होता है जिसमे ताल और शारीरिक भगिमाओं का गीत और लय से मेल करके कथा प्रस्तुत की जाती है ये कहानिया मनुष्य की अनेक भावनाओ को प्रतिबिबित करती है और इनमें मनुष्य को उद्वेलित करने की क्षमता होती है हमारी दंतकथाओ मे इस क्षमता का गुणगान है, जो महान सगीतकारो की सम्मोहिनी शक्तियो की महिमा बखानकर किया गया है, जैसे बैजू बावरा माना जाता हैं कि वह अपने गायन से पत्थर को पिघलाने की क्षमता रखते थे कुछ ऐसे भी थे, जो अपने सगीत की प्रबलता से वातावरण मे आग लगा सकते थे और फिर सगीत द्वारा वर्षा उत्पन्न कर इस आग को बुझा भी सकते थे इधर फिल्म और रगमच ने भी सगीत का पूरा लाभ उठाया है जरा किसी ऐसी रहस्यमयी रोमाचक फिल्म की कल्पना कीजिए, जिसमे रोगटे खडे कर देने वाला पार्श्व सगीत नदारद हो। सगीत के रोग निवारक प्रभाव को भी मान्यता मिली है आज सगीत प्राथमिक व उच्चतर विद्यालयो मे पाठ्यक्रम का हिस्सा है कुछ विद्यालय ऐसे है, जो विशेष रूप से सगीतकार बनने के इच्छुको को सगीत की शिक्षा देते है दूसरी ओर, रेकॉर्डिग कपनियो ने भी सगीत को उसकी सपूर्ण विविधता के साथ अतर्राष्ट्रीय मच प्रदान किया है और अब तो इटरनेट साइटो ने भी सगीत के वृहद व्यावसायिक मूल्य समेत इसकी असीमित ताकत तथा आकर्षण को पहचान लिया है

भारत मे परपरागत सगीत

इस धरती एव इसके लोगो की विविधता की तरह समृद्ध और विविध सगीत भारत मे जीवन–मृत्यु क चक्र मे गहराई से गुथा है विभिन्न 'सस्कार गीत' हमारे धार्मिक अनुष्ठाना से जुडे है, जो जीवन चक्र की घटनाओ, जैसे जन्म, धर्म–दीक्षा, विवाह और मृत्यु पर होने वाले अनुष्ठानो का हिस्सा है इसके अलावा, सगीत दैनिक कृषि कार्यो, जैसे बुआई, फसल पकने और उसकी कटाई से भी जुडा रहा है ताकि इन कामो की नीरसता कम हो सके इसीलिए उत्तर भारत मे कुमाऊ की पहाडिया हुडकिया बौल से गूजती रहती है यहा किसान धान के खेतो मे झूमकर गाते हुए भगवान से अच्छी फसल की प्रार्थना करते है

लोकगीतो या परपरागत सगीत मे वर्गीकृत ये सगीतमय शैलिया सामूहिक कार्य मे लगे लोगो द्वारा मिल–जुलकर गाई या प्रस्तुत की जाती है और इनमे किसी श्रोता की जरूरत नही होती आमतौर पर लोकगीतो की रचना सामूहिक रूप से होती है, जिससे इनमे किसी एक व्यक्ति या गीत के मूल रचनाकार को पहचानना बहुत मुश्किल होता है कभी–कभी सगीत रचना को समकालीन या अवसर विशेष के उपयुक्त बनाने के लिए उसमे प्रचलित सहज व आशु पद जुड जाते है इसलिए उत्तर प्रदेश के लोकगीतो मे आधुनिक शब्दो, जैसे 'मोटरकार' (*सजना हमार मोटरकार लइके अइबे राम*) के प्रयोग से बिल्कुल ताज्जुब नही होता ये लोकगीत मौखिक रूप से एक से दूसरी पीढी को विरासत मे मिले है इसलिए इनका उद्भव अज्ञात है

गीतो के साथ–साथ वाद्य सगीत का भी लोकसगीत मे महत्त्वपूर्ण स्थान है वाद्य यत्रो की विविधता चक्कर मे डाल देती है इनमे ताल वाद्यो (जैसे ढोल, डफली, नक्कारा, ढोलक और मादल) से लेकर फूक से बजने वाले और तत्री वाद्य यत्र (जैसे शहनाई, नादस्वरम्, सतूर, एकतारा, कमइचा और रावण हत्था) शामिल है, जो विवाह, अत्येष्टि और धार्मिक उत्सवो पर बजाए जाते है ढाकी की थाप के बिना कोई भी दुर्गा पूजा उत्सव पूरा नही होता आज इनमे से अनेक लोक वाद्य यत्रो ने अपने उदगम स्थल से निकलकर आधुनिक ऑर्केस्ट्रा मे पश्चिमी वाद्य यत्रो के साथ अपनी एक जगह बना ली है प्रत्येक धमाकेदार भागडा–पॉप (पजाबी लोकसगीत व लोकप्रिय पाश्चात्य सगीत के सगम से रचित) मे ढोलक की थाप आज ड्रम की सगत करती है

भाटो या कथावाचको की परपरा भी लोकसगीत का हिस्सा है उनके सगीत मे *रामायण, महाभारत* और पुराणो की कथाओ की सगीतमय प्रस्तुति होती है गीतो के माध्यम से भाट पौराणिक एव वास्तविक नायको के युद्ध, पराक्रम एव वीरता की ओजस्वी कथाए तथा प्रेम व रूमानी कहानिया भी प्रस्तुत करते है गीत–सगीत के माध्यम से सुनाई जाने वाली उत्तर–भारतीय राज्य पजाब की 'हीर भारत की अत्यधिक लोकप्रिय प्रेम कथाओ मे से एक है सपेरे, नट, जादूगर और बगाल के 'बाउल जैसे घुमक्कड चारण अपने श्रोताओ व दर्शको को अपनी बात सुनाने के लिए सगीत का उपयोग करते है

फुर्सत और उत्सव, दोनो मे ग्रामीण दर्शको के मनोरजन के लिए नाट्य मडलिया पौराणिक प्रसंगो की सगीतमय प्रस्तुति अभिनीत करती है भारत के कई क्षेत्रो मे रामलीला एव यक्षगान सगीतमय रगमच के सर्वाधिक लोकप्रिय सास्कृतिक कार्यक्रमो मे से है रगमचीय प्रस्तुतियो द्वारा पुराण, धर्म व दर्शन को श्रोताओ के बीच लोकप्रिय बनाने मे नृत्य की भी भूमिका रही है 20वी सदी मे इन पौराणिक कथाओ

इस्तेमाल किया गया ये पूरे देश की जीवन शैली और रुचियो मे बदलाव ले आए है

प्रत्येक सामाजिक व स्थानीय समूह, जाति, उपजाति या आदिवासियो के सगीत की अपनी विशिष्ट परपरा होती है, जो एक से दूसरे तक पीढी दर पीढी मौखिक रूप से पहुचती है भारत मे पुश्तैनी सगीतकारो के अनेक समुदाय है, जैसे भाड, भाट, चारण, ढाडी और मिरासी ऐसे प्रत्येक समुदाय का अपना खास सगीत है और सदस्यो को सगीत का पेशा विरासत मे मिलता है इन समूहो की पहचान न केवल इनके जनजातीय लोकसगीत के कारण है, बल्कि शास्त्रीय सगीत मे इनके योगदान के लिए भी इन्हे जाना जाता है

शास्त्रीय सगीत

भारत मे शास्त्रीय सगीत सदियो से फल–फूल रहा है वर्तमान समय मे यह दो प्रमुख शाखाओं मे मौजूद हैं– उत्तर भारतीय या हिदुस्तानी सगीत और कर्नाटक शैली या दक्षिण भारत का शास्त्रीय सगीत हिदुस्तानी सगीत का प्रसार न केवल उत्तरी राज्यो तक हुआ है, बल्कि यह राज्यो मे गुजरात और महाराष्ट्र, पूर्वी राज्यो मे उडीसा, पश्चिम बगाल, मिजोरम, त्रिपुरा मेघालय और मध्य भारत के राज्यो मे मध्य प्रदेश से लेकर दक्षिण मे कर्नाटक तक फैला हुआ है की कर्नाटक शैली मुख्यत: दक्षिणी राज्यो, तमिलनाडु, केरल, आध्र प्रदेश और कर्नाटक मे फ रही है

एक विद्यार्थी गायन का रियाज करते हुए
सौजन्य यूसुफ सईद

आधुनिक काल मे भारतीय शास्त्रीय सगीत को अतर्राष्ट्रीय पहचान मिली है भारतीय सगीत के के लिए विश्व के कोने–कोने से भारत की यात्रा करने वाले सगीत के विद्यार्थियो, शोधार्थियो ओर सगीतकारो की सख्या साल दर साल बढती ही जा रही है. इसी प्रकार, प्रत्येक वर्ष पश्चि मे कार्यक्रम करने और सगीत सिखाने के लिए भारतीय शास्त्रीय सगीतकारो की विदेश यात्र सिलसिला भी बढा है इसलिए भारत का शास्त्रीय सगीत एक जीवत परपरा बना हुआ है भरपूर ऊर्जा व लचीलापन उसे बार–बार परिवर्तन और विकास द्वारा ताजगी दे देते है

राग और ताल शास्त्रीय सगीत की जान और धडकन है शास्त्रीय सगीत मे जहा राग–लय की जटिल शैलीबद्ध और परिष्कृत अभिव्यक्ति होती है वही ताल समय और लय के सगीतमय माप से सबधित है ये दोना ही भारतीय शास्त्रीय सगीत मे अद्वितीय है इन सांगीतिक सरचनाओ की जटिलता यह दर्शाती है कि ये कई सदियो मे धीरे–धीरे विकसित हुए है यद्यपि विद्वान स्वीकार करते है कि राग को आज हम जिस रूप मे जानते है, उसे 13वी सदी मे परिभाषित किया गया था वैदिक युग मे *सामवेद* के मत्रोच्चार को राग का परपरागत पूर्वज कहा जा सकता है वैदिक मत्रोच्चार की लय को शुरुआती तौर पर दो या तीन स्वरो मे तैयार किया गया था और धीरे–धीरे बढकर कुल सात स्वर हो गए सामवैदिक मत्रोच्चार के अधिक विकास से जटिलतर सगीत रचनाए बनी, जो अतत राग के रूप मे आज हमारे सामने है

शास्त्रीय सगीत एक तात्कालिक शैली है और राग वह लयात्मक केंद्रीय प्रारूप या साचा, जिस पर भारतीय सगीतकार स्वर–समूह विस्तरण की सगति मे खोज और आशु निर्मिति करता है फिर भी इसका एक अनुशासित, बधा–लगा पथ होता है और सगीतकार कही भी उच्छृखल नही हो सकता भारतीय सगीत यह भी मानता है कि संगीत और भावो या रसो के बीच प्रगाढ सबध है सगीत पर उपलब्ध अनेक ग्रथ राग–रस सबध को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं राग की शास्त्रीय परिभाषा इसमे भाव तत्त्व को नितांत अनिवार्य कहती है इसके अलावा राग मौसम और दिन–रात के चक्र से भी जुडे हुए है इसलिए कहा जाता है कि कुछ राग एक निश्चित मौसम के लिए उपयुक्त होते है जबकि कुछ राग दिन और रात के एक निश्चित समय के लिए निर्धारित हे भारतीय शास्त्रीय सगीत की मौखिक परपराए भरत के *नाट्यशास्त्र,* मातग के *बृहद्देशी,* शारगदेव के *सगीतरत्नाकर,* अहोबल के *सगीत पारिजात* तथा *उसूला–नगमात–ए–आसिफी* जैसे शोधग्रथो से एकत्र की जा सकती है

ताल शब्द का सस्कृत मे शाब्दिक अर्थ ताली बजाना होता है प्राचीन और जनजातीय सगीत से तत्काल इसका संबंध देखा जा सकता है, जिसमे लय की निरतरता बनाए रखने के लिए बहुधा ताली का प्रयोग किया जाता था जिसे आज ताल कहा जाता है, वह ताली बजाने की सरल क्रिया से कही अधिक विकसित और जटिल है इसे लय या गति क समान नही समझा जाना चाहिए, यद्यपि गति ताल का एक महत्त्वपूर्ण घटक है चूकि ताल की पारपरिक परिभाषा सागीतिक समय की गणना की प्रणाली है, इसलिए सगीत के माप की इकाइयो का विश्लेषण भी महत्त्वपूर्ण है

भारतीय सगीत मे समय की गणना भाज्य इकाइयो मे की जाती है, जिन्हे मात्रा या घात कहा जाता है समय की सेकेड, मिनट, घटे आदि निश्चित इकाइयो के विपरीत किसी ताल की मात्राओ की सख्या घट–बढ सकती है इसीलिए भारतीय सगीत मे अलग–अलग मात्राओं के तालो का एक बडा खजाना हे उदाहरण के लिए, तीन ताल 16 मात्राओ का एक चक्र है, जबकि झपताल 10 मात्राओ का चक्र हे ये तो भारतीय तालो के दो उदाहरण भर है इसके अलावा, प्रत्येक ताल को विभिन्न गतियो से बजाया जा सकता है इनमे से तीन प्रमुख है– विलबित (धीमा), मध्य और द्रुत (तेज) उत्तर भारतीय ताल मे ध्वनि और मौन का विशिष्ट सयोजन होता है, जो बलाघात व अ–बलाघात थाप (ताली और खाली) मे अभिव्यक्त होता है दक्षिण भारतीय पद्धति मे 35 तालो का एक सगठित समूह है, जिन्हे सुलादि ताल कहा जाता है ये सुलादि ताल, जो तीनो मे से किसी भी गति मे प्रस्तुत की जा सकती है, लघु, मध्यम और लबी अवधि इकाइयो के भिन्न–भिन्न प्रारूपो और मेल से बनी होती है उत्तर भारतीय सगीत मे गति एक निश्चित दर से तेज होती जाती है, लेकिन दक्षिण भारतीय सगीत मे ऐसा नही है

राग और ताल की जटिलताओ को आसान जान पडते सामजस्य से परस्पर गूथकर बदिशे (शाब्दिक अर्थ बधन) रची जाती है इसलिए शास्त्रीय सगीत की प्रस्तुति मे उस गायन शैली के सिद्धातो अनुशासन का पालन करते हुए कलाकार प्रस्तुत राग और ताल की बदिश का विस्तरण तात्कालिक निर्मिति करता है प्रत्येक बदिश किसी न किसी शास्त्रीय या उपशास्त्रीय गायन शैली ध्रुपद, धमार, खयाल, ठुमरी, तराना, चतुरग और त्रिवत से सबधित होती है यद्यपि सगीत के स्वरूपो को हम आज की सगीत सभाओ मे सुनते है, लेकिन इनका उद्‌भव 15वी सदी के उत्तरार्द्ध 16वी सदी तक पूर्णत हो चुका था

भारत मे वाद्य यत्रो का वर्गीकरण ध्वनि उत्पन्न करने मे प्रयुक्त साधनो के अनुसार किया गया है प्रकार, तार वाले वाद्यो को तात वाद्य, फूक से बजने वाले वाद्यो को सुषिर वाद्य, झिल्लीदार वाद्यो अवनद्ध वाद्य और ठोस वाद्य यत्रो को घन वाद्य कहा जाता है भारतीय सगीत मे पार्श्व झकार के लिए वाद्य यत्रो का प्रयोग होता है, जैसे एकल प्रस्तुति मे तानपुरा या तबूरा और अन्य वाद्य या गायन मे सगत के लिए सितार या सरोद जैसे वाद्यो का प्रयोग किया जाता है सारगी जैसे कुछ बहु उपयोगी वाद्यो से सगत और एकल प्रस्तुति, दोनो दी जा सकती है कुछ वाद्य सुरीली धुने निकालने म अधिक सक्षम होते है, जबकि कुछ अन्य प्रमुखत लय वाद्य होते हे भारत मे सगीत एक सामूहिक शब्द है, जिसमे गायन, वादन तथा नृत्य भी आ जाता है ठुमरी जैसे रूपो ने, जो पारपरिक तौर पर नृत्य को गायन की सगत देते थे, नृत्य और सगीत का सगम कर दिया है.

हारमोनियम
सौजन्य यूसुफ सईद

सदियो से भारत मे शास्त्रीय सगीत को विभिन्न स्रोतो से सरक्षण और समर्थन मिलता रहा है प्राचीन काल से यह मदिरो मे फला–फूला, धार्मिक अनुष्ठानो का महत्त्वपूर्ण भाग रहा, इसलिए मदिर परिसर या मदिर का नाट्य मडप इसकी प्रस्तुति के स्थान थे धीरे–धीरे इसे राजदरबारो का सरक्षण मिला और राजाओ, राजकुमारो

के महलो एव कुलीन धनिको की महफिलो मे इसे प्रस्तुत किया जाने लगा आज तो हम शास्त्रीय सगीत सभाओ को मचो तथा रेडियो, टीवी व इटरनट पर देखते–सुनते है

आमतौर पर शास्त्रीय सगीत दो से पाच कलाकारो के समूह द्वारा पेश किया जाता है इनमे एक मुख्य सगीतकार होता है और सगीत कार्यक्रम के दौरान वही दूसरो का नेतृत्व करता है इस मुख्य गायक या वादक के साथ तानपुरे की सगत होती है, जो टेक के साथ लयात्मक झकार भी प्रदान करती है खयाल, ठुमरी या समकालीन शास्त्रीय वाद्य सगीत मे तबले को पसद किया जाता है किंतु ध्रुपद की प्रस्तुति मे रुद्र वीणा और अन्य वाद्यो के साथ पखावज की सगत को प्राथमिकता दी जाती है गायन म सगत के लिए प्राय हारमोनियम (कुजीपटल आधारित एक विदशी वाद्य यत्र) या सारगी (एक भारतीय ततु वाद्य यत्र) का प्रयोग किया जाता है शहनाई वादन मे पार्श्व झकार के लिए बहुधा अन्य शहनाइयो की सगत होती है, जिन्हे 'सुर' कहा जाता है

राग आधारित सगीत कार्यक्रम आमतौर पर आलाप से शुरू होता है, जिसमे तबले आदि की सगत के बिना इच्छानुसार राग के स्वरो मे विचरण करके एक भूमिका तैयार की जाती है आलाप के बाद एक या ज्यादा रचनाएं, जैसे विलबित खयाल और द्रुत खयाल प्रस्तुत की जाती है, जिनमे गायन की गति क्रमश तीव्र होती है वाद्य सगीत मे ये सगीत रचनाए 'गत' कहलाती है और इससे पहले आलाप, जोड ओर झाला (क्रमश तेज होती गति) पेश किए जाते है. एकल तबला वादन मे भी इसी तरह गति और जटिलता पर आधारित क्रमिक सगठनात्मक परिपाटी का पालन किया जाता है इसके शुरू मे धीमे और गभीर के पेशकार के बाद असाधारण गति का रेला और गत पेश किया जाता है

पिछले 50 वर्षो मे शास्त्रीय सगीत के प्रस्तुतीकरण मे उल्लेखनीय बदलाव आया है आधुनिक तकनीक के आगमन, खासतौर पर ध्वनि आवर्द्धन प्रणाली के कारण प्रस्तुतीकरण की शैली मे बडा परितर्वन आया है आज के सगीतज्ञ और गायक अपनी आवाज और वाद्य यत्रो को माइक्रोफोन के अनुरूप ढालते है जबकि पुराने सगीतकार ध्वनि विस्तार के लिए एकदम अलग तरीके अपनाते थे इसी प्रकार, रेडियो ओर कैसेट तथा कॉम्पेक्ट डिस्क (सीडी) जैसे यत्रो ने शास्त्रीय सगीत प्रस्तुतियो की अवधि को प्रभावित किया है पुराने सगीत पारखी रात भर चलने वाली सगीत सभाओ को याद करते है, जिनमे प्रख्यात कलाकार एक ही राग को दो से लेकर तीन घटे तक प्रस्तुत करते थे, जबकि आजकल शास्त्रीय सगीतकार एक राग की प्रस्तुति, रेडियो और कैसेट प्रस्तुति के निर्धारित समय के अनुरूप आमतौर पर 30 से 45 मिनट तक सीमित रखते है हाल ही मे आविष्कृत पार्श्व–झकार के विद्युत वाद्य जेसे, 'इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा' या 'सुरपेटी' अब लगभग हर हिंदुस्तानी व कर्नाटक भारतीय सगीत कार्यक्रमो के परपरागत ध्वनि–वाद्यो मे आ मिले है साथ ही, भारतीय सगीत को मिली अतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता के कारण तानपुरा जैसे परपरागत वाद्यो को ऐसे रूप मे ढाला जा रहा है, जिससे इन्हे लाने–ले जाने मे आसानी हो

भक्ति सगीत

भारत मे शास्त्रीय सगीत देवलोक से आया माना जाता है और इसे व्यक्तिगत आत्मज्ञान की प्राप्ति के मार्ग के रूप मे स्वीकार किया जाता है किंतु शास्त्रीय स्वरूप के अलावा गैर शास्त्रीय भारतीय सगीत का एक बडा हिस्सा पूरी तरह आराधना, पूजा–अर्चना और प्रार्थना को समर्पित है लगभग सभी भारतीय समुदायो मे ईश्वर आराधना के माध्यम के रूप मे सगीत का उपयोग किया जाता है, अत

विषय–वस्तु और प्रस्तुति मे मूलत 'भक्ति' की ओर उन्मुख अनेक प्रारूपो व शैलियो का विकास हुआ यद्यपि प्रत्येक का अपना विशिष्ट व्याकरण है, पर इनमे से कुछ शैलिया समुदाय या समूह द्वारा प्रस्तुति की दृष्टि से तैयार की गई और कुछ व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के रूप मे विकसित हुई दोनो ही वर्गो मे *शब्द* की महत्ता सर्वोपरि है और भावो व सवेगो की शाब्दिक अभिव्यक्ति के सप्रेषण के लिए एक माध्यम बन जाता है इस तरह, सामुदायिक साधनो की बदौलत पूजा स्थल समस्त रचनात्मक प्रयासो की प्रेरणा और सरक्षण केद्र हो जाते है

कीर्तन' अपनी धुन की सरलता, समरस ताल और गीत के दुहराव के कारण सामूहिक रूप से गाया जा सकता है, तथापि एक सम्मोहक भजन दिव्य चरमोत्कर्ष पर पहुच जाता है इसके विपरीत सूफी कव्वाली, जो एक गायक की अगुवाई मे समूह द्वारा प्रस्तुत की जाती है, अधिक जटिल सगीत रचना है जो श्रोताओ को भाव–समाधि की अवस्था मे पहुचाने का प्रयास करती है उत्तर भारत के मथुरा और वृदावन क्षेत्र की रासलीला परपरा मे रगमच, सगीत और नृत्य, तीनो समाहित है वैष्णव सप्रदाय की समाज परपरा धार्मिक उपदेश को सुदर साहित्यिक पदो की सगीतमय प्रस्तुति से सयुक्त कर देती है शबद कीर्तन, गुरमत सगीत और गुरबानी (सिख गुरुओ क वचन) के रूप मे सिक्ख समुदाय के पास भी भक्ति सगीत की एक समृद्ध विरासत है

इसके साथ ही किसी देवता विशेष या धार्मिक आस्था को समर्पित अन्य भक्ति सगीत के अलावा कुछ ऐसी शैलियो की भी रचना हुई, जो सगठित धर्मो के वर्चस्व के विरोध के रूप मे है, जैसे कबीरपथियो और नाथ योगियो का सगीत कबीर, नामदेव, चरणदास, बुल्लेशाह, बाबा फरीद जैसे सत कवियो की रचनाए आज भी गाई जाती है भक्ति सगीत इतना प्रभावशाली है कि सगीत कपनियो ने विभिन्न समुदायों और धर्मो के मत्रो व भजनों की सफलतापूर्वक रेकॉर्डिग कर इन्हे बेचना शुरू कर दिया है यहा तक कि आजकल शास्त्रीय सगीत के कार्यक्रम का समापन भी भजन या भक्ति सगीत से होता है उत्तर भारत के शहरो मे भक्ति एव फिल्मी सगीत का रोचक मिला–जुला रूप रात भर चलन वाले जागरणो या कृतज्ञता प्रदर्शन के धार्मिक अनुष्ठानो मे सुनाई पडता है, जिनमे भक्ति पदो को लोकप्रिय फिल्मी धुनों मे ढालकर गाया जाता है

फिल्मी, इडी पॉप और फ़्यूज़न सगीत

एक तरफ, जहा शास्त्रीय सगीतकार भारतीय सगीत की पुरातनता व पवित्रता का गुणगान करते है वही कवल 70 साल से मौजूद फिल्मी सगीत एशियाई महाद्वीप के श्रोताओ क दिल–दिमाग पर छाया हुआ है फिल्मी सगीत के प्रारभिक अवतारो मे पश्चिमी वाद्य यत्रो मे बधे उसके सकर शास्त्रीय–लोक मूल को सहज ही देखा जा सकता है अपनी क्षणभगुर अपील के कारण यह तत्कालीन लोकप्रिय पसद के साथ लगातार स्वय को बदलता जाता है, चाहे वह पश्चिमी वाल्टज हो, रेगे, रैप, लेटिनो रिद्म, रॉक जैज हो या फिर ठेठ भारतीय लोकसगीत, पजाबी भागडा, महाराष्ट्र और बगाल के मछुआरो के गीत गगा के मैदानो के कजरी, बिरहा, कव्वाली और गजल हो

फिल्म सगीत के प्रस्तुतीकरण के लिए आदर्शवादी शास्त्रीय सगीत के ससार से भिन्न एक अलग ही व्यावसायिक मिजाज की जरूरत है यह स्टूडियो और सगीतकारो की आबद्ध दुनिया है शास्त्रीय सगीत मे साधक को उस टीमवर्क से परे अकेले रियाज करना होता है, जो इस बहुस्तरीय लोकप्रिय सगीत शैली के लिए अनिवार्य है प्रतिघटा या प्रति गाने की दर से भुगतान पाने वाले सगीतकार

बिल्कुल तयशुदा बजात–गाते है, जिसमे निजी मौलिकता का कोई स्थान नही रागो के भव्य स्वरूप क बजाय यह गाने का एक छोटा कैनवस होता है, जिसे प्रत्येक घटक पूरा करने मे योगदान देता है सामूहिक अपील वाली अन्य शैलियो की तरह समकालीन फिल्म सगीत ने भी कुछ लगे–बधे साचे बनाए है, जो अपनी विराट छवि के बल पर कायम है इसीलिए यहा मगेशकर बहने– लता और आशा– ह जो नारी स्वर के चरम का प्रतीक है पहले पहल फिल्म उद्योग ने अनेक शास्त्रीय सगीतकारो को आकर्षित किया, जिनमे प्रमुख गायिकाए हीराबाई बडोदकर, जोहराबाई, एम एस सुब्बुलक्ष्मी और बेगम अख्तर के साथ–साथ वादक अल्ला रक्खा खा (तबला), रवि शकर (सितार), अब्दुल हलीम जाफर खा (सितार), उस्ताद बिस्मिल्लाह खा (शहनाई), हरि प्रसाद चौरसिया, शिवकुमार शर्मा आदि शामिल है (आज शास्त्रीय और फिल्मी सगीत के बीच की खाई और चौडी हो गई है केवल कुछ ही सगीतकार एक से दूसरे क्षेत्र मे जाते है)

आज लोकप्रिय सगीत के समुद्र मे एक और धारा आकर मिल गई है, जिसे इडीपॉप कहा जाता है हाल के वर्षो मे 1980 के दशक तक इस शैली को पृथक पहचान नही मिल सकी थी पश्चिमी सगीत से प्रभावित भारतीय सगीतकारो द्वारा इसका सृजन विरोधाभासी इच्छाओ (अपनी माटी के सगीत से अपनी लोकप्रिय पहचान बनाना और प्रेरणा तथा विश्वव्यापी अपील के लिए पश्चिमी पॉप की ओर देखना) से हुआ जहा लोकप्रिय संगीत पश्चिम मे विरोध की सस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं यह भारत मे स्वीकार्यता और व्यावसायिक सफलता की खोज का प्रतीक है सगीत विडियो और असाधारण लोकप्रियता के बावजूद भारतीय सगीत उद्योग मे इडीपॉप आया राम–गया राम वाला पैमाना है इसके व्यावसायिक सबध अब प्रकट हुए है, जिनके तहत बडी फिल्मो की बॉक्स ऑफिस सफलता के लिए समकालीन लोकप्रिय पॉप सितारो का सहयोग लिया जा रहा है इसीलिए इडीपॉप गायक दलेर मेहदी के एक गीत–नृत्य को मेगा स्टार अमिताभ बच्चन की फिल्म मे अतिरिक्त चमक के लिए शामिल किया गया

फिल्म सगीत और इडीपॉप, दोनो मे प्रौद्योगिकी तथा आधुनिक रेकॉर्डिंग तकनीको का अधिकतम इस्तेमाल होता है भारत मे 1930 के दशक मे फिल्म सगीत ने एक सामान्य सी शुरुआत की थी उस समय मच के नीचे बैठे साजिदे सगीत पेश करते थे और परदे पर फिल्म दिखाई जाती थी आज यह डिजिटल मल्टी ट्रैक रेकॉर्डिंग' की ऊचाइयो पर पहुच गया है, जिसमे बटन दबाकर या 'माउस' को क्लिक करके ध्वनि को मनचाहा रूप देने के लिए हर सभव तकनीक का इस्तेमाल किया जाता हे

फ्यूजन सगीत दृढ विश्वास और अपनी पहचान की तलाश का एक अत्यधिक प्रयोगधर्मी ससार है सगीत के शुद्धतावादी इसे अक्सर व्यग्यपूर्वक कन्फ्यूजन (सभ्रम) कहते है भारत मे इसका व्याकरण अभी शुरुआती दोर मे है लेकिन फ्यूजन सगीत आज भी विभिन्न सस्कृतियो के सगीत तत्त्वो को आत्मसात कर रहा है, जिनमे महान सभावनाए हे इसे थोडी–बहुत अतर्राष्ट्रीय मान्यता भी मिली है जिसके फलस्वरूप विभिन्न सस्कृतियो के सगीतकारो के विचारो मे निरतर आदान–प्रदान हो पाया है इस लिहाज से फ्यूजन मे नई सगीत शैलियो के बीज है, जिन्हे अकुरित और पुष्पित करने के लिए एक–दूसरे की धरती पर उगाने की जरूरत हे

अत मे, यद्यपि सगीत की ये सभी श्रेणिया सगीतज्ञ या सगीत सिद्धातियो के मनोमस्तिष्क मे होती है तथापि सारी दुनिया की तरह भारत मे भी सगीत को इन चार श्रेणियो मे साफ–साफ विभाजित नही

किया जा सकता सगीत के माध्यम से अभिव्यक्ति की ललक मानव निर्मित स्वरूप व शैली रूपी बाधाओ से ऊपर उठकर मौजूदा सगीत शैलियो के बीच अनुकूलन, प्रत्यारोपण, अचेतन ग्रहण और सम्मिश्रण करती रहेगी

* * *

शुभा मुद्गल बहुमुखी प्रतिभा की धनी गायिका और सगीत सयोजक, हिंदुस्तानी सगीत के दिग्गज राम आश्रय झा, विनयचद्र मौद्गल्य, वसत ठाकर, जितेद्र अभिषेकी, कुमार गधर्व और नैना देवी की शिष्या एक सगीतकार के रूप मे मध्यकालीन और सूफी कविता के इनके खजाने मे वैष्णव पुष्टिमार्गी कवियो से लेकर कबीर, नामदेव, अमीर खुसरो, नाथपथी कवियो और अन्य सूफी कवियो की रचनाए शामिल है इन्हे पद्मश्री (2000), 34वे शिकागो अतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सव मे सगीत मे विशेष उपलब्धि के लिए गोल्ड प्लैक अवॉर्ड (1998) और राजा राममोहन रॉय शिक्षा फाउडेशन द्वारा कलाश्री अवॉर्ड (1977) सहित अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके है

संविधान

राजीव धवन

पृष्ठभूमि

भारतीय सविधान की अभिकल्पना महज समधर्मी राष्ट्र–राज्य के लिए ही नहीं की गई थी, बल्कि उस प्राचीन सभ्यता के लिए भी की गई थी, जो सदियो से अनवरत चली आ रही है और जो लोगो, भाषाओ धर्मो, विश्वासो और सस्कृतियो की विविधताओ को अगीकार करती है इसका प्रारूप सपत्ति आधारित मताधिकार प्राप्त एव भारत के विभाजन की छाया और बाद के दौर मे कार्य कर रहे एक उचित प्रतिनिधित्व व प्रतिभासपन्न व्यक्तियो के प्रभावशाली मिश्रण वाली सविधान सभा द्वारा 1946–1949 के दौरान तैयार किया गया इस सविधान की रचना लाखो भारतीयो की मागो तथा अभिलाषाओ की पूर्ति के लिए की गई थी यह जनसख्या एक अप्रतिम और बहुरगी सास्कृतिक विविधता प्रदर्शित करती है जो हिदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन तथा अन्य आस्थाओ और नास्तिको से आई है लोगो का ऐसा 'क्षैतिज' विभाजन समाज के सपन्न और वचित लोगो के आतरिक विभाजन को छिपा नही पाया और वस्तुत इसने इन वर्गो मे 'ऊर्ध्वाधर' सामाजिक तथा आर्थिक अतर को और भी बढा दिया विभाजन से हुई अव्यवस्था तथा कई प्रदेशो के एकीकरण से एक गणतत्र के बनने के बीच सविधान सभा ने राज्यो और केद्रशासित प्रदेशो मे विभक्त एक मजबूत सघ की स्थापना की इस सघ का शासन ससदीय लोकतत्र के सिद्धातो के अनुसार किया जाना था इसमे एक स्वतत्र न्यायपालिका, मौलिक अधिकारो की गारटी और 'राज्य के नीति–निदेशक सिद्धातो' के रूप मे राष्ट्र के मार्गदर्शन हेतु सामाजिक न्याय के लक्ष्य परिभाषित थे

मूल सिद्धांत

यद्यपि सविधान सभा के प्रयासो की यह कहकर आलोचना की गई थी कि यह ब्रिटिश सरकार द्वारा 1935 मे लागू गवर्नमेंट ऑफ इडिया ऐक्ट (भारत सरकार अधिनियम) के विस्तार से ज्यादा और कुछ नही है, तथापि यह सम्मिलन इसके कुछ हिस्सो के योग से कही अधिक सिद्ध हुआ इस तरह की अत्यत विविधतापूर्ण सभ्यता हेतु निर्मित सविधान मे कई असामान्य बातो का समावेश होना अपरिहार्य था बावजूद इसके भारतीय सविधान कई उभरते हुए पूर्व औपनिवेशिक राष्ट्रो के सविधान के लिए एक आदर्श साबित हुआ है यह कई विस्तृत सिद्धातो पर आधारित है

1 'जन प्रतिनिधित्व का सिद्धात' सार्वभौमिक मताधिकार से सबधित प्रावधानो मे प्रतिबिंबित है इसमे अछूतो तथा निचले तबको (जिन्हे अनुसूचित जाति कहा जाता है), आदिवासियो (अनुसूचित जनजाति के रूप मे निर्दिष्ट) तथा आग्ल–भारतीयो का विशेष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया है विशेष प्रतिनिधित्व प्रावधान नवीकरण योग्य है तथा प्रत्येक दशक मे इसका नवीनीकरण किया जाता है

2 'लोकतांत्रिक अधिशासन का सिद्धांत' संसदीय प्रणाली मे उसी प्रकार सम्मिलत है, जिस प्रकार ब्रिटिश वेस्टमिंस्टर प्रणाली मे केंद्र या संघ, दोनो के स्तर पर और राज्यो तथा केंद्रशासित प्रदेशो के स्तर पर अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित राष्ट्रपति केंद्र मे राष्ट्र का प्रधान होता है तथा केंद्र द्वारा मनोनीत राज्यपाल अथवा लेफ्टिनेंट गवर्नर (उप–राज्यपाल) राज्य इकाइयो तथा केंद्रशासित प्रदेशो के प्रमुख होते है

3 'व्यक्तिगत तथा सामूहिक मानवाधिकारो, नागरिक स्वतंत्रताओ तथा सामाजिक न्याय के सिद्धांतो की घोषणा प्रस्तावना मे की गई है इन्हे मौलिक अधिकारो के खंड मे दर्शाया गया है, नीति–निदेशक तत्त्व के खंड मे ये लक्ष्य रूप मे निर्धारित किए गए है तथा ये अनुसूचित जातियो, अनुसूचित जनजातियो, अन्य पिछडे वर्गों एव अन्य के लिए बनाए गए कई विशेष प्रावधानो मे प्रतिबिंबित होते है

4 'केंद्रीकृत संघ का सिद्धांत' केंद्र तथा घटक इकाइयो के बीच अधिकारो तथा दायित्वो के वितरण मे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है केंद्र को कुछ अभिभावी अधिकार प्रदान किए गए है, जबकि अन्य निर्णायक अधिकार राज्यो तथा केंद्रशासित प्रदेशो को दिए गए है 1992 से स्थानीय स्तर पर लोगो को कुछ संवैधानिक अधिकार देने के लिए बहुस्तरीय संवैधानिक रूप से संस्थापित स्थानीय सरकार का गठन किया गया

5 'न्यायिक अभिरक्षण का सिद्धांत' शक्तिशाली न्यायपालिका को संविधान की कार्यप्रणाली पर नजर रखने, कानूनी नियमो के अनुसार इसकी कार्यप्रणाली सुनिश्चित करने, लोकतंत्र, मानवाधिकारो तथा सामाजिक न्याय के सिद्धांतो को लागू करने और दीवानी, फौजदारी व प्रशासनिक न्याय की प्रभावी प्रणाली का गठन करने की अनुमति प्रदान करता है

6 'परिवर्तन तथा रूपांतरण का सिद्धांत' न केवल अस्थायी समस्याओ को सुलझाने के लिए, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए भी संविधान मे समय–समय पर संशोधन किए जाने की अनुमति प्रदान करता है कि एक गरीब, पूर्व औपनिवेशिक राष्ट्र को स्वतंत्र, प्रभुसत्तापूर्ण, लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष तथा समाजवादी गणतंत्र के रूप मे बदलने के लिए संविधान के समग्र उद्देश्यो की प्राप्ति हो सके

संशोधन तथा अन्य परिवर्तन

संविधानो को बतौर मापदंड के नही बनाया जाता है सभी नही, लेकिन अधिकांश संविधान लचील होते है आंतरिक रूप से उन दैनिक क्रियाकलापो मे परिवर्तन की गुंजाइश होती है, जबकि बाह्य रूप से उन्हे संशोधनो द्वारा बदला जा सकता है ये समय के साथ विकसित होते है और हमेशा 'है' मे न होकर, समस्याओ तथा संभावनाओ का, जब भी वे उठ खडी हो, सामना करते हुए 'बन रहे' की स्थिति मे होते है भारतीय संविधान भी इसका अपवाद नही है भारतीय संविधान मे अनेक प्रकार से बाह्य परिवर्तन किए जा सकते है साधारण संसदीय बहुमत द्वारा घटक राज्यो तथा केंद्रशासित प्रदेशो की सीमाओ सहित इसके कुछ हिस्सो मे परिवर्तन किया जा सकता है अन्य हिस्सो को संसद के दोनो सदनो के दो–तिहाई बहुमत द्वारा ही बदला जा सकता है संघीय ढांचे से संबधित प्रावधानो मे परिवर्तन के लिए केवल संसद का दो–तिहाई बहुमत ही आवश्यक नही होता, बल्कि कम से कम आधे राज्यो की विधायिकाओ द्वारा अनुमोदन भी जरूरी होता है बगावत द्वारा तख्तापलट कर सत्ता परिवर्तन दक्षिण एशिया तथा अन्य राष्ट्रो के संवैधानिक इतिहास का हिस्सा रहा है, लेकिन भारत संभवत आपातकाल (1975–77) के संदिग्ध मामले को छोडकर इस संकट से दूर ही रहा है

परिवर्तन के लिए जटिल प्रक्रिया होने के बावजूद भारतीय संविधान 2001 तक 84 सशोधना से बच नही पाया सविधान के पाठ की स्याही सूख भी नही पाई थी कि इसे बनाने वाली सवैधानिक समिति ने ही इसमे सशोधन कर डाला 1950–51 मे पहली लोकसभा की भूमिका अदा करते हुए सविधान सभा ने ही जमीदारो के पक्ष मे दिए गए सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालयो के कुछ निर्णयो को, जो कृषि भूमि के पुनर्वितरण द्वारा किए जाने वाले भूमि सुधार मे बाधक थे तथा सकारात्मक कार्यवाही की सभावनाओ पर सदेह प्रकट करते थे और सरकार की लोक व्यवस्था बनाए रखने की शक्तियो को प्रभावित करते थे, उलटने हेतु सविधान में सशोधन किया न्यायपालिका तथा कार्यपालिका के बीच मतभेद 1973 के प्रसिद्ध मौलिक अधिकार मामले तक 'सवेधानिक मच' के केंद्र मे रहे, जब उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया कि सविधान को सशोधित करने की अपनी सपूर्ण शक्ति के बावजूद ससद सविधान के 'मूल ढाचे' मे परिवर्तन नही कर सकती यह पूरी तरह स्पष्ट नही है कि आखिर सविधान के मूल ढाचे मे क्या शामिल है 1977 तथा 1997 के बीच विभिन्न निर्णयो मे सर्वोच्च न्यायालय ने यह स्पष्ट किया कि न्यायिक समीक्षा मूल ढाचे का हिस्सा है तथा इसे हटाया नही जा सकता है राष्ट्रपति शासन (1993) तथा बाबरी मस्जिद प्रकरण (1994) मे धर्मनिरपेक्षता को सविधान के मूल ढाचे क एक अग के रूप मे मान्यता दी गई 1976 में प्रस्तावना के सवैधानिक लक्ष्यों मे समाजवाद के साथ–साथ धर्मनिरपेक्षता को जोडा गया तर्कसगत रूप से, मुक्त बाजार के इस युग मे भी, समाजवाद मूल ढाचे का एक भाग है कम से कम उस स्तर तक, जहा यह सविधान के समानतावादी सिद्धातो को सुदृढ करता है तथा सामाजिक व आर्थिक न्याय की प्राप्ति हेतु अधिमूल्यन व पुनर्वितरण के उपायो से अधिक लाभकारी है यद्यपि यह सर्वोच्च न्यायालय द्वारा विशिष्ट मान्यता दिए जाने से बचा रह गया है पर लोकतत्र को राष्ट्र की प्रभुसत्ता तथा उसकी गणतात्रिक प्रकृति के साथ मूल ढाचे का हिस्सा निश्चित तौर पर मानना चाहिए फिर भी इसका निष्कर्ष यह नही निकाला जाना चाहिए कि लोकतत्र या लोकतात्रिक प्रतिनिधित्व (उदाहरण के लिए, ससदीय प्रणाली) के किसी विशिष्ट स्वरूप को भी मूल ढाचे के रूप मे सरक्षित किया जाएगा तथा यह अपरिवर्तनीय सवैधानिक सिद्धात के रूप मे सशोधन से बचा रहेगा

भूमि सुधारो के विवादो के मूल मे विद्यमान न्यायिक सर्वोच्चता के लिए सघर्ष के अलावा, सविधान को बदलने के अधिकार का उपयोग तथा दुरुपयोग, दोनो ही हुए है 1956 मे सघीय प्रणाली मे विभाजन पश्चात के परिवर्तनो को शामिल करने के लिए कई सशोधन किए गए थे भूमि सुधार सशोधन (1951–1964) तथा सविधान सशोधन हेतु ससद के असीमित अधिकारो का समर्थन करने वाले सशोधन (1970–1971) को 1973 मे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा घोषित मूल ढाचे के सिद्धात से चुनौती का सामना करना पडा था आपातकालीन संशोधनो (1975–1977) की अभिकल्पना प्रधानमत्री इदिरा गाधी के हाथो मे सत्तावादी नियत्रण बनाए रखने के लिए थी आपातकालीन सशोधनो को उलटने वाले सशोधन (1977–1979) कमजोर थे तथा उनमे से सभी लागू नही किए गए पजाब सशोधन (1987–1990) पजाब मे जारी आपातकाल की स्थिति– जो केंद्र से अलग होने हेतु एक सशस्त्र विद्रोह था– से निपटने हेतु सरकार की शक्ति का दायरा बढाने के लिए थे, दलबदल विरोधी सशोधन (1985) सासदो को ससदीय सरकार को अस्थिर करने से रोकने के लिए था पचायत सशोधन (1991–1992) ने सघीय सवैधानिक प्रणाली मे नए स्तर को जोडकर उपेक्षित समुदायो तथा महिलाओ का स्थानीय शासन मे प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करवाया 1995 के सविधान सशोधन, 1992 मे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए

निर्णयो को उलटने के लिए किए गए थे, जिसक अतर्गत प्रशासन मे उच्च पदोन्नति वाले पदो मे सकारात्मक कार्यवाही करने से रोक लगाई गई थी 1990 के दशक मे महिलाओ को ससद तथा राज्य विधानसभाओ मे प्रतिनिधित्व प्रदान करने तथा ससदीय अधिशासन की अनिश्चितताओ को रोककर स्थिरता प्रदान करने के लिए सविधान सशोधन की योजना थी दुरुपयोग के सुस्पष्ट उदाहरणो के बावजूद सविधान मे मूलभूत सिद्धातो को वास्तविक क्षति पहुचाए बिना सविधान सशोधन के अधिकारो का आमतौर पर यथोचित तथा रचनात्मक रूप से ही प्रयोग किया गया है

लोकतांत्रिक तथा ससदीय प्रक्रियाएं

निर्वाचन

उपेक्षित समुदायो तथा समूहो को प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए विशेष प्रावधानो सहित सार्वभौमिक मताधिकार प्रणाली पर निर्मित भारत विश्व का सबसे बडा सक्रिय लोकतत्र है 1951 मे इसकी कुल आबादी 35 69 करोड थी, जो 2001 मे बढकर 1 027 अरब हो गई है, जिसमे लगभग 40 प्रतिशत लोगो को मताधिकार प्राप्त है इतने बडे चुनाव क्षेत्र हेतु चुनाव का आयोजन करने का विकट दायित्व सवैधानिक रूप से गठित एक स्वायत्त निकाय को सोपा गया है, जिसे 'चुनाव आयोग' कहते हे सवैधानिक अथवा न्यायिक समीक्षा को छोडकर इसके पर्यवेक्षण, नियत्रण तथा चुनावों के निर्देश मे हस्तक्षेप नही किया जा सकता मतदान करने वाले निर्वाचन क्षेत्रो के सीमाकन का कार्य एक वैधानिक निकाय 'परिसीमन आयोग' को दिया गया है निर्वाचन क्षेत्र के परिसीमन के पश्चात प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र के लिए एक मतदाता सूची बनाई जाती है, जिसके आधार पर चुनाव कराए जाते है

मतदान करने तथा चुनाव लडने की पात्रता आयु, मानसिक क्षमता, वित्तीय तथा आपराधिक पृष्ठभूमि जैसे सवैधानिक व कानूनी मापदडो के आधार पर निर्धारित की जाती है चुनावो का निर्विघ्न सचालन सुनिश्चित करने तथा सामजस्य को हानि पहुचाने वाली घृणित, विभाजक या राजद्रोहात्मक अपीलो को रोकने हेतु कई चुनावी अपराधो तथा चुनावी दुराचारो के अभियोजन के लिए पहचान की गई है कुछ वर्षो से राजनीतिक दलो द्वारा 'पैसे व बाहुबल' वाले लोगो को चुनाव मैदान मे उतारने के ऐसे तरीको पर चिता व्यक्त की जा रही है, जो चुनाव प्रक्रियाओ को दूषित करते है तथा ऐसे लोगो के चुने जाने मे सहायता करते है, जो गभीर अपराधो के अभियुक्त तो है, पर उन्हे सज़ा नही हुई है और सजा दिए जाने से व चुनाव लडने के अयोग्य हो सकते है इस तरह के लोगो को चुनाव लडने से रोकने के लिए सविधान तथा चुनाव कानून मे सशोधन के सुझाव का विधि आयोग तथा अन्य लोगो ने भी समर्थन किया है, लेकिन अब तक इसे राजनीतिक समर्थन नही मिला है इसके बावजूद चुनाव प्रणाली भारतीय जनता के हाथो मे भलीभाति कारगर सिद्ध हो रही है, जिसने शासकों को विवेकपूर्ण ढग से निर्वाचित व अपदस्थ किया है

ससदीय प्रणाली

ससदीय प्रणाली के अतर्गत राष्ट्रपति प्रधानमत्री तथा उसके मत्रिमडल या मत्रिपरिषद, जो सामूहिक रूप से लोकसभा (ससद का प्रत्यक्ष निर्वाचित निचला सदन) के प्रति उत्तरदायी होते है, के 'सहयोग तथा 'सलाह' से कार्य करता है लोकसभा के सदस्य साधारण बहुमत द्वारा किसी भी सरकार को सत्ता

से हटा सकते है सवैधानिक रूप से सुनिश्चित 'आवटन' तथा 'कार्य सपादन' द्वारा यह निधारित करने के लिए कि सरकार के लिए किस अधिकार को कौन प्रयोग मे लाएगा, क्रमश केद्र तथा राज्यो मे सभी कार्यकारी शक्तियो का प्रयोग क्रमश राष्ट्रपति तथा राज्यपाल के नाम पर किया जाता है इस सुझाव को कि राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल मत्रिमडल की सलाह को अनदेखा करने के लिए स्वतत्र है, 1973 मे सर्वोच्च न्यायालय ने अपने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय से निर्णयात्मक रूप से अस्वीकार कर दिया इस निर्णय मे यह स्पष्ट कर दिया गया था कि भारत द्वारा ब्रिटिश ससदीय प्रणाली अगीकार की गई है यह एक ऐसी प्रणाली है, जिसमे कार्यकारी प्रमुख मत्रिमडल की सलाह को मानने के लिए बाध्य होता है मत्रिमडल के अदर प्रधानमत्री सभी 'समकक्षा मे प्रथम' नही होता, बल्कि वर्तमान राजनीतिक स्थिति के अनुसार पूरी तरह से सर्वेसर्वा होता है तथा वह सभी या किसी भी मत्री को नियुक्त कर सकता है अथवा हटा सकता है बहरहाल, आपातकाल (1975–1977) के पश्चात इस तरह के स्वच्छाचारी अधिकारो तथा मत्रिमंडल के फैसले पर मात्र मुहर लगाने वाले राष्ट्रपतियो मे विश्वास की कमी ने एक सवैधानिक सशोधन के लिए रास्ता बनाया इस सशोधन ने राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया कि वह मत्रिमडल के निर्णय को केवल एक बार अस्वीकार कर सकता है ऐसा करने की धमकियो के बावजूद किसी निर्णय को पुनर्विचार के लिए मत्रिमडल के पास वापस भेजने के अधिकार का उपयोग यदा–कदा ही किया गया है, जिससे ससदीय प्रणाली मे राष्ट्रपति की भूमिका प्रोत्साहित करने चेतावनी देने तथा सर्वशक्तिमान प्रधानमत्री को सलाह देने के परपरागत कार्य तक ही सीमित रह जाती है

ससदीय प्रणाली को दु साध्य रूप मे देखा जाता है इसमे बडी सख्या में विधायक होते है, जिनके पास करने के लिए बहुत सारा विधायी तथा अन्य कार्य होता है इसकी प्रभावशीलता बढाने के लिए कई ससदीय समितियो, लोकपाल और लोकायुक्त, मानवाधिकार आयोग आदि का गठन किया गया, ताकि सुगम, प्रभावी तथा ईमानदार अधिशासन सुनिश्चित किया जा सके

ससदीय प्रणाली मुख्यत निर्वाचन प्रणाली द्वारा सघीय ससद तथा राज्य विधानसभाओ में काम चलाने योग्य बहुमत पाने पर निर्भर है नेहरू युग (1950–1964) मे आमतौर पर केद्र तथा राज्य सरकारो को स्पष्ट बहुमत हासिल था, कितु 1959 के बाद से राज्यो की सत्ता केद्र मे सत्ताधारी दल के अलावा दूसरे दलो तथा गठबधनो के हाथ मे रहने लगी ऐसी राज्य सरकारे राजनीतिक जोड–घटाव तथा केद्र के सवैधानिक अधिकारो के दुरुपयोग का शिकार होकर निष्ठुरता से हटाई जाती रही है 1977–1979 मे (आपातकाल के तुरत बाद) तथा 1989 से लेकर अब तक लापरवाह व अक्सर अवसरवादी गठबधन राजनीति ने केद्र सरकारो की स्थिरता को कमजोर किया है 1985 मे लाए गए दलबदल विरोधी सशोधनो की अभिकल्पना सदन मे अपनी पार्टी के खिलाफ मतदान कर सरकार को गिराने की सासदो की प्रवृत्ति को रोकने (बशर्ते कि उन्हे पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से बाहर न कर दिया जाए या वे सदन मे दल की कुल सख्या की एक–तिहाई की सख्या मे विभाजित होकर अलग न हो जाए) के लिए की गई थी वे सशोधन, जिन्हे सर्वोच्च न्यायालय ने 1991 मे लगभग खारिज कर दिया था, कुछ हद तक लागू किए गए, लेकिन वे कमजोर थे और उनका प्रभाव अस्थिर था सरकार को अस्थिर बनाने के भ्रष्ट तरीको का उपयोग अत्यधिक बढ गया इस प्रवृत्ति को 1998 मे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए इस निर्णय ने और अधिक बढावा दिया कि रिश्वत लेने वाले सासदो पर आपराधिक अभियोग नही लगाया जा सकता, क्योकि इस तरह की रिश्वत उनके कानकाज की स्वायत्तता से जुडी है

परपराए

व्यापक रूप से परंपराए दो श्रेणियो के अतर्गत आती हैं मूल या प्राथमिक परपराए, जो शासन के ढाचे को यथास्थान बनाए रखती है उदाहरण के लिए, राष्ट्रपति को मत्रिमडल की सलाह मानना आवश्यक होता है और ससद के निचले सदन मे सरकार की पराजय होने पर मत्रिमडल को इस्तीफा देना होता है गौण परपराए शासन करने वालो से एक यथोचित नैतिक जिम्मेदारी तथा राजनीतिक ईमानदारी की माग करती है अक्सर इन्हे भारत मे स्वाभाविक रूप मे देखा गया है उदाहरण के लिए, नेहरू युग मे किसी मत्रालय में कोई गलती या दुर्घटना हो जाने पर सबधित मत्री इसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते थे तथा मत्रिमडल से त्यागपत्र दे देते थे सासद अपने दल तथा उन कार्यक्रमो, जिनके आधार पर वे निर्वाचित हुए है, के प्रति निष्ठावान रहते थे सार्वजनिक पदो पर रहने वाले लोग अपनी सपत्ति अथवा व्यवसाय तथा अन्य सबधो की घोषणा करने से नही डरते थे

राजनीतिक दृष्टि से सुविधा होने पर ही इन परपराओ का पालन होता है, अन्यथा इनकी अधिकाधिक उपेक्षा की जाती रही है न्यायालय इन प्राथमिक परपराओ, गौण परपराओ के मामले मे तो और भी कम, को औपचारिक रूप से प्रभावी बनाने या सुस्पष्ट करने के प्रति अनिच्छुक है सिर्फ उनको छोडकर, जो सविधान के मूल कार्यकलापो से जुडी हुई है हालाकि कुछ न्यायाधीशो ने कुछ परपराओ को मान्यता दी है, लेकिन वे वस्तुत वैधानिक रूप से लागू नही होती वे केवल उस स्थिति मे प्रभावी रूप से कार्य कर सकती है, जब उन लोगो का समर्थन मिले, जिनके कार्यो को वे नियत्रित करने जा रही है भारतीय प्रशासन की वास्तविक कार्यशैली को ऊपर उठाने के लिए ससद द्वारा कुछ परपराओ को औपचारिक रूप देने की आवश्यकता है उदाहरण के लिए, यद्यपि भारत मे ससदीय प्रणाली उचित ढग से कार्य कर रही है, लेकिन कमजोर गठबधन सरकारो तथा व्यक्तिगत लाभ अथवा पदलोलुपता के कारण सरकार को गिराने वाले अवसरवादी नेताओ के दुर्बलीकरण के प्रभाव ने ससदीय प्रणाली को कमजोर बना रखा है इस समस्या की जड परपराओ द्वारा अनुशासित करने वाली मजबूत सस्थागत नैतिकता का अभाव है सविधान के काले अक्षर तब तक बेहतर शासन की सुनिश्चितता प्रदान नही करेगे, जब तक भ्रष्टाचार रहित ईमानदार व पारदर्शी परिस्थितियो मे विधि तथा लोकतात्रिक जवाबदेही की सुनिश्चितता के लिए सस्थागत नैतिकता का उदय नही होता

सघीय या अर्द्धसंघीय व्यवस्था

1947 मे भारतीय उपमहाद्वीप का विभाजन हुआ और इसकी 550 रियासतो को यह विकल्प दिया गया था कि वे स्वतत्र रहे या भारत अथवा पाकिस्तान में सम्मिलित हो जाए इस योजना के तहत उपमहाद्वीप का ऐसा बटवारा हो जाता, जिसे सुधारना कठिन होता, लेकिन विभाजन के हिसक आतक के बावजूद दो बडे राष्ट्रो, भारत तथा पाकिस्तान, मे रियासतो का विलय कर लिया गया लेकिन कश्मीर दोनो राष्ट्रो के बीच विवाद का मुद्दा बना रहा 1950 से 1956 के बीच भारत के विभिन्न राजनीतिक भागो को तीन श्रेणियो में गठित किया गया था, जो मोटे तौर पर पूर्व–ब्रिटिश शासित ब्रिटिश प्रशासित तथा रियासतो से मिलकर बनी थी और भारतीय सघीय व्यवस्था, 1956 मे पुनर्गठित की गई थी और तब से आज तक यह द्विस्तरीय व्यवस्था चली आ रही है केद्र में सघीय सरकार तथा राज्यो एव केद्रशासित प्रदेशो की सरकारे इन सभी इकाइयो का नियत्रण ससदीय सस्थाओ के हाथ मे है, जबकि केद्रशासित प्रदेशो के ज्यादातर प्रत्यक्ष अधिकार सघीय सरकार के पास है

यह बता पाना बहुत कठिन है कि शासन की वास्तविक संघीय प्रणाली का स्वरूप क्या है भारतीय सघ को कई कारणो से अर्द्धसघीय कहा जाता है

पहला ओर प्रमुख कारण यह है कि प्रातो तथा केद्रशासित प्रदेशा की कोई भौगोलिक अखडता नही हे बडे राज्यो को तोडकर प्रातो तथा केद्रशासित प्रदेशो की रचना की गई है आध्र प्रदेश तथा केरल 1956 मे बनाए गए बबई प्रात को 1960 मे महाराष्ट्र तथा गुजरात मे बाटा गया 1966 मे पजाब से हरियाणा, पजाब और हिमाचल प्रदेश बनाए गए पूर्वोत्तर म सात प्रात बनाए गए 1963 मे नागालैड 1972 मे असम, मेघालय, मणिपुर और त्रिपुरा तथा 1987 मे मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश बने गोवा को 1960 मे केद्रशासित प्रदेश के रूप मे सघ मे शामिल किया गया, जो 1987 मे पूर्ण राज्य बना सिक्किम को 1975 मे राज्य बनाया गया

दूसरा कारण यह है कि यद्यपि सभी प्रातो को समान दर्जा प्राप्त है और अपनी–अपनी जनसख्या के अनुसार उन्हे ससद के दानो सदनो मे प्रतिनिधित्व प्राप्त है, लेकिन भारतीय सविधान ने आवश्यकता पर आधारित असमान सघवाद के सिद्धात का विकास किया है जम्मू–कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों व कुछ अन्य राज्यो से सबधित अनुच्छेदो तथा अन्य प्रावधानो मे भी कुछ प्रातो को सवैधानिक प्राथमिकता का दर्जा दिया गया है तीसरा कारण है, आपातकाल के प्रावधानो ने केद्र को व्यापक अधिकार दे दिया हे जिसकी मदद से वह किसी राज्य का शासन अपने हाथ मे ले सकता है तथा राष्ट्रपति शासन लागू कर सकता है 1993 मे सीमित न्यायिक पुनर्निरीक्षण तथा 1979 म राष्ट्रपति को प्रस्ताव लौटाने का अधिकार दिए जाने के बावजूद राज्यो की निर्वाचित सरकारो को हटाने के लिए सघीय सरकारे आपात स्थितियो से सबधित इन प्रावधानो का मनमाना उपयोग करती रही है ये तरीके प्रजातत्र तथा सघवाद दोनो को कमजोर करते हें चौथा कारण है, सविधान ने सघीय शासन को कई प्रकार से अधिक शक्तिया दी है केद्र की वैधानिक शक्तिया राज्यो की तुलना मे अधिक व्यापक है, जिसमे विस्तृत अवशिष्ट शक्तिया भी शामिल है विशिष्ट राज्य सूची के कई विषयो (उद्योग खनन और अन्य विषय) का नियमन ससद द्वारा किया जाता है समवर्ती अधिकारो के मामले मे भी केद्र को राज्य से अधिक महत्त्व प्राप्त है राज्यसभा की सहमति से अथवा दो या अधिक राज्यो की सहमति से या सधि अथवा अतर्राष्ट्रीय अनुबधो के पालन या राष्ट्रीय आपदा की स्थिति मे सघ राज्य सूची के विषयो पर कानून बना सकता है प्रशासन पर केद्र का सपूर्ण नियत्रण, सवैधानिक रूप से निर्मित अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा तथा राज्य को केद्र की इच्छापूर्ति के लिए निर्देश देने के अधिकार द्वारा अधिक मजबूत हो गया है

पाचवा कारण यह है कि राज्यो को राजस्व तथा अनुदान वितरण सुनिश्चित करने के लिए वित्त आयोग एव अन्य व्यवस्थाओ के बाद भी वित्तीय सघवाद की सवैधानिक योजना बहुत जटिल है और ज्यादा से ज्यादा केद्र के पक्ष मे है राज्यो के पास राजस्व प्राप्त करने के अपर्याप्त स्वतत्र स्रोत है और व केद्र पर अत्यधिक निर्भर है तथा उसके कर्जदार भी है

यद्यपि एक शक्तिशाली केद्र सघवाद की भावना के विपरीत नहीं है, लेकिन सविधान द्वारा केद्र को दिए गए विशेष एव उच्च अधिकार भारतीय सघवाद को शक्ति विभाजन मे भ्रमपूर्ण, बनावट मे केद्राभिमुख तथा कामकाज में अत्यधिक केद्र–आश्रित बनाते है, हालाकि प्रत्येक राज्य की विशिष्ट एतिहासिक, भाषाई और सास्कृतिक पहचान का उल्लेख किए विना भारतीय सघवाद का कोई भी

विवरण पूरा नही हो सकता भाषाई तथा ऐतिहासिक आधारो पर भारत का सघीय विभाजन राष्ट्रीय एकता मे बाधा बनने के बजाय देश की बहुभाषी और बहुसास्कृतिक समाज की सरचना को समृद्ध बनाता है

सवैधानिक ढाचे मे सघीकृत इकाइयो के परिपक्व होते ही उनका स्वतत्र राजनीतिक अस्तित्व बन गया है केद्र मे सत्तारूढ दल अक्सर क्षेत्रीय या राज्यो मे सत्तारूढ दल से भिन्न होता है अपनी क्षेत्रीय सफलता की शक्ति स प्रेरित होकर अनेक राज्यो ने अधिक वित्तीय एव प्रशासनिक स्वायत्तता तथा प्रशासन मे केद्र के कम से कम हस्तक्षेप की माग की है, यदि भारत अपनी विशिष्ट विविधता को अधिक महत्त्व देना चाहता है, तो उसे अत्यधिक केद्रीकृत संघीय ढाचे को ढीला करना होगा

पचायत के माध्यम से स्थानीय शासन

1991–92 मे सविधान मे पचायत सशोधन के बाद द्विस्तरीय सघ प्रणाली ने, जिसने प्रशासन केद्र तथा राज्य के बीच बटा था, एक बहुस्तरीय सघीय ढाचे मे प्रवेश किया, जिसके तहत प्रजातात्रिक स्थानीय शासन की गारटी दी गई और शहरी तथा ग्रामीण इलाको मे सभी स्तरो पर नागरिको को सवैधानिक शक्तिया दी गई सामान्यत स्थानीय सरकारा की योजना सविधान मे नही लिखी गई है, लेकिन सविधान लागू होने के बाद कानून के जरिये उनका निर्माण किया जाता है पचायत सशोधनो ने देश मे स्थानीय सरकार व्यवस्था के ध्वस्त हो जाने की बात को स्वीकार किया और स्थानीय स्तरो पर स्वशासन के जरिय इसका विकल्प उपलब्ध कराया इस प्रकार निर्मित केवल पचायत ही प्रत्यक्ष रूप से चुनी गई स्थानीय सरकार का एकमात्र अग है प्रारभ मे यह योजना आदिवासी क्षेत्रो मे लागू नही थी लेकिन अब इन क्षेत्रो मे भी इसे प्रभावी कर दिया गया है

भारत मे बहुस्तरीय सघवाद को बहुत सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है पिछडो और उपेक्षितो की हिस्सेदारी सुनिश्चित करने के लिए पचायत सशोधन ने उनके लिए विशेष प्रतिनिधित्व आरक्षित किया है– विशेष रूप से महिलाओ, अनुसूचित जातियो, जनजातियो तथा अन्य पिछडे वर्गो के लिए, जिन्हे अन्य प्रकार से पचायत मे प्रतिनिधित्व प्राप्त नही होता है इसका अनूठा परिणाम यह निकला है कि बहुत सी पचायतो की बागडोर इन उपेक्षित वर्गो के हाथो मे है, हालाकि स्थानीय सामाजिक और आर्थिक शक्तिया अब भी अधिकाश पचायतो पर हावी है इस प्रयोग को अन्य ससदीय गतिविधियो से लाभ मिलेगा उदाहरण के लिए, पचायतो को अधिक स्वायत्तता तथा राजस्व वसूली के अधिकार देन से स्थानीय स्तर पर नागरिको को शक्ति मिलेगी तथा समय के साथ उनकी कार्यप्रणाली मे सुधार आएगा

आपातकालीन शक्तिया

भारत के लिए बनाए गए ब्रिटिश कानून के प्रावधानो को जस का तस स्वीकार करते हुए सविधान मे तीन तरह की आपात स्थितियो का प्रावधान किया गया है सामान्य आपातकाल, राज्य आपातकाल और वित्तीय आपातकाल सामान्य आपालकाल 'बाहरी आक्रमण' या देश के भीतर पूरे राष्ट्र मे या किसी हिस्से मे 'सशस्त्र विद्रोह' की स्थिति है सामान्य आपातकाल के सवैधानिक प्रभावो मे कुछ महत्त्वपूर्ण मौलिक अधिकारो का निलबन, नागरिक स्वतत्रता पर सख्त नियत्रण, प्रेस सेसरशिप तथा बिना सुनवाई के निषेधात्मक गिरफ्तारी की अनुमति सम्मिलित है यदि राष्ट्रपति पाते है कि 'ऐसी स्थिति निर्मित हो

गई है, जिसमे राज्य सरकार सविधान के प्रावधानो के अनुसार नही चलाई जा सकती', तो केद्र सरकार राष्ट्रपति शासन लगाकर राज्य मे आपातकाल घोषित कर सकती है ससद और कार्यपालिका राज्य का प्रशासन अपने हाथ मे ले लेती है और प्रातीय प्रजातत्र लगभग निलबित हो जाता है वित्तीय आपातकाल की घोषणा तब की जा सकती है, जब राष्ट्रपति स्वीकार करते है कि 'ऐसी स्थिति पैदा हो गई है, जिसमे देश या इसके किसी हिस्से की वित्तीय स्थिरता या साख खतरे मे है.' इस आपातकाल के दौरान सविधान के उन प्रावधानो मे सशोधन का अधिकार राष्ट्रपति को होता है, जो केद्र तथा राज्य के बीच वित्तीय ससाधनो के आवटन से सबधित है सामान्य आपातकाल तथा प्रातीय आपातकाल के ठीक विपरीत गणराज्य के पहले 50 वर्षो मे भारत मे वित्तीय आपातकाल कभी नही लगाया गया प्रत्येक आपातकाल सघीय ढाचे का अतिक्रमण करता है और केद्र को असाधारण अधिकार दे देता है

आजाद भारत के इतिहास मे सामान्य आपातकाल (1975–77) एक नाटकीय घटना है इसने बहुत ही सहजता से दिखा दिया कि सवैधानिक लोकतंत्र को ऐसी तानाशाही मे कैसे बदला जाता है, जिसमे सत्ता पूर्णत भ्रष्ट हो जाती है प्रत्यक्ष तौर पर तो आपातकाल की घोषणा आतरिक अस्थिरता से निपटने के लिए की गई थी, लेकिन वास्तव मे 1975 मे तत्कालीन प्रधानमत्री श्रीमती इदिरा गाधी का चुनाव अदालत द्वारा रद्द कर दिए जाने के बाद उन्हे प्रधानमत्री बनाए रखने के लिए यह तरकीब लगाई गई थी सत्ता का दुरुपयोग, मनमानी गिरफ्तारिया, जनसचार माध्यमो की सेसरशिप तथा लोगो पर कई अत्याचारो ने आपातकाल के नाम पर धब्बा लगा दिया स्थिति तब और बिगड गई, जब बदी प्रत्यक्षीकरण (हेबियस कॉर्पस) के एक मामले मे सर्वोच्च न्यायालय ने एक विवादास्पद फैसले मे जिसकी काफी आलोचना हुई, न्यायिक पुनरावलोकन से इनकार कर दिया अदालत ने उन मामलो की समीक्षा से भी इनकार कर दिया, जिनमे निरोधी नजरबदी स्पष्ट रूप से दुर्भावनापूर्ण थी उनका भी जिनमे आपातकाल के पश्चात सविधान मे किए गए कुछ सशोधनो का उद्देश्य भविष्य मे एकाधिकार प्राप्त करने की घटना को रोकना था बाहरी आक्रमण या आतरिक सशस्त्र विद्रोह की स्थिति मे आपातकाल लगाने के अधिकार सुरक्षित रखे गए है 1975–77 का आपातकाल भारत मे पहला और सभवत आखिरी नही है उदाहरण के लिए, 1962 मे चीन से युद्ध के वक्त एक सामान्य राष्ट्रीय आपातकाल घोषित किया गया था, जो औपचारिक तौर पर छह वर्षो तक कायम रहा था हालाकि इसमे सदेह है कि अब भारत के नागरिक 1975–77 जैसे एक और सर्वाधिकारवादी आपातकाल को आसानी से सहन कर लेगे

1950 से 2000 के बीच विभिन्न राज्यो मे अनेक बार राष्ट्रपति शासन लागू किया जा चुका है ज्यादातर मामलो मे यह आवश्यकता के बजाय राजनीतिक सुविधा के लिए किया गया. इसकी शुरुआत नेहरू युग मे सत्ता के दुरुपयोग के साथ हुई और इदिरा गाधी तथा उनके बाद के शासको के काल मे इसमे अत्यधिक वृद्धि हुई उदाहरण के लिए, 1977 मे जनता गठबधन सरकार ने नौ राज्यो मे राष्ट्रपति शासन लागू किया और 1980 मे इदिरा गाधी की काग्रेस सत्ता मे लौटी, तब उसने भी नौ राज्यो मे राष्ट्रपति शासन लागू किया राष्ट्रपति शासन लगाने के अधिकार को अनुशासित करने के प्रयास पूरी तरह सफल नही हुए है 1979 के बाद राष्ट्रपति शासन एक वर्ष से अधिक सम्य के लिए नही लगाया जा सकता, हालाकि 1987 मे सविधान में सशोधन कर पजाब में राष्ट्रपति शासन बनाए रखने का प्रावधान किया गया था, ताकि घुसपैठ से निपटा जा सके 'राजनीति से प्रेरित' आधार पर बिहार मे 1998 मे राष्ट्रपति शासन लगाने के प्रस्ताव पर राष्ट्रपति ने एक बार अपने प्रस्ताव लौटाने के अधिकार

का उपयोग करते हुए राष्ट्रपति शासन टाल दिया था राष्ट्रपति शासन प्रकरण (1993) मे उच्चतम न्यायालय ने अल्प बहुमत से सुझाव दिया था कि अवाछित राष्ट्रपति शासन लगाने के बारे मे वह सवैधानिक समीक्षा कर सकता है और चेतावनी दी कि जिन विधानसभाओ को समय से पूर्व या अन्यायपूर्ण ढग से भग कर दिया गया है, उन्हे वह पुन स्थापित कर देगा हालाकि इन सशोधनात्मक ओर न्यायिक प्रयासो से सत्ता का दुरुपयोग रोका नही जा सका इसलिए कहा जा सकता है कि राष्ट्रपति शासन लगाने के अधिकार को सविधान से पूरी तरह हटा दिया जाना चाहिए

न्यायपालिका तथा समतावादी न्याय

यद्यपि एक स्वतत्र न्यायपालिका आजादी के आदोलन की महत्त्वपूर्ण मागो मे से एक थी, लेकिन भारतीय सविधान के निर्माता न्यायपालिका को अधिक अधिकार देने के प्रति सतर्क थे फिर भी उन्होने उच्च न्यायालयो तथा सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रभावी किए जाने वाले मौलिक अधिकारो से सबधित अध्याय तैयार किया उच्च न्यायपालिका द्वारा असवैधानिक, मनमाने या अनुचित वैधानिक या कार्यपालिक कार्यो को रद्द करने या उनकी समीक्षा करने से भी उन्हे एतराज नही रहा मौलिक अधिकारो को असख्य नियत्रणो से घेरने तथा न्यायपालिका को कानून की विधिवत प्रक्रिया सुनिश्चित करने के व्यापक अधिकार देने से इनकार कर देने के साथ सविधान निर्माताओ ने न्यायपालिका को उससे भी कम भूमिका प्रदान की, जो न्यायपालिका आने वाले वर्षो मे स्वय को देना चाहती थी

सविधान ने एक एकीकृत न्यायपालिका बनाई, जिसमे शीर्ष पर उच्चतम न्यायालय तथा प्रत्येक राज्यो मे उच्च न्यायालय स्थापित किया गया प्रत्येक राज्य मे निचली अदालतो की देखरेख और नियत्रण उच्च न्यायालयो को सौपा गया अधिकाश मामलो मे अपील उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय निपटा सकते है सविधान की व्याख्या, सत्ता का दुरुपयोग तथा मौलिक अधिकारो के मामलो मे निर्णय करने का विशेषाधिकार उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयो को है केद्र तथा राज्य या राज्यो के बीच विवादो को निपटाने का एकमात्र अधिकार उच्चतम न्यायालय को है किसी न्यायिक सस्था की विशेष अपील सुनने और राष्ट्रपति द्वारा पूछे जाने पर उचित राय देने का भी इसे अधिकार है भारतीय उच्चतम न्यायालय विश्व के सर्वोच्च शक्तिशाली और काम के बोझ से दबे शीर्ष न्यायालयो मे से एक है

उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयो मे नियुक्तिया वकील–समुदाय, न्यायपालिका तथा उच्चतम न्यायालय के मामले मे अन्य विशिष्ट न्यायविदो मे से की जाती है सविधान निर्माताओ द्वारा न्यायिक नियुक्तियो की मूल प्रक्रिया राजनीतिक आधार पर परिकल्पित की गई थी, जिसमे राष्ट्रपति (प्रधानमत्री की सलाह पर) न्यायपालिका के परामर्श से उच्च न्यायिक नियुक्तियां करते थे लेकिन 1982, 1993 तथा 1998 के तीन मामलो के बाद परामर्श की आवश्यकता को परिभाषित करते हुए उच्चतम न्यायालय ने न्यायाधीशो का एक समूह बनाकर उच्च न्यायालयो तथा उच्चतम न्यायालय मे सभी नियुक्तियो की देखरेख तथा स्वीकृति का काम उसे सौप दिया. इस समूह का निर्माण न्यायिक विधि के निर्माण का एक उदाहरण है और मूल रूप से परिकल्पित निर्णायक अधिकारो से कही अधिक अधिकार न्यायाधीशो को देता है

उच्च न्यायालयो तथा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशो को हटाने के प्रावधान जटिल है इनके तहत एक विशेष न्यायाधिकरण के समक्ष सुनवाई और पुष्टि के लिए ससद के दोनो सदनो द्वारा महाभियोग

की कार्यवाही आवश्यक है 1992 मे ससद द्वारा उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति वी रामास्वामी को एक न्यायिक अभिकरण द्वारा भ्रष्टाचार का दोषी पाए जाने पर महाभियोग प्रस्ताव पारित करने मे विफल रहने के बाद यह चिता व्यक्त की गई थी कि उच्च तथा उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशो को अनुशासित करना या हटाना सभव नही है. परिणामस्वरूप, विधि आयोग तथा अन्य क्षेत्रो से एक प्रस्ताव आया कि उच्च तथा उच्चतम न्यायालयो मे न्यायाधीशो की नियुक्तिया, उन्हे अनुशासित करने का दायित्व, उनके खिलाफ शिकायते सुनने और उन्हे पद से हटाए जाने के बारे मे निर्णय एक राष्ट्रीय न्यायिक आयोग को करना चाहिए, जो यह सुनिश्चित करे कि न्याय करने वाले व्यक्तियो का परीक्षण और उनकी जवाबदेही भी न्यायपूर्ण ढग से की जाए

मौलिक अधिकार और विधि का शासन

मौलिक अधिकारो वाला अध्याय शासन के सभी पहलुओ को प्रस्तुत करता है, जिसमे शासन द्वारा नियत्रित सार्वजनिक उपक्रम, सभी कानून, नियम और भारतीय नागरिको व अन्य व्यक्तियो के मौलिक अधिकारो के विषय मे कार्यपालिका के आदेश शामिल है मौलिक अधिकारो मे समता का अधिकार (सकारात्मक गतिविधि की सभावनाओ सहित), अभिव्यक्ति की स्वतत्रता, सगठन सबधी स्वतत्रता आवागमन की स्वतत्रता, व्यवसाय की स्वतत्रता, विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अतिरिक्त जीवन तथा दैहिक स्वतत्रता से वचित नही किया जाना, शोषण से मुक्ति, धार्मिक तथा सास्कृतिक स्वतत्रता और इन स्वतत्रताओ की रक्षा के लिए उच्चतम न्यायालय मे जाने का अधिकार सम्मिलित है मौलिक अधिकारो के अध्याय को नीति–निदेशक तत्त्वो के अध्याय के साथ पढा जाना चाहिए, जो राष्ट्र के सामाजिक न्याय के लक्ष्यो को परिभाषित करता है सामाजिक न्याय के लक्ष्यो को राष्ट्र के शासन का आधार माना जाता है, हालाकि न्यायालय द्वारा इन्हे प्रभावी नही बनाया जा सकता

उच्चतम न्यायालय की न्यायिक सर्वोच्चता की खोज 1950–52 मे प्रारभ हुई, जब न्यायालय ने भूस्वामियो के पक्ष मे निर्णय देते हुए कृषि सुधारो के प्रावधानो को अवैध घोषित कर दिया तथा सरकार के अभिवेचक (सेसर करने के) अधिकारो मे कटौती कर दी, जिससे जन–व्यवस्था बनाए रखने की उसकी क्षमता मे कमी आ गई इसके बाद न्यायपालिका तथा विधायिका के बीच एक लबा सघर्ष सपत्ति के अधिकार के प्रश्न पर चला, जिसे 1978 मे मौलिक अधिकार के तौर पर रद्द कर दिया गया यद्यपि 1950–77 के दौरान उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयो का लेखा, स्वतत्रता तथा मौलिक अधिकारो के प्रति चिता व्यक्त करने तथा सरकार द्वारा सामाजिक एव आर्थिक नियमन नियत्रण के एक व्यापक ढाचे पर सहमति के सकेत करने से भरा पडा है राष्ट्रीय आपातकाल (1975–77) के दौरान उच्चतम न्यायालय नागरिक स्वतत्रताओ के रक्षक की अपनी भूमिका से पीछे हट गया हालाकि 1977 के बाद से उच्चतम न्यायलय ने एक नया मानवाधिकार न्यायशास्त्र तैयार किया, जीवन तथा स्वतत्रता के अधिकार के दायरे को बढाकर इसमे गोपनीयता, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, पर्यावरण और अन्य अनेक उल्लखनीय अधिकारो को सम्मिलित किया गया और अदालत ने इन अधिकारो के सरक्षण के लिए कानून की एक सक्रिय प्रक्रिया लागू की सविधान के निर्माण के समय से उच्चतम न्यायालय प्रेस तथा नागरिको की अभिव्यक्ति की स्वतत्रता की रक्षा करने तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रजातात्रिक ढग से काम करने के लिए नियम बनाने मे पर्याप्त सर्तक रहा है समानता के प्रावधानो की व्यापक व्याख्या करते हुए अदालत ने एक सतुलित सकारात्मक कार्ययोजना का समर्थन किया उच्चतम न्यायालय ने

नेर्देशात्मक सिद्धातो के साथ शोषण विरोधी प्रावधानो की भी व्याख्या की तथा बधुआ और बाल श्रमिको की स्थिति सुधारने के लिए योजनाए तैयार की विभिन्न सरकारो द्वारा धार्मिक स्वतत्रता तथा अल्पसख्यको के अधिकारो को सीमित करने के प्रयासो को देखते हुए न्यायालय ने इन अधिकारो को पर्याप्त मान्यता प्रदान की, यद्यपि बहुधार्मिक तथा बहुसास्कृतिक समाज की समस्याओ के सदर्भ मे कुछ ज्यादा ही बराबरी बनाए रखने के आरोप मे कुछ अदालती निर्णयो की आलोचना भी की गई है न्यायालय ने आपराधिक मामलो के सबध मे भी सिद्धात तैयार किए है तथा अत्याचार विरोधी विधिशास्त्र बनाकर यह सुनिश्चित किया है कि हिरासत मे कैदियो के साथ उचित व्यवहार हो और उन्हे सुनवाई का उचित अवसर दिया जाए. न्यायिक पुनरावलोकन द्वारा प्रशासनिक प्रक्रियाओ का कडाई से विश्लेषण किया जाता है, ताकि निष्पक्षता सुनिश्चित रहे सुनिश्चित सवैधानिक मौलिक अधिकारो को लागू करने के लिए उच्च न्यायालयो तथा उच्चतम न्यायालय तक सीधी पहुच बनी हुई है

भारत को अनेक सामाजिक क्रातियो और दैनिक प्रशासकीय व्यवस्था की विफलताए विरासत मे मिली है वोहरा समिति की रिपोर्ट (1995) के अधिकृत फैसले से पता चलता है कि कानून के अनुसार शासन की व्यवस्था खतरे मे हो सकती है और व्यापक रूप से तथा मीडिया की सतर्कता और न्यायालयो के नियत्रण से ही भारत मे कानून के अनुसार लोकतात्रिक शासन सरक्षित है

* * *

राजीव धवन भारत के उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा भारतीय विधि सस्थान मे मानद व्याख्याता और अतर्राष्ट्रीय न्यायविद् आयोग (आई सी जे) के सदस्य है इन्होने विधि एव नागरिक विषयो पर कई पुस्तके, प्रबध और लेख लिखे है

समुद्र विज्ञान

एस. ज़ेड कासिम

समुद्र–विज्ञान के तत्त्व

समुद्र–विज्ञान महासागर का उसकी समग्रता मे वैज्ञानिक अध्ययन है यद्यपि यह भू–विज्ञान की एक शाखा के रूप मे वर्गीकृत है, लेकिन इसकी प्रकृति बहुशाखीय है और लगभग सभी विज्ञान और उन्नत तकनीको की सहायता से महासागरीय सर्वेक्षण इसमे समाहित है उच्च प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रयोग ने इसे अपेक्षाकृत एक ऐसे नए विज्ञान का रूप दिया है, जो प्राचीन काल से मनुष्यो द्वारा किए गए समुद्री अवलोकनो से बहुत आगे तक जाता है समुद्र विज्ञान के सामान्य तौर पर निम्नलिखित वर्ग है

1 भौतिक समुद्र विज्ञान मे समुद्री धाराओ, समुद्र परिसचरण, ज्वार, तरग प्रणालियो, तापमान तथा लवणता का वितरण एव उमडने की परिघटना का विश्लेषण जैसी समुद्र की परिवर्तनशीलता और गतिकी का विश्लेषण किया जाता है इसके अतर्गत जल के द्रव्यमानो और उनका अभिनिर्धारण तथा समुद्र के अभिलक्षणो की भविष्यवाणी का गणितीय प्रतिरूपण द्वारा अध्ययन शामिल है

2 रासायनिक समुद्र विज्ञान के अतर्गत समुद्र का सगठन, समुद्र मे ऑक्सीजन तथा कार्बन डाइऑक्साइड का वितरण, जल व अवसादो की उर्वरता (पोषक अश) तथा रासायनिक क्रिया, मानव गतिविधियो के कारण जलीय गुणवत्ता मे परिवर्तन (प्रदूषण), मीठे पानी का समुद्र मे गिरना, नदी अपवाह, अवसाद भार तथा अन्य कई समस्याए शामिल है

3 जैव समुद्र विज्ञान समुद्री जीवन पर केद्रित है इसके तहत समुद्र में जटिल जीवन–चक्र मे हिस्सा लेनेवाले सभी प्राणी और वनस्पतिया आती है यह चक्र अधिकतर तैरने वाले सूक्ष्म पादपो पर आधारित है, जो पादपप्लवक (फाइटोप्लैक्टॅन) कहलाते है और ऊर्जा प्रचुर जीवभार के प्राथमिक उत्पादक होते है ये पादपप्लवक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनगिनत सूक्ष्म प्राणीप्लवक (जूप्लेक्टॅन) से लेकर खाद्य शृखला के उच्च जीवो तक जैसे शैलफिश, मछली तथा स्तनधारियो द्वारा उपभोग कर लिए जाते है

4 भू–वैज्ञानिक तथा भू–भौतिक समुद्र विज्ञान के अतर्गत अवसादों, चट्टानो तथा समुद्र तल के खनिजो व अपतटीय तेल तथा गैस की खोज और विश्लेषण, महासागरीय बेसिन के उद्‌भव व इतिहास तथा भूपर्पटी (अर्थक्रस्ट) के प्रमुख सरचनात्मक लक्षणो का अध्ययन शामिल है

5 समुद्री यत्रीकरण एव अभियान्त्रिकी– सभी प्रकार के उपकरणो जैसे अन्वेषी उपकरण की जानकारी पर जोर देती है, जो जहाजो अथवा उपग्रहो से विभिन्न पैरामीटर का अध्ययन करने मे काम आते है, जिसमे समुद्री सतह के तापमान, पानी का रग, समुद्र तल की बनावट, तटीय क्षरण, अवसादन जैव अवरोध (बायोफाउलिग) तथा सक्षारण शामिल है
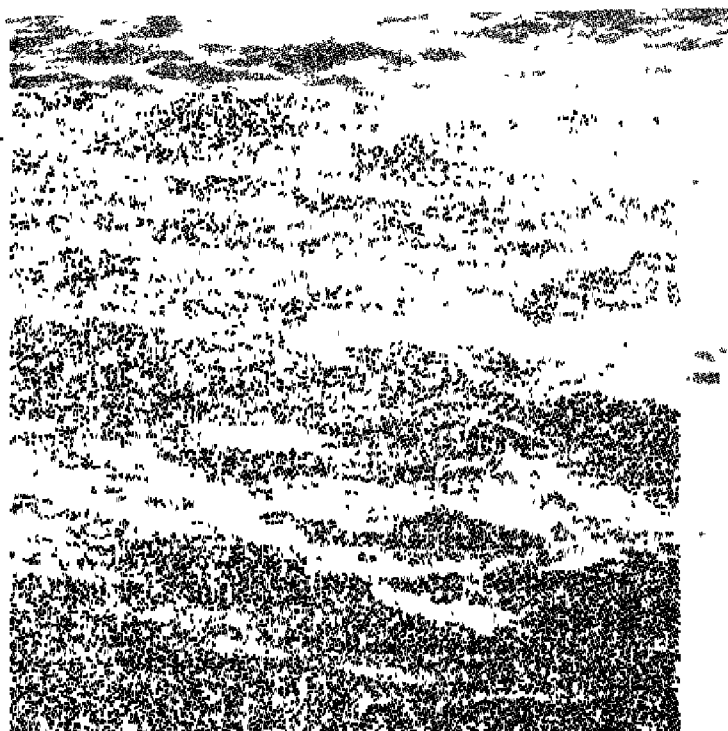
ी पुरातत्व विज्ञान मे जलमग्न तटरेखाओ, डूबे हुए जहाजो की खोज
हस्योद्घाटन के लिए इसके द्वारा गहरे शैक्षणिक महत्त्व की कई ऐतिह
पता लगाया जा सकता है
द्र विज्ञानी प्रदत्त प्रसस्करण एक डाटा कद्र मे आधारित होता है, जो
समुद्र विज्ञान सबधी तथ्यो (डाटा) के प्रसार के लिए जिम्मेदार हो
उच्च गतिवाले कम्प्यूटरो द्वारा एक-दूसरे से जुडे है समुद्र विज्ञानी
मे भागीदारी निभाने वाले जहाज और समुद्र तट पर स्थित स

स्था

नी प्राय विश्व के महासागरो की चर्चा बडे-बडे बेसिनो से जुडे खारे
रूप मे करते हैं, जो पृथ्वी की सतह के तीन-चोथाई भाग पर फैला
दक्षिण एशिया की सीमाओ को बनाता है यह प्रशात और अटलाटि
है ये प्राय तीन महासागर कहलाते है हिद महासागर कई देशो से
देशो से, जो दुनिया की लगभग एक-तिहाई आबादी का प्रतिनि
सात देशो मे भारत, बाग्लादेश, पाकिस्तान तटवर्ती है, श्रीलका तथा
टान स्थलरुद्ध राष्ट्र है

ऐतिहासिक सर्वेक्षण

अनादि काल से भारतवासियो को समुद्र की गहरी जानकारी थी उन्होने इसका उपयोग भोजन के स्रोत क रूप मे और व्यापार, सचार तथा परिवहन के लिए किया प्राचीन पौराणिक वर्णन मे समुद्र मथन अर्थात उसकी सपत्ति के निष्कर्षण के लिए समुद्र को मथने की क्रिया, समुद्र की तलहटी से खनिज प्राप्त करने की आधुनिक तकनीक से अद्‌भुत साम्य रखती है सिधु घाटी सभ्यता के दौरान हडप्पा तथा मोहजोदाडो के निवासियो ने भी अपनी अभियात्रिकी परियोजनाओ मे अपने समुद्री ज्ञान का उपयोग किया था उदाहरण के लिए, हडप्पावासियो ने लगभग 3,500 से 4,000 वर्ष पूर्व गुजरात के लोथल नामक स्थान पर ज्वार मे जहाजो को शरण देने के लिए बेहतरीन गोदी का निर्माण किया था गोदी के अवशेष बताते है कि हडप्पावासियो को समुद्री तूफान तथा लहरो की प्रणाली व उनकी समयावधि की समझ थी प्रमाण यह भी बताते है कि मोहेजोदाडो के लोगो ने समुद्र की तटीय प्रणाली के व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग समुद्र किनारे अपने घरों के निर्माण तथा सफाई व कचरे व गदे पानी के निकास की सुविधाओ के लिए किया मध्यकालीन युग के दौरान समुद्र की परिस्थितियो तथा समुद्री जीवन पर उनके प्रभाव का विस्तृत लेखा–जोखा तैयार किया गया था उस काल के मौजूदा प्रमाण दर्शाते है कि भारतीयो ने समुद्री यातायात परपरा की स्थापना की थी

अग्रेजो के आगमन के साथ ब्रिटिश व भारतीय प्रतिभाओं के समन्वय ने भारत मे समुद्र–विज्ञान की नीव रखी बगाल की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ने पहल की और भारतीय समुद्र सर्वेक्षण (इडियन मैरीन सर्वे) की स्थापना 1874 मे कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) मे हुई 1881 मे 580 टन क सर्वेक्षण पोत आर आई एम एस इन्वेस्टिगेटर ने कार्य प्रारभ किया इसके बाद 1908 मे 1708 टन के इन्वेस्टिगेटर II को लाया गया तथा कुछ समुद्र विज्ञान सबधी अवलोकन (जीव विज्ञान के अलावा) प्रारभ हुए

1930 के दशक मे पहले--पहल त्रावणकोर विश्वविद्यालय (वर्तमान केरल विश्वविद्यालय) तथा मद्रास विश्वविद्यालय मे समुद्री जीव विज्ञान का विश्वविद्यालयस्तरीय अध्यापन एव शोध गतिविधियो का सचालन शुरू हुआ बबई विश्वविद्यालय ने 1940 मे तथा आध्र विश्वविद्यालय ने 1950 के प्रारभ मे इसका अनुसरण किया तदनतर 1960 मे दो केंद्र स्थापित हुए, एक अन्नामलाई विश्वविद्यालय मे जिसमे बाद मे समुद्र विज्ञान की सभी विधाओ की शुरुआत हुई बहरामपुर विश्वविद्यालय, उडीसा मे 1970 के मध्य मे तथा गोण विश्वविद्यालय मे 1980 मे समुद्र विज्ञान के कार्यक्रमो की शुरुआत हुई

आजादी के बाद 1947 मे समुद्री ससाधनो के महत्त्व को पर्याप्त रूप से समझने की शुरुआत हुई तथ समुद्र के जैविक ससाधनो का पता लगान के लिए तमिलनाडु के मडपम केप मे केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसधान सस्थान की स्थापना की गई 20वी शताब्दी के अत तक भारत समुद्री खाद्य का विश्व मे अग्रणी उत्पादक व निर्यातक बन गया

1950 के अत तक समुद्र वैज्ञानिको के अतर्राष्ट्रीय समुदाय ने यह अनुभव किया कि हिद महासागर पर विश्व मे सबसे कम अध्ययन हुआ है अत 1960 मे बहुराष्ट्रीय कार्यक्रम अतर्राष्ट्रीय हिद अभियान
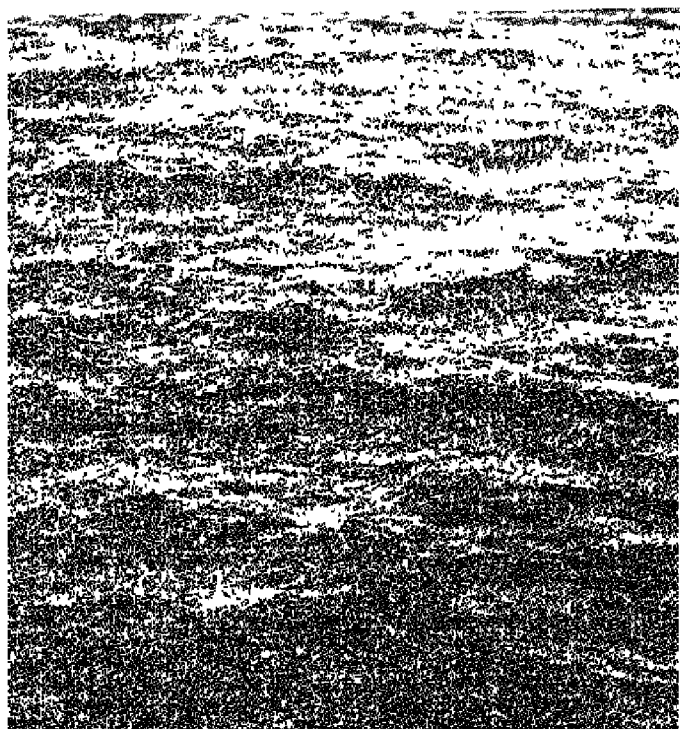
नक सगठन (यूनेस्को) तथा अतर्शासकीय महासागरीय आयोग द्वारा र
गर्यक्रम मे 20 देशो के 40 जहाजो ने भाग लिया, भारत के चार ज
रही दिसबर 1965 मे कार्यक्रम के बद होने के बाद जनवरी 1966
ऑफ ओशिएनोग्राफी (एन आई ओ) ने जन्म लिया वैज्ञानिक एव औ
की एक राष्ट्रीय प्रयोगशाला के रूप मे एन आई ओ ने कोचीन (व
ा 1972 मे इसे गोवा स्थानातरित कर दिया गया अब इसका मुख्याल
द मुबई, कोच्चि तथा वॉल्टेयर मे है गोवा स्थित इसके विशाल परिस
कर्मचारी कार्यरत है दिसबर 1975 मे एन आई ओ ने भारत मे निर्मि
गे जलावतरित किया इस पोत ने हिद महासागर मे कई सौ दौरे नि
र क्षेत्र का सर्वेक्षण किया

ारत सरकार ने प्रधानमत्री के मातहत प्रभार मे समुद्र विकास विभाग
उद्देश्य समुद्री क्षेत्र के तीव्र विकास को बढावा देना था विभाग
पोत 'सागर कन्या' तथा 'सागर सपदा' क्रमश 1983 तथा 1984 मे
समुद्र प्रौद्योगिकी सस्थान (नेशनल इस्टिट्यूट ऑफ ओशन टेक्नोलॉ
टिका अध्ययन केद्र की स्थापना की इसके अलावा समुद्री क्षेत्र मे न
अटार्कटिका अभियान भारत का इस तरह का पहला अभियान द
अटार्कटिका पहुचा भारत ने उस बर्फीले महाद्वीप पर दो स्थायी क
ए
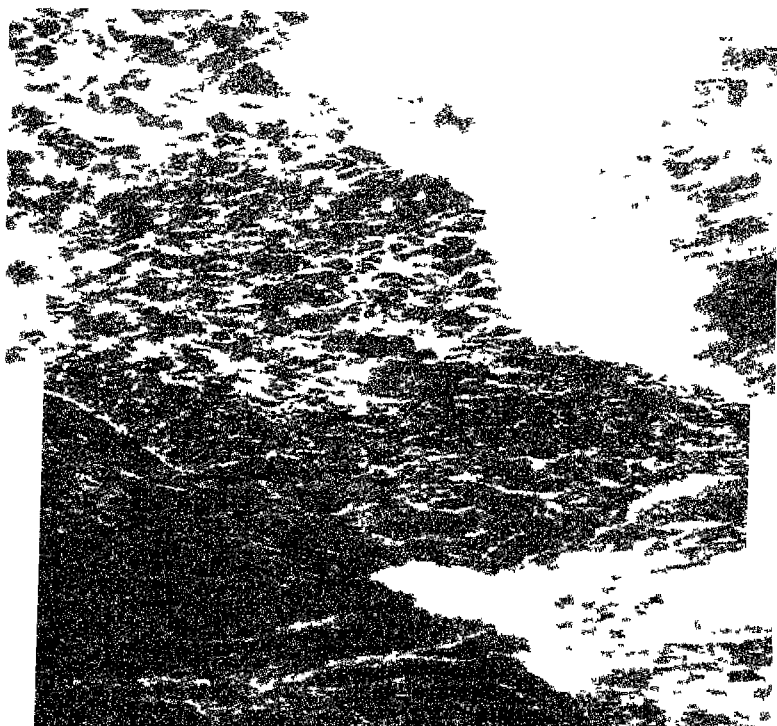
' सयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (1982) द्वारा एक नई व्यवस्था, विशिष्ट 3
ॉमिक जोन) की स्थापना समुद्र अनुसधान और ससाधन प्रबधन व
नहत तटीय राज्यो को अनन्य आर्थिक क्षेत्र पर अधिकार मिले हे
श के क्षेत्र मे तट के बिदु से 200 नॉटिकल मील तक का अधिका
क्षेत्र लगभग 20 लाख 20 हजार वर्ग किमी है

ो द्वारा समुद्र पुरातत्त्व केद्र की स्थापना की गई थी. उपलब्धियो मे
भारत काल के ऐतिहासिक द्वारका बदरगाह की खोज तथा कावेरी ·
पुहर बदरगाह के अन्वेषण का कार्य शामिल है.

के लिए भारत का पहला सफल गहरा सागरीय अन्वेषण हिद मह
1981 तक अनुसंधान पोत गवेषणी का उपयोग करते हुए सचालि
26 जनवरी 1981 को 5,700 मीटर की गहराई से उठाया गया इस
। 'सागर कन्या' को पिडों के सर्वेक्षण मे लगाया गया तथा सैकडो ट
से निकाले गए इनका उपयोग ताबा, निकल तथा कोबाल्ट के निष्क
किया गया मध्य हिद महासागर मे कई लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र
डो के कई नए सभावित स्थलो का सीमाकन हुआ इस कार्य के आ
फ्रास, जापान तथा तत्कालीन सोवियत सघ के साथ 'अग्रणी निवेश
: पहला देश था, जिसे 17 अगस्त 1987 को इटरनेशनल सीबेड 3
करण किंग्सटन जमैका) द्वारा नाड्यूल्स पिड के दोहन एव विकास
मा गया

समग्र रूप में भारत ने समुद्र विज्ञान की सभी शाखाओ मे सार्थक योगदान दिया, जिसमे हिद महासागर की लहरो तथा धाराओ की प्रणालियो, प्रवाह के तरीको, पोषक तत्त्वो, जैविक उत्पादकता, जल स्तभो मे ऑक्सीजन का वितरण, उमडने वाले क्षेत्रों, नदी मुहानो (ज्वारनदमुखी प्रवाह के निदर्शन सहित) रेतीले तटो, तली समुदायो, पोषक तत्त्वो के चक्र, सूक्ष्म जैविकी, जैव अवरोध, तटीय भूक्षरण, उपकरण आवश्यकताओ, यात्रिक समस्याओ, समुद्री खरपतवारो, गरानो, प्रवाल भित्तियो, चुनिदा क्षेत्रो मे समुद्र विज्ञानी गतिविधि (निदर्श सहित), मॉनसून, चक्रवातो, सुदूर सवेदन तथा उपग्रह चित्रण, पौधो व प्राणियो से जैव सक्रिय पदार्थो, खनन एव खनिज नीति, अवसादन तथा अरब सागर व बगाल की खाडी मे प्रदूषण के स्रोतो के अध्ययन शामिल है

मैग्रोव की स्थिति पर रपट

समुद्र विज्ञान मे दक्षिण एशिया की दृष्टि से विशेष रुचि का विषय मैग्रोव है, जो दलदली उष्णकटिबधीय, उपोष्णकटिबधीय झाडियो तथा अवस्तभ जड युक्त पेडो वाले जगल होते है ये भू-सागरीय अतरापृष्ठ तथा नदी के मुहानो मे ऊपरी धारा तक, जहा पानी मे कुछ मात्रा मे खारापन होता है पाए जाते है तटों की सुरक्षा तथा मत्स्य एव प्रवाल भित्तियो के स्वास्थ्य के लिए मैग्रोव जीवनदायी होते है, लेकिन उनका तीव्रता से ह्रास हो रहा है तथा ये दुनिया के सर्वाधिक सकटापन्न पारिस्थितिक तत्रों मे से हें हिद-प्रशात क्षेत्र मे मैग्रोव की विविधता और बहुतायत है और खासकर बाग्लादेश व भारत म सुदरबन उल्लेखनीय है

21वी शताब्दी के प्रारभ मे भारत मे मैग्रोव से ढका क्षेत्र 3,500 वर्ग किमी था, जिसका 9/10 भाग अडमान निकोबार द्वीप सहित पूर्वी तट से जुडा है तथा शेष दसवा भाग पश्चिमी तट से इनमे से कुछ शानदार मैग्रोव वन पश्चिम बगाल के सुदरबन तथा अडमान निकोबार द्वीप मे है पश्चिमी तट पर मैग्रोव वन कहीं-कही छितरे हुए है, मानव गतिविधियो से इन्हे गभीर क्षति पहुची है

प्रवाल भित्ति (कोरल रीफ) की स्थिति पर रपट

प्रवाल भित्ति उष्णकटिबधीय सागरो के अद्वितीय एव शानदार पारिस्थितिक तत्र मे एक है यह विश्व के सर्वाधिक जैव समृद्ध पारिस्थितिक तत्रों मे से है तथा समुद्र की जैविक गतिविधियो का प्रभावशाली लक्षण है यह कैल्शियम (चूना) जमा करने वाले प्राणियो व शैवालो का बडा सकलन है, मुख्य रूप से ये पाषाण प्रवाल कहलाने वाले प्राणियो के है प्रवाल भित्तियो का निर्माण सैकडो, हज़ारो सालो से हो रहे कैल्शियम के लगातार जमा होते रहने का परिणाम है परतु भित्ति (रीफ) का विनाश बहुत ही जल्द हो सकता है पूरी दुनिया मे प्रवाल भित्ति की क्षति या विनाश खतरनाक रफ्तार से हो रहा है तथा समुद्रविज्ञानी इसके कारणो की छानबीन मे लगे है उदाहरण के लिए, 1997-98 में प्रवालो के असामान्य रूप से विनाश तथा व्यापक रूप से उनके रग उडने की घटना, जो गहन अध्ययनो का केद्र रही है और जिसकी वजह से दक्षिण एशिया तथा अन्य क्षेत्रों के कई प्रभावित प्रवालो (कोरल्स) ने अपने सहजीवी शैवालो को निष्कासित कर दिया इससे उनका रग उडने लगा और जीवनी शक्ति खत्म हो गई भित्तियो के स्वास्थ्य के लिए भावी सभावनाओ का सूक्ष्म परीक्षण जारी है

ारत

भारत मे तटीय प्रवाल भित्तिया मुख्य समुद्री तट पर बिखरे क्षेत्रो मे पाई जाती है उदाहरण के लिए ये पश्चिम मे कच्छ की खाडी (गुजरात) में तथा दक्षिण (तमिलनाडु) मे पाक खाडी तथा मन्नार की खाडी मे मिलती है यद्यपि ये मुख्य रूप से चूने व कार्बाइड के कारखानो के उपयोग के लिए किए गए खनन से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई है बाद मे इन विनाशकारी गतिविधियो पर शासन द्वारा रोक लगा दी गई तथा कच्छ व मन्नार की खाडी के कई क्षेत्र सरक्षित घोषित कर दिए गए अडमान तथा निकोबार द्वीप के तटीय प्रवाल तथा लक्षद्वीप के प्रवाल द्वीपो के प्रवाल स्वस्थ हालत मे है, यद्यपि 1998 मे रग उडने (विरजन) के कारण इन पर दुष्प्रभाव पडा था कुछ क्षेत्रो म उनका दोहन सजावटी सीपियो तथा मछलियो के लिए भी किया गया 1990 के दशक के अत तक भारत मे 200 से भी अधिक प्रवालो की प्रजातिया रिकॉर्ड की गई ऐसा माना जाता है कि इनमे से अधिकतर प्रजातिया अडमान–निकोबार द्वीपो मे पाई जाती है समुद्र वैज्ञानिको तथा पर्यावरणविदो ने देश का आह्वान किया है कि कुछ क्षेत्रो को समुद्री उद्यान घोषित किया जाए, जिन्हे भूमि पर बनाए गए जैव मडल सरक्षित क्षेत्रो के समान ही दर्जा दिया जाए, ताकि भारत की सकटापन्न जैव विविधता का सरक्षण हो सके

* * *

डॉ एस.जेड कासिम देश के पहले भारतीय अटार्कटिका अभियान दल के नेता, भारत सरकार के योजना आयोग के (विज्ञान एव प्रौद्योगिकी) सदस्य, भारत सरकार के नेशनल इस्टिट्यूट ऑफ ओशिएनोग्राफी, गोवा के निदेशक और भारत सरकार के पर्यावरण विभाग तथा समुद्र विकास विभाग मे सचिव रहे है भारत की राष्ट्रीय विज्ञान अकादमियो के निर्वाचित फेलो डॉ कासिम कई विश्वविद्यालयो म मानद प्रोफेसर, वर्ष 1992–93 मे भारतीय विज्ञान काग्रेस के अध्यक्ष रहे कई पुस्तको के लेखक, 250 से भी अधिक शोधपत्रो का प्रकाशन, पद्मश्री व पद्म भूषण तथा ओशिएनोलॉजी इटरनेशनल–99 के पेसिफिक रिम लाइफ टाइम अचीवमेट अवार्ड से सम्मानित

समुद्री दुर्ग

पुरुषोत्तम शर्मा

भारत का समुद्रवर्ती अतीत समृद्ध है आज से 3,000 वर्ष पहले भी सिधु घाटी सभ्यता के युग मे व्यवसाय व्यापार और धर्मातरण के लिए भारतीय जलयान समुद्रो से आते–जाते रहे लगभग छठी शताब्दी से पद्रहवी शताब्दी के अत तक पुर्तगालियो के आने से पहले भारतीय समुद्र तटवर्ती क्षेत्रो पर अरबो का प्रभुत्व था वाणिज्य, व्यापार और धर्म के कारण भारतीयो और इन विदेशी अभियानकर्ताओ के बीच सघर्ष हुए, अपने हितो की रक्षा के लिए समुदायो ने अपनी–अपनी किलेबदिया की पश्चिमी भारत के समुद्र तट पर, जहा विदेशियो का नित्य आवागमन था, लोगो, वस्तुओ, बस्तियो तथा हितो का आवागमन एव व्यापार जारी रहा अपेक्षाकृत शात अरब सागर से होकर भारत पहुचना अधिक आसान था तथा इस इलाके के छोटे राज्य कम ही प्रतिरोध करते थे हो सकता है कि यह उपमहाद्वीप सैनिक दृष्टि स दुर्बल रहा हो, परतु इसके ससाधन विपुल थे और यह समृद्ध तथा आकर्षक था भारत का पश्चिमी समुद्रवर्ती भूभाग प्राय विदेशी आक्रमण का शिकार हुआ, जैसा यहा स्थित दुर्गो की सख्या से स्पष्ट होता है भारतीय समुद्र तट पर बने कुल 151 दुर्गो मे से 130 पश्चिमी तट पर है इनकी सख्या गुजरात मे 16, महाराष्ट्र मे 71, गोवा मे 8, कर्नाटक मे 16 तथा केरल मे 19 है पूर्वी तट पर तमिलनाडु मे 14, आध्र प्रदेश मे 4 तथा उडीसा तट पर इनकी सख्या 3 है पश्चिम बगाल मे एक भी समुद्र तटवर्ती दुर्ग नही है इसका मुख्य कारण यह है कि बगाल की खाडी अनुकूल सागर क्षेत्र नही है और ससाधनो की दृष्टि से भी पूर्वी क्षेत्र गरीब ही था तटवर्ती दुर्गो को मोटे तौर पर तीन श्रेणियो मे बाटा जा सकता है, सामुद्रिक हितो की पूर्ति के लिए बनाए गए मुख्य दुर्ग, क्षेत्रीय प्रभुत्व की रक्षा के लिए निर्मित उपदुर्ग और दुर्ग चौकिया, जो प्रभाव क्षेत्र की सीमाओ को निर्धारित करती थी दुर्ग के सुरक्षा प्रबध उनके महत्त्व पर निर्भर थे कुछ लबी घेराबदी का सामना करने के लिए बनाए गए थे, जबकि दूसर कुछ केवल सहायता प्रदान करते थे चौकिया हमेशा अनिवार्यत रक्षित नही रहती थी लेकिन इनमे से प्रत्येक किले की अपनी कहानी है, जो प्रेम कथाओ, षड्यत्रा, त्याग और शौर्य से भरपूर एक कहने योग्य दास्तान जरूर है

इन दुर्गो के निर्माता कौन थे? ये क्यो और कब बनाए गए? ये कैसे और कब जीते गए और ध्वस्त हुए? कैसे एक शासक ने इनका उपयोग किया और दूसरे ने इनकी उपेक्षा की, जिसकी परिणति प्राय दुर्भाग्य और पराजय मे हुई भारत की तटीय विरासत के ये कुछ मोहक पक्ष जाच–पडताल के योग्य है

उत्पत्ति और भूगोल

भारत की तटरेखा लगभग 5,600 किमी लबी है और इस क्षेत्र के पास गौरवपूर्ण प्राचीन परपराए है पश्चिमी तटवर्ती इलाका, जो ताप्ती नदी और कुमारी अतरीप (वर्तमान कन्याकुमारी) के बीच है, लबे

ानीकोट सहित
डी शर्मा

ालाबार तट के नाम से जाना जाता था उसके बाद यह तीन भागो
ओर कोकण, कनारा और मालाबार तट मोटे तौर पर यह भूभाग अ
और केरल प्रातो की सीमाए तय करता है

ार का सिधु तटवर्ती भूभाग कुछ अलग प्रकार का है कुमारी अतरी
क्षाकृत सपाट है, क्योकि वहा का पूर्वी घाट क्षेत्र तट से दूर भीतरी
मुहानो को प्रभावित नही करती इससे संभवत इस बात का अदाज
ी तट पर इतने कम किलेबद तट क्यो है? कुल 21 दुर्ग, जो उस क्षे
ावर्ती चौकिया है, सात उपदुर्ग और केवल दो मुख्य किले है ये दो
प से लगातार सागर इन तटवर्ती दुर्गो को निगलता रहा है बगाल
रगो के साथ उठने वाले प्रबल चक्रवात अपने मार्ग मे आने वाले
र्गो सभी को उजाडते जाते है

र परंपराए

टवर्ती दुर्गो ने, चाहे वे मुख्य भूमि पर हो या द्वीप पर, जहाजो के र
र्जित करने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है प्राचीन काल से ही भा
देशो के साथ व्यापार और वाणिज्य मे सक्रिय थे पूर्वी देशो की अ
हो के साथ गए, भारतीय सास्कृतिक प्रभाव आज भी दिखते है र

कबोडिया (वर्तमान कपूचिया), इडोनेशियाई द्वीप समूह, बर्मा (वर्तमान म्यामार) तथा सीलोन (वर्तमान श्रीलका) और पश्चिमी देशो मे यूनान, मेसोपोटामिया ओर रोम मे भारतीय वस्तुओ की बहुत माग थी भारत, जो उस युग का एक प्रमुख निर्यातक देश था, इस व्यापार से अत्यधिक सपन्न हुआ उत्तम और सुरक्षित बदरगाहो की उपलब्धता इस सफलता का एक महत्त्वपूर्ण कारण थी

सभी महत्त्वाकाक्षी देशो की तरह भारत ने सुदूर स्थानो पर समृद्ध उपनिवेशा की स्थापना की थी पश्चिमी देशो ने शताब्दियो बाद भारत मे भी यही किया भारत ने विशेषकर सुदूर पूर्व मे और साथ ही अरब सागर के पश्चिमी तट पर भी उपनिवेश बनाए यही नही देश के सक्षम तथा सुरक्षित बदरगाहा ने इन सफल तथा लाभप्रद व्यापारिक अभियानो मे अपनी भूमिका निभाई बदरगाह पर नियत्रण का अर्थ स्थानीय व्यापार और व्यापारी समुदायो तक आसान पहुच तथा कुछ मामलो मे अधिकार भी था इसलिए बदरगाह तथा उनके दुर्ग शक्ति तथा समृद्धि के केंद्र बन गए

इतिहास

प्राचीन काल मे चोल, पाड्य और बाद मे कलिग नरेशो के शासनकाल मे भारतीय बदरगाहो की गतिविधिया महत्त्वपूर्ण थी उन दिनो, साहस और विजय तथा भारतीय धर्म एव सस्कृति के विस्तार क अभिप्राय से निर्गामी समुद्री अभियानो का नियोजन एव क्रियान्वयन किया जाता था हिदू और बौद्ध धर्म की गाथाए इन बदरगाहो से जाने वाले जलयानो द्वारा सुदूर तक ले जाई गई और भारत तथा बहुत से देशो, विशेषकर दक्षिण एशियाई देशो के बीच धार्मिक तथा सास्कृतिक समन्वय को बढावा मिला स्थानीय नाविको के साथ जहाजो का रवाना होना वहा के निवासियो के लिए उत्सव के अवसर हुआ करते थे और उनके समुद्रवर्ती रक्षक, भारतीय समुद्री दुर्ग, उसके साक्षी थे

परतु समुद्र अपेक्षी है और नौकायन एक निष्ठुर तथा त्रासदायी पेशा है इस कारण ने तथा अरब व यूरोपीय धारको के व्यापार के सचालन मे आने और अधिक आत्मनिर्भरता के कारणो ने शायद अब तक घुमतू प्रवृत्ति के साहसी समुद्र यात्रियो को अधिक आसान विकल्पो की ओर उन्मुख किया भारत को अपनी समुद्र यात्रा के तौर–तरीको व सामुद्रिक अनुशासन को छोडने की भारी कीमत चुकानी पडी 17वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे शिवाजी के समय जब तक इस ऐतिहासिक भूल की ओर ध्यान दिया गया तब तक व्यापारिक तथा नौकायन क्षेत्रो मे वर्चस्व की पुनर्स्थापना का समय बीत चुका था भारतीय मूल के लोग अरब, डच, पुर्तगाली, फ्रासीसी तथा अतत अग्रेजो से हार गए, जिन्होने देश को भी अपने अधीन कर लिया अन्य यूरोपीय शक्तियो ने अपने राज्य स्थापित कर भारतीय भूमि पर अपनी पकड बनाए रखी

महाराष्ट्र के किलो ने नौसैनिक उत्थान के सघर्ष मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है 18वीं शताब्दी के मध्य मे ब्रिटिश समुद्री शक्ति से अतत पराजित होने के पूर्व तक बबई (वर्तमान मुबई) के मुरुद जजीरा के द्वीप किले के सीदियो ने एक शताब्दी तक मराठा आक्रमणो का सामना किया मराठा नौसैनिक क्षमता ईस्ट इडिया कपनी के अतर्गत बबई के उदय के साथ ही क्षीण हुई मराठो की नौसेना के सेनापति कान्होजी आग्रे के अधीन खडेरी और कोलाबा स्थित जहाजी बेडो ने पश्चिम के अतिक्रमण के प्रभावो को रोकने के प्रयास किए, कितु अत मे शक्तिशाली समुद्री ताकत की विजय हुई मराठो ने 1739 मे एक कठिन और दीर्घकालिक युद्ध मे, बेसीन (वर्तमान वसई), जो उस समय पुर्तगाली शक्ति का प्रतीक था, पर अधिकार करने के लिए पुर्तगालियो के विरुद्ध युद्ध मे विजय अवश्य प्राप्त की थी मराठो के

महत्त्व और गौरव का प्रतीक यह दुर्ग उनके अधिकार मे 1802 तक रहा, फिर पेशवा बाजीराव II ने इस किले के अदर सधि पत्र पर अपने हस्ताक्षरो से इसे अग्रेजो को सौप दिया

यद्यपि भारत के सभी 151 समुद्री दुर्गो का विस्तृत विवरण देना असभव है, लेकिन इनमे जो दुर्ग अपने उल्लेखनीय इतिहास अथवा अपनी सुदृढता व अनोखे स्थापत्य के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, उनका उल्लेख यहा किया जाएगा

पश्चिमी दुर्ग

भारत का पश्चिमी भूभाग किलो के निर्माण और किलबदिया के लिए आदर्श है तटवर्ती पश्चिमी घाट उत्तर से दक्षिण तक फैले है प्राचीन काल मे समुद्र मे बहने वाले लावा ने पश्चिम की ओर बहकर अरब सागर मे मिलने वाली नदियो के मुहानो के आसपास असख्य अतरीपो का निर्माण किया यहा सीधी ऊर्ध्वाधर चोटियो अथवा समुद्र मे फैले पर्वत स्कधो के कारण पृथक सी ऐसी कई पहाडिया है, जो प्राकृतिक किलेबदी का काम करती है किसी खाडी अथवा नदी के मुहाने के ऊपर होने पर समूचे तट की पहाडिया दुर्गो मे परिवर्तित किए जाने के लिए स्वाभाविक रूप से उपयुक्त होती थी जब पहाडियो का बदरगाह पर वर्चस्व होता था, तब समुद्र यात्री दुर्ग के प्रभारी व उसकी तोपो की निगरानी मे स्वय को सुरक्षित महसूस करते थे पृथक होने अथवा जमीन तक पहुच न होने पर भी इन दुर्गो मे समुद्र की ओर खुलने वाले दरवाजे बनाए गए थे

द्वीपीय दुर्ग पश्चिमी घाट की मुख्य श्रृखला के समुद्र मे फैले पथरीले दृश्याशो पर बनाए गए थे दुर्गो की द्वीपीय दीवारे डूबी हुई चट्टानो का स्वरूप लेती थी, जो मराठो की अभियात्रिक प्रतिभा तथा मेहनत का प्रमाण हैं यद्यपि ये द्वीपीय दुर्ग मुख्य भूभाग से दूर नही थे, कितु स्वय मे एक शक्ति अवश्य थ तथा यह आवश्यक नही था कि उन पर तट के शासको का आधिपत्य हो उदाहरणार्थ, मराठा शासक शिवाजी (1630–1680) तथा सभाजी (शासनकाल, 1680–1689) जजीरा के द्वीपीय दुर्ग को अपने अधीन नही कर पाए, क्योकि वे दुर्ग के आसपास के समुद्र के स्वामी नही थे

दीव

गुजरात राज्य के दक्षिणी सिरे पर समुद्र तट से लगे दीव द्वीप पर यह दुर्ग बनाया गया था यह कैबे (वर्तमान खभात) खाडी के पार मुबई (भूतपूर्व बबई) से 256 किमी पश्चिमोत्तर मे स्थित है नौवी सदी मे यह दुर्ग चावडा वशी राजपूतो के अधीन था और बाद मे वाघेला राजवश के स्वामित्व मे आया. 1330 मे गुजरात के सुल्तानों ने इस पर अधिकार कर लिया द्वीप के पूर्वी भाग मे मुसलमानो द्वारा बनवाई गई कुछ किलेबदिया तथा इमारते आज भी मौजूद हैं मुख्य किलेबदियो को पुर्तगालियो ने जला डाला था

गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने मुगल बादशाह हुमायू के विरुद्ध पुर्तगालियो की मदद चाही थी जो गुजरात पर हमला करने वाले थे 1535 मे एक सधि की गई, जिसमे पुर्तगालियो को बेसीन दिया गया तथा दीव मे एक कारखाने के निर्माण की अनुमति प्रदान की गई, परतु पुर्तगालियो ने सधि की शर्तो का उल्लघन करते हुए 1535 से 1546 के बीच एक विशाल और सुदृढ दुर्ग का निर्माण किया उस दुर्ग की बाहरी दीवार समुद्र तक फैली हुई है भीतरी प्राचीर, जो काफी ऊची है, के दोनो ओर सुरक्षा बुर्जे बनाए गए है, जिनके ऊपर तोपे रखी जाती थी दोनो दीवारो के बीच एक खाई है दुर्ग के पश्चिमोत्तर छोर पर जो स्थान है, वहा मुख्यभूमि की विपरीत दिशा मे बना हुआ घाट आज भी उपयोगी है दुर्ग मे प्रवेश के लिए तीन दरवाजे है एक विशालकाय बुर्ज, जो उस द्वीप की नहर के

समुद्री दुर्ग

ुरात के सुल्तानो द्वारा बनवाया गया था, जिसे बाद मे पुर्तगालियो न
रहा एक चर्च, औषधालय और गवर्नर के आवास के भग्नावशेष दे
ठरिया अब जेल के रूप मे उपयोग मे आ रही है

गाहो, ब्रोच (वर्तमान भरूच) और सूरत से आने–जाने वाले समुद्री या
ुगालियो के लिए दीव महत्त्वपूर्ण था दीव के लिए 1509 1521 और
रंतु दीव पर कब्जा नही किया जा सका, तथापि 1535 मे यह ऊपर
धिपत्य मे आ गया एक बार पुर्तगालियो को दुर्ग से बेदखल कर इ
ुजरात और मिस्र के सुल्तानो के बेडो ने मिलकर प्रयास किया था
घेरा उठा लिया गया और मिस्री बेडे लौट गए उस समय पुर्तगालि
उनके 400 दुर्ग रक्षको मे से केवल 40 ही बच पाए थे 1546 मे पुर्त
अतिम प्रयास भी विफल हुआ तब से 1961 तक, यानी जब तक भ
मुक्त नही करा लिया, यह पुर्तगालियो के कब्जे मे रहा

ओर प्रभावशाली समुद्री दृश्यो से युक्त एक आकर्षक पर्यटन केंद्र
प्रकाश स्तभ और हवाई पट्टी आज भी उपयोग मे आ रहे है.

मे अरब सागर और दमनगगा के मिलन स्थल मुहाने पर दो दुर्ग ह
दोनो ओर स्थित है दक्षिणी तट पर बने बडे दुर्ग को मोती दमन ओ
नानी दमन कहा जाता है

दुर्ग का एक दृश्य
छ पीडी शर्मा

रूप से हिंदू शासनकाल मे निर्मित इन दुर्गो का गुजरात के सुल्तानो द्वारा
ार किया गया था और धीरे–धीरे मोती दमन एक सुदृढ शहर बन गया
जलाकर राख कर दिया, किंतु 1559 मे उस पर कब्जा कर लिया और पि
सुदृढीकरण की प्रक्रिया आरभ हुई बाहरी परकोटे सहित ऊची दीवारे 10
गए 1603 म वहा की मस्जिद को एक चर्च मे परिवर्तित कर दिया गया, ज
ाया और किले का नाम कासल ऑफ हिरान्निमस रखा गया चर्च और पर
केन बाकी क्षेत्र मे अब या तो शासकीय कार्यालय हैं अथवा आवासीय प

दमन दुर्ग के बाहर लगे शिलालेख किले के बार मे ऐतिहासिक जानकारि
सामान्य बात है, क्योंकि किसी दुर्ग का इतिहास सामान्यतया विभिन्न, अ
स्रोतो से ही जाना जाता है

मन का निर्माण 1614 मे पुर्तगालियो द्वारा किया गया था और इसका
ाया यद्यपि इसकी ऊची प्राचीरे और दो द्वार हे, किंतु यह मोती दमन से
ो की ओर दक्षिणाभिमुखी है इस पर दो मानवाकृतिया तथा पुर्तगालियो
कल नानी दमन मे एक विद्यालय और एक चर्च है

ा दुर्गो ने पुर्तगाली सैन्य और व्यापारिक योजनाओं मे महत्त्वपूर्ण भूमिका
दीव और दक्षिण मे वसई के बीच मध्यवर्ती नियमित विश्राम स्थल था यहां
भडार तथा नौसैनिक गोदाम थे अरब सागर की परिरेखा पर निरतर सशा
पुर्तगालियो की योजना का परिणाम अच्छा रहा वे भारत, मध्य–पूर्व

लगभग सपूर्ण व्यापार को नियत्रित करते थे मोती दमन पर 1593 म एक मुगल आक्रमण कर दिया गया था 21 वर्ष बाद पुर्तगालियो ने सभवत दमनगगा के उत्तरी किनारे को सुर हेतु नानी दमन का निर्माण किया था

अरनाला

अरनाला द्वीप, दुर्ग महाराष्ट्र
सौजन्य पी डी शर्मा

अरनाला का द्वीप दुर्ग मुबई से 60 किमी दूर उत्तर दिशा मे स्थित है यह स्थान वैतरणा नदी के मुहाने के समीप हे तथा ईस्ट इडिया कपनी के बबई स्थित सदस्य इसे काउज आइलैड के नाम से जानते थे ऊचे प्राचीरो, परकोटो और तीन द्वारो से युक्त द्वीप के उत्तरी छोर पर 1530 मे गुजरात के सुल्तानो द्वारा बनवाए गए इस किले का मुख्य द्वार उत्तर की ओर है गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह के साथ 1535 की सधि से यह किला पुर्तगालियो के कब्जे मे आ गया उस समय के मौजूद भवनो को तोड दिया गया और पुर्तगालियो द्वारा किले का व्यापक जीर्णोद्धार 1550 मे किया गया 1737 मे किले पर अधिकार कर लिया और पेशवा बाजीराव I ने 1738 मे इसका पुनर्निर्माण किया

अरनाला दुर्ग पुर्तगालियो के दक्षिणी बेसीन और उत्तरी दुर्ग दमन को जोडता था यह एक न था यहा वे वस्तुए सगृहीत करके रखी जाती थी, जिन्हे उनके नियत्रण के भीतरी प्रदेश यूरोपीय देशो और बाजारों को निर्यात किया जाता था. ईस्ट इडिया कपनी के कर्नल ग मराठो से छीन लिए जाने पर यह दुर्ग पुन नए नियत्रण मे आ गया किंतु इसे पेशवा को दिया गया यह मराठो के अधिकार मे तब तक बना रहा, जब तक 1802 म अतत: वह अधिकार मे नही आया, जब पेशवा बाजीराव II ने बेसिन की सधि कर मराठो के इस प्रमु अग्रेजो का आश्रित बना दिया

आजकल अरनाला दुर्ग तक वसई होकर पहुचा जा सकता है द्वीप तथा तट के बीच ए नौका सेवा है

बेसीन

बेसीन मुबई से लगभग 45 किमी दूर उत्तर मे स्थित है इसके प्राचीरो और परकोटो के बडा क्षेत्र है, उत्तर और पश्चिम दिशा मे सागर है बेसीन का महत्त्व सोपारा के पराभव के हुआ, जिसका इतिहास ई पू 1500 तक जाता है गाद भर जाने से जब सोपारा को छोड तब बेसीन तथा अन्य बदरगाहो का महत्त्व बढा दीव के समान ही बेसीन का दुर्ग भी सुल्तान बहादुर शाह द्वारा 1535 मे मुगल बादशाह हुमायू के विरुद्ध सहायता के एवज मे को प्रदान किया गया प्रारभ मे तो पुर्तगालियो ने इस किले को ध्वस्त ही कर दिया था मे जब उन्हे उसके सामरिक महत्त्व का आभास हुआ, तब उन्होने इसका पुनर्निर्माण किया यह दुर्ग पुर्तगालियो का प्रमुख केंद्र बनता गया तथा यहा गवर्नर का महल, चर्च ए

आवासीय इमारते बनी लबे समय तक यह पुर्तगालियो की उत्तरी राजधानी रहा और आवश्यकता के अनुरूप इसे मजबूत परकोटो तथा कई बुर्जो (जिनमे हर एक का नाम एक पुर्तगाली सत के नाम पर रखा गया) से सुरक्षित बनाया गया 1739 मे मराठा सेनापति चिमाजी अप्पा, जो पेशवा बाजीराव I के भाई थे, ने दुर्ग पर धावा बोलकर एक बडे बुर्ज को ध्वस्त कर दिया और 204 वर्षो के निर्विघ्न पुर्तगाली अधिकार के पश्चात इस पर कब्जा कर लिया 1767 से 1802 के बीच बेसीन का भाग्य अनिश्चित रहा क्योकि इसके स्वामी बदलते रहे तथा यह उपेक्षित भी रहा 1802 मे इसी दुर्ग मे हुई एक सधि के द्वारा मराठो ने इसे ईस्ट इडिया कंपनी को हाथ सौप दिया, जिससे पुणे (भूतपूर्व पूना) के पेशवा बबई के अग्रेजो के अधीन हो गए

बेसीन महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओ का साक्षी रहा है, किंतु आज वहा कोई ऐतिहासिक आभा नही मिलती भारतीय सीमा शुल्क विभाग के कर्मचारियो की आवासीय बहुमजिला इमारते उस अधिकाश स्थान को घेरे हुई है, जहा कभी दुर्ग था दुर्ग रेल तथा सडक मार्ग के जरिये मुबई से जुडा है

बबई दुर्ग समूह

किसी समय बबई सात दलदली और मलेरियाग्रस्त द्वीपो का ऐसा समूह था, जहा के मूल निवासी कोली जाति के मछुआरे थे जहां पहले सिर्फ कटि वस्त्र पहने कोली महिलाए मछुआरों की लौटती नावो को खाली करवाने के लिए समुद्र मे उतरती थी, वहा अब आधुनिक भारत का सबसे सपन्न औद्योगिक नगर बसा है

अग्रेजो ने 1661 मे बबई पर अधिकार किया तथा 1947 तक यह उनके स्वामित्व मे रहा बबई में प्रथम ब्रिटिश समुदाय की स्थापना तक, उसके पाच द्वीप समय के साथ गाद भर जाने के कारण भाटे के समय बालू के उथले किनारो के द्वारा जुड चुके थे धुर दक्षिण के दो द्वीप, जिन्हे अग्रेज ओल्ड वूमॅन्स आइलैड तथा कोलाबा के नाम से जानते थे, भी आपस मे बालू भित्ति से जुडे हुए थे, किंतु अन्य द्वीपो से एक गहरी जलधारा से अलग थे 1730 तक पाच उत्तरी द्वीप भराव के द्वारा एक भूभाग बना दिए गए लगभग 100 साल बाद दक्षिण के दोनों द्वीपो को जोडकर एक अतरीप का स्वरूप प्रदान किया गया, जो आज मुबई कहलाता है

एक नगर के रूप में बबई का उदय वहा के समुद्री दुर्गो के पराभव की भी शुरुआत है पहले वहा कुल 12 दुर्ग थे उत्तर से दक्षिण दिशा मे स्थित ये दुर्ग है ठाणे, बाद्रा (बादोराह), डोगरी, माहिम, सायन शिवडी, वर्ली, मझगाव, फोर्ट सेट जॉर्ज, ओल्ड विमॅन्स आइलैड और कोलाबा इन दुर्गो का निर्माण प्रारभ मे हिदू राजाओ, फिर मराठो, मुसलमानो, पुर्तगालियो तथा अत मे ईस्ट इडिया कपनी द्वारा करवाया गया सायन, माहिम, शिवडी और वर्ली मे आज भी दुर्गो के भग्नावशेष देखे जा सकते है, किंतु डोगरी और मझगाव मे तो इनका नामो–निशान भी नही बचा है

ईस्ट इडिया कंपनी द्वारा निर्मित मुबई के 12वे दुर्ग को उस समय किला और चौपाटी नाम से जाना जाता था यह मुख्यत नगर प्राचीर से युक्त परकोटो और बुर्जो से सुदृढ बस्ती थी, लेकिन अब उनका कोई चिह्न नही बचा सदर्भ के लिए केवल कुछ नाम बचे है, जिनमे चर्च गेट, बाजार गेट और रैपार्ट रो है उस बडे दुर्ग के भीतर बस्ती से अलग एक मराटा दुर्ग भी था, जिसे बाद के वर्षो मे पुर्तगालियो ने जीत लिया था और अतत अग्रेजो के अधिकार मे आने पर वह बॉम्बे कासल कहलाया यह वही

स्थान है, जहा पहले रॉयल नेवी, फिर रॉयल इडियन नेवी (आर आई एन) और अतत भारत
ने अपने सैनिको को रखा यह पश्चिमी नौसेना कमान का भी केंद्र है तथा अब अन्य का
अलावा यहा कमाडर इन चीफ का कार्यालय भी है

यदि बॉम्बे कासल पर अधिकार अग्रेजो की प्रभुसत्ता का प्रतीक था, तो यह विडबना ही है वि
के एक वर्ष पूर्व 1946 मे आर आई एन मे विद्रोह के समय रॉयल नेवी को वाटरलू जैसी प
का सामना करना पडा यह विडबना सही, किंतु शायद उपयुक्त ही था कि भारत का
पुनर्जीवित नौसैनिक सस्थान बॉम्बे कासल के अदर है तथा इसका नाम इडियन नॅवल शिप
एस) आग्रे है, आग्रे, शिवाजी के नौसेना प्रमुखों को कहा जाता था, जिनमे से एक की
विजयदुर्ग मे हुई हार से भारत मे ब्रिटिश सत्ता के काल की शुरुआत हुई

खडेरी

खडेरी दुर्ग महाराष्ट्र
सोजन्य पी डी शर्मा

खडेरी का दुर्ग मुबई से 20 किमी दक्षिण मे एक द्वीप पर है, जिसे प्राचीरो द्वारा सुदृढ किया गया है शिवाजी ने दक्षिण मे जजीरा के सिद्दियो और उत्तर मे बबई के अग्रेजो को चुनौती देने के लिए इस किले का निर्माण करवाया था दोनो ही ने खडेरी को मराठो से छीनने के असफल प्रयास किए अग्रेजो के उत्थान के साथ ही खडेरी महत्त्वहीन होकर पतन की ओर अग्रसर हुआ दुर्ग
की मूल सरचना समय के आघातो को सहकर आज भी एक रहस्य के साथ सुरक्षित हे
हे कि शिखर की एक चट्टान पर जब किसी दूसरे पत्थर से आघात किया जाता है, तो खनक
है
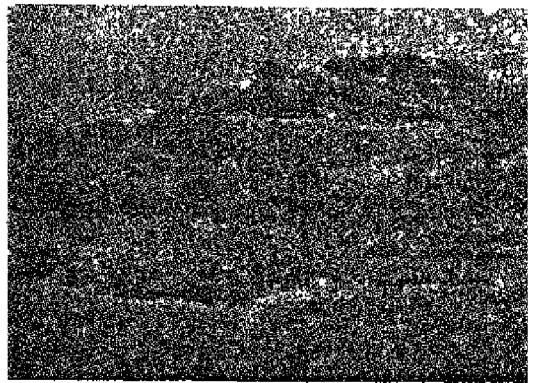
आज खडेरी द्वीप पर एक प्रकाश स्तभ है, जिसका रखरखाव मुबई पोर्ट ट्रस्ट द्वारा किया ज
सिर्फ यही ट्रस्ट खडेरी भ्रमण की इजाजत दे सकता है

कोलाबा

कोलाबा दुर्ग मुबई के दक्षिण मे केवल 40 किमी दूर अलीबाग समुद्र तट के बहुत नजदीक
यह एक द्वीपीय दुर्ग है, किंतु भाटे के समय इसके मुख्य द्वार तक पैदल पहुंचा जा सकता है
यह एक छोटी सैनिक चौकी था, किंतु शिवाजी के समय इसका व्यापक रूपातरण, नवी
सुदृढीकरण किया गया कोलाबा काफी बडा दुर्ग था, जिसके जलाशय तथा देवालय अब
हे किंतु प्राचीन भवन एक अर्सा पहले नष्ट हो गए इसके ऊचे परकोटे और 17 बुर्ज अभी
हे दुर्ग का मुख्य द्वार पूर्व की ओर है तथा इस पर खुदी पशु–पक्षियो की आकृतिया स्पष्ट ि
ह ईस्ट इडिया कपनी के फोर्ब्स ने उन भवनो का वर्णन किया है, जिन्हे उन्होने अपनी 175
के दौरान देखा था, जिसमें एक महल, कोषालय, उद्यान और अफगानी घोडो के अस्तबल

1753, 1756, 1757 और 1771 में हुए अग्निकांडों में नष्ट हो गए 1771 की आग सर्वाधिक प्रचड थी और उसमे अधिकाश भवन जलकर राख हो गए थे. जो कुछ शेष बचा था, उसे बाद मे अंग्रेजो ने नष्ट कर दिया सर्जेकोट नामक एक छोटा गढ, जो मुख्य द्वार से अधिक दूर नही है, कोलाबा का 18वा बुर्ज कहलाता है

इस दुर्ग का इतिहास मराठा नौसेना से जुडा हुआ है मराठो के महान सरखेल या एडमिरल कान्होजी आग्रे के प्रयासो से मराठा नौसना शक्ति और शौर्य के शिखर पर पहुच गई थी कोलाबा दुर्ग पर अधिकार जमाने के उद्देश्य से जजीरा के सिद्दियो, पुर्तगालियो और अग्रेजो ने अलग–अलग अनेक प्रयास किए एक बार तो सयुक्त आग्ल–पुर्तगाल सैन्य बल ने भी अभियान चलाया, परतु हर बार उन्हे असफलता ही हाथ लगी कान्होजी आग्रे और उनके उत्तराधिकारी सर्फाजी के बाद दो आग्रे बधुओ मानाजी और सभाजी की आपसी कलह मे पेशवा को हस्तक्षेप करना पडा दो भाइयो मे (दो भागो मे विभाजित आग्रे वर्चस्व मे) मानाजी को कोलाबा और उत्तरी क्षेत्र मिला. पेशवा ने सदैव ही मानाजी का पक्ष लिया और इसके परिणामस्वरूप विजयदुर्ग मे सभाजी के उत्तराधिकारी तुलाजी के विरुद्ध अभियान शुरू हुआ 1756 के आगामी युद्ध मे तुलाजी के नौसैनिक बेडे के पतन के उपरात ही कोलाबा का महत्त्व तेजी से गिर गया

पद्मदुर्ग

मुबई से 70 किमी दक्षिण मे, मुरुड के समुद्र तट पर खडे होकर समुद्र की ओर देखने पर सुप्रसिद्ध पद्मदुर्ग (कासा या प्रदुर्ग) की रूपरेखा स्पष्ट देखी जा सकती है इसका निर्माण शिवाजी ने 1663 मे करवाया था

दुर्ग का निर्माण एक निचली चट्टान पर किया गया है, जिसके किनारो पर प्राचीर बने हुए है दुर्ग का द्वार अत्यत सुरक्षित है तथा यह तब तक दिखाई नही पडता, जब तक दो बुर्जो के बीच वह अचानक प्रकट न हो जाए पत्थर और चूने–गारे से निर्मित यह दुर्ग 300 वर्षो से भी अधिक समय के बाद आज भी सुरक्षित है. उसे विकसित कमल के आकार मे बनाया गया है, जिसके 22 बुर्जो पर तोप रखने की व्यवस्था है और दीवारो पर पाषाण कलाकृतिया है इस दुर्ग क निर्माण मे शिवाजी को काफी मुश्किलो का सामना करना पडा होगा, क्योकि इसकी निर्माण सामग्री खुले समुद्र के पार से आई होगी

यद्यपि दुर्ग के निर्माण मे बहुत मेहनत की गई थी, किंतु इसका उद्देश्य कभी पूरा नही हुआ शिवाजी यहा से लगभग 10 किमी पूर्वोत्तर मे स्थित जजीरा दुर्ग के सिद्दियो की गतिविधियो पर नजर रखना चाहते थे, किंतु इसके पूर्ण होते ही शिवाजी के पुत्र सभाजी ने इसे सिद्दियो के हाथो गवा दिया सिद्दियो को भी यह दुर्ग अधिक उपयोगी नही लगा और उन्होने इसे सीमा चौकी बना दिया

जजीरा

मुबई से 80 किमी दक्षिण मे मुरुड के पास समुद्र तट के निकट ही जजीरा का द्वीप दुर्ग बना हुआ है जजीरा (अर्थात द्वीप) कोलियो की एक छोटी और सुरक्षित चौकी थी, जिसे सिद्दियो ने अपने कब्जे मे कर लिया था अरबी शब्द 'सय्यद' से व्युत्पन्न 'सीदी' का अर्थ है पैगबर के वशज, जिसका उपयोग एबीसीनिया या इथियोपिया मे उपाधि के रूप मे किया जाता था प्रारभ मे सीदी बहमनी के सुल्तानो के नौसेनापति थे, बाद मे वे बीजापुर के आदिलशाही सुल्तानो और अत मे मुगलो के भी नौसेनापति
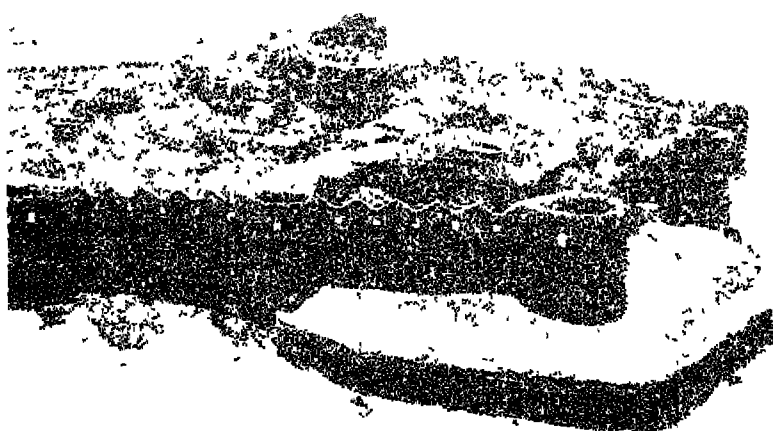
या था, लेकिन शिवाजी ने 1670 मे उसका पुनर्निर्माण कराया, जो
ार बना आग्रे की नौसेनापतित्व की वश--परपरा की समाप्ति का अ
आधार के रूप मे रत्नगिरि का भी पतन

से आसान पहुच वाले इस दुर्ग मे तीन सुदृढ चोटिया है सबसे ब
रकोट के नाम से जानी जाती है और उसमे भीतर पश्चिम की ओर
ा स्तभ है मध्य चोटी पर पेठ दुर्ग के अब कोई अवशेष नही बचे है
जिसमे प्रसिद्ध भगवती मदिर है, आज भी सुरक्षित है मदिर के पीछे
जहा से कहा जाता है कि दडित बदियो को नीचे धकेलकर मार वि
कुछ पुरानी गुफाए भी है बर्मा के अतिम राजा थिबॉ को अग्रेजो ने
गिरि भेज दिया था तथा उन्हे विशेष रूप से बनाए गए महल मे नजरब

नामक जल दुर्ग, जिसे घेरिया भी कहा जाता था, वघोतन (भूतपूर्व कु
छोर पर अरब सागर के नजदीक बना है सभवत पश्चिमी समुद्र त
विजयदुर्ग मुबई से 235 किमी दक्षिण म स्थित है और मराठा इतिह
ा के रूप मे प्रसिद्ध है.

श (12वी शताब्दी के अत से 13वी शताब्दी की शुरुआत) के सम
ा किंतु विजयदुर्ग की वर्तमान सरचना का समय 16वी शताब्दी के

ाराष्ट्र
डी शर्मा

1654 में शिवाजी ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था किलेबदी की तीन पक्तियो, सुदृढ परकोटे और 27 बुर्जो पर 300 तोपो सहित विजयदुर्ग पश्चिमी तट का सर्वाधिक सुदृढ दुर्ग था इसका इतिहास (1742–1756) सशक्त नौसैनिक आग्रे परिवार के भाइयो, तुलाजी और मानाजी, जो दोनों मराठा बेडो के सेनापति थे, के बीच गहरे विद्वेष से जुडा है तुलाजी आग्रे एक दक्ष समुद्री योद्धा थे और ब्रिटिश ईस्ट इडिया कपनी के मार्ग का काटा थे, जिसे उन्होने पश्चिमी तट पर प्रभुत्व स्थापित करने से लगातार रोके रखा था अग्रेजो ने उस समय की प्रचलित चाल के अनुसार, पेशवा बालाजी बाजीराव के आदेश पर, मानाजी का समर्थन करते हुए स्थिति का लाभ उठाया एडमिरल वॉटसन के नेतृत्व मे एक संयुक्त नौसैन्य दल दक्षिण की ओर बढा, जिसका मुख्य उद्देश्य मराठा समुद्री शक्ति को समाप्त कर भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर अग्रेजो की शक्ति को स्थापित करना था

यह दुर्ग एक शानदार बदरगाह पर नियत्रण करता था तथा मुख्य मराठा बेडो का अड्डा था मराठा जहाजो के साथ ही पूर्व की एक समुद्री लडाई के दौरान अग्रेजो से छीना गया जहाज 'रेस्टोरेशन' भी यहा लगर डाले था 11 फरवरी 1756 को मानाजी तथा ईस्ट इडिया कपनी के सयुक्त बलो ने तुलाजी आग्रे को विजयदुर्ग के सामने के मैदान मे पराजित कर दिया इस लडाई के दौरान हुई मात्र एक घटना ने इतिहास की धारा मोड दी एक ब्रिटिश जहाज से दागे गए गोले से 'रेस्टोरेशन' मे आग लग गई यह जहाज लपटो मे समा गया तथा आग नजदीक के मराठा जहाजो पर भी फैल गई, जिससे तुलाजी की शक्ति कम हो गई तथा अत मे उनकी हार हुई एक ही दिन मे भारत के पश्चिमी तट पर सामुद्रिक प्रभुत्व बदल गया मराठे इस दुर्घटना से कभी उबर नही पाए

तुलाजी के हारने का आशिक कारण यह था कि एडमिरल वॉटसन और मानाजी की सेनाओ को विजयदुर्ग की उस समय अभेद्य मानी जाने वाली दीवारो के पीछे से मुकाबला कर परास्त करने की उनकी रणनीति विफल हो गई किंतु इसके अतिरिक्त ब्रिटेन के अधिक वृहद नौसैनिक युद्ध अनुभव अधिक तीव्रता, बेहतर जहाजो तथा अधिक मारक क्षमता ने उन्हे विजय दिलाई इसके पश्चात ब्रिटिश आधिपत्य सुनिश्चित हो गया

सिंधुदुर्ग

आज लगभग विस्मृत हो चुके कुर्ते द्वीप पर शिवाजी द्वारा बनवाए गए समुद्री दुर्गो मे सबसे दुर्गम किला बना हुआ है सिधुदुर्ग पश्चिमी तट के मालवण के निकट मुबई से लगभग 325 किमी दक्षिण मे स्थित हे शिवाजी के मुख्य वास्तुशिल्पी हीरोजी इदूरकर को नवबर 1664 से शुरू कर इसे पूर्ण करने मे तीन वर्ष लगे कहा जाता है कि इसके निर्माण मे उसी वर्ष लूटे गए सूरत शहर के धन का व्यापक इस्तेमाल किया गया था

सिधुदुर्ग का परिमाप 3 5 किमी है किले के परकोटे और बुर्ज 9 से 10 मीटर तक ऊचे और 3 मीटर चोडे है और उसी चट्टान की परिरेखा का अनुसरण करते हे, जिस पर यह बना है. इसके भीतर अनेक महल, कुए, मदिर तथा न सिर्फ रक्षक दलो, बल्कि कुछ नागरिको के आवास थे इन निवासियो के वशज आज भी इनमे से कुछ आवासो मे रहते है दुर्ग मे 40 बुर्ज तथा मीनार है, जो इसे काफी शक्तिशाली व एक दुर्जेय दृश्य प्रदान करते है किले को अधिक सुदृढ बनाने के लिए चूने–गारे की जगह पिघले हुए सीसे का प्रयोग किया गया था, किंतु इससे इस दुर्ग को बहुत नुकसान हुआ है क्योकि स्थानीय मछुआरे अपने जाल मे वजन लगाने के लिए सीसा निकाल ले जाते है

पुरुषोत्तम शर्मा

डी शर्मा

शिवाजी की एक बिना दाढी वाली प्रतिमा है, जो सभवत अपने ढग के
रे मे उनके हाथो व पैरो के चिह्नित निशान भी है, जो मराठा जनर
त्त्व का बनाते है इस दुर्ग ने शिवाजी की विजय की योजनाओ के
भाई थी, किंतु कालातर मे जब शिवाजी ने उत्तर की ओर विजयदुर्ग
ित किया, तब सिधुदुर्ग का महत्त्व बहुत कम हो गया

छ दूरी पर तट की ओर एक छोटी चट्टान के ऊपर रामदुर्ग (अथवा
किया गया यहा जलपोतो के निर्माण एव उनकी मरम्मत का एक
दुर्ग की एक प्रमुख चौकी था

गभग 400 किमी दूर दक्षिण मे गोवा राज्य मे स्थित अगुआडा दुर्ग व
ठे पानी के झरने के नाम पर किया था, यह दुर्ग माडवी नदी के उत्त
र मे मिलती है, पर स्थित है इसे आठ वर्षो की अवधि मे बनाया गया
नर पुर्तगालियो ने इसका नाम फोर्ट सांता कैथेरीना रखा इसके निम
ई जब डचो का एक बेडा माडवी नदी के मुहाने तक आ गया गो
लिए पुर्तगालियो ने मार्मागाव तथा अगुआडा के दुर्गो की परिकल्पन
आडा मुख्य दुर्ग को समुद्र की ओर ऊचे परकोटो और दो भारी भर